



# আল-কুরআ'নের শিক্ষা

মূলঃ

মুহাম্মদ ইকবাল কীলানী

ভাষান্তরঃ

আবদুল্লাহিল হাদী মু.ইউসুফ

প্রকাশনায়ঃ

মাকতাবা বাইতুসসালাম

রিয়াদ, সৌদী আরব



٢٢

تفہیم السنۃ

# کتابُ تعلیماتِ القرآن المجید

(باللغة البنغالية)

بيت السلام  
الرياض

تألیف :  
محمد إقبال کیلانی  
ترجمة :  
عبد الله الهادي محمد يوسف

ডাফতী মুদস্সাহ সিদ্দীজ - ২২

# আল-কুরআ'নের শিক্ষা

মূলঃ

মুহাম্মদ ইকবাল কীলানী

ভাষান্তরঃ

আবদুল্লাহিল হাদী মু.ইউসুফ

প্রকাশনায়ঃ

মাকতাবা বাইতুসসালাম

রিয়াদ, সৌদী আরব

محمد إقبال كيلاني، ١٤٣١ هـ

ح

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

كيلاني، محمد إقبال

كتاب تعليمات القرآن المجيد باللغة البنغالية. / محمد إقبال

كيلاني. - الرياض ١٤٣١ هـ

... ص ٢٢٠ سم - ( تفهيم السنة : ٢٢ )

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٠٠-٦٣٩٩-٤

١ - القرآن أ. العنوان ب. السلسلة

١٤٣١/٩٧١٠

ديوي ٢٢٠

رقم الإيداع : ١٤٣١/٩٧١٠

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٠٠-٦٣٩٩-٤

**حقوق الطبع محفوظة للمؤلف**

**تقسيم كتندة**

**مكتبة بيت السلام**

**صندوق البريد : -16737 الرياض : 11474 سعودي عرب**

**فون : 4381122 فاكس : 4385991**

**4381155**

**موبائل : 0542666646-0505440147**



## সূচীপত্র

|                                     |          |
|-------------------------------------|----------|
| অনুবাদের আরম্ভ                      | .....07  |
| লেখকের আরম্ভ                        | .....12  |
| ১। কুরআন সংরক্ষণের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস | .....37  |
| ২। ঈমানের রুকনসমূহ                  | .....77  |
| ৩। তাওহীদে বিশ্বাস                  | .....78  |
| ৪। রিসালাতের প্রতি বিশ্বাস          | .....79  |
| ৫। আল-কুরআ'ন এবং পূর্ববর্তী         |          |
| আসমানী কিতাবসমূহ                    | .....81  |
| ৬। মৃত্যুর পরবর্তী জীবন             | .....82  |
| ৭। কুরআ'ন মাজীদের আলোকে নির্দেশাবলী | .....83  |
| ৮। ইসলামের রুকনসমূহ                 | .....84  |
| ৯। পরিবার পদ্ধতি                    | .....85  |
| ১০। পরিবারে পুরুষের ভূমিকা          | .....88  |
| ১১। পরিবারে নারীর অধিকার            | .....90  |
| ১২। আত্মীয়তার সম্পর্ক              | .....91  |
| ১৩। একাধিক বিয়ে                    | .....93  |
| ১৪। পর্দা                           | .....94  |
| ১৫। দাড়ি                           | .....101 |
| ১৬। কেসাস (হত্যার বিনিময়ে হত্যা)   | .....102 |
| ১৭। ইসলামী দণ্ড বিধিঃ               | .....104 |
| ১৮। চুরির শাস্তি                    | .....104 |
| ১৯। ডাকাতির শাস্তিঃ                 | .....104 |

|   |  |
|---|--|
| ২০। মিথ্যা অপবাদে শাস্তি                                    | حد القذف ..... 105                         |
| ২১। ব্যভিচারের শাস্তি                                       | حد الزنا ..... 106                         |
| ২২। মদ পানের শাস্তি   | حد شرب الخمر ..... 107                     |
| ২৩। আল্লাহর পথে জিহাদ                                       | الجهاد في سبيل الله ..... 109              |
| ২৪। সৎকাজের আদেশ এবং অসৎ কাজে নিষেধ                         | الامر بالمعروف---عن المنكر ..... 111       |
| ২৫। আলকোরআ'নের আলোকে নিষেধাবলীঃ                             | النواهي في ضوء القرآن ..... 113            |
| ২৬। মিথ্যা  | كذب ..... 114                              |
| ২৭। গীবত (পরনিন্দা)   | الغيبة ..... 116                           |
| ২৮। ঘুষ   | الرشوة ..... 118                           |
| ২৯। সুদ   | الربا ..... 119                            |
| ৩০। ছবি   | التصوير ..... 122                          |
| ৩১। যাদু  | السحر ..... 124                            |
| ৩২। গান বাজনা   | الغناء ..... 125                           |
| ৩৩। মদ  | الخمر ..... 128                            |
| ৩৪। জুয়া   | الميسر ..... 131                           |
| ৩৫। ব্যভিচার  | الزنا ..... 132                            |
| ৩৬। সমকামিতা  | الواط ..... 134                            |
| ৩৭। আত্ম হত্যা  | الانتحار ..... 136                         |
| ৩৮। হত্যা   | القتل ..... 137                            |
| ৩৯। ইহুদী ও নাসারাদের সাথে বন্ধুত্ব                         | حب اليهود والنصارى ..... 139               |
| ৪০। নবী (ﷺ)-কে বিদ্রূপ করা                                  | استهزاء النبي صلى الله عليه وسلم ..... 141 |
| ৪১। মোরতাদ (ইসলাম গ্রহণ করার পর ইসলাম থেকে বের হয়ে যাওয়া) | الارتداد ..... 144                         |
| ৪২। আল কোরআ'নের আলোকে অধিকারসমূহ                            | الحقوق في ضوء القرآن ..... 146             |



|                                       |           |                             |
|---------------------------------------|-----------|-----------------------------|
| ৪৩। বান্দাদের অধিকারসমূহ              | ..... 147 | حقوق العباد                 |
| ৪৪। পিতা-মাতার অধিকারসমূহ             | ..... 152 | حقوق الوالدين               |
| ৪৫। সন্তানদের অধিকার                  | ..... 154 | حقوق الاولاد                |
| ৪৬। পেটের বাচ্চাদের অধিকারসমূহ        | ..... 155 | حقوق الجنين                 |
| ৪৭। নারীদের অধিকার সমূহঃ              | ..... 156 | حقوق المرأة                 |
| ৪৮। (ক) নারীর মানবিক অধিকারসমূহঃ      | ..... 156 | (الف) حقوق المرأة الانسانية |
| ৪৯। (খ) নারীর ধর্মীয় অধিকার সমূহঃ    | ..... 158 | (ب) حقوق المرأة الدينية     |
| ৫০। (গ) নারীদের অর্থনৈতিক অধিকারসমূহঃ | ..... 162 | (ج) حقوق المرأة الاقتصادية  |
| ৫১। (ঘ) নারীর সামাজিক অধিকারসমূহঃ     | ..... 167 | (د) حقوق المرأة الاجتماعية  |
| ৫২। মা                                | ..... 167 | الام                        |
| ৫৩। মেয়ে হিসেবে                      | ..... 169 | البنت                       |
| ৫৪। স্ত্রী হিসেবে                     | ..... 170 | الزوجة                      |
| ৫৫। ত্বালাক প্রাপ্তা হিসেবে           | ..... 173 | المطلقة                     |
| ৫৬। বিধবা হিসেবে নারী                 | ..... 175 | الارملة                     |
| ৫৭। আত্মীয়দের অধিকারসমূহ             | ..... 176 | حقوق الاقارب                |
| ৫৮। প্রতিবেশীদের অধিকার সমূহ          | ..... 177 | حقوق الجيران                |
| ৫৯। বন্ধুদের অধিকারসমূহ               | ..... 178 | حقوق الاحباء                |
| ৬০। মেহমানদের অধিকারসমূহ              | ..... 180 | حقوق الضيوف                 |
| ৬১। এতীমদের অধিকারসমূহ                | ..... 181 | حقوق اليتيم                 |
| ৬২। মিসকীনদের অধিকারসমূহ              | ..... 185 | حقوق المساكين               |
| ৬৩। ভিক্ষুকদের অধিকারসমূহ             | ..... 187 | حقوق السائلين               |
| ৬৪। মুসাফিরগণের অধিকার                | ..... 189 | حقوق المسافرين              |
| ৬৫। অধিনস্ত লোকদের অধিকারসমূহ         | ..... 191 | حقوق العبيد                 |
| ৬৬। প্রতিবেশি                         | ..... 192 | حقوق صاحب الجنب             |

|  |           |  |
|--|-----------|--|
| ৬৭। মৃতের অধিকারসমূহ   | ..... 193 | حقوق الميت                                       |
| ৬৮। বন্দীদের অধিকারসমূহ  | ..... 194 | حقوق الاسارى                                     |
| ৬৯। অমুসলিমদের অধিকার সমূহ                                     | ..... 195 | حقوق غير المسلمين                                |
| ৭০। জন্তুদের অধিকারসমূহ  | ..... 197 | حقوق الحيوانات                                   |
| ৭১। আল কোরআ'নের আলোকে<br>ইসলাম ও কুফরীর দন্দ                   | ..... 199 | معارضة الكفر مع الاسلام فى ضوء القرآن            |
| ৭২। ইহুদীরা... ফেতনাবাজ, অভিশপ্ত<br>এবং আল্লাহর অসন্তুষ্ট জাতি | ..... 200 | اليهود... مفسدون وملعونون ومغضوبون               |
| ৭৩। নাসারারা পথভ্রষ্ট জাতি                                     | ..... 208 | النصارى... ضالون                                 |
| ৭৪। সমস্ত মুশরেকরা মুসলমানদের শত্রু                            | ..... 210 | المشركون... كلهم اعداء المسلمين                  |
| ৭৫। মুনাফেকরা ইসলামের জন্য ভয়ানক একটি দল                      | ..... 213 | المنافقون... فئة خطيرة للإسلام                   |
| ৭৬। আমাদের নবী নূহ (আঃ)<br>এবং তাঁর জাতির সর্দারগণ             | ..... 216 | نبينا نوح عليه السلام و الملائق قومه             |
| ৭৭। হুদ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের-----                              | ..... 220 | نبينا هود عليه السلام والملائق قومه              |
| ৭৮। সালেহ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের-----                            | ..... 224 | نبينا صالح عليه السلام والملائق قومه             |
| ৭৯। আমাদের নবী ইবরাহীম (আঃ)<br>এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ        | ..... 228 | نبينا ابراهيم عليه السلام والملائق قومه          |
| ৮০। লূত (আঃ) এবং তাঁর কাউমের-----                              | ..... 230 | نبينا لوط عليه السلام والملائق قومه              |
| ৮১। আমাদের নবী শুআইব (আঃ) -----                                | ..... 233 | نبينا شعيب عليه السلام والملائق قومه             |
| ৮২। আমাদের নবী মূসা (আঃ) এবং<br>ফেরআউনের পরিবার                | ..... 237 | نبينا موسى عليه السلام وآل فرعون                 |
| ৮৩। রাসূলগণের একটি দল এবং এলাকাবাসী                            | ..... 242 | الرسلى واهل القرية                               |
| ৮৪। আমাদের নবী ঈসা (আঃ) এবং ইহুদীরা                            | ..... 245 | نبينا عيسى عليه السلام واليهود                   |
| ৮৫। সর্বশ্রেষ্ঠ নবী মোহাম্মদ (ﷺ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ      | ..... 247 | سيد الانبياء محمد صلى الله عليه وسلم واشراف قومه |



## অনুবাদের আরম্ভ

সমস্ত প্রশংসা সেই মহান আল্লাহ্ তা'লার জন্য যিনি মহাগ্রন্থ আল কোরআ'নকে মানব জাতির জন্য পথ প্রদর্শক হিসেবে অবতীর্ণ করেছেন, আর অসংখ্য দরুদ ও সালাম বর্ষিত হোক ঐ মহামানবের প্রতি যার চরিত্র ছিল কোরআ'নের বাস্তব নমুনা। মূলতঃ আল কোরআ'ন মানব জাতির জন্য একটি সংবিধান এবং তাদের মুক্তির দিশারী, কিন্তু দুঃখ্যজনক হলেও সত্যে এই যে, এই আল কোরআ'ন আজ বহু মুসলমানের নিকট শুধু একটি ধর্মীয় গ্রন্থ মাত্র, তাই তারা সময়ে সুযোগে আচার অনুষ্ঠানে বরকত সরূপ তা তেলওয়াত করে থাকে। অথচ বাস্তবতা হল এই যে, এই মহাগ্রন্থকে আমলে এনে ইতিহাস স্বীকৃত জাহেলিয়াতের যুগের লোকেরা মহামানব মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) স্বীকৃত সোনার মানুষে পরিণত হয়েছিল, এমনকি এই কোরআ'ন অবতীর্ণের পনেরশ বছর পরেও বহু অমুসলিম এই আলকোরআ'ন গবেষণা করে তাঁর সত্যতায় অভিতুত হয়ে শান্তির দ্বীন ইসলাম গ্রহণে নিজেকে ধন্য করেছে, অথচ আমাদের অনেক মুসলমান আজ এই আল কোরআ'নকে যথাযথভাবে আমলে না আনার কারণে তারা তাঁর যথাযথ সুফল থেকে বঞ্চিত হচ্ছে।

উর্দূভাষী সুলেখক জনাব ইকবাল কীলানী সাহেব তাঁর লিখিত “তালিমাত কোরআ'ন মাজীদ” নামক গ্রন্থে আল কোরআ'নের বিভিন্ন বিষয়সমূহকে দলীল প্রমাণের ভিত্তিতে সুন্দর ভাবে আলোচনা করেছেন যা পাঠে একজন মানুষ আলকোরআ'নের শিক্ষণীয় বিষয় সমূহকে সহজে বুঝতে পারবে এবং আল কোরআ'ন অনুযায়ী জীবন গঠনে আগ্রহী হবে।

আর এই মূল্যবান গ্রন্থটির বাংলা অনুবাদের দায়িত্ব আমি নগন্যের উপর অর্পিত হলে, একাজে আমার কাঁচা হাত হওয়া সত্ত্বেও আমি তার অনুবাদের কাজ শুরু করি এই আশায় যে, এই গ্রন্থ পাঠে বাংলাভাষী মুসলমান মহাগ্রন্থ আল কোরআ'ন সম্পর্কে সঠিক জ্ঞান আহরণ করে যথাযথ আমলের মাধ্যমে তারা তাদের ইহকাল এবং পরকালে উপকৃত হবে, আর এই উসীলায় মহান আল্লাহ্ এই গোনাহগারের প্রতি স্বদয় হয়ে তাকে ক্ষমা করবেন।

- ইহুদী নাসারাদের সাথে বন্ধুত্ব না রাখার বিধান একটি আলোকিত বিধান(সূরা নিসা-১৪৪)।
- ইসলামের শত্রু কাফেরদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করার বিধান একটি আলোকিত চিন্তা (সূরা আনফাল-৬০)
- গান-বাজনা হারাম হওয়ার বিধান আলোকিত চিন্তা (সূরা লোকমান-৬, ৭)
- দাড়ি রাখার বিধান একটি আলোকিত চিন্তা (সূরা ত্বা-হা-৯৪)

কিন্তু.....! হে নুতন আলোকিত চিন্তার ধারক ও বাহকরা!

ধর্ম নিরপেক্ষতার পতাকাবাহীরা! বাক স্বাধীনতার পক্ষালম্বীগণ! তোমাদের নিকটঃ

- \* পর্দার বিধান পশ্চাদপদতার আলামত।
- \* পুরুষকে নারীর উপর কর্তৃত্ববান করার বিধান নারী স্বাধীনতা বিরোধী।
- \* ইসলামী দন্ড বিধি আইন অমানবিক এবং অত্যাচারমূলক শাস্তি।
- \* একাধিক বিয়ে করার বিধান নারীদের প্রতি যুলুম করা।
- \* হত্যার বদলা হত্যা মানবতা বিরোধী।
- \* ইহুদী নাসারাদের সাথে বন্ধুত্ব সম্মান ও আত্মতৃপ্তি।
- \* কাফেরদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ সন্ত্রাসবাদ।
- \* গান বাজনা মনের প্রশান্তি।
- \* দাড়ি রাখা পশ্চাদপদতা।

নিঃসন্দেহে আমাদের এবং তোমাদের মাঝে এ দন্ডের সামাধান খুব শীঘ্রই হবে, যখন সূর্য এক মাইল দূরত্বে অবস্থান করবে, পৃথিবী আগুনের ন্যায় উত্তপ্ত হবে, আর প্রত্যেক মানুষ ঘামের মাঝে হাবুডুবু খাবে।

- তোমরাও খালি পা এবং উলঙ্গ শরীরে থাকবে এবং আমরাও খালি পা ও উলঙ্গ শরীরে থাকব।
- \* তোমরাও আসামীর কাঠগড়ায় দাঁড়াবে এবং আমরাও আসামীর কাঠগড়ায় দাঁড়াব।
- \* তোমাদের কাছেও কোন অনুবাদক থাকবে না, আর আমাদের কাছেও কোন অনুবাদক থাকবে না।



- \* তোমাদের কোন সুপারিশ গ্রহণ করা হবে না এবং আমাদেরও কোন সুপারিশ গ্রহণ করা হবে না।
- \* তোমরাও কোন বেচা কেনা করতে পারবে না আর আমরা ও না।  
রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা তোমাদের কাছেও থাকবে না এবং আমাদের কাছেও থাকবে না।  
তখন.....!
- আদালত স্থাপিত হবে।
- আল্লাহ্ তা'লা তাঁর আসনে আসীন হবেন।
- ফেরেশতাগণ সাজ্জিদভাবে উপস্থিত হবে।
- নবীগণের সর্দার, নবীগণের ইমাম, সত্যবাদী, সম্মানিত, অনুগ্রহ প্রায়ন, বিশ্বস্ত রাসূল মোহাম্মদ বিন আবদুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সাক্ষী হবেন।
- মামলা পেশ হবে..... এবং এর পরে!
- আলোকিত চিন্তাধারার ধারক ও বাহক এবং পশ্চাদমুখী চিন্তাধারার ধারক ও বাহকদের মাঝে যথাযথ ফায়সালা করা হবে।
- ফায়সালার পর তোমরা তোমাদের রাস্তা অবলম্বন করবে, আর আমরা আমাদের রাস্তা অবলম্বন করব।
- অতএব ফায়সালার সময় আসা পর্যন্ত তোমরাও অপেক্ষা করতে থাক আর আমরাও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করতে থাকি।

﴿فَأَنْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنْتَظِرِينَ﴾

“তোমরা অপেক্ষা কর আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষমানদের অন্তর্ভুক্ত।”

(সূরা আ'রাফ-৭১)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَآلِهِ وَاصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ

## লেখকের আরব

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على سيد المرسلين، والعاقبة  
للمتقين، أما بعد!

কোরআ'ন অবতীর্ণের পূর্বে আরবের সামাজিক অবস্থা, সামাজিকতা, চারিত্রিক, রাজনৈতিক, সর্বদিক থেকে অন্ধকার এবং বর্বরতার অতলতলে নিমজ্জিত ছিল। সর্বত্র শিরক, মূর্তিপূজার ছয়লাভ ছিল, মানুষ একে অপরের রক্ত পিপাসু এবং একে অপরের সম্পদ ও সম্মান লুণ্ঠনে ব্যস্ত ছিল, প্রতিশোধের বদলে প্রতিশোধ নেয়ার জন্য যুগ যুগ ধরে যুদ্ধ চলত, কন্যা সন্তানদেরকে জীবিত প্রথিতকরণ সাধারণ বিষয় ছিল। অসংখ্য নারীর সাথে অবৈধ সম্পর্ক স্থাপন করাকে গৌরবের বিষয় মনে করা হত। মদপান, জুয়া, ব্যভিচার তাদের জীবনের অবিচ্ছেদ্য অংশে পরিণত হয়েছিল। উলঙ্গপনার অবস্থা ছিল এই যে, নারী ও পুরুষরা উলঙ্গ হয়ে বাইতুল্লাহ (কা'বা ঘরের) ত্রাওয়াফ করাকে সোয়াবের কাজ বলে মনে করত। পরীষ মিসকীন, বিধাব, ইতীমদের দেখার মত কেউ ছিল না। এমতাবস্থায় যখন কোরআ'ন অবতীর্ণ হল তখন মাত্র কয়েক বছরের অল্প সময়ে কোরআ'নের শিক্ষা আশ্চর্য জনক ভাবে আরবদের এদৃশ্য পট পরিবর্তন করে দিল, মাওলানা আলতাফ হোসাইন হালী (রাহিমাহুল্লাহ) বলেনঃ

এটা কি বিজলীর গর্জন না মহান পথ প্রদর্শকের আওয়াজ ছিল

যা আরব ভূমিকে পরিপূর্ণরূপে পরিবর্তন করে দিয়েছিল।

যে সমস্ত লোকেরা নিজের কন্যা সন্তানকে জীবন্ত প্রথিত করণকে সাধারণ কিছু বলে মনে করত, স্বয়ং তারা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) খেদমতে উপস্থিত হয়ে তাদের অপরাধ স্বীকার করে তাদের কৃতকর্মের জন্য নয়নাশ্রু ঝড়াচ্ছিল, এক ব্যক্তি উপস্থিত হয়ে আবেদন করল হে আল্লাহর রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আমার এক মেয়ে ছিল যে আমার নিকট অত্যন্ত আদরের ছিল, আমি তাকে ডাকলে সে দৌড়াতে দৌড়াতে আমার নিকট আসত, একদিন আমি তাকে ডাকলাম এবং সাথে নিয়ে চললাম, পথিমধ্যে একটি কুয়া পেয়ে আমি তাকে সেখানে নিক্ষেপ করলাম, তার সর্বশেষ আওয়াজ আমার কানে আসছিল আর সে বলতে ছিল 'ও আকা ও আকা' একথা শুনে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) নয়নাশ্রু ঝড়াতে লাগলেন, লোকেরা ঐ ব্যক্তিকে কথা বলতে নিষেধ করতে চাইল, তিনি বললেনঃ তাকে বাধা দিওনা, যে বিষয় সম্পর্কে তার জানার যথেষ্ট অনুভূতি আছে, তাকে সে বিষয়ে প্রশ্ন করতে দাও। ঘটনা শোনার পর তিনি বললেনঃ জাহেলিয়াতের যুগে যা কিছু হয়েছে ইসলাম গ্রহণ করার ফলে আল্লাহ তা ক্রমা করে দিয়েছেন, এখন নুতন করে জীবন যাপন শুরু কর। (দারেমী)

ঐ ব্যক্তি যে ধন-সম্পদের জন্য ডাকাতি করত, লুটপাট করত, কোরআ'নের শিক্ষা তাকে পৃথিবীর ধন-সম্পদের লোভ থেকে এত অনাগ্রহী করেছে যে, ধন-সম্পদের চেয়ে তুচ্ছ আর কোনকিছু তার কাছে ছিল না। একদা ত্বালহা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তার ঘরে আসল, চেহরায় চিন্তার ছাপ স্পষ্ট ছিল, স্ত্রী এ ব্যাপারে জিজ্ঞেস করলে সে উত্তরে বললঃ আমার নিকট কিছু সম্পদ জমা হয়ে গেছে এজন্য আমি চিন্তা করছি, স্ত্রী বললঃ তাতে চিন্তিত হওয়ার কি আছে? স্বামী-স্ত্রী পরামর্শ করে লোকদেরকে ডেকে আনল এবং ত্বালহা তার জমাকৃত সম্পদ চার লক্ষ দিরহাম লোকদের মাঝে বন্টন করে দিল। (ত্বাবারানী)

ঐ সমস্ত লোক যারা দিন-রাত মদ, পানির মত ব্যবহার করত তারা মদ হারাম হওয়ার বিধান অবতীর্ণ হলে (সূরা মায়দা-৯০) তারা এমনভাবে মদ পরিহার করল যেন মদের ব্যাপারে তাদের কোন ধারণাই ছিল না।

বুরাইদা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) এর পিতা বলেনঃ “আমরা একটি টিলার উপর বসে মদ পান করছিলাম, ওখান থেকে আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) নিকট উপস্থিত হলাম, তখন মদ হারাম হওয়ার আয়াত অবতীর্ণ হল, আমি দ্রুত ফিরে এসে আমার সাথীদেরকে আয়াতটি শোনালাম, আমাদের মধ্যে কেউ কেউ মদ পান করা শেষ করেছিল আবার কেউ পেয়ালা মুখে লাগিয়ে মদ পান করছিল, কেউ হাতে পেয়ালা ধরে ছিল, আমার আওয়াজ শোনা'মাত্র সবাই মদের পেয়ালা মাটিতে ঢেলে দিল, আর যখন আমি আয়াতের শেষ অংশ অর্থাৎঃ

অর্থঃ “তোমরা কি মদ পান করা থেকে বিরত থাকবে? সবাই সম্মত হয়ে বলে উঠলঃ

অর্থঃ হে আমাদের রব আমরা বিরত থাকলাম। (ইবনু কাসীর)

ঐ সমাজ যেখানে উলঙ্গপনা এবং বে-হায়াপনার ছয়লাভ চলছিল, একজন নারীকে দশ দশজন পুরুষের সাথে সম্পর্ক রাখা বৈধ বিয়ের মর্যাদা ছিল, সেখানে কোরআ'নের শিক্ষা নারীদের মধ্যে এত লজ্জাবোধের অনুভূতি সৃষ্টি করতে পেরেছিল যে, যখন কোরআ'নে পর্দার আয়াত অবতীর্ণ হল তখন যেসমস্ত নারীদের কাছে পর্দা করার মত কাপড় ছিল না তারা তাদের পরিধানের কাপড় ছিড়ে উড়না বানিয়েছিল।

আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেনঃ আল্লাহ অনুগ্রহ করেন ঐ সমস্ত নারীদের প্রতি যারা

﴿وَلَيَضْرِبَنَّ يَصْرِيحًا عَلَىٰ جُوبِهِنَّ﴾

অর্থঃ “এবং তারা যেন তাদের মাথার উড়না তাদের বক্ষদেশে ফেলে রাখে। (সূরা নূর-৩১)

এ আয়াত অবতীর্ণ হওয়া মাত্রই তারা তাদের পরিধানের বস্ত্র ছিড়ে তা দিয়ে উড়না বানিয়েছিল। (বোখারী)

কোরআ'ন মাজীদ বান্দাদেরকে তাদের রবের সাথে এত গভীর সম্পর্ক স্থাপন করে তোলেছে যে, তার সামনে পৃথিবীর বড় বড় নে'মতসমূহও সাধারণ এবং মূল্যহীন মনে হয়েছে।

আবুত্বালহা নিজের আঙ্গুর এবং খেজুরের সুন্দর সাজানো ঘন সবুজ বাগানে দাঁড়িয়ে নামায আদায় করতেন, নামাযরত অবস্থায় মন আল্লাহর দিক থেকে ফিরে বাগানের দিকে চলে আসল এবং সে ভুলে গেল যে কত রাকাত নামায আদায় করেছে, আল্লাহর সাথে সম্পর্কের ক্ষেত্রে এতটুকু বাধা হওয়ার রাগে নামায শেষ করেই রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) নিকট আসল এবং আবেদন করল, ইয়া রাসূলুল্লাহ এ বাগান আমাকে নামাযের সময় আল্লাহর দিক থেকে অন্যমনস্ক করে দিয়েছে, তাই আমি তা দান করে দিলাম তা আপনি যেখানে খুশী সেখানে ব্যবহার করুন।

ঐ সমাজ যেখানে মানুষের মধ্যে পরকালের জওয়াবদেহিতা এবং আল্লাহর ভয় থেকে পরিপূর্ণরূপে গাফেল করে দিয়ে ছিল, তাদেরকে সর্বপ্রকার পাপকাজে নিমজ্জিত করে দিয়েছিল, কোরআ'নের শিক্ষা তাদের অন্তরে পরকালের এতটা ভয় সৃষ্টি করেছিল যে, তারা প্রতি মূহর্তে পরকালকেই অগ্রাধিকার দিত, মায়েয বিন মালেক রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) নিকট উপস্থিত হয়ে নিজে স্বীকার করল যে, সে পাপে লিপ্ত হয়েছে এবং তাকে ঐ পাপ থেকে মুক্ত করা হোক, তিনি মায়েয (রাযিয়াল্লাহু আনহু)কে তার পাপের কথা স্বীকার করা সত্ত্বেও কিছু প্রশ্ন করে তাকে তার অবস্থান থেকে হটাতে চাইলেন, কিন্তু মায়েয (রাযিয়াল্লাহু আনহু) নাছোড় বান্দার ন্যায় বলতে লাগল যে, আমাকে এ পাপ থেকে মুক্ত করুন। তাই তিনি রায় দিলেন এবং মায়েয (রাযিয়াল্লাহু আনহু)কে পাথর মেরে হত্যার মাধ্যমে শাস্তি কার্যকর করা হল। (মুসলিম)

যে সমাজে নিকট আত্মীয়দের মৃত্যুতে মৃতদের জন্য মাতাম করা, চেহারা স্ফুট করা, উচ্চস্বরে কান্না কাটি করা, বছর কি বছর ধরে শোক পালন করা, গৌরবের বিষয় মনে করা ইত্য, ঐ সমাজের এক একজন ব্যক্তি এমন ধৈর্য এবং নিয়মঅনুবর্তীতায় অভ্যস্ত হল যে, পুরুষতো বটেই এমনকি নারীরাও ধৈর্যের দৃষ্টান্ত হয়ে গেল।

উন্মে আতীয়া বাসরায় স্বীয় ছেলের অসুস্থতার কথা মদীনায় বসে জানতে পারলেন, তাই তিনি বাসরা সফর করার দৃঢ় সংকল্প করলেন, বাসরা পৌঁছে তিনি জানতে পারলেন যে, দু'দিন পূর্বে তার ছেলে মৃত্যুবরণ করেছে, উন্মে আতীয়া দুঃখ্য ভরাক্রান্ত হৃদয় হলেন বটে, কিন্তু মুখ দিয়ে শুধু বলছিলেন 'ইন্না লিল্লাহু ওয়া ইন্না ইলাইহি রাজিউন', এটা ব্যতীত তার মুখ দিয়ে অন্য আর কোন শব্দ বের হয় নাই।

এরপর চতুর্থ দিন আতুর তলব করে তা ব্যবহার করলেন এবং বললেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) স্বামী ব্যতীত অন্য কারো মৃত্যুতে তিন দিনের অধিক শোক পালন করতে নিষেধ করেছেন।



যে সমাজে নারীর মর্যাদা বা সম্মানের কোন লেস মাত্রও ছিল না, কোরআ'নের শিক্ষা পুরুষদের অন্তরে এমন পরিবর্তন এনে দিয়েছিল যে, তারা নিজেরাই নারীর সম্মান এবং সম্মানের রক্ষক হয়ে গেল, এক মহিলা মসজিদ থেকে বের হচ্ছিল, আবু হুরাইরা অনুভব করল যে, সে সুগন্ধি ব্যবহার করেছে, আবু হুরাইরা মহিলাকে ওখানে থামিয়ে জিজ্ঞেস করল হে আল্লাহর বান্দী তুমি কি মসজিদে যাচ্ছ? সে বললঃ হাঁ। আবু হুরাইরা বললঃ আমি আমার প্রিয় নবী আবুল কাসেম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে বলতে শুনেছি, তিনি বলেছেনঃ যে নারী মসজিদে সুগন্ধি ব্যবহার করে আসে, ততক্ষণ পর্যন্ত তার নামায কবুল হবে না যতক্ষণ না সে তার ঘরে ফিরে গিয়ে গোসল করে আসে। (আহমদ)

ঐ লোকেরা যারা সর্বদা একে অপরের রক্ত পিপাসু ছিল, যাদের নিকট মানব আত্মার কোন মূল্য ছিলনা, কিতাব ও সুন্নাহের শিক্ষা তাদেরকে শুধু নিজেদেরই নয় বরং অন্যদের জীবন রক্ষক বানিয়ে দিয়েছে।

খোবাইব আনসারী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) কে তার বংশের লোকেরা ধোঁকায় ফেলে গ্রেপ্তার করে মক্কার মোশরেকদের নিকট বিক্রি করে দিয়েছিল, মোশরেকরা তার কাছ থেকে বদরের যুদ্ধে নিহতদের বদল নিতে চাইতে ছিল, সেটা ছিল যুদ্ধ বিগ্রহ নিষিদ্ধ মাস, তাই তারা তাকে হত্যা করার সময় পিছিয়ে দিল, আর খোবাইব আনসারী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) কে বেড়ি পরিধান করে এক ঘরে বন্দী করে রাখল, নিষিদ্ধ মাস শেষ হয়ে গেলে মক্কার কোরাইশরা খোবাইব (রাযিয়াল্লাহু আনহু)কে হত্যার তারিখ নির্ধারণ করল, খোবাইব (রাযিয়াল্লাহু আনহু) নিহত হওয়ার আগে পবিত্র হওয়ার জন্য বন্দীশলার কর্তার নিকট ব্রেট চাইল, কর্তা তার কম বয়সী বাচ্চার মাধ্যমে ব্রেট দিয়ে পাঠাল, কিন্তু পরে সে চিন্তায় পড়ে গেল যে, আমি কি বোকামী করলাম হত্যার আসামীর নিকট নিজের সন্তানের হাতে ব্রেট দিয়ে পাঠলাম, কর্তা পেরেশান অবস্থায় দৌড়িয়ে আসল এবং দেখল খোবাইব (রাযিয়াল্লাহু আনহু) ব্রেট হাতে নিয়ে বাচ্চাকে জিজ্ঞেস করছে, হে ছেলে তোমার মা তোমার হাতে ব্রেট পাঠানোর সময় আমাকে ভয় করে নাই? কর্তা সাথে সাথে ঐ পেরেশান অবস্থায় বলে উঠল, হে খোবাইব আমি এ বাচ্চা তোমার নিকটে আল্লাহর নিরাপত্তায় পাঠিয়েছি, খোবাইব (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বাচ্চার মায়েল চিন্তা দূর করার জন্য বললঃ চিন্তা করবে না, আমি এ নিশ্চাপ শিশুকে হত্যা করব না, আমাদের ধর্মে অত্যাচার, ওয়াদা ভঙ্গ করা জায়েজ নয়। যে ব্যক্তিকে আগামী দিন অন্যায়ভাবে নিহত হতে হবে, সে নিজেই কাউকে অন্যায়ভাবে হত্যা করা ঠিক মনে করে নাই। ঐ সমস্ত লোক যারা জাহেলিয়াতের যুগে হালাল ও হারামের মধ্যে কোন পার্থক্য করত না, কোরআ'নের শিক্ষা তাদেরকে আমানতদারী এবং ধার্মিকতার এমন স্তরে নিয়ে এসেছে যে, কারো কাছ থেকে একটি পয়শা হারাম ভাবে নেয়ার তারা মোটেও পছন্দ করত না। সা'দ বিন ওবাদা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কোন বংশের কাছ থেকে যাকাত আদায়ের দায়িত্ব দিলেন এবং সাথে সাথে এ উপদেশ দিলেন যে, দেখ! কিয়ামতের দিন যেন এমন না হয় যে,

তোমার কাঁধে বা পিঠে যাকাতের উঠ চিল্লাতে থাকে, সা'দ বিন উবাদা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বললঃ ইয়া রাসূলুল্লাহু আমি এধরণের দায়িত্ব থেকে অবসর চাচ্ছি, তখন রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তার স্থলে অন্য একজনকে দায়িত্ব দিলেন। (ত্বাবারানী)

যে সমাজে ব্যক্তি স্বার্থ, নির্দয় আচরণ, লুটপাট সাধারণ বিষয় ছিল, কিতাব ও সুন্নাহের শিক্ষা তাদেরকে অল্প কয়েক বছরের সংক্ষিপ্ত সময়ে সমবেদনা পরায়ণ, একে অপরের কল্যাণকামী, আত্মত্যাগী, করে তুলেছিল।

ইয়ারমুকের যুদ্ধে কতিপয় সাহাবা প্রচণ্ড গরমের তাপে আহত অবস্থায় পিপাসায় কাতরছিল, ইতিমধ্যে একজন মুসলমান পানি নিয়ে আসল এবং আহতদেরকে তা পানকরাতে চাইল, তাদের প্রথম ব্যক্তি বললঃ দ্বিতীয় ব্যক্তিকে পানি পান করাও, যখন দ্বিতীয় ব্যক্তিকে পানি পানকরাতে গেল তখন সে বললঃ তৃতীয়জনকে পানি পান করাও, পানি পরিবেশনকারী তখনও তৃতীয়জনের নিকট পৌঁছে নাই, এতিমধ্যেই প্রথম ব্যক্তি শহিদ হয়ে গেছে, তখন সে দ্বিতীয় জনের নিকট আসল, ততক্ষণে সেও তার মালিকের ডাকে সাড়া যুগিয়েছে, আর যখন তৃতীয়জনের নিকট পৌঁছল, তখন সেও পানি পান না করে শাহাদাতবরণ করেছে। (ইবনুকাসীর)

মূল বিষয় হল এই যে, কোরআ'ন মাজীদ অত্যন্ত অল্প সময়ে একত্ববাদের বিশ্বাসের সাথে সাথে মানুষের চরিত্র এবং কর্মের দিক থেকে এমন এক উন্নতমানের মানুষ তৈরী করেছে, ইতিহাসে যার কোন তুলনা নেই, শুধু এতটুকু বুঝে নিন যে কোরআ'ন মাজীদ ২৩ বছরের সংক্ষিপ্ত সময়ে কয়লাকে স্বর্ণে পরিণত করেছে।

আল্লাহ তা'লা কোরআ'ন অবতীর্ণের উদ্দেশ্য বর্ণনা করতে গিয়ে বলেনঃ

﴿الرَّكَتَبُ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ﴾

অর্থঃ “এটি একটি গ্রন্থ, যা আমি অবতীর্ণ করেছি আপনার প্রতি, যাতে আপনি মানুষকে অন্ধকার থেকে আলোর পথে বের করে নিয়ে আসেন, পরাক্রান্ত প্রশংসার যোগ্য পালনকর্তার নির্দেশে তারই পথের দিকে। (সূরা ইবরাহীম-১)

সূরা ইবরাহীমের উল্লেখিত আয়াত থেকে নিম্নোক্ত দুটি বিষয় স্পষ্ট হয়ঃ

- ১) কোরআ'নের শিক্ষাই মানুষকে অন্ধকার থেকে আলোর পথে আনার ক্ষমতা রাখে, বা অন্যভাবে বলা যেতে পারে যে, মানুষকে অন্ধকারছন্ন চিন্তা চেতনা থেকে আলোকিত চিন্তা চেতনার পথে আনতে পারে।

- ২) কোরআ'ন অবতীর্ণের আগে সমস্ত জাহেলী কর্মকান্ড যেমনঃ শিরক, কুফর, মদ, জুয়া, ব্যভিচার, খারপকাজ, উলঙ্গপনা, পর্দাহীনতা, বে-হায়াপনা, গানবাজনা, রক্তপাত, মিথ্যা, ধোঁকাবাজি, চক্রান্ত, চুরী, ডাকাতি, লুটপাট, মারামারি ইত্যাদিকে আল্লাহ্ অন্ধার হিসেবে চিহ্নিত করেছেন। অথচ কোরআ'ন অবতীর্ণের পরে উল্লেখিত পাপকাজসমূহ থেকে পাক পবিত্র হয়ে তাওহীদে(একত্ববাদে) বিশ্বাসী হয়ে নামায, রোযা, যাকাত, হজ্জ, আমানতদারী, ধর্মভীরুতা, সত্যবাদীতা, সহনশীলতা, কল্যাণকামিতা, আত্মত্যাগ, নেকী, আল্লাহভীতি, সততা, লজ্জাশীলতা, পর্দা ইত্যাদির ন্যায় উন্নত গুণাবলীকে আল্লাহ্ তা'লা আলো বলে আখ্যায়িত করেছেন।

অতএব আলো এবং আলোকিত চিন্তা চেতনা শুধু তাই যা আল্লাহ্ তা'লা আলো বলে আখ্যায়িত করেছেন, যদি সমস্ত পৃথিবীও ঐ আলোকে অন্ধকার বলে আখ্যায়িত করতে থাকে, তবুও তা আলো হিসেবেই থাকবে, অন্ধকার বলে বিবেচিত হবে না, আর যাকে আল্লাহ্ অন্ধকার বলেছেন তা অন্ধকার হিসেবেই থাকবে, যদিও সমস্ত পৃথিবী তাকে আলো বলতে শুরু করে, অবশ্য আলোকে অন্ধকার বলে বিবেচনাকারী এবং অন্ধকারকে আলো বলে বিবেচনাকারীরা নিজেরাই নিষ্ফল হবে।

অতএব আমাদের এ দৃঢ় ঈমান আছে যে নারীকে পর্দা করে সমাজকে ফেতনা ফাসাদ থেকে রক্ষা করা, পুরুষকে নারীদের উপর কর্তৃত্বকারী হিসেবে মানা, পারিবারিক নিয়মকে আইনে পরিণত করা, ইসলামী দণ্ডবিধি আইন বাস্তবায়ন করা, সমাজকে মদ, ব্যভিচার, অন্যায়ের মত নিকৃষ্ট অপরাধ থেকে পাক পবিত্র করা, চোর এবং ডাকাত থেকে সমাজকে সংরক্ষণ করা, হত্যার বিনিময়ে হত্যার আইন বাস্তবায়ন করে, হত্যা এবং রক্তপাত দূর করা, একাধিক বিয়ে প্রথাকে মেনে নিয়ে সমাজকে গোপন প্রেম, বাড়ী থেকে বের করে নিয়ে যাওয়া, আদালতের বিয়ের ন্যায় বে-হায়া এবং অশ্লীলতা থেকে পবিত্র করে, মিথ্যা অপবাদের আইন বাস্তবায়ন করে নারীকে সম্মান এবং তার সম্ভ্রম রক্ষা করা, ইসলামের দুশমন কাফেরদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করা স্বয়ং আলোকিত চিন্তা চেতনা।

#### অপশক্তিধরদের আলোকিত চিন্তা চেতনাঃ

বর্তমান পৃথিবীর বড় অপশক্তি আমেরিকা কখনো 'নিউ ওয়ার্ল্ড অর্ডার' 'গ্লোবাইজেশন' নামে নিজেদের বহুবাদী নাস্তিকতাবাদী সংস্কৃতিকে আলোকিত চিন্তা চেতনা বলে আখ্যায়িত করে জোরপূর্বক সমগ্র বিশ্বের উপর তা চাপিয়ে দিতে চায়, দুঃখের বিষয় হল এই যে, স্বয়ং মুসলমানদের মধ্যে কিছু লোক অপশক্তিধরের ভয়ে অথবা দীন সম্পর্কে অজ্ঞ হওয়ার কারণে অপশক্তিধরের সংস্কৃতিকে উন্নত, নিরপেক্ষ এবং আলোকিত চিন্তার ধারক বলে মুসলমানদের উপর চাপিয়ে দেয়ার জন্য চেষ্টা করছে। প্রিয় জনাভূমি (লিখকের) ইসলামী প্রজাতন্ত্র পাকিস্তানেও এ 'ভাল কাজটিকে' বড় জিহাদের চেতনা মনে করে কাজ করা হচ্ছে, এর কিছু দৃষ্টান্ত দ্রঃ

- ১) পাকিস্তানের প্রেসিডেন্ট তার এক বক্তব্য বলেছেনঃ চরম পন্থী মৌলভীদের ইসলামের আমাদের দরকার নেই, যদি কারো কাছে বোরকা এবং দাড়ি পছন্দ হয় তাহলে সেখেন তা তার ঘরে সীমাবদ্ধ রাখে, আমরা তাদের এ বোরকা এবং দাড়ি রাষ্ট্রের উপর চাপিয়ে দিতে দিব না।<sup>১</sup>
- ২) লন্ডনে প্রেস কন্ফারেন্সে বক্তব্য দিতে গিয়ে দেশের প্রধানমন্ত্রী তার চিন্তা চেতনার কথা বর্ণনা করতে গিয়ে বলেনঃ “কিছু মৌলবাদী সংগঠন আমাদেরকে কয়েক শতাব্দী পিছনে নিয়ে যেতে চায়, আমাদেরকে যুগের সাথে তাল মিলিয়ে চলতে হবে, ধর্মীয় অন্ধত্ব চায় যে আমি চোরের হাত কেটে দেই, আমি কি সমস্ত গরীবদের হাত কেটে তাদেরকে টুঙা করে দেব? না তা কখনো হতে পারে না, চরমপন্থী গ্রুপ আমাদের উপর তাদের ইচ্ছা চাপিয়ে দিতে চায়, কিন্তু এ সল্প লোকদের জানা থাকা উচিত যে, আমরা একবিংশ শতাব্দীতে বেঁচে আছি, আমরা চরম পন্থীদেরকে তাদের চিন্তা চেতনা প্রকাশ করতে অনুমতি দেব না।<sup>২</sup>
- ৩) বিবিসিকে সাক্ষাৎকার দিতে গিয়ে প্রধান মন্ত্রীর স্ত্রী বলেনঃ নারীদেরকে ঘরে বন্দী রাখা একটি পশ্চাদমুখী চিন্তা, পর্দায় লুকিয়ে থাকা নারীরা ইসলামের পশ্চাদমুখীতার চিত্র প্রকাশ করছে, কিছু লোক নারীদেরকে ঘরের মধ্যে বন্দী রাখতে এবং তাদেরকে পর্দা করাতে চায়, যা একেবারেই ভুল।<sup>৩</sup>
- ৪) কোহাটে এক বৈঠকে আলোচনা করতে গিয়ে পাকিস্তানের প্রধান বলেছেনঃ ইসলামের পশ্চাদ পদতা রাষ্ট্রের উন্নতীর পথে বাধা, কেউ দাড়ি রেখেছে তো ভাল, কিন্তু আমাকে বলবে না যে, আমি দাড়ি রাখব বা না রাখব। ফিল্মি পোষ্টার, গান বাজনা, দাড়ি নারাকা, মহিলাদেরকে বোরকা পরিধান না করানো, সেলওয়ার, কামিজ, পেণ্ট এবং এল এফ, এগুলো ছোট খাট বিষয় অতএব এসুলোকে ইসু বানাবে না, এগুলো ছোট চিন্তার লোকদের কাজ, পাকিস্তান বিরাট চেলেন্জের মুখে আছে, ইসু হল এই যে, দেশে কার আইন চলবে? আমরা উন্নত ইসলাম চাই, যা কায়েদে আযম এবং আল্লামা ইকবালের চিন্তায় ছিল, উন্নয়নশীল পাকিস্তান, কোন ধর্মীয় রাষ্ট্র নয়, ইসলাম বাস্তবায়নের জন্য মানুষের চিন্তা চেতনার মধ্যে পরিবর্তন দরকার, সমগ্র জাতি গ্রহ, যোগ্য সংস্কৃতি চায়, ইসলামে সকলের অধিকার সংরক্ষণ করা হয়েছে, তার মর্যাদা বুঝুন।<sup>৪</sup>

<sup>১</sup> -রোযনামা নাওয়ায়ে ওয়াক্ত, লাহোর ১৬ ডিসেম্বর ২০০৪ইং।

<sup>২</sup> -রোযনামা নাওয়ায়ে ওয়াক্ত, লাহোর ৮ ডিসেম্বর ২০০৪ইং।

<sup>৩</sup> -রোযনামা নাওয়ায়ে ওয়াক্ত, লাহোর ৮ ডিসেম্বর ২০০৪ইং।

<sup>৪</sup> -রোযনামা নাওয়ায়ে ওয়াক্ত, লাহোর ১১ ডিসেম্বর ২০০৩ইং।



### পাকিস্তানের প্রধানের আরো কিছু বক্তব্যঃ

৫) সেকেলে চিন্তা চেতনা এবং প্রাচীন বর্ণনাসমূহের উন্নিতির এ যুগে মোটেও কোন দরকার নেই, বর্তমান যুগ উন্নিতির এমন স্তরে এসে পৌঁছেছে যে অতীতের সাথে তার সমস্ত সম্পর্ক ছিন্ন হয়ে গেছে। সাইন্স, টেকনোলজী এবং উন্নত জীবনযাপনের দ্রুততায় ধর্ম কালের সাথী হতে পারবে না, চাদর, চার দেয়াল, পর্দা, স্কার্ভ, দাড়ি মোল্লাদের ধর্ম এবং পশ্চাদ পদতায় নিদর্শন, তলওয়ার দিয়ে যুদ্ধ করার যুগ শেষ হয়ে গেছে, এখন এর পরিবর্তে ডিবলোমাসীর মাধ্যমে কাজ করা হয়, অপরাধ, ডাকাতি ইত্যাদির শাস্তি ইসলামী বিধান পরিহার করে যুগউপযুগী বিধান আবিষ্কার করতে হবে, চোরের হাত কেটে জাতিকে টুন্ডা করা যাবে না।<sup>৫</sup>

### রাষ্ট্র প্রধানের বক্তব্যের সারসর্ম হল এইঃ

- ক) দাড়ি, পর্দা চরমপন্থী মৌলভীদের ইসলাম।
- খ) চোরের হাতকাটা ধর্মীয় পাগলামীর বহিঃপ্রকাশ।
- গ) ধর্ম কালের সাথে তাল মেলাতে পারবে না।
- ঘ) জিহাদের যুগ শেষ হয়ে গেছে, এখন জিহাদ পরিহার করতে হবে।
- ঙ) গবেষণার মাধ্যমে ইসলামী দন্ডবিধিতে পরিবর্তন আনতে হবে।

পর্দা, দাড়ি, ইস্কার্ভ, জিহাদ, ইসলামী দন্ড বিধির কথা আলোচনা করার আগে রাষ্ট্রপ্রধান এও বলেছেনঃ সেকেলে চিন্তা চেতনা এবং প্রাচীন বর্ণনাসমূহের উন্নিতির এ যুগে মোটেও কোন দরকার নেই।

যেন উল্লেখিত অনইসলামী কনুনসমূহ আলোকিত চিন্তা-চেতনা এবং উন্নিতির সাথে সম্পর্ক রাখে, সম্ভবত এটাই কারণ যে, রাষ্ট্র প্রধান ইসলামী প্রজাতন্ত্র পাকিস্তানের সমস্ত ইসলামী গৌরবকে খতম করার এবং পাশ্চাত্য সংস্কৃতিকে দেশের উপর চাপিয়ে দেয়ার জন্য প্রস্তুতি নিচ্ছে, দাড়ি, পর্দার বিরোধিতা, ইসলামী দন্ডবিধিতে অসন্তুষ্টি, আল্লাহ্র পথে জিহাদের বিরোধিতা, খেলাফত (ইসলামী আইন) এর প্রতি অসন্তুষ্টি,<sup>৬</sup> সিনামা, গান-বাজনার সমর্থন, নিজের গৌরবময় অতীত ইতিহাস থেকে পিছপা, হিন্দুয়ানা সংস্কৃতি এবং নারী পুরুষের সম্মিলিত মেরাধন, ইসলামী প্রতিষ্ঠানসমূহের উপর নব্বয় দারী, বিদেশী শিক্ষার্থীদের জন্য পাকিস্তানী শিক্ষা

<sup>৫</sup> - মাহেনামা মোহাম্মদেস, লাহোর, মে, ২০০৫ ইং।

<sup>৬</sup> - ইসলামী রাষ্ট্রনীতি সম্পর্কে রাষ্ট্র প্রধানের ধারণা এই যে, পাকিস্তানে ইসলামী রাষ্ট্র নীতি বাস্তবায়ন যোগ্য নয়, এগুলো কিছু পরীর কিস্‌সার ন্যায় যা উন্নিতির এ যুগে প্রযোজ্য নয়। (মাজল্লা দাওয়া, লাহোর, শা'বান ১৪২৪ হিঃ।

প্রতিষ্ঠানের দরজা বন্ধ, গোত্রীয় অঞ্চলসমূহে সঠিক আকীদা বিশ্বাসী লোকদের রক্তপাত করা, শিক্ষা ব্যবস্থা থেকে কোরআ'নের সূরা এবং আয়াতসমূহ ছাটাই করা, মুসলিম বিজয়ীদের কর্মকান্ড সম্বলিত বিষয়সমূহ খতম করা, সাহাবাগণের ব্যাপারে 'শহিদ' শব্দটি উঠিয়ে দিয়ে 'নিহত' শব্দ ব্যবহার করা, গৌরবজনক নিদর্শনসমূহের কথা শিক্ষা ব্যবস্থা থেকে দূর করা, হিন্দু সংস্কৃতি এবং হিন্দু শাসকদের ইতিহাস শিক্ষাব্যবস্থায় চালু করা, ক্লাস ওয়ান থেকে ইংরেজী শিখানোর সিদ্ধান্ত নেয়া, মুসলমানদের চিরস্থায়ী শত্রু ইহুদী রাষ্ট্র ইসরাইলের সাথে কুটনৈতিক সম্পর্ক স্থাপন করার ব্যাপারে সৌখিনতা প্রকাশ করা। এমনভাবে অন্যান্য ইসলামী ঘটনাবলী, ইসলামী বিধিবিধান এবং ইসলামী সংস্কৃতি আলোহীন এবং অনুন্নত মনে করার ফলঃ<sup>৭</sup>

ইতিহাস সাক্ষী যে মুসলিম শাসকদের দ্বীন থেকে দূরে থাকা এবং দ্বীন সম্পর্কে অজ্ঞতাই মুসলমানদেরকে সর্বদা অপূরণীয় ক্ষতি সাধন করেছে, তুর্কীতে মোস্তফা কামাল পাশা সাধারণ জনসাধারণকে “নুতন উন্নত তুর্কী” সুন্দর শ্লোগান দিয়ে সর্ব প্রথম ইসলামী খেলাফতের প্রতি হস্তক্ষেপ করেছে এবং তা শেষ করেছে ইসলামী খেলাফত শেষ করার পর, আরবী ভাষা এবং আরবী লিখনীর প্রতি কঠোরতা আরোপ করেছে, ইসলামী ইবাদত, নামায, আযানের জন্য আরবী ভাষার পরিবর্তে তুর্কীভাষায় চালু করেছে। জোরপূর্বক মুসলমানদের দাড়ি মুন্ডন করিয়েছে, বোরকা পরহিতা নারীদেরকে জোরপূর্বক বোরকা খুলে দিয়েছে, টুপির স্থলে হেট বা ইংলিশ পোষাক পরতে বাধ্য করেছে, শিক্ষা বোর্ড থেকে আরবী, ফার্সি ভাষা তুলে দিয়েছে। আরবী গ্রন্থ এবং দুর্লভ পান্ডুলিপিসমূহ বিক্রি করে দিয়েছে, ওকফ সম্পত্তি বিলিন করে দিয়েছে, মসজিদসমূহে তালারুলিয়েছে, আবাসুফিয়ার প্রসিদ্ধ মসজিদকে জাদুঘরে পরিণত করেছে, সুলতান মোহাম্মদ ফাতের মসজিদকে গুদামে পরিণত করেছে, দেশ থেকে ইসলামী বিধানসমূহ অকার্যকর করে দিয়েছে, ইউরোপের স্কলারদেরকে সারাদেশে নিয়োগ করেছে, মোস্তফা কামালের উল্লেখিত ভূমিকার ফলে তুর্কির ইসলামী কর্মকান্ড পরিপূর্ণ রূপে বিনষ্ট হয়ে গেছে, বর্তমানে তুর্কি একটি সেকুলার রাষ্ট্র হিসেবে আছে, কিছু দিন আগে সংবাদপত্রের আলোচিত একটি সংবাদ দ্রঃ

তুর্কির শহর আনাতুলের আদালত দু'জন কোরআ'নের শিক্ষকের ব্যাপারে সাড়ে আট বছর বন্দী থাকার ফায়সালা করেছে, কেননা তারা ১৯৯৪ সালে যখন তাদের বয়স ১১ বছর ছিল তখন দু'জন বাচ্চাকে নিয়ম বহির্ভূতভাবে এক মসজিদে কোরআ'ন শিখানোর অপরাধে লিপ্ত হয়েছিল, যেহেতু এ মামালাটির অনেকদিন পর্যন্ত শুনানী চলছিল তাই দীর্ঘদিন পর এর রায় ঘোষণা করা হল।<sup>৮</sup>

<sup>৭</sup> -দেশে আলোকিত চিন্তা ব্যাপক করার ব্যাপারে রাষ্ট্রীয় কর্মচারীদের মনপূত হওয়ার অনুমান নিম্নোক্ত সংবাদসমূহ থেকে পাওয়া যাচ্ছেঃ “বেফাকী শিক্ষাবোর্ডের মন্ত্রী নবম শ্রেণীর দু'জন ছাত্রীকে ১০,০০০০০০ রুপিয়ার পুরস্কার দিয়েছে, কারণ তারা কানডা গিয়ে সমকামিতার পক্ষে বক্তব্য রেখে ট্রফি জিতেছে। (রোযনামা উম্মত, করাচী, মাহেনামা তায়েবাত এর সূত্র, লাহোর এপ্রিল ২০০৫ইং।

<sup>৮</sup> -সহিফা আহলেহাদীস করাচী, ১৭ ডিসেম্বর ২০০৩ইং।

আমাদের সামনে আরো একটি উদাহরণ, উপমহাদেশে ভারত ও পাকিস্তানের বড় মোগল, যে ইতিহাসে জালালউদ্দীন আকবর নামে পরিচিত, জালালউদ্দীন আকবর আল্লাহর দ্বীনের ভিত্তি এ দর্শনের উপর রেখেছে যে, ইসলাম ১৪শত বছরের পুরাতন ধর্ম, এখন আমাদের একটি নুতন উন্নত ধর্ম দরকার, তাই বাদশাহ্ সালামত একটি নুতন দিন আবিষ্কার করল, যার কালেমা ছিল “লা ইলাহা ইল্লাল্লাহ্ আকবর খলিফাতুল্লাহ্”। ভারতে যেহেতু বিভিন্ন ধর্মের লোকদের বসবাস ছিল তাই এধর্মে মুসলমান ব্যতীত সমস্ত দলসমূহের সম্ভৃষ্টির প্রতি লক্ষ্য রাখা হল, অগ্নি পূজকদেরকে সম্ভৃষ্ট রাখার জন্য শাহী মোহলে পৃথকভাবে আগুন জ্বালিয়ে আলোকিত রাখা হত এবং তার পূজা করা হত, তাদের ধর্মীয় উৎসবসমূহ সরকারীভাবে পালন করা হত, খৃষ্টানদেরকে সম্ভৃষ্ট রাখার জন্য ঈসা (আঃ) এবং মারিয়ামের মূর্তি তৈরী করে তার সামনে আকবর সম্মান জানাতে দাঁড়াত, আবার চার্চেও উপস্থিত হত, হিন্দুদেরকে সম্ভৃষ্ট রাখার জন্য হিন্দুদের মূর্তি এবং তাদের বিভিন্ন উৎসব সরকারীভাবে পালন করা হত, আকবর নিজে মাথায় তিলক ব্যবহার করত, গাভী কোরবানী করা নিষেধ করেছিল, তার মোহলে বানর এবং কুকুর পালত, বানরকে পবিত্র প্রাণীর মর্যাদা দেয়া হয়েছিল, মোহলে নিয়মিত জুয়ার আসর বসত, জিন ভুতের অনুসারীদেরকে সম্ভৃষ্ট রাখার জন্য আকবর শুধু শিকার করাই ত্যাগ করে নাই বরং মাংস খাওয়াও পরিহার করেছিল, ইসলামী বিধি-বিধানসমূহকে প্রকাশ্যে বিদ্রোপ করা হয়েছে, সূদ, জুয়া, মদ পান হালাল করে দেয়া হয়েছিল, দাড়ি মুভাতে উৎসাহিত করার জন্য আকবর নিজের দাড়ি মুড়ন করেছিল, মোহাম্মদ, আহমদ, মোস্তফা ইত্যাদি নাম রাখা নিষেধ করা হয়েছিল, নুতন মসজিদ নির্মাণের ক্ষেত্রে বাধ্য বাধকতা জারি করা হয়েছিল, পুরাতন মসজিদসমূহ ভেঙ্গে দেয়া হয়েছিল, আযান, নামায রোযা, হজ্জ, ইত্যাদি ইবাদতের ক্ষেত্রে বাধ্য বাধকতা ছিল, বার বছরের আগে খাতনা করা নিষেধ ছিল, এর পর মেয়েদেরকে স্বাধীনতা দেয়া হয়েছিল যে, তারা চাইলে খাতনা করতে পারবে আর নাচাইলে করবে না। একাধিক বিয়ে নিষেধ করা হয়েছিল, ইসলামী শিক্ষা ব্যবস্থাকে পঙ্গু করা হয়েছিল। অথচ বিজ্ঞান, দর্শন, গণিত, ইতিহাস, ইত্যাদি শিক্ষা ব্যবস্থা সরকারী ছত্র ছায়ায় চলত, বাইতুল্লাহকে অবমাননা করার ইচ্ছা নিয়ে আকবর রাতে কেবলার দিকে পা দিয়ে রাত্রি যাপন করত, আকবরের এ নুতন উন্নত ধর্ম যদি পরিপূর্ণভাবে বিস্তারের সুযোগ পেত তাহলে আজ সমগ্র হিন্দুস্তান কুফরস্তানে পরিণত হত, কিন্তু আল্লাহর ইচ্ছা সবকিছুর উপর বিজয়ী, ঐসময়ে আল্লাহ শাইখ আহমদ সেরহিন্দী (রাহিমাহুল্লাহ) এর মাধ্যমে এ কুসংস্কারকে সমূলে উটপাটনের জন্য ভূমিকা রাখালেন, যার সুন্দর পদক্ষেপের ফলে আবুল আলা মওদুদী(রাহিমাহুল্লাহর) ভাষায় “শুধু হিন্দুস্তানকেই কুফরীর অতলতলে যাওয়া থেকে বাঁচান নাই বরং এ বিশাল ফেতনা মুখথুবরে পড়ে গিয়েছিল। যদি তা কামিয়াব হতে পারত তাহলে আজ থেকে ৩/৪শ বছর আগেই এখান থেকে ইসলামের নাম নেশানা মিটে যেত।”

\* -দ্রঃ তাজদীন ও ইহইয়ায়ে দ্বীন, মাওলানা সায়েদ আবুল আলা মওদুদী(রাহিমাহুল্লাহ)

মোস্তফা কামাল আতাতুরকের রেখে যাওয়া সংস্কার “নূতন উন্নত ধর্ম” আকবরের রেখে যাওয়া সংস্কার “নূতন উন্নত ধর্ম”, আর মোশাররফের রেখে যাওয়া সংস্কার “আলোকিত চিন্তা”, এ তিনটি পন্থাই সাধারণ মানুষের জন্য দৃষ্টি কর্বক হলেও ইসলামের জন্য তা বিষাক্ত।

বর্তমান যুগের আলোকিত চেতনার মূল আলোকিত চেতনা নয় বরং তাহল ঐ অন্ধকার এবং যুলম যে পথে শয়তান তার বন্ধুদেরকে আনতে চায়। যেমন স্বয়ং আল্লাহ বলেছেনঃ

﴿وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ يُخْرِجُوهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ﴾

অর্থঃ “আর যারা কুফরী করে তাদের অভিভাবক হচ্ছে তাগুত (শয়তান) তারা তাদেরকে আলো থেকে বের করে অন্ধকারের দিকে নিয়ে যায়, এরাই হল জাহান্নামী, চিরকাল তারা সেখানেই থাকবে। (সূরা বাকারা-২৫৭)

অতএব আলেমদের উচিত হল সর্ব সাধারণকে এ আলোকিত চেতনা সম্পর্কে অবগত করানো এবং তাদেরকে বুঝানো যে আমাদের অতীত মোটেও অনুজ্জল নয় বরং অন্যান্য সমস্ত উম্মতদের তুলনায় আমাদের অতীত সবচেয়ে উজ্জ্বল এবং আলোকিত যাতে আমাদের গৌরব রয়েছে, আমরা ১৪শতবছরের পুরানো শরীয়তে মোহাম্মদীকে আমাদের জীবনের চেয়েও অধিক ভালবাসি। এরই উপর মতাবরণ করা এবং এরই উপর পুনরুত্থিত হওয়া আমাদের জীবনের লক্ষ্য। এর বিপরীতে শয়তানের সংস্কৃতি, আলোকিত চেতনা, নিরপেক্ষতা, আমার ঘৃণাকর এবং এথেকে আমরা মুক্ত। আমাদেরকে এ নির্দেশ দেয়া হয়েছে।

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ ءَامَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الظَّالِمِينَ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا﴾

অর্থঃ “আপনি কি তাদেরকে দেখেননি যারা দাবী করে যে, যা আপনার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে আমার সে বিষয়ের উপর ঈমান এনেছি এবং আপনার পূর্বে যা অবতীর্ণ হয়েছে। তারা বিরোধী বিষয়কে শয়তানের দিকে নিয়ে যেতে চায়, অথচ তাদের প্রতি নির্দেশ হয়েছে যাতে



তারা ওকে মান্য না করে, পক্ষান্তরে শয়তান তাদেরকে প্রতারণিত করে পথভ্রষ্ট করে ফেলতে চায়। (সূরা নিসা-৬০)

### \* আল্লাহ কি হিংস্রতা এবং জুলম করেন?

ইসলাম সাধারণ মানুষের জন্য যেমন শান্তি ও নিরাপত্তার দ্বীন, এমনিভাবে সমগ্র সমাজের জন্যও একটি শান্তি ও নিরাপত্তার দ্বীন। আল্লাহ যেমন সাধারণ মানুষের হেদায়েতের জন্য কোরআ'ন মাজীদে কিছু কিছু বিধান অবতীর্ণ করেছেন এমনিভাবে সামাজিক নিরাপত্তা ও শান্তির জন্য কিছু কিছু অপরাধের শাস্তির বিধানও রেখেছেন, যে বিধানগুলো ঐ রকম অপরিবর্তনীয় যেমন নামায, রোযা, যাকাত ও হজ্জের বিধানগুলো অপরিবর্তনীয়। আল্লাহর রিধারণকৃত শান্তি যাকে ইসলামের পরিভাষায় “হুদূদ”(দণ্ড বিধি) বলা হয় তা নিম্নরূপঃ

- ১) চুরীর শাস্তিঃ চোরের শাস্তি হল তার হাত কেটে দেয়া। (৫ঃ৩৮)।
- ২) ডাকাতির শাস্তিঃ সশস্ত্র ডাকাতিদল যদি ডাকাতি করার সময় কাউকে হত্যা করে কিন্তু সম্পদ লুট না করে তাহলে তার শাস্তি হল হত্যার বিনিময়ে হত্যা।  
আর ডাকাতি করার সময় যদি হত্যা করে এবং সম্পদও লুট করে, তাহলে তার শাস্তি শূলি তে চড়ানো, আর ডাকাতি করার সময় যদি শুধু সম্পদ লুট করে হত্যা না করে তাহলে তার শাস্তি হল তাদের হস্ত ও পদসমূহ বিপরীত দিক থেকে কাটা। (৫ঃ৩৩)।
- ৩) সত্বী-সাক্ষী নারীদের প্রতি মিথ্যা অপবাদ দেয়ার শাস্তিঃ  
সত্বী-সাক্ষী নারীদের প্রতি মিথ্যা অপবাদ দেয়ার শাস্তি ৮০টি বেত্রাঘাত। (২৪ঃ৪)।
- ৪) অবিবাহিত নর-নারীর যিনার (ব্যভিচারের) শাস্তিঃ একশত বেত্রাঘাত। (২৪ঃ২)।  
যদি নর ও নারী উভয়ের সম্মতিতে যিনা (ব্যভিচার) হয়ে থাকে, তাহলে উভয়েরই উক্ত শাস্তি হবে, আর যদি কোন একজনের ইচ্ছায় জোরপূর্বক যিনা (ব্যভিচার) হয়ে থাকে, তাহলে যে জোর করে যিনা (ব্যভিচার) করেছে তার এ শাস্তি হবে।
- ৫) বিবাহিত নর-নারীর যিনার (ব্যভিচার) শাস্তিঃ তাদেরকে পাথর মেরে হত্যা করা। (বোখারী ও মুসলিম)

উল্লেখ্যঃ বিবাহিত নর-নারীর যিনার (ব্যভিচারের) শাস্তি পাথর মেরে হত্যা করা, এসংক্রান্ত আয়াতটি কোরআ'ন মাজীদের সূরা আহযাবে অবতীর্ণ হয়েছিল, কিন্তু পরবর্তীতে আল্লাহ তা'লা ঐ আয়াতের বিধান কার্যকর রেখে তার তেলওয়াত রহিত করে দেন, এ বিধানের উপর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আমল করেছেন, তাঁর মৃত্যুর পর খোলাফায়ে রাশেদীনগণ আমল করেছেন। (আশরাফুল হাওয়াসী, ফুটনোট নং-৯ পৃঃ ৪১৮)।

৬) মদ পানের শাস্তিঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে এবং আবুবকর সিদ্দীক (রাযিয়াল্লাহু আনহুর) যুগে মদ পানের শাস্তি ছিল ৪০টি বেত্রাঘাত, ওমর ফারুক (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাঁর শাসনামলে সাহাবাগণের পরামর্শ ক্রমে মদপানের শাস্তি নির্ধারণ করেন ৮০টি বেত্রাঘাত, এব্যাপারে আবদুর রহমান বিন আউফ (রাযিয়াল্লাহু আনহুর) পরামর্শ ছিল দণ্ডবিধির ক্ষেত্রে সবচেয়ে কম শাস্তি হল মিথ্যা অপবাদের শাস্তি, তাই মদ পানের শাস্তিও কম পক্ষে তার সমপর্যায়ের হওয়া উচিত। তাই মদ পানের শাস্তি তখন ৮০ টি বেত্রাঘাত নির্ধারণ করা হল, এব্যাপারে সমস্ত সাহাবাগণের ঐক্যমত ছিল এবং এর উপর আমলও শুরু হল।

আমাদের এটা দৃঢ় বিশ্বাস যে আল্লাহর নির্ধারণ কৃত শাস্তির বিধানে আল্লাহর দৃষ্টিতে মানুষের প্রতি দয়ারই বহিঃপ্রকাশ, আর এ শাস্তির বিধান বাস্তবায়ন করার মধ্যে আদম সন্তানের জন্য কল্যাণ রয়েছে, আর তা বাস্তবায়ন ব্যতীত কোন সমাজ ব্যবস্থাতেই মানুষের জ্ঞান, মাল ও ইজ্জতের নিরাপত্তা দেয়া সম্ভব নয়।

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এবং সাহাবাগণের যুগে ইসলামের বিজয়ের মাধ্যমে যে সমস্ত এলাকাগুলো ইসলামী সম্রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত হয়েছিল, সেখানে যখন ইসলামী আইন কার্যকর করা হল, তখন ঐসমস্ত এলাকাসমূহে শাস্তি ও নিরাপত্তার দৃষ্টান্ত স্থাপন হল।

নজদের শাসক আদী বিন হাতেম নবী(সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট উপস্থিত হয়ে ইসলাম গ্রহণ করতে দ্বিধা সংকোচ করছিল, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ আদী হয়ত তুমি মুসলমানদের সন্ত্রাসতা এবং কাকেরদের অধিক্য দেখে ইসলাম গ্রহণ করা থেকে বিরত আছ, আল্লাহর কসম! অতিশীঘ্রই সমগ্র আরবে ইসলামের পতাকা বিজয়ী দেখতে পাবে, আর শাস্তি ও নিরাপত্তার এমন এক দৃষ্টান্ত কায়মে হবে যে, একজন মহিলা একা একা যানবাহনে আরোহণ করে কাদেসিয়া (ইরানের একটি শহর) থেকে রওয়ানা হয়ে নির্ভয়ে সফর করে মদীনায় পৌঁছে যাবে, সফরকালে তার মধ্যে শুধু আল্লাহর ভয় থাকবে। একথা শুনে আদী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) ইসলাম গ্রহণ করল এবং নিজের মৃত্যুর পূর্বে একথার সাক্ষি দিলেন যে, আল্লাহর কসম! রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর বাণী সত্যে পরিণত হয়েছে, আমি স্বচোখে দেখেছি যে একজন মহিলা একা একা নিজের জানবাহনে আরোহণ করে কাদেসিয়া থেকে নির্ভয়ে সফর করে মদীনায় পৌঁছেছে। বিশাল আয়তন বিশিষ্ট ইসলামী সম্রাজ্যে জ্ঞান, মাল ও ইজ্জতের নিরাপত্তা একমাত্র ইসলামী দণ্ড বিধি কার্যকর থাকার কারণেই সম্ভব হয়েছে।

আজকের এই অশান্তির যুগে পৃথিবীর সভ্য এবং উন্নত দেশসমূহে দৃষ্টি দিয়ে দেখুন যে যদি পৃথিবীর কোথাও এমন কোন দেশ থাকে যেখানে দিন ও রাতের যেকোন সময় মানুষ নির্ভয়ে সফর করতে পারবে তাহলে সেটা সৌদী আরব, যেখানে না শোয়ার কোন ভয় আছে না

জীবনের না ইজ্জতের। নিরাপত্তা ও শান্তির এপরিবেশ ইসলামী দন্ড বিধি কার্যকর করার কারণে যদি না হয় তাহলে আর কি কারণে?

মরোক্কোতে নিযুক্ত জার্মান রাষ্ট্রদূত ওলফ্রেড হুফ মীন ইসলাম গ্রহণ করার পর ইসলামী দন্ডবিধী সম্পর্কে একটি গ্রন্থ রচনা করে, যেখানে সে চোরের হাত কাটা, হত্যার বিনিময়ে হত্যাকারীকে হত্যা করা, যিনা (ব্যভিচারকারীকে) পাথর মেলে হত্যা করা সম্পর্কে বিশেষভাবে আলোচনা করেছে, সেখানে সে একথা প্রমাণ করেছে যে মানবতাকে শান্তি ও নিরাপত্তা দেয়ার জন্য এদন্ড বিধি কায়ম করা ব্যতীত আর কোন উপায় নেই।<sup>১০</sup>

প্রিয় জন্মভূমিতে (লেখকের) যখন থেকে আধুনিক ইসলামের ধারক এবং আলোকিত চিন্তার সরকার আসল তখন থেকেই ইসলামী বিধানাবলী এবং ইসলামী নিদর্শনসমূহের প্রতি ঠাট্টার ধারা আগে থেকেই নিয়মতান্ত্রিকভাবে চালু ছিল, আর তখন নুতন করে ইসলামী দন্ড বিধি আইনে কিছু বিশেষ নয়রধারী শুরু হয়, ফলে খোলা খুলিভাবে পরিষ্কার ভাষায় ইসলামী দন্ড বিধিকে হিংস্র এবং জুলুম বলে আখ্যায়িত করা হল, যার পরিষ্কার অর্থ দাঁড়ায় এ শান্তির বিধান প্রবর্তনকারী সত্ত্বা(আল্লাহ্ মাফ করুন, আব্বারো আল্লাহ্ মাফ করুন) হিংস্র এবং জালেম।

#### চিন্তা করুনঃ

- যে মহান সত্ত্বা তাঁর নিজের জন্য দয়ালু, করুণাময়, ক্ষমাশীল অধরণের গুণাবলী বেছে নিয়েছেন তিনি কি হিংস্র এবং জালেম হতে পারেন?
- ঐ সত্ত্বা যিনি সর্বধা স্বীয় বান্দাদের গোনাহ্ মাফ করে তাদেরকে স্বীয় নে'মত দান করে থাকেন, তিনি কি হিংস্র ও জালেম হতে পারেন?
- ঐ সত্ত্বা যিনি তাঁর আরশে একথা লিখে রেখেছেন যে, আমার রহমত আমার রাগের উপর বিজয়ী (বোখারী ও মুসলিম) তিনি কি হিংস্র এবং জালেম হতে পারেন?
- ঐ সত্ত্বা যিনি তাঁর রহমতের ৯৯ভাগ কিয়ামতের দিন তাঁর বান্দাদেরকে ক্ষমা করার জন্য রেখে দিয়েছেন (বোখারী ও মুসলিম) তিনি কি জালেম হতে পারেন?
- ঐ সত্ত্বা যার সমস্ত ফায়সালা বিজ্ঞানময়, যার সমস্ত ফায়সালা সর্বপ্রকার ত্রুটি মুক্ত, যার সমস্ত ফায়সালা প্রশংসার দাবী রাখে, তিনি কি তাঁর বান্দাদের ব্যাপারে হিংস্র এবং অবিচার করতে পারেন?
- ঐ সত্ত্বা যিনি তাঁর বান্দাদের প্রতি জুলুম নাকরার ওয়াদা করেছেন (৫০ঃ২৯)

তিনি কি তাঁর বান্দাদের প্রতি হিংস্র এবং জুলুম মূলক ফায়সালা করতে পারেন?

<sup>১০</sup> -রোজনামা জন্গ লাহোর।

- অতএব হে আমার জাতির নেতা, সরকারের সর্বোচ্চ মসনদে বসে আল্লাহ্ তা'লাকে গালি দিবে না। দয়াময়, অনুগ্রহশীল, অত্যন্ত ধৈর্যশীল, মাহাজ্জানী সত্ত্বার শ্রেষ্ঠত্ব এবং তাঁর মর্যাদার ব্যাপারে বেয়াদবী করা থেকে বিরত থাক। তাঁর শাস্তি ও পাকড়াওকে ভয় কর, স্বীয় গোনাহর জন্য তাঁর নিকট তাওবা কর।
- যাতে এমন না হয় যে এ সর্বোচ্চ মসনদ থেকে ছিটকে পড়।
- যেন এমন না হয় যে, আকাশ থেকে পাথর বৃষ্টি বর্ষিত হতে শুরু করে।
- যেন এমন না হয় যে, আকাশ থেকে ফেরেশতাগণকে অবতরণ করার হুকুম দেয়া হয়।
- এমন যেন না হয় যে পৃথিবীর নীচের অংশ উপর এবং উপরের অংশ নীচে করে দেয়া হয়।
- এমন যেন না হয় যে আকাশ ও যমিনের মুখগহ্বর উন্মুক্ত করে দেয়া হবে আর এ উভয়ের পানি মিলিত হয়ে সবকিছুকে একাকার করে দিবে।
- এমন যেন না হয় যে, চরম ক্ষুধা এবং করুণ অভাব ও লাঞ্ছনা আর অপমান আমাদের উপর চাপিয়ে দেয়া হয়।
- এমন যেন না হয় যে ভূমি ধবস, ভূমিকম্প, চেহারার বিকৃতি, পাথর বৃষ্টি আমাদের উপর বর্ষণ না হয়।

এর পর আমরা আশ্রয় খুঁজব অথচ কোথাও আশ্রয় পাব না, তাওবা করতে চাইব হয়ত তাওবা করার সুযোগ পাব না, অতএব হে জাতির প্রধান! কোরআ'নের এ হুশিয়ারী বাণী কান খুলে শোন।

﴿أَمْ أَمِنْتُمْ مِّنَ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُخْصِفَ بِكُمْ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾ أَمْ أَمِنْتُمْ مِّنَ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾﴾

অর্থঃ “তোমরা কি ভাবনা মুক্ত হয়ে গেছ যে, আকাশে যিনি আছেন তিনি তোমাদেরকে ভূগর্ভে বিলীন করে দেবেন; অতঃপর তা কাঁপতে থাকবে, না তোমরা নিশ্চিত হয়ে গেছ যে, আকাশে যিনি আছেন তিনি তোমাদের উপর প্রস্তর বৃষ্টি বর্ষণ করবেন, অতঃপর তোমরা জানতে পারবে কেমন ছিল আমার সতর্ক বাণী। তাদের পূর্ববর্তীরা মিথ্যারোপ করেছিল, অতঃপর কত কঠোর হয়েছিল আমার অস্বীকৃতি। (সূরা মুলক-১৬-১৮)



### মানবাধিকারঃ

আমেরিকা এবং পাশ্চাত্যদেশ সমূহ নিজেদেরকে মানবাধিকারের বাস্তবাহী এবং রক্ষক হিসেবে এতটা প্রতিষ্ঠিত করে রেখেছে যে, এর ফলে আমাদের এখানকার মুক্ত চিন্তাশীল এবং আধুনিক চিন্তাশীলরা বাস্তবেই মনে করে যে, আমেরিকা এবং পাশ্চাত্য মানবাধিকারের বড় রক্ষক, আসুন ইতিহাসের আয়নায় তা যাচাই করুন যে বাস্তবেই কি তা ঠিক আছে? সর্বপ্রথম আমেরিকার অতীত ইতিহাসে একটু দৃষ্টি দেয়া যাক।

- ১) খৃষ্ট ১৮ শতাব্দীতে আমেরিকার শ্বেতাঙ্গরা নতুন শক্তি প্রতিষ্ঠার লক্ষ্যে নিজেদের “নতুন পৃথিবী” আবাদ করার জন্য তারা ৭০ লক্ষ রেড ইন্ডিয়ানকে হত্যা করে, আফরিকা মহাদেশের কৃষ্ণাঙ্গদেরকে জন্তুর ন্যায় ধরে ধরে নিজেদের ক্রিতদাসে পরিণত করে ছিল, জাহাজসমূহে জন্তুর ন্যায় ভরপুর করে আমেরিকায় নিয়ে এসেছিল এবং তাদেরকে বেচা-কিনা করেছে। এই কৃষ্ণাঙ্গরা আজও আমেরিকায় শ্বেতাঙ্গদের ন্যায় মর্যাদা পায়না। যখনই কৃষ্ণাঙ্গরা আমেরিকার সংবিধানে লিখিত মানবাধিকারের দাবী করেছে তখন তাদেরকে অত্যন্ত নিরমম ভাবে শেষ করে দেয়া হয়েছে।”

১৮৯০ইং দক্ষিণ ডকুটা এবং আর্জেন্টাইনের উপর আমেরিকা আক্রমণ করে, ১৮৯১ইং চিলির উপর আক্রমণ করে, ১৮৯২ইং আওয়ল্লুর উপর আক্রমণ করে, ১৮৯৩ইং হুয়াইয়ের উপর আক্রমণ করে স্বাধীন রাষ্ট্রসমূহকে শেষ করে দেয়, ১৯৯৪ইং কোরিয়ার উপর, ১৮৯৫ইং পানামার উপর, ১৮৯৬ইং নাকানা গোয়ার উপর আক্রমণ, ১৮৯৮ইং ফিলিপাইনের উপর আক্রমণ এযুদ্ধ ১৯১০ পর্যন্ত (অর্থাৎ ১২ বছর পর্যন্ত) চলছিল, এর ফলে ৬লক্ষ ফিলিপাইনী মারা যায়।

- ৩) ১৯১২ইং কিউবার উপর হামলা, ১৯১৩ইং মেক্সিকোর উপর আক্রমণ, ১৯১৪ইং হাইতির উপর আক্রমণ, ১৯১৭- ১৯১৮ইং প্রথম বিশ্ব যুদ্ধে অংশগ্রহণ করে, ১৯১৯হোন্ডুরিজের উপর আক্রমণ করে, ১৯২০ইং গোয়েটির উপর আক্রমণ করে, ১৯২১ইং পশ্চিম অর্জিনিয়ার উপর আক্রমণ করে।

”-আমেরিকান কৃষ্ণাঙ্গ মোহাম্মদ আলী কলী তার ইসলাম গ্রহণের ঘটনায় লিখেছে যে, আমি ১৯৬০ইং ইটালীর রাজধানী রোমে একটি প্রতিযোগীতায় বিজয়ী হয়ে আমেরিকায় ফিরে আসলে, আমাকে একজন হিরুর ন্যায় অভ্যর্থনা দেয়া হল, একদিন হঠাৎ করে আমি এক হোটেলে চলে গেলাম যা মূলত শ্বেতাঙ্গদের জন্য নিদৃষ্ট ছিল। যখনই আমি একটি টেবিলে বসেছি, তখনই হোটেলের ম্যানেজার এক মহিলা অত্যন্ত রক্ষণাবে আমাকে বললঃ “হোটেল থেকে বের হয়ে যাও, এখানে কোন কৃষ্ণাঙ্গের প্রবেশাধিকার নেই”। আমি বললামঃ আমি রোমে অনুষ্ঠিত অলিম্পিক প্রতিযোগীতায় বিজয়ী হয়ে স্বর্ণের মেডেল লাভ করেছি, কিন্তু ঐ মহিলা কোন কথাই শোনল না বরং জোরপূর্বক আমাকে হোটেল থেকে বের করে দিল। (আবদুল গনী ফারুক লিখিত, আমি কেন মুসলমান হলাম পৃঃ ৪৫৬)।

- ৪) ১৯৪১-৪৫ইং দ্বিতীয় বিশ্ব যুদ্ধে অংশগ্রহণ করে, এতে চার কোটি লোক ক্ষতিগ্রস্ত হয়, এতে অ্যামেরিকা অনেক টাকা-পয়সা খরচ করে এবং তাদের এক কোটি ৬০ লক্ষ সৈন্য তাতে অংশ গ্রহণ করে। হিরুশীমা এবং নাগাসাকীর উপর এটোম বোমা নিক্ষেপ করার সিদ্ধান্ত গ্রহণকারীদের মধ্যে মানবাধিকারের পতাকাবাহী অ্যামেরিকার প্রেসিডেন্ট টারোমীন এবং সভ্য বৃটেনের প্রধানমন্ত্রী স্যার উস্টনচার্চেলও ছিল।
- ৫) ১৯৪৩ইং ডিউটোরিটে কৃষ্ণাঙ্গদের বিদ্রোহকে দমন করার জন্য অ্যামেরিকা সেনা আক্রমণ করে, গ্রীসের যুদ্ধস্থান(১৯৪৭-৪৯ইং) কমান্ডো আক্রমণ করে, ১৯৫০ইং পোরটোএকোরে আক্রমণ করে, ১৯৫৩ইং সেনা আক্রমণের মাধ্যমে ইরানের সরকার পরিবর্তন করে। ১৯৫৪ইং গোয়েটেমালার উপর বোমা নিক্ষেপ করে।
- ৬) ১৯৬০ইং থেকে ১৯৭৫ইং অ্যামেরিকা ১৫ বছর পর্যন্ত ভিয়েতনামের উপর যুদ্ধ চাপিয়ে দিয়েছে, যার ফলে ১০লক্ষ লোক ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে।
- ৭) ১৯৬৫ইং অ্যামেরিকা ইন্দোনেশিয়ার রাষ্ট্রপ্রধান সোহর্তোর বিরোধী পক্ষের ১০লক্ষ লোককে মারার জন্য সহযোগীতা করে ছিল।
- ৮) ১৯৬৯ইং থেকে ১৯৭৫ইং পর্যন্ত (৬য় বছর) কম্বোডিয়ার সাথে যুদ্ধ করেছিল। এতে ২০ লক্ষ লোককে হত্যা করেছে।  
১৯৭১-৭৩ ইং লাউসে বোমা নিক্ষেপ করেছে। ১৯৭৩ইং দক্ষিণ ঢেকোটার উপর সেনা আক্রমণ করে। ১৯৭৩ইং চিলির উপর সেনা আক্রমণ করে সরকার পরিবর্তন করে। ১৯৭৬-১৯৯২ইং এনগোলায় দক্ষিণ আফ্রিকার সহযোগীতায় সংঘটিত বিদ্রোহীদেরকে সহযোগীতা করে। ১৯৮৪১- ৯০ইং ন্যকারাগোয়ার উপর সেনা আক্রমণ করে। ১৯৮২-৮৪ইং পর্যন্ত লেবাননের মুসলিম অঞ্চলসমূহে বোমাবাজী করেছে। ১৯৮৪ইং পারশ্য সাগরে দু'টি ইরানী বিমান ধ্বংস করেছে। ১৯৮৬ইং সরকার পরিবর্তনের জন্য লিবিয়ার উপর আক্রমণ করে।
- ১০) ১৯৭৯ইং ইরাক অ্যামেরিকার সৈন্যদের সহযোগীতায় ইরাক ইরানের উপর আক্রমণ করে। এ যুদ্ধ ৮ বছর পর্যন্ত চলেছে যার ফলে উভয় পক্ষের লক্ষ লক্ষ লোক ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে।
- ১১) ১৯৮৯ইং ফিলিপাইনে সেনাবাহিনীতে বিদ্রোহ হয়, অ্যামেরিকা এ বিদ্রোহ দমন করার জন্য ফিলিপাইনকে আকাশ সীমাদিয়ে সহযোগীতা করেছে। ১৯৮৯ইং সেনা আক্রমণের মাধ্যমে পানামার সরকার পরিবর্তন করেছে, যার ফলে ২ হাজার লোক মৃত্যুবরণ করেছে।
- ১২) ১৯৮৯ইং আলজেরিয়ার ইসলামিক সালভেশন ফ্রন্ট নির্বাচনে বিপুল ভোটে জয়লাভ করে, যারা দেশে ইসলামী সরকার প্রতিষ্ঠিত করতে চেয়েছিল, ইসলামী বিপ্লবকে প্রতিরোধ

করার জন্য অ্যামেরিকার সাহায্যে সেনা আক্রমণ চালানো হয়, যার ফলে ৮০ হাজার লোক নিহত হয়েছে।

১৩) ১৯৯০ইং ইরাককে কুয়েতের উপর আক্রমণ করার জন্য উৎসাহিত করে এবং ১৯৯১ইং ডিজারেট স্টারম অপারেশন এর আদলে নিজেই ইরাকের উপর আক্রমণ করে, যার ফলে হাজার হাজার ইরাকী মৃত্যুবরণ করে।

১৪) ১৯৯০ইং হাইতির সরকার পরিবর্তন করানোর জন্য সেনা আক্রমণ করে। ১৯৯৬ইং ইরাকের উপর আক্রমণ করে এবং গুরুত্বপূর্ণ সেনা আস্তানাসমূহে মিজাইল নিক্ষেপ করে। ১৯৯৮ইং সুদানের দু'টি অস্ত্র কারখানার উপর আক্রমণ করে।

১৯৯৮ইং আফগানিস্তানে সি, আই, এর প্রতিষ্ঠিত জিহাদের প্রশিক্ষণ কেন্দ্রসমূহে মিজাইল হামলা চালায়, ১৯৯৮ইং ইরাকের উপর আবার একাধারে চার দিন মিজাইল আক্রমণ করতে থাকে।

১৫) ১৯৯০ইং পৃথিবীর সর্ববৃহৎ মুসলিম সংখ্যাগরিষ্ট রাষ্ট্র ইন্দোনেশিয়ার উপর বিদ্রোহ করায়, খৃষ্টানদেরকে সহযোগীতা করে, লাখ লাখ মুসলমানকে হত্যা করেছে, পরিশেষে পূর্ব তৈমুরকে একটি খৃষ্টান রাষ্ট্র হিসেবে কায়েম করে।<sup>১২৩</sup>

১৬) সুভয়েত ইউনিয়নের জোর পূর্বক হস্তক্ষেপ থেকে মুক্তির জন্য দশ লক্ষ শহিদের কোরবানীর রক্ত নাশুকাতেই আফগানিস্তানের উপর ২০০১ইং বিমান এবং মিজাইল থেকে বোমাবাজী শুরু করে, যার ফলে ২৫ হাজার নিরপরাধ মানুষ শাহাদাত বরণ করে। ৭হাজার মানুষকে বন্দী করা হয়, আর তালেবানের স্থানে উত্তরাঞ্চলীয় জোটের পুতুল সরকার কায়েম করা হয়।

১৭) ইরাকে পরমানবিক অস্ত্র থাকার বাহানা দিয়ে ২০ মার্চ ২০০৩ইং অ্যামেরিকা ইরাকের উপর আক্রমণ করে, যার ফলে হাজার হাজার নিরপরাধ লোক নিহত হয়েছে, ইরাকে অ্যামেরিকার নিয়ন্ত্রনলাভের পর ফালুজা শহরের ঘণবসতিপূর্ণ এলাকায় অ্যামেরিকান সৈন্যরা বিষাক্ত গ্যাস নিক্ষেপ করে এবং রাসায়নিক অস্ত্রও ব্যবহার করেছে, যা ব্যবহারে জাতিসংঘের নিষেধাজ্ঞা রয়েছে।

১৮) ২০০৬ইং জানুয়ারীতে ফিলিস্তিনের সাধারণ নির্বাচনে হামাস বিজয় লাভ করে, বিশ্বব্যাপী গণতন্ত্রের পতাকাবাহী অ্যামেরিকা হামাসের সরকারকেই মেনে নিতে অস্বীকার করে নাই বরং তাদেরকে খতম করার জন্য একের পর এক পরিকল্পনাও নিতে থাকে।

<sup>১২</sup> - উল্লিখিত পরিসংখ্যান সমূহ খালেদ মাহমুদ লিখিত গ্রন্থ "আফগানিস্তান মে মুসলমানু কা কতলে আম" নামক গ্রন্থ থেকে নেয়া হয়েছে।

<sup>১৩</sup> - হাফতারোজা তাকতীর কারাচী, ৪ জানুয়ারী ২০০৬ইং।

- ১৯) ইরানে আহমদ নাযাদের সরকার যেহেতু অ্যামেরিকাকে নিজের মনিব হিসেবে দেখছে না, তাই অ্যামেরিকা এখন রাত দিন সেখানে হামলা করার বাহানা খোঁজতেছে।
- ২০) নামে মাত্র সন্ত্রাসবাদ খতম করার অভ্যুহাতে পাকিস্তান অ্যামেরিকার বন্ধু হওয়া সত্ত্বেও ডজন বারের বেশি পাকিস্তানের আকাশ সীমা পাকিস্তানের বিপক্ষে ব্যবহার করে পাকিস্তানের স্বাধীনতাকে চলেঞ্জ করেছে।

আসুন একবার ১৪শতবছর আগের মানবাধিকার সম্পর্কে ইসলামের দিকনির্দেশনার কিছু দৃষ্টান্ত নেয়া যাক, এরপর সিদ্ধান্ত গ্রহণ করুন যে, মানবাধিকারের দাবীতে কে সত্যবাদী আর কে মিথ্যাবাদী?

- ১) বিদায় হজ্বের সময় নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) ভাষণ দিতে গিয়ে, মানুষকে মানবাধিকার সম্পর্কে বলতে গিয়ে এমন গুরুত্বপূর্ণ ও ব্যাপক অর্থবোধক এক বক্তব্য পেশ করেছেন যে, কিয়ামত পর্যন্ত এর বিকল্প কিছু পাওয়া সম্ভব নয়, অ্যামেরিকা এবং প্রাচ্যবাসীরা যখন একান্ত চিন্তে কোন সময় তা অধ্যয়ন করবে এবং এ অনুযায়ী আমল করার সিদ্ধান্ত নিবে, তাহলে নিঃসন্দেহে ঐ দিন থেকেই বিশ্ব ব্যাপী শান্তি ও নিরাপত্তার সয়লাভ হয়ে যাবে। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ হে মানব মন্ডলী! নিশ্চয় তোমাদের রব একক, তোমাদের পিতাও একজন,

শুনে রাখ কোন আরাবীর অনারবীর উপর এবং কোন অনারবীর কোন আরাবীর উপর কোন বিশেষ মর্যাদা নেই, না কোন লাল বর্ণের অধিকারী কোন কৃষ্ণাঙ্গের উপর, না কোন কৃষ্ণাঙ্গের কোন লাল বর্ণের অধিকারীর উপর কোন বিশেষ মর্যাদা রয়েছে, তবে (তাদের মাঝে) মর্যাদার (মাপ কাঠি) হবে তাকওয়ার ভিত্তিতে। (মোসনাদ আহমদ)

তিনি অন্যত্র আরেকটি বক্তব্যে বলেছেনঃ হে মানব মন্ডলী তোমাদের রক্ত, সম্পদ, সম্মান একে অপরের উপর সর্বদাই হারাম, এ বিষয়গুলো তোমাদের জন্য এমনি মর্যাদাবান যেমন আজকের দিন (১০মিলহাজ্জ) এবং যেমন এই শহর (মক্কা) তোমাদের নিকট মর্যাদাবান। (বোখারী, আবুদাউদ, নাসায়ী)।

- ২) মানুষের জ্ঞানের নিরাপত্তাকে সুদৃঢ় করার জন্য এতটুকু সতর্কতা অবলম্বনের নির্দেশ দেয়া হয়েছে যে, “যে ব্যক্তি লোহার অস্ত্র দিয়ে তার ভায়ের প্রতি ইঙ্গিত করবে তার উপর ফেরেশতা ততক্ষণ পর্যন্ত অভিসম্পাত করতে থাকবে যতক্ষণ না সে তা থেকে বিরত হবে। চাই সে তার আপন ভাই হোক বা যেধরণের ভাই হোকনা কেন। (মুসলিম)
- ৩) অমুসলিমদের জীবনের নিরাপত্তা বিধানকে নিশ্চিত করতে গিয়ে বলা হয়েছে “যে ব্যক্তি কোন যিম্মীকে (ইসলামী রাষ্ট্রে বিধর্মী প্রজা) বিনা কারণে হত্যা করল, সে জান্নাতের সুখাণ পাবে না। (বোখারী)

- ৪) যুদ্ধ সংক্রান্ত বিষয়ে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সাহাবাগণকে এ নির্দেশ দিয়ে রেখেছিলেন যেন নিহতদেরকে মোসলা( নাক,কান) কর্তন না করা হয়। শত্রুকে ধোঁকা দিয়ে হত্যা করা যাবে না, শত্রুকে আগুন দিয়ে জ্বালিয়ে হত্যা করা যাবে না, শত্রুকে নিরাপত্তা দেয়ার পর তাকে হত্যা করা যাবে না, নারী, শিশু, শ্রমিক, ইবাদত কারীদেরকে হত্যা করা যাবে না, ফলবান বৃক্ষ কাটা যাবে না, চতুষ্পদ জন্তু হত্যাকরা যাবে না, অঙ্গীকার ভঙ্গ করা যাবে না, যারা ইসলাম গ্রহণ করেছে তাদের জান মালের নিরাপত্তা ঐভাবে দিতে হবে যেভাবে মুসলমানদের জানমালের নিরাপত্তা বিধান করা হয়ে থাকে। ( বোখারী, মোয়ত্তা, আবুদাউদ, ইবনু মাযা)

ইসলামের এ দিক নির্দেশনা শুধু মৌখিকই ছিল না বরং মুসলমানরা সর্বকালে যথেষ্ট গুরুত্বের সাথে এ দিক নির্দেশনা বস্তাবায়ন করেছে।

আমরা এখানে উদাহরণ সরূপ কিছু ঘটনা উল্লেখ করতে চাইঃ

- ১) ৮ম হিজরীর সা'বান মাসে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) খালেদ বিন ওলীদ (রাযিয়াল্লাহু আনহু) কে এক কাবিলা(বংশের) লোকদেরকে দাওয়াত দেয়ার জন্য পাঠালেন, ভুল বুঝাবুঝির ভিত্তিতে কিছু সংখ্যক লোককে কাফের মনে করে হত্যা করা হল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) যখন বিষয়টি জানতে পারলেন তখন উভয় হাত তুলে দোয়া করলেন "হে আল্লাহ খালেদ যা করেছে তা থেকে আমি দায়িত্ব মুক্ত। এরপর রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) নিহতদের রক্ত পণ এবং অনান্য ক্ষতিপূরণ দিয়েছেন।
- ২) ৪ হিজরীর সফর মাসে বি'রে মাউনার বেদনাদায়ক ঘটনার পর, যেখানে আমর বিন উমাইয়া জমেরী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) প্রাণে রক্ষা পেয়েছিলেন, মদীনায ফিরে আসার সময় রাস্তায় কিলাব বংশের দু'ব্যক্তিকে শত্রু পক্ষের লোক মনে করে হত্যা করেছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এ ঘটনা জানতে পেরে তিনি তাদের উভয়ের রক্তপন আদায় করেন।
- ৩) ২য় হিজরীর রজব মাসে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) একটি গোয়েন্দা দল সংবাদ সংগ্রহের জন্য পাঠালেন, যাদের কোরাইশদের একটি গ্রুপের সাথে সংঘর্ষ হল, সাহাবাগণ নিজেদের মাঝে পরামর্শক্রমে কোরাইশদের গ্রুপটির উপর আক্রমণ করল, ফলে কোরাইশদের এক ব্যক্তি নিহত হল, দু'জন গ্রেফতার হল, একজন পালিয়ে গিয়েছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এ ঘটনা জানতে পেরে বললেনঃ আমি তোমাদেরকে হারাম(নিষিদ্ধ মাসে) যুদ্ধ করার অনুমতি দেই নাই, ফলে তিনি দু'জন বন্দীকেই মুক্তি দিয়ে দিলেন এবং নিহত ব্যক্তির রক্ত পন আদায় করলেন।

- ৪) বদরের যুদ্ধে মক্কার মোশরেকদের ৭০জন লোক বন্দী হয়েছিল, এরা মুসলমানদের জানের শত্রু ছিল, মুসলমানদেরকে পৃথিবী থেকে চির বিদায় করে দিতে চেয়েছিল, কিন্তু যখন বন্দী হয়ে আসল, তখন রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সাহাবাগণকে নির্দেশ দিলেন যে বন্দীদের সাথে ভাল আচরণ করবে, তাই সাহাবাগণ নিজেরা খেজুর খেত, আর বন্দীদেরকে ভাল খাবার পরিবেশন করত, যে সমস্ত বন্দীদের কাপড় ছিল না তাদের জন্য কাপড়ের ব্যবস্থা করা হল, বন্দীদের মধ্যে এক ব্যক্তির নাম ছিল সুহাইল বিন আমর, যে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সম্পর্কে রক্ত গরম করা বক্তব্য দিত, ওমর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) পরামর্শ দিলেন, ইয়া রাসূলুল্লাহ তার সামনের দু'টি দাঁত ভেঙ্গে দিন, যাতে আর কোন দিন আপনার বিরুদ্ধে কিছু বলতে না পারে। শাস্তি দেয়ার উপযুক্ত পরামর্শ ছিল, সামনে কোন বাধাও ছিল না, বিশ্ববাসীর প্রতি রহমতের নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) ওমর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) এর পরামর্শ প্রত্যাখ্যান করে বন্দীদের সাথে সদাচারণের এমন দৃষ্টান্ত স্থাপন করলেন যা পৃথিবীতে আজও অতুলনীয়।
- ৫) বদরের যুদ্ধের বন্দীদের মাঝে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর জামাতা আবুল আসও ছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর মেয়ে যায়নাব (রাযিয়াল্লাহু আনহা) আবুল আসের মুক্তির জন্য কিছু সম্পদ পাঠাল, যার মধ্যে একটি হারও ছিল যা খাদীজা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) তার মেয়েকে বিদায় দেয়ার সময় দিয়ে ছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) ঐ হার দেখা মাত্র মন নরম হয়ে গেল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সাহাবাগণকে বললেনঃ যদি তোমরা অনুমতি দাও তাহলে আবুল আসকে বিনা মুক্তিপনে মুক্তি দিতে চাই, সাহাবাগণ সম্মত চিহ্নে অনুমতি দিলে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আবুল আসকে মুক্তি দিয়ে দিলেন।
- ৬) হুনাইনের যুদ্ধে ৬ হাজার লোক মুসলমানদের হাতে বন্দী হয়, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাদের সবাইকে শুধু বিনা মুক্তিপনেই মুক্তি দেন নাই বরং তাদের প্রত্যেককে একটি করে মিশরীয় চাদরও উপহার হিসেবে দিলেন। আজ সমগ্র বিশ্বে যারা নিজেদের বড়ত্ব, সভ্যতা ও মানবতাবাদের দাবী করে বেড়াচ্ছে, তারা তাদের শতবছরের ইতিহাসে এধরণের কোন দৃষ্টান্ত খুঁজে পেলে তা পেশ করুক!
- ৭) গামেদী বংশের এক মহিলা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট উপস্থিত হয়ে বললঃ ইয়া রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আমাকে পবিত্র করুন, সাথে সাথে একথাও স্বীকার করল যে আমি অবৈধভাবে গর্ভধারণ করেছি, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ তুমি ফিরে চলে যাও, সন্তান প্রসবের পর আসবে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তার শাস্তি এজন্য দেয়ী করলেন, যেন নির্দোষ শিশু সন্তানটির ক্ষতি না হয়, সন্তান ভূমিষ্ট হওয়ার পর ঐ মহিলা

আবার আসলে তিনি বললেনঃ যাও এখন গিয়ে তাকে দুধ পান করাও, দুধ পানের বয়স শেষ হলে আসবে, মহিলাটি আবার ফিরে চলে গেল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) দ্বিতীয় বার তার শাস্তি এজন্য দেবী করলেন যেন একটি মা'সুম বাচ্চা তার মায়ের দুধ পান এবং স্নেহ বঞ্চিত না হয়। দুধ পানের বয়স শেষ হওয়ার পর মহিলা আবার আসল, তখন রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তার উপর শাস্তি কার্যকর করলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) শুধু মায়ের পেটেই সন্তানের নিরাপত্তার প্রতি গুরুত্ব দেন নাই বরং সন্তান ভূমিষ্ট হওয়ার পরও তাকে মাত্‌স্নেহ থেকে বঞ্চিত করা পছন্দ করেন নাই।

- ৮) ওমর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) এর শাসনামলে ইসলামী সেনাদল এ যিম্মীর(ইসলামী রাষ্ট্রে অমুসলিম প্রজার) জমির ফসল বিনষ্ট করে দিল, ওমর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তখন বাইতুল মাল থেকে জমির মালিককে দশ হাজার দিরহাম ক্ষতিপূরণ দিলেন।<sup>১৪</sup>

বাস্তবতা হল এই যে, ইসলাম আজ থেকে ১৪শত বছর আগে যেভাবে মানবাধিকারকে সংরক্ষণ করেছে, পাশ্চাত্য তার সমস্ত উন্নতি, অগ্রগতি ও মুক্ত চিন্তার অধিকার থাকা সত্ত্বেও এধরণের মানবাধিকারের কল্পনাও করতে পারবে না।

জাতিয় সংসদ জেনারেল এসেম্বলীতে ১০ ডিসেম্বর ১৯৪৮ইং মানবাধিকার সম্পর্কে ৩০ দফা সম্মিলিত যে ঘোষণা পেশ করা হয়, তা শুরু থেকে শেষ পর্যন্ত পাঠ করলে দেখা যাবে যে এখানে মানবাধিকারের শুধু রেফারেন্সই রয়েছে, কিন্তু ইসলাম যেভাবে মানব জীবনের সকল স্তরে পৃথক পৃথক অধিকার নির্ধারণ করেছে, যেমনঃ পিতা-মাতার অধিকার, সন্তানদের অধিকার, স্বামীর অধিকার, স্ত্রীর অধিকার, প্রতিবেশীর অধিকার, এতীমের অধিকার, মিসকীন ও অভাবীদের অধিকার, ভিক্ষুকের অধিকার, মুসাফিরের অধিকার, বন্দীর অধিকার, ক্রীতদাসের অধিকার, অমুসলিমের অধিকার, এমনকি কিছুক্ষণের জন্য কারো নিকট অবস্থানকারীর অধিকার, পাশ্চাত্যের এধরণের অধিকার প্রতিষ্ঠার চিন্তা কিয়ামত পর্যন্ত আসবে না।

পাশ্চাত্য বাসীদের নিকট নারী অধিকারের যথেষ্ট বলিষ্ট কণ্ঠ শোনা যায়, কিন্তু সত্য কথা হল এই যে, পাশ্চাত্যবাসীরা নারী অধিকারের নামে নারীকে শুধু উলঙ্গই করেছে, এছাড়া আর কোন অধিকার যদি তারা নারীকে দিয়ে থাকে, তাহলে তাদের তা পরিষ্কার করা উচিত, অথচ ইসলাম নারীকে শুধু সন্ত্রম এবং সম্মানই রক্ষা করে নাই বরং তাকে সমাজে একজন সম্মানীতা এবং মানানসয়ী স্থানও দিয়েছে, মা হিসেবে তাকে পিতার চেয়েও অধিক ভাল আচরণ পাওয়ার অধিকার দিয়েছে, স্ত্রী হিসেবে তার জন্য আলাদা অধিকার প্রতিষ্ঠিত করেছে, মেয়ে এবং বোন হিসেবেও তাকে তার অধিকার দেয়া হয়েছে, যদি বিধবা হয় তাহলে সে ক্ষেত্রেও তার অধিকার দেয়া হয়েছে, যদি ত্বালাক প্রাপ্ত হয়, তাহলে ঐ ক্ষেত্রেও তার অধিকার তাকে দেয়া হয়েছে,

<sup>১৪</sup> -মঈনউদ্দীন নদভী লিখিত তারিখ ইসলামী, পৃঃ ২২৩।



উন্নতি ও অগ্রগতি সম্পন্ন এবং মুক্ত চিন্তার পাতাকাবাহী পাশ্চাত্য সমাজ আদৌ কি নারীকে এ অধীকার দিতে প্রস্তুত আছে? কিন্তু পাশ্চাত্য বাসীদের চক্রান্তের কি ধারণা যে, মায়ের পেটে শিশুর জীবনের নিরাপত্তা বিধানকারী ইসলামের নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সন্ত্রাসী, রক্তপাত কারী, হত্যাকারী নবী ছিলেন?(নাউজুবিল্লাহ)।

আর শুধু একটি রাষ্ট্র ইরাকের উপর অর্থনৈতিক অবরোধ আরোপ করে লেঙ্ক মা'সুম বাচ্চাকে মৃত্যু মুখে পতিত করী অ্যামেরিকা এবং পাশ্চাত্যবাসীরা সবচেয়ে বড় মানবাধিকার রক্ষা করী?

### ইসলাম ও কুফরীর দন্দঃ

ইসলাম এবং কুফরীর দন্দ ঐ দিন থেকে শুরু হয়েছে যেদিন ইবলীস আল্লাহর নির্দেশ অমান্য করে আদম (আঃ) কে সেজদা করতে অস্বীকার করেছিল এবং বিভাড়িত হয়ে ছিল, বিভাড়িত হওয়ার পর সে প্রকাশ্যে ঘোষণা দিল যে,

﴿ قَالَ فِيمَا أُغْوِيْتِي لِأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۝١٦ ثُمَّ لَا يَتَّبِعُهُمُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ

خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَنِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا يَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝١٧﴾

অর্থঃ “সে বললঃআপনি আমাকে যেমন উদ্ভ্রান্ত করেছেন,আমিও অবশ্যইতাদেও জন্য আপনার সরল পথে বসে থাকব। এরপর তাদেও নিকট আসব তাদেও সামনের দিক থেকে, পেছন দিক থেকে, ডান দিক থেকে এবং বাম দিক থেকে।(সূরা আ'রাফ-১৬,১৭)

ইবলীসের এ প্রতিজ্ঞার পর থেকে মানব ইতিহাসের রাত ও দিন কখনো ইসলাম ও কুফুরের দন্দ থেকে মুক্ত ছিল না, কখনো এ দন্দ নুহ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সরদাদের মাঝে ছিল, কখনো ইবরাহীম (আঃ) এবং নমরূদের মাঝে ছিল, আবার কখনো হুদ(আঃ) এবং তাঁর কাউমের সরদারদের মাঝে ছিল, আবার কখনো সালেহ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সরদারদের মাঝে ছিল, সর্বশেষে এ দন্দ মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এবং কোরাইশদের সরদারদের মাঝে সংঘটিত হয়েছিল।

আল্লাহ তা'লা কোরআ'ন মাজীদে সম্মানিত নবীগণের সাথে কাফের নেতাদের দন্দের কথা বিভিন্ন স্থানে বিস্তারিত বর্ণনা করেছেন, যা অধ্যয়নে কাফেরদের ইসলামের সাথে শত্রুতা, সত্যের প্রতি উগ্র মনভাব, ঈমানদারদের বিরুদ্ধে যোগসাজেস এবং চক্রান্ত, ঈমান দারদের প্রতি যুলম, তাদেরকে কষ্ট দেয়া, তাদেরকে পৃথিবী থেকে নিঃশিহ্ন করে দেয়ার পরিকল্পনা, এর বিপরীদে ঈমানদারগণের দৃঢ়মনোভাব এবং ধৈর্য, ঈমানদারদের জন্য আল্লাহর সাহায্য এবং সংরক্ষণ, সর্বশেষে কাফেরদের দৃষ্টান্তমূলক পরিণতি ইত্যাদি থেকে বস্তুবতাকে বুঝা অত্যন্ত সহজ হয়ে যায়, এবাস্তব সত্য থেকে দু'টি বিষয় স্পষ্ট হয়ঃ

১মঃ ইসলাম এবং কুফরের মাঝে দন্দ আবহমান কাল থেকেই শুরু হয়েছে এবং কিয়ামত পর্যন্ত চলতে থাকবে, আল্লামা ইকবাল বলেছেনঃ

ইসলাম ও জাহেলিয়াতের দন্দ আবহমানকাল থেকে আজ পর্যন্ত চলে আসছে, মোস্তফার (ইসলামের) আলোর সাথে আবুলাহাবের দন্দ।

২য়ঃ ইসলাম এবং কুফরের মাঝের দন্দের মূল কারণ আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসূলগণের প্রতি ঈমান আনা।

“তা’লিমাত কোরআন” বিষয়টি এত ব্যাপক যে, কয়েকশ পৃষ্ঠার গ্রন্থে তা আলোচনা করা সম্ভব ছিল না, আমি বর্তমান আবস্থার আলোকে শুধু ঐ সমস্ত শিক্ষাগুলোর উপরে আলোকপাত করার চেষ্টা করেছি যে, যে বিষয়গুলো ইসলামের শত্রুরা অধিকাংশ ক্ষেত্রে ঠাট্টা বিদ্বেষের নিদর্শনে পরিণত করেছে, উল্লেখিত শিক্ষাগুলো ছাড়াও আকীদা, গুরুত্বপূর্ণ নির্দেশ এবং নিষেধাবলীর উল্লেখ করা হয়েছে, আশা করছি এতে এগ্রন্থ থেকে উপকার হাসিলে আরো অধিক সুবিধা হবে ইনশাআল্লাহ্।

এগ্রন্থের ভাল দিকগুলো আল্লাহ্ তা’লার দয়া এবং অনুগ্রহের ফল, আর ভুল ভ্রান্তিসমূহ আমার নিজের গোনাহর কারণে, আমি আল্লাহ্ তা’লার নিকট দোয়া করছি যে, তিনি যেন আমার জীবনের গোনাহ এবং অকলাণসমূহ স্বীয় দয়া ও অনুগ্রহে আবরিত করে দেন, নিশ্চয় তিনি অত্যন্ত অনুগ্রহকারী এবং ক্ষমাশীল ও দয়াকারী।

এগ্রন্থ প্রস্তুতির ব্যাপারে সহযোগীতাকারী উলামাগণের জন্য উদারমনে কৃতজ্ঞতা করছি যে, আল্লাহ্ তাদের ইলম ও আমলে বরকত দিন, দুনিয়া এবং আখেরাতে তাদেরকে তাঁর অসীম রহমতে রহম করুন আমীন!

বিজ্ঞানের প্রতি বিশেষ কৃতজ্ঞতা যে, তাদের চোখে এগ্রন্থের যেখানেই কোন ভুল দৃষ্টি গোচর হবে উদার চিত্তে তারা তা আমাকে অবগত করাবে, আমি তাদের জন্য দোয়া করব এবং পরবর্তী সংস্করণে তা সংশোধন করে আমি আনন্দ উপভোগ করব। (আল্লাহ্ তাদেরকে উত্তম প্রতিদান দিন।)

আমার মোহতারাম বন্ধু জনাব সেকান্দার আব্বাসী সাহেব, (হায়দরা বাদ সিন্দ) এর জন্য বিশেষ কৃতজ্ঞতার হকদার এজন্য যে, সে তাফহিমুসসুন্নাহ্ সিরিজের সমস্ত বইগুলো অত্যন্ত কষ্ট স্বীকার করে এবং যথেষ্ট যত্নসহকারে শুধু সিন্ধী ভাষায় অনুবাদই করে নাই বরং তার প্রকাশনা এবং বন্টনের দায়িত্বও পালন করছে, আল্লাহ্ তার সুস্থতা এবং জীবনে বরকত দিন, তিনি তাকে আরো একনিষ্ঠ এবং দৃঢ়তার সাথে হাদীস প্রচার এবং প্রসারের তাওফিক দিন, আমীন!

ভাই আযীয খালেদ মাহমুদ কিলানী, হাদীস পাবলিকেশন্স এর ম্যানেজার এবং ভাই আযীয হারুনুর রশীদ কিলানী ডিজাইনার, তারা তাদের নিজ দায়িত্বের চেয়ে আরো অধিক গুরুত্ব

দিয়ে নিষ্ঠার সাথে কাজ করায় আমার অগ্রহ আরো জোরদার হয়েছে, এ দু'ভাইয়ের রাতদিনের পরিশ্রমে গ্রন্থসমূহ যথাযথ নিয়মে প্রকাশিত হচ্ছে। আল্লাহ তা'লা এ ভাতৃদ্বয়কে দুনিয়া এবং আখেরাতে কল্যাণ দান করুন। তাদের ধন-সম্পদ এবং পরিবার পরিজনে বরকত দান করুন। আমীন!

সোদী আরবে তাফহিমুসসুনাহর প্রকাশ ও প্রচারে গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালনকারী হাফেজ আবেদ এলাহী সাহেব (মুদীর, মাজাবা বাইতুসসালাম)

অত্যন্ত কষ্ট স্বীকার করে এ দায়িত্বে আনুজাম দিয়ে যাচ্ছেন; দোয়া করছি যে, আল্লাহ তাঁকে দুনিয়া ও আখেরাতে উত্তম প্রতিদান দান করুন। আমীন!

আমি আমার ঐ সমস্ত বন্ধুদেরর কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করছি যারা তাফহিমুসসুনাহর প্রকাশনার জন্য গত বিশ বছর ধরে অত্যন্ত নিষ্ঠা এবং দৃঢ়তার সাথে ভূমিকা পালন করে যাচ্ছে, বিশেষ করে প্রিয় পাঠকগণেরও কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করছি যারা এহাদীস গ্রন্থসমূহ থেকে উপকৃত হওয়ার পর আমার জন্য কল্যাণের দোয়া করছে, আল্লাহ তাদের সকলকে দুনিয়া ও আখেরাতে উচ্চ মর্যাদা দান করেন। আমীন!

হে বিশ্ব প্রতিপালক! হাদীস প্রচারণার এ ক্ষুদ্র প্রচেষ্টা কে তুমি অনুগ্রহ করে কবুল কর, এটাকে তুমি আমার জন্য, আমার পিতা-মাতার জন্য, অনুবাদকদের জন্য, প্রকাশকদের জন্য, সহযোগীতাকারীদের জন্য, পাঠকদের জন্য, সাদকা জারিয়া কর এবং ঐ দিন তোমার রহমত হাসিলের যারিয়া কর যেদিন তোমার রহমত ব্যতীত মাগফিরাতের আর কোন রাস্তা থাকবে না।

وصلى الله على نبينا محمد صلى الله عليه وسلم وآله وصحبه اجمعين  
برحمتك يا ارحم الراحمين.

মোহাম্মদ ইকবাল কিলানী (আফালাহ আনহু)

রিয়াদ, সোদী আরব

১৬ রবিউস্সানী ১৪২৭হিঃ, মোতাবেক ১৪ মে ২০০৬ইং।

## উপক্রমনিকাঃ

## কোরআ'ন সংরক্ষণের সংক্ষিপ্ত ইতিহাসঃ

কোরআ'ন মাজীদ অবতীর্ণের সূত্রপাত হয়েছিল লাইলাতুল কদর, ২১ রমযান, ১০ আগষ্ট ৬১০খৃঃ, সোমবার।<sup>১৫</sup>

ঐ সময়ে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর বয়স ছিল চন্দ্র বছর হিসেবে ৪০ বছর, ৬ মাস, ১২ দিন। আর সৌর বছর হিসেবে ৩৯ বছর তিন মাস ২২ দিন।<sup>১৬</sup>

অহী অবতীর্ণের প্রারম্ভে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এভাবে থাকতেন যে নাজানি তিনি অহীর কথাগুলো ভুলে যান, জিবরীল (আঃ) এর সাথে সাথে অহীর কথাগুলো বার বার দোহরাইতেন, ফলে আল্লাহ এ নির্দেশ দিলেন যে,

﴿ لَا تَحْرُكَ بِهِ لِسَانُكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۚ ﴾ (১৬)

অর্থঃ“ তাড়াতাড়ি শিখে নেয়ার জন্য আপনি দ্রুত অহী আবৃত্তি করবেন না।

(সূরা ক্বিয়ামা-১৬)

সাথে সাথে এ নিশ্চয়তাও দিলেন যে, এ অহী স্মরণ রাখা এবং পড়ানো আমার দায়িত্ব। আল্লাহর বাণীঃ

﴿ إِنَّا عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۚ فَإِذَا قُرَأْنَهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۚ ﴾ (১৭)

অর্থঃ“ এর সংরক্ষণ ও পাঠ আমারই দায়িত্ব, অতঃপর আমি যখন তা পাঠ করি তখন আপনি ঐ পাঠের অনুসরণ করুন। (সূরা ক্বিয়ামা-১৭, ১৮)

আল্লাহর এবাণী থেকে একথা পরিষ্কার ভাবে স্পষ্ট হয় যে, কোরআ'ন মাজীদের এক একটি আয়াত, এক একটি শব্দ স্বয়ং আল্লাহ তা'লা রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর অন্তরে সংরক্ষিত করে দিয়ে ছিলেন। আরো সতর্কতার জন্য রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) প্রতি বছর রমযান মাসে কোরআ'ন মাজীদের ততটুকু শোনাতেন যতটুকু অবতীর্ণ হয়েছিল। যে বছর তিনি মৃত্যুবরণ করেন ঐ বছর জিবরীল (আঃ) কে দু'বার কোরআ'ন

<sup>১৫</sup> - পাঠ কর তোমার পালন কর্তার নামে যিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন, সৃষ্টি করেছেন মানুষকে জমাত রক্ত থেকে, পাঠ করুন আপনার পালনকর্তা মহা দয়ালু, যিনি কসমের সাহায্যে শিক্ষা দিয়েছেন, শিক্ষা দিয়েছেন মানুষকে যা সে জানত না।

<sup>১৬</sup> - সফিউর রহমান মোবারকপুরী লিখিত আর রাহিকুম মাখতুম পৃঃ ৯৬-৯৭।

শুনিয়েছেন। যেন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর অন্তরে কোরআ'ন মাজীদ এমনভাবে সংরক্ষিত ছিল যে সামান্য ভুল ভ্রুটি বা সামান্য হেরফেরের কোন প্রকার কোন সম্ভবনা ছিল না।

গাহাবা কেরামগণের মাঝে শিক্ষিত অশিক্ষিত সর্বপ্রকার লোকই ছিল, শিক্ষিত লোকদের সংখ্যা তুলনামূলক কম ছিল, তাই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কোরআ'ন সংরক্ষণের জন্য কোরআ'ন মুখস্ত করা এবং লিখিত ভাবে রাখা উভয় পদ্ধতিই তিনি অবলম্বন করেছেন।

উভয় পদ্ধতির সংক্ষিপ্ত ইতিহাস নীচে উল্লেখ করা হলঃ

ক) কোরআ'ন মুখস্ত করাঃ

কোরআ'ন মাজীদের অবতীর্ণ যেহেতু শাব্দিক ভাবে হয়েছিল অতএব জিবরীল (আঃ) শব্দ এবং আয়াতের ধারাবাহিকতার সাথে সাথে রাসূল(সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে তার বিস্তুত উচ্চারণও শিখাত, আর ঐ শাব্দিক ভাবেই উন্মত পর্যন্ত পৌঁছানো জরুরী ছিল, তাই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাঁর সার্বিক প্রচেষ্টা কোরআ'ন মুখস্ত করার ক্ষেত্রে ব্যয় করেছেন।

মদীনায় হিবরত করার পর তিনি সর্বপ্রথম মসজিদ নির্মাণ করেছেন, এরপর মসজিদের এক পাশে সামান্য উঁচু করে “সুফ্যা” তৈরী করে তাকে মাদ্রাসায় রূপ দিয়েছেন, যেখানে উস্তাদগণ তাদের ছাত্রদেরকে কোরআ'ন শিক্ষা দিত। ওবাদা বিন সামেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) বলেনঃ যখন কোন ব্যক্তি হিবরত করে মদীনায় আসত তখন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাকে আমাদের আনসারদের মধ্য থেকে কারো নিকট পাঠিয়ে দিতেন, যেন তাকে কোরআ'ন শিখানো হয়। মসজিদ নববীতে কোরআ'ন মাজীদ তেলাওয়াত করা এবং শিক্ষা দেয়ার আওয়াজ এত বেশি হত যে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ যে হে লোকেরা তোমরা তোমাদের আওয়াজ সংযত রাখ।

কোরআ'ন মুখস্ত করার প্রতি তাড়াহুড়া এবং বেশি গুরুত্ব দেয়ার দ্বিতীয় কারণ এই যে, আরবদের ছিল যথেষ্ট মুখস্ত শক্তি, যারা তাদের বংশধারাতো বটেই এমনকি তারা তাদের ঘোড়ার বংশধারাও পরিষ্কার করে জানত।

কোরআ'ন মুখস্তের প্রতি গুরুত্ব দেয়ার তৃতীয় কারণ ছিল এই যে, প্রত্যেক মুসলমানের জন্য নামাযে কিছু না কিছু তেলাওয়াত করা অপরিহার্য, ফরয নামায ব্যতীত নফল নামায, বিশেষ করে তাহাজ্জুদ নামাযের ফযিলত সাহাবা কেরামগণের মাঝে কোরআ'ন মুখস্তের আগ্রহকে আরো বৃদ্ধি করেছে।

রমযান মোবারকের পূর্ণ মাস কোরআ'নসাজীদ তেলওয়াত, শ্রবণ, মুখস্ত, শিখা, শিখানোর বিশেষ সময়, এতদ্ব্যতীত কোরআ'ন মাজীদে অসংখ্য ফযিলত এবং কল্যাণের প্রতি দৃষ্টি রেখে কোরআ'ন মুখস্ত করার ব্যাপারে সাহাবা কেরামগণ একে অপরের চেয়ে অগ্রগামী থাকার জন্য চেষ্টা করত।

৪র্থ হিবরীতে বিরে মাউনার বেদনাদায়ক ঘটনায় ৭০ জন সাহাবীর ব্যাপারে বলা হয়ে থাকে যে তারা সবাই ভাল কোরআ'তেলওয়াতকারী ছিল, তারা দিনের বেলায় কাঠ কেটে আহলে সুফ্যার লোকদের জন্য খাবার সংগ্রহ করত এবং কোরআ'ন শিখত ও শিখাত, আর রাতে আল্লাহর নিকট দোয়া করা ও নামায আদায়ে ব্যস্ত থাকত।<sup>১৭</sup>

সাহাবা কেরামগণের এ অগ্রহের ফলাফল এই ছিল যে, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর জীবদ্দশায়ই হাফেযগণের একটি বড় দল গড়ে উঠেছিল, ঐদলের মধ্যে আবুবকর সিদ্দীক(রযিয়াল্লাহু আনহু), ওমার ফারুক(রযিয়াল্লাহু আনহু), ওসমান গনী(রযিয়াল্লাহু আনহু), আলী (রযিয়াল্লাহু আনহু) তালহা (রযিয়াল্লাহু আনহু) সা'দ (রযিয়াল্লাহু আনহু) আবদুল্লাহ বিন মাসউদ(রযিয়াল্লাহু আনহু) হুযাইফা বিন ইয়ামান (রযিয়াল্লাহু আনহু) আবুহুযাইফা (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর গোলাম সালেম(রযিয়াল্লাহু আনহু), আবুহুরাইরা(রযিয়াল্লাহু আনহু), আবদুল্লাহ বিন ওমার (রযিয়াল্লাহু আনহু) আবদুল্লাহ বিন আব্বাস (রযিয়াল্লাহু আনহু), আমর বিন আস(রযিয়াল্লাহু আনহু), আবদুল্লাহ বিন আমর (রযিয়াল্লাহু আনহু), মোয়াবীয়া (রযিয়াল্লাহু আনহু), আবদুল্লাহ বিন যুবাইর (রযিয়াল্লাহু আনহু), আবদুল্লাহ বিন সায়েব (রযিয়াল্লাহু আনহু), আয়শা (রযিয়াল্লাহু আনহা), হাফসা (রযিয়াল্লাহু আনহা), উম্মুসালামা (রযিয়াল্লাহু আনহা) গণের নাম বিশেষভাবে উল্লেখ যোগ্য।<sup>১৮</sup>

রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর মৃত্যুর সাথে সাথেই ১১ হিবরীতে সংঘটিত ইয়ামামার যুদ্ধে ৭০০ হাফেযে কোরআ'নের শাহাদাত বরণ একথা স্পষ্ট করে প্রমাণ করে যে ঐ সময় পর্যন্ত যথেষ্ট পরিমান হাফেয গড়ে উঠেছিল, মুখস্ত করার মাধ্যমে কোরআ'ন মাজীদ সংরক্ষণের এ ধারা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগ থেকে আজ পর্যন্ত বিদ্যমান আছে এবং কিয়ামত পর্যন্ত তা চালু থাকবে ইনশাআল্লাহ।

### কোরআ'ন লিখনঃ

কোরআ'ন মুখস্ত করার প্রতি বিশেষভাবে গুরুত্ব দেয়া সত্ত্বেও কোরআ'ন লিখে রাখার গুরুত্বের কথা রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) মোটেও ভুলে যান নি। এ উদ্দেশ্যে রাসূল রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) শিক্ষিত সাহাবাগণকে এ দায়িত্ব দিয়ে ছিলেন

<sup>১৭</sup> - আররাহিকুম মাখতুম পৃঃ৪৬০।

<sup>১৮</sup> - মোকাদ্দামা মাযারেফুল কোরআ'ন। পৃঃ৮১।

যে, ওহী নাযিল হওয়া মাত্রই তারা তা লিখে রাখবে, যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) তাঁর নিদৃষ্ট ওহীর লিখক ছিল, এছাড়াও তিনি সরকারী অন্যান্য বিষয়াবলী লিখে রাখার দায়িত্বও তার ছিল। স্বয়ং রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাকে বিদেশী ভাষা শিখার এবং লিখার জন্য দিক নির্দেশনা দিয়ে ছিলেন। এছাড়া অন্যান্য উল্লেখ যোগ্য ওহী লিখকগণের নাম নিম্ন রূপঃ

- ১) আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ২) ওমার ফারুক (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ৩) ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ৪) আলী (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ৫) ওবাই বিন কা'ব (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ৬) যুবাইর বিন আওয়াম (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ৭) মোয়াবিয়া বিন সুফিয়ান (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ৮) মুগীরা বিন শো'বা (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ৯) খালেদ বিন ওলীদ (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ১০) সাবেত বিন কয়েস (রযিয়াল্লাহু আনহু)
- ১১) আবান বিন সাঈদ (রযিয়াল্লাহু আনহু) ।<sup>১৯</sup>
- ১২) আবদুল্লাহ বিন সাঈদ বিন আস (রযিয়াল্লাহু আনহু)

জাহেলিয়াতের যুগেও লিখক হিসেবে প্রশিক্ষিত ছিল, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাকে নির্দেশ দিয়ে রেখে ছিলেন যে, সে যেন সাহাবা কেয়ামগণকে লিখা শিখায়, বলা হয়ে থাকে যে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে ওহী লিখকগণের সংখ্যা ৪০ পর্যন্ত পৌঁছে গিয়েছিল।<sup>২০</sup>

রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর অভ্যাস ছিল এই যে, যখনই কোরআন কারীমের কোন আয়াত অবতীর্ণ হত তখন তিনি ওহী লিখকদেরকে পরিপূর্ণভাবে নির্দেশ দিতেন যে, এ আয়াতটি ওমুক ওমুক সুরায় ওমুক ওমুক আয়াতের পরে লিখ, তখন ওহী লিখকগণ পাথর, চামড়া, খেজুরের ডাল, গাছের পাতা, হাড়ি বা কোন কিছু উপর লিখে রাখত, এভাবে

<sup>১৯</sup> - ফাতহুল বারী, খঃ ৯ পৃঃ ১৮।

<sup>২০</sup> - ডঃ সুবহী সালেহ লিখিত উলুমুল কোরআন, বাইরুত।

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে কোরআ'ন কারীমের এমন একটি কপি প্রস্তুত হয়ে গিয়েছিল যা রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) নিজের তত্ত্বাবধানে লিখিয়েছেন। এছাড়াও অনেক সাহাবী এমন ছিলেন যে, তারা নিজের ইচ্ছা ও আগ্রহে কোন কোন সূরা বা আয়াত নিজের নিকট লিখে রাখত, যেমন ওমার (রযিয়ল্লাহু আনহু) ইসলাম গ্রহণের পূর্বে তাঁর বোন এবং ভগ্নিপতি একটি পুস্তিকায় সূরা ত্বা-হা এর কিছু আয়াত লিখে রেখেছিল, তাই বলা হয়ে থাকে যে, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর মৃত্যুর সময় পর্যন্ত অগোছানো ভাবে ১৭টির অধিক মোসহাফের (কোরআ'নের কপি) সন্ধান পাওয়া যায়।<sup>২১</sup>

লিখনীর মাধ্যমে কোরআ'ন সংরক্ষণের ধারা আজও মুখস্তের মাধ্যমে কোরআ'ন সংরক্ষণের চেয়ে কয়েকগুণ বেশি পরিমাণে শুধু জারিয়ে নেই বরং তা দিন দিন আরো বৃদ্ধি পাচ্ছে, মোটামুটি শতাধিক ভাষায় কোরআ'ন মাজীদেবের অনুবাদ প্রকাশিত হয়েছে, শুধু মদীনায় প্রতিষ্ঠিত “বাদশাহ ফাহাদ আল কোরআ'ন একাডেমী” থেকে প্রতি বছর ২কোটি ৮০ লক্ষ কোরআ'ন মাজীদেবের কপি ছেপে বিশ্ব ব্যাপী বিনা মূল্যে বিতরণ করা হয়। (তাঁকে আল্লাহ ইসলাম এবং মুসলমানদের পক্ষ থেকে সর্বোত্তম প্রতিদান দান করুন)।

উল্লেখ্যঃ প্রেস আবিষ্কারের পরে সর্বপ্রথম ১১১৩হিঃ জার্মানীর হামবুর্গ প্রেসে কোরআ'ন মাজীদ ছাপানো হয় যার একটি কপি আজও দারুল কুতুব মিশরিয়াতে বিদ্যমান আছে।<sup>২২</sup>

#### আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়ল্লাহু আনহু) -এর যুগে কোরআ'ন মাজীদ একত্রিত করণঃ

ইয়ামামার যুদ্ধে যখন হাফেজগণের একটি বড় দল শহিদ হয়ে গেল তখন সর্বপ্রথম ওমার ফারুক (রযিয়ল্লাহু আনহু) কোরআ'ন মাজীদ লিখিতভাবে একত্রিত করার অনুভূতি হয়, তাই তিনি আমীরুল মুমেনীন আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়ল্লাহু আনহু) এর নিকট এসে বললঃ ইয়ামামার যুদ্ধে হাফেজদের একটি বড়দল শহিদ হয়ে গেছে, যদি যুদ্ধসমূহে এভাবে হাফেজগণ শহিদ হতে থাকে তাহলে আশঙ্কা রয়েছে যে কোরআ'ন মাজীদেবের একটি বড় অংশ বিনষ্ট হয়ে যাবে, তাই তুমি কোরআ'ন মাজীদ একত্রিত করার প্রতি গুরুত্ব দাও।

আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়ল্লাহু আনহু) বললেনঃ যেকাজ রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাঁর জিবদশায় করে নাই সেকাজ আমি কি করে করতে পারি? ওমার (রযিয়ল্লাহু আনহু) উত্তরে বললেনঃ আল্লাহর কসম এটা খুবই ভাল কাজ! এরপর আল্লাহ তা'লা একাজের জন্য আবুবকর (রযিয়ল্লাহু আনহু) এর অন্তর খুলে দিলেন, তখন তিনি যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়ল্লাহু আনহু) কে ডেকে বললেনঃ তুমি যুবক এবং বুদ্ধিমান ব্যক্তি তোমার ব্যাপারে কারো কোন খারাপ ধারণা নেই, তুমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর অধীর লিখক

<sup>২১</sup> - মাওলানা আবদুর রহমান কিলানী লিখিত আয়েনা পরোয়েশিয়াত, খঃ৫, পৃঃ৭১৮।

<sup>২২</sup> - ডঃ সুবহী সালেহ লিখিত উলুমুল কোরআ'ন।



ছিলে তাই তুমি কোরআ'ন মাজীদে আয়াতসমূহ খুঁজে তা একত্রিত কর। যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) বললঃ যদি তারা (আবুবকর এবং ওমার (রযিয়াল্লাহু আনহুম) আমাকে কোন পাহাড় এক জায়গা থেকে অন্য জায়গায় স্থানান্তর করতে বলত তাহলে তা আমার জন্য এতটা দুষ্কর হতনা যতটা দুষ্কর কোরআ'ন মাজীদ একত্রিত করণ। আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু) যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) কে একাজের জন্য বার বার বলতে থাকলেন, এমন কি এক সময়ে আল্লাহ যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর অন্তরকে একাজের জন্য খুলে দিলেন ফলে তিনি একাজ করতে শুরু করলেন।<sup>২০</sup>

যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) কত কষ্ট স্বীকার করে একাজে আনজাম দিয়েছেন তা একথা থেকে অনুমান করা যাবে যে, যখন কোন ব্যক্তি কোন আয়াত নিয়ে যায়েদ (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর নিকট আসত তখন তিনি নিম্ন উল্লেখিত চারটি পদ্ধতিতে তা যাচাই বাছাই করতেনঃ

- ১) যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) নিজে হাফেজ ছিলেন তাই প্রথমে নিজের মুখস্তের আলোকে তা যাচাই করতেন।
- ২) ওমার ফারুক (রযিয়াল্লাহু আনহু) ও যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর সাথে কোরআ'ন একত্রিত করার কাজে জড়িত ছিলেন, তিনিও কোরআ'নের হাফেজ ছিলেন তাই তিনিও নিজের মুখস্তের আলোকে তা যাচাই করতেন।
- ৩) যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) ততক্ষণ একটি আয়াতকে গ্রহণ করতেন না যতক্ষণ না দু'জন গ্রহণ যোগ্য ব্যক্তি এ সাক্ষ্য না দিত যে, হাঁ এ আয়াতটি সত্যিই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর সামনে লিখা হয়েছে।
- ৪) পরিশেষে পেশকৃত আয়াতটিকে অন্যান্য সাহাবাগণের লিখিত আয়াতের সাথে মেলানো হত, যে আয়াতটি এ চারটি শর্ত অনুযায়ী সঠিক হত তা গ্রহণ করা হত। এত গুরুত্বের সাথে যায়েদ (রযিয়াল্লাহু আনহু) কোরআ'ন একত্রিকরণের এগুরুত্বপূর্ণ কাজটি আনজাম দিয়েছেন।

যায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) একত্র কৃত এ কপিটিকে “উম্ম” বলা হত, এ “উম্ম” ৩টি বিশেষ বৈশিষ্ট ছিলঃ

- ক) সমস্ত সূরাসমূহের আয়াতগুলোকে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নির্দেশিত বিন্যাস অনুযায়ী বিন্যস্ত করা হয়েছে।

<sup>২০</sup> - বোখারী কিতাব ফাযায়েল কোরআ'ন, বাব জামউল কোরআ'ন।

- খ) ঐ কপিতে কেরআতের (তেলওয়াত পদ্ধতির) ৭টি পদ্ধতিই বিদ্যমান ছিল, যাতে করে যে ব্যক্তি যে পদ্ধতিতে সুবিধামত কোরআ'ন তেলওয়াত করতে পারবে সে ঐভাবে তা করবে।
- গ) সূরাসমূহ ধারাবাহিক ভাবে সাজানো হয়নাই বরং প্রত্যেকটি সূরা পৃথক পৃথক ভাবে সহিফার (পুস্তিকার) আকৃতিতে বিন্যস্ত করা হয়েছিল।

আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর শাসনামলে ঐ কপিটি আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর নিকট সংরক্ষিত ছিল, আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর মৃত্যুর পর ওমার ফারুক (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর যুগে এ কপিটি ওমার ফারুক (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর নিকট ছিল, ওমার ফারুক (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর শাহাদাত বরণের পর একপিটি উম্মুল মুমেনীন হাফসা বিনতু ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহা)র নিকট সংরক্ষিত ছিল।

### কোরআ'ন মাজীদে ৭টি ভিন্ন ভিন্ন কেরাত (তেলওয়াত পদ্ধতি):

মূলত কোরআ'ন মাজীদ কোরাইশদের তেলওয়াত পদ্ধতি (তাদের ভাষায়) অবতীর্ণ হয়ে ছিল, কিন্তু বিভিন্ন বংশের বিভিন্ন বরকমের স্থানীয় ভাষা এবং উচ্চারণ পদ্ধতির কারণে উম্মতে মোহাম্মাদীকে আল্লাহর পক্ষ থেকে ভিন্ন ভিন্ন ৭টি স্থানীয় ভাষায় কোরআ'ন তেলওয়াতের সুযোগ দেয়া হয়ে ছিল। জিবরীল (আঃ) রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে এ নির্দেশ পৌঁছাল যে, আপনি আপনার উম্মতকে একটি স্থানীয় ভাষায় কোরআ'ন শিক্ষা দিন, তিনি বললেনঃ আমি এ থেকে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করছি, আমার উম্মত এ ক্ষমতা রাখে না। জিবরীল (আঃ) দ্বিতীয় বার আসল এবং বললঃ আল্লাহ্ তা'লা আপনাকে এ নির্দেশ দিয়েছেন যে, আপনার উম্মতদেরকে স্থানীয় দু'টি ভাষায় কোরআ'ন শিক্ষা দিন, তিনি বললেনঃ আমি এ থেকে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করছি, আমার উম্মত এ ক্ষমতা রাখে না। জিবরীল (আঃ) তৃতীয় বার আসল এবং বললঃ আল্লাহ্ তা'লা আপনাকে এ নির্দেশ দিয়েছেন যে, আপনার উম্মতদেরকে স্থানীয় ৩টি ভাষায় কোরআ'ন শিক্ষা দিন, তিনি বললেনঃ আমি এ থেকে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করছি, আমার উম্মত এ ক্ষমতা রাখে না। জিবরীল (আঃ) ৪র্থ বার আসল এবং বললঃ আল্লাহ্ তা'লা আপনাকে এ নির্দেশ দিয়েছেন যে, আপনার উম্মতদেরকে স্থানীয় ৭টি ভাষায় কোরআ'ন শিক্ষা দিন, এ সাতটি স্থানীয় ভাষার মধ্যে মানুষ যে ভাষায় কোরআ'ন তেলওয়াত করবে তা সঠিক হবে।<sup>২৪</sup>

উল্লেখ্যঃ ৭টি ভাষার উদ্দেশ্য হল কোথাও উচ্চারণের পার্থক্য, যে এক কেরাতে (পদ্ধতিতে) পড়া হয় মুসা অন্য কেরাতে মুসায়ু, আবার কোথাও যের যবর পেশের পার্থক্য যেমনঃ এক কেরাতে যুল আরসিল মাজীদু (দালের উপর পেশ দিয়ে) আবার অন্য কেরাতে যুল আরসিল

<sup>২৪</sup> - মুসলিম, কিতাব ফযায়েল কোরআ'ন, বাব বায়ান আল্লাল কোরআ'ন নাযালা আলা সাবআতা আহকফ।

মাজীদি (দালের নিচে যের দিয়ে)। আবার কোথাও এপার্থক্য হয় এক বচন, দ্বিবচন এবং বহুবচনে, বা পুং লিঙ্গ এবং স্ত্রী লিঙ্গের পার্থক্য। যেমন এক কেরাতে তাম্মাত্ কালিমাত্ রাক্বিক আবার অন্য কেরাতে তাম্মাত্ কালিমাত্ রাক্বুক। আবার কোথাও এপার্থক্য হয়ে থাকে ক্রিয়ার মধ্যে, যেমন এক কেরাতে ওমান তাত্বাওয়া খাইরান, আবার অন্য কেরাতে মান ইয়ত্বাওয়া খাইরান। কিন্তু একথা পরিষ্কার যে, এ সাত কেরাতের তেলওয়াতের মাধ্যমে অর্থের মধ্যে কোন পার্থক্য হয়না। এটা এধরণের পার্থক্য যেমন মিশরের অধিবাসীরা আরবী 'জিম' অক্ষরটিকে বাংলা 'গ' এর ন্যায় উচ্চারণ করে, যেমন 'জানাযা' শব্দটিকে তারা 'গানাযা' উচ্চারণ করে থাকে, ইরানের অধিবাসীরা আরবী 'কাফ' অক্ষরটিকে বাংলা 'চ' এর ন্যায় উচ্চারণ করে থাকে, যেমন "আল্লাহু আকবার" কে তারা "আল্লাহু আচ্চা" উচ্চারণ করে। ভারতের হায়দারাবাদ এলাকার লোকেরা আরবী 'কাফ' অক্ষরটি কে বাংলা 'খ' এর ন্যায় উচ্চারণ করে, যেমন "সন্দুক" কে তারা "সন্দুখ" উচ্চারণ করে থাকে। কিন্তু এ ভিন্নতার কারণে কোথাও অর্থের মধ্যে কোন পরিবর্তন করে না। ঠিক এমনিভাবে কোরআ'ন মাজীদের ভিন্ন ভিন্ন সাত কেরাতের বিষয়টিও অনুরূপই।

ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) কোরআ'ন মাজীদকে এক কেরাতে (তেলওয়াত পদ্ধতিতে) একত্রিত করণ এবং সূরা সমূহের বিন্ধাসঃ

ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর শাসনামলে (২৫-৩৩৫) হিঃ জিহাদের উদ্দেশ্যে বিভিন্ন দেশে গমনকারী সাহাবাগণ বিজিত অঞ্চলসমূহে নিজ নিজ শিক্ষা অনুযায়ী কোরআ'ন মাজীদ তেলওয়াত করত, যতদিন পর্যন্ত মানুষ ৭ কেরাত (তেলওয়াত পদ্ধতি) সম্পর্কে অবগত ছিল ততদিন কোন প্রকার প্রশ্ন দেখা দেয়নি, কিন্তু সময় অতিবাহিত হওয়ার সাথে সাথে ইসলাম দূর দূরান্তের অঞ্চলসমূহে পৌঁছার পর কেরাত(তেলওয়াত পদ্ধতি)সম্পর্কে মানুষের ধারণা কমতে লাগল, ফলে ভিন্ন জন ভিন্ন পদ্ধতিতে তেলওয়াত করার কারণে মানুষের মাঝে একজন আরেক জনের তেলওয়াতকে ভুল হিসেবে আখ্যায়িত করতে লাগল, হুযাইফা বিন ইয়ামেন (রযিয়াল্লাহু আনহু) আরমেনিয়া এবং আজারবাইজানের যুদ্ধ থেকে ফিরে আসার পর ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর নিকট উপস্থিত হয়ে বললঃ হে আমীরুল মুমেনীন এউম্মত আল্লাহর কিতাব নিয়ে মতভেদে লিপ্ত হওয়ার আগে তার একটা সুরাহা করুন, ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) জিজ্ঞেস করলেন যে, কি হয়েছে? হুযাইফা (রযিয়াল্লাহু আনহু) বললঃ যুদ্ধ চলাকালে দেখলাম যে সিরিয়ার লোকেরা উবাই বিন কা'ব (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর তেলওয়াত পদ্ধতিতে কোরআ'ন তেলওয়াত করছে, যা ইরাক বাসীরা শোনে নাই, আর ইরাকবাসীরা আবদুল্লাহ বিন মাসউদ (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর তেলওয়াত পদ্ধতিতে কোরআ'ন তেলওয়াত করছে যা সিরিয়া বাসীরা শোনে নাই, ফলে একে অপরকে কাকের ফতোয়া দিচ্ছে। ইতিপূর্বে ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর নিকট এধরণের অভিযোগ এসেছিল, তাই তিনি সম্মানিত সাহাবাগণকে একত্রিত করে বিষয়টি নিয়ে তাদের সাথে পরামর্শ করলেন যে এবিষয়ে আপনাদের কি পরামর্শ? সাহাবাগণ

ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) কে জিজ্ঞেস করল আপনি এব্যাপারে কি চিন্তা করেন? ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) বললঃ আমার পরামর্শ হল এই, যে সমস্ত মুসলমানদেরকে এক কুরাত (তেলওয়াত পদ্ধতির) উপর একমত করে দেই, যাতে কোন মতভেদ না থাকে। সাহাবাগণ ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) এপরামর্শকে পছন্দ করল এবং এটাকে তারা সিদ্ধান্ত হিসেবে গ্রহণ করল। এ সম্মিলিত সিদ্ধান্তের উপর কাজ করার জন্য ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) চারজন সাহাবার সমন্বয়ে একটি কমিটি গঠন করলেন, এ কমিটির মধ্যে ছিল য়ায়েদ বিন সাবেত (রযিয়াল্লাহু আনহু) আবদুল্লাহু বিন যোবাইর (রযিয়াল্লাহু আনহু) সা'দ বিন আস (রযিয়াল্লাহু আনহু) আবদুর রহমান বিন হারেস (রযিয়াল্লাহু আনহু)। এ কমিটিকে সহযোগীতা করার জন্য পরে আরো অন্যান্য সাহাবীগণ তাদের সাথে শামীল হয়ে ছিলেন। এ কমিটিকে এ দিক নির্দেশনা দেয়া হয়েছিল যে, তারা আবুবকর এবং ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহু)র একত্রিতকৃত কপি থেকে এমন একটি কপি প্রস্তুত করবে যা শুধু একটি কুরাত (তেলওয়াত পদ্ধতিতে) হবে, আর যদি কোন শব্দ বা আয়াতের ব্যাপারে মত ভেদ হয় যে, এটা কিভাবে লিখা হবে তখন তা কোরাইশদের তেলওয়াত অনুযায়ী লিখতে হবে, কেননা কোরআ'ন কারীম তাদের ভাষায়ই অবতীর্ণ হয়েছে। সাহাবাগণের একমিটি "উম্ম" কে সামনে রেখে যে গুরুত্বপূর্ণ কাজে আনজাম দিয়ে ছিল তা ছিল নিম্ন রূপঃ

১) রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর সময়ে সাহাবাগণের নিকট যতগুলো সহীফা ছিল তা আবার তলব করা হল এবং এগুলোকে নুতন করে "উম্ম" এর সাথে মেলানো হল, ততক্ষণ পর্যন্ত একটি আয়াত নুতন মোসহাফে (কোরআ'নে) অন্তর্ভুক্ত করা হয় নাই যতক্ষণ না সাহাবাগণের ভিন্ন ভিন্ন সহিফার সাথে মেলানো হয়েছে।

২) আয়াতসমূহকে যের যবর পেশহীনভাবে এমনভাবে লিখা হল যেন সমস্ত কুরাত (তেলওয়াত পদ্ধতি) এক হয়ে যায়, যেমনঃ

অর্থঃ কিয়ামতের দিনের মালিক।

অর্থঃ কিয়ামতের দিনের বাদশাহ।

এদু'টি পদ্ধতিকে নুতন মোসহাফে (কোরআ'নে) এভাবে লিখা হলঃ

এতে উভয় কুরাত (তেলওয়াত পদ্ধতি) লিখার মধ্যে এসে গেছে, কিন্তু এর অর্থের মধ্যে কোন রূপ পরিবর্তন হয় নাই।

৩) "উম্ম" এর মধ্যে সমস্ত সূরাসমূহ পৃথক পৃথক সহিফায় (পুস্তকে) অগোছালোভাবে বিদ্যমান ছিল, এ কমিটি চিন্তাভাবনা করে সমস্ত সূরাগুলোকে ধারাবাহিকভাবে সাজিয়ে একত্রিক করে দিল।

- ৪) ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) সকলের ঐক্যমতে প্রস্তুতকৃত কোরআ'নের একপি বিভিন্ন স্থানে পাঠলেন, তার মধ্যে একটি কপি মক্কায়, একটি সিরিয়ায়, একটি ইয়ামেন, একটি বাসরায়, একটি কুফায় পাঠালেন আর একটি কপি মদীনায় সংরক্ষণ করলেন।
- ৫) কোরআ'ন মাজীদের এ কপি বিভিন্ন ইসলামী কেন্দ্রগুলোতে পাঠানোর সাথে সাথে ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) একজন বিশেষজ্ঞ এবং ক্বারীও ঐসমস্ত ইসলামী কেন্দ্রগুলোতে পাঠিয়েছেন, যারা লোকদেরকে ঐ সকলের ঐক্যমতে প্রস্তুতকৃত কোরআ'নের তেলওয়াত পদ্ধতি মোতাবেক যথাযথভাবে লোকদেরকে কোরআ'ন শিক্ষা দিত। তাদের মধ্যে যাবেদ (রযিয়াল্লাহু আনহু) ছিলেন মদীনায়, আর আবদুল্লাহ বিন সায়েব (রযিয়াল্লাহু আনহু) ছিলেন মক্কায়।

এসমস্ত কর্মগুলো শেষ করার পর ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) সাহাবাগণের নিকট বিদ্বমান ভিন্ন ভিন্ন তেলওয়াত পদ্ধতি সম্বলিত কপিগুলো আশুন দিয়ে পুরিয়ে দিলেন। আর “উম্ম” হাফসা (রযিয়াল্লাহু আনহা) নিকট ফেরত দিলেন, যা হাফসা (রযিয়াল্লাহু আনহা) মৃত্যুর পর মারওয়ান আশুন দিয়ে পুরিয়ে দিয়েছিল।

এসাত ক্বোরাতেকে (তেলওয়াত পদ্ধতিকে) একটি পদ্ধতি একটি মোসহাফে (বোরআ'নে) সমবেত করার মধ্যে ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) কোরআ'ন মাজীদের ঐ বিরাট খেদমতে আনজাম দিলেন যার ফলে আজ বিশ্ব ব্যাপী মুসলমানরা ঐ পদ্ধতিতেই কোরআ'ন মাজীদ তেলওয়াত করছে। যে তেলওয়াত পদ্ধতিতে এ কোরআ'ন মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর উপর অবতীর্ণ হয়ে ছিল। সাহাবা কেলামগণের এ কষ্টের পর আল্লাহর দয়া ও অনুগ্রহে কোরআ'ন মাজীদের এক একটি অক্ষর, এক একটি শব্দ, এক একটি আয়াত কিভাবে কিয়ামত পর্যন্ত সংরক্ষিত করে রেখেছেন তার কিছু উদাহরণ নিচে পেশ করা হলঃ

- ১) কোরআ'ন মাজীদে ইবরাহীম শব্দটি ৬৯ বার এসেছে এর মাধ্যে সূরা বাক্বারার সর্বত্র এশব্দটি “ইয়া” ব্যতীত লিখা হয়েছে। যেমনঃ

আবরা অন্যান্য সূরাসমূহে ইবরাহীম শব্দটি “ইয়া” অক্ষর সহ লিখা হয়েছে। যেমনঃ

কোরআ'ন মাজীদ লিখার ক্ষেত্রে এ পার্থক্য কোরআ'ন মাজীদের প্রতিটি কপিতে ১৪শত বছর থেকে চলে আসছে যা আজ পর্যন্ত কোন মুসলমান বা অমুসলিম প্রকাশক তা পরিবর্তন করতে পারে নাই, না কিয়ামত পর্যন্ত তা করতে পারবে।

- ২) সামূদ শব্দটি কোরআ'ন মাজীদে দু'ইভাবে লিখা হয়েছে, যেমনঃ প্রথম

আরবী “দাল” অক্ষরটিতে যবর দিয়ে সূরা হুদ ৬১ নং আয়াত

আবার কোরআ'ন মাজীদে চারস্থানে এই শব্দটি আলিফ যোগে এভাবে লিখা হয়েছেঃ সূরা হুদ ৬৮ নং আয়াতেঃ

১৪শত বছর থেকে কোরআ'ন মাজীদে চারটি স্থানে সামূদ শব্দটি আলিফ যোগে লিখিত আছে, যেমন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে লিখা হয়েছিল, আজও পৃথিবীর সমস্ত মোসহাফে (কোরআ'নে) এভাবেই লিখিত আছে, কোন প্রকাশকই সমূদ শব্দ অতিরিক্ত আলিফ অক্ষরটি উঠিয়ে দিতে পারে নাই এবং কিয়ামত পর্যন্ত পারবেও না।

৩) “কাওয়ারীর” শব্দটিও কোরআ'নে দু'ভাবে লিখিত হয়েছেঃ

একস্থানে

আরবী “রা” অক্ষরটির উপর যবর দিয়ে যেমনঃ সূরা নামলের ৪৪ নং আয়াতে

আবার অন্য এক স্থানে সূরা ইনসানের ১৫ নং আয়াতে “রা” অক্ষরের পরে আলিফ যোগে লিখা হয়েছে

কিন্তু নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)-এর যুগে যেখানে “কাওয়ারিরা” শব্দটি “আলিফ” অক্ষর ব্যতীত লিখা হয়েছিল আজও প্রতিটি মোসহাফে (কোরআ'নে) আলিফ ব্যতীতই লিখা হচ্ছে, আর যেখানে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)এর যুগে “আলিফ” যোগে লিখা হয়েছিল ওখানে আজও “আলিফ” অক্ষর যোগেই লিখা হচ্ছে।

অবশ্য তেলওয়াত কারীদের সুবিধার্থে “আলিফ” অক্ষরের উপর একটি গোল (o) চিহ্ন ব্যবহার করা হচ্ছে। আর শিক্ষকগণ তাদের ছাত্রদেরকে শিখিয়ে দেন যে এ “আলিফ” টি অতিরিক্ত যা পড়ার সময় উচ্চারণ হবে না।

৪) কোরআ'ন মাজীদে

শব্দটি উপরে উল্লেখিত পদ্ধতিতে ২০০এর অধিক স্থানে লিখিত হয়েছে শুধু একস্থানে এ শব্দটির সাথে “খালিফ” অক্ষর যোগে সূরা ক্বাহাফের ২৩নং আয়াতে এভাবে লিখিত হয়েছেঃ

যা আরবী লিখন পদ্ধতি অনুযায়ী সঠিক নয়, কিন্তু সমস্ত মোসহাফে (কোরআ'নে) আজও এভাবেই বিদ্যমান আছে, যেমন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে লিখা হয়েছিল। আজ পর্যন্ত কোন প্রকাশক তা সংশোধন করার মত সাহস দেখাতে পারে নাই।

৫) সূরা নামলের ২১ নং আয়াতে

শব্দটি এভাবে লিখা হয়েছে যার অর্থ হয়ঃ কিংবা আমি তাকে হত্যা করব। এশব্দটিতে “জালের” পূর্বে “আলিফ” অক্ষরটি অতিরিক্ত যা শুধু লিখার নিয়ম অনুযায়ীই অশুদ্ধ নয়, বরং অনুবাদ করার ক্ষেত্রেও মারাত্মক ভুলের কারণ হতে পারে যদি ঐ “আলিফ” অক্ষরটি

তেলওয়াতের অন্তর্ভুক্ত করা হয়, তাহলে তার অর্থ সম্পূর্ণ পরিবর্তন হয়ে যাবে আর তাহবে এই যে, কিংবা আমি তাকে হত্যা করব না।

আশ্চর্য বিষয় হল যখন কোরআ'ন মাজীদে যের, যবর, পেশ ছিল না, নজা (ফোটা) ছিল না তখন আয়াতের এ অংশটি অতিরিক্ত (আলিফ) সহ অপরিবর্তিত অর্থ নিয়ে ইসলামের শত্রুদের হাতে কিভাবে নিরাপদ ছিল? অথচ সর্বকালেই কাফেরার কোরআ'ন মাজীদে পরিবর্তনের অপচেষ্টা চালিয়ে ছিল।

৬) এ বাক্যটি কোরআ'ন মাজীদে দু'বার এসেছে, ১ম সূরা আনকাবুতে ২য় সূরা যুমায়ে, সূরা আনকাবুতে

শব্দটি “ইয়া” অক্ষরসহ লিখিত হয়েছে, যেমনঃ

আয়াত নং-৫৬।

আবার সূরা যুমায়ে এ বাক্যটি “ইয়া” অক্ষর ব্যতীত এভাবে লিখিত হয়েছে,

আয়াত নং-১০।

উভয় পদ্ধতির অর্থের মধ্যে কোন পার্থক্য নেই, লিখার এ পার্থক্য ১৪শত বছর থেকে কোরআ'ন মাজীদের প্রতিটি কপিতে এভাবেই বিদ্যমান আছে। “ইয়া” অক্ষরের এ সাধারণ পার্থক্যটি আজ পর্যন্ত কোন মুসলমান বা অমুসলিম কোন প্রকাশক পরিবর্তন করতে পারে নাই এবং কিয়ামত পর্যন্ত বদলাতেও পারবে না।

৭) কোরআ'ন মাজীদে “লাইল” শব্দটি ৭৪টি স্থানে উল্লেখ হয়েছে, নিয়ম অনুযায়ী “লাইল” শব্দটিকে তার পূর্ববর্তী শব্দের সাথে মিলাতে হলে আরেকটি “লাম” অক্ষর যোগ করতে হয়, যেমনঃ

যেমন কোরআ'ন মাজীদের অন্যান্য শব্দগুলো “লাম” অক্ষর যোগ করা হয়েছে, যেমনঃ

সূরা আশীয়া-৫৫।

বা

সূরা মুরসালাত-৩১।

কিন্তু “লাইল” শব্দটি সমস্ত কোরআ'নে একটি “লাম” যোগে ব্যবহার হয়েছে। যা লিখার পদ্ধতি অনুযায়ী সঠিক নয়, কিন্তু আজ পর্যন্ত কোন ব্যক্তি কোরআ'ন মাজীদে “লাইল” শব্দটিতে আরেকটি “লাম” যোগ করতে পারে নাই।

৮) কোরআ'ন মাজীদের সমস্ত সূরাসমূহের শুরুতে

দ্বারা শুরু করা হয়েছে, কিন্তু সূরা তাওবার শুরুতে

উল্লেখ নেই, তার কারণ হল এইযে, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এ সূরা লিখানোর সময় তার শুরুতে

লিখাননি, তাই ১৪শত বছর থেকে পৃথিবীর সমস্ত মোসহাফ (কোরআ'নে)এ সূরাটি

ব্যতীতই লিখিত হয়ে আসছে, কোন বন্ধু বা শত্রুর এ সাহস হয়নাই যে, তারা সূরা তাওবার শুরুতে

লিখবে।

- ৯) সূরা ক্বাহাফে মূসা (আঃ) এবং খিজির(খাজার আঃ) এর ঘটনা বর্ণনা করা হয়েছে, যেখানে বলা হয়েছে, যে তাঁরা উভয়ে একটি এলাকাতে পৌঁছার পর সেখানকার লোকদের নিকট খাবার চাইল, কিন্তু তারা খাবার দিতে অস্বীকার করল, কোরআ'ন মাজীদে ভাষায়
- অর্থঃ “তারা অস্বীকার করল”।

খলীফা ওলীদ বিন আবদুল মালেকের সময়ে যখন কোরআ'ন মাজীদে নজ্জা (ফোটা) যোগ করা হল তখন কেউ কেউ বললঃ

এর পরিবর্তে

শব্দ লিখার পরামর্শ দিল

যার অর্থ হয়ঃ তারা খাবার দিল।

যাতে করে আপ্যায়ন করাতে অস্বীকার করার স্থলে আপ্যায়ন করাল, আর এলাকাবাসীরা তাদের বদনাম থেকে বেঁচে যাবে।

তখন ওলীদ বিন আব্দুল মালেক বললঃ “কোরআ'ন মাজীদ তো অন্তর থেকে অন্তরে স্থান্তরিত হয়”। (অর্থাৎ যা হাফেজদের অন্তরে সংরক্ষিত থাকে এবং তারা তাদের ছাত্রদের অন্তরে শিক্ষা দেয়ার মাধ্যমে স্থানান্তরিত করে। অতএব, কাগজের পরিবর্তনে কোন কাজ হবে না।<sup>২৫</sup> তাই তা যেমন ছিল তেমনই থাকতে দাও। গত ১৪শতবছর থেকে কাফেরদের সর্বপ্রকার শত্রুতা এবং কুচক্রান্ত থাকা সত্ত্বেও কোন কট্টর পন্থী কাফেরও কোরআ'ন মাজীদে কোন একটি শব্দ বা অক্ষর বা কোন যের বা যবর এমনকি ফোটার কোন পরিবর্তন আনতে পারে নাই, আর কিয়ামত পর্যন্ত কোন দিন পারবেও না। আল্লাহ তা'লা বলেছেনঃ

﴿ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ ১০ ﴾

<sup>২৫</sup> - ডঃ শওকী আবুখলীল লিখিত কাসাসুল কোরআ'ন, অনুবাদ মাজাবা দারুসসালাম পৃঃ৪৭৪।



অর্থঃ “আমি স্বয়ং এ উপদেশগ্রন্থ অবতারণ করেছে এবং আমি নিজেই এর সংরক্ষক”।  
(সূরা হিজর-৯)

আর এবাণীর কার্যকরিতা গত ১৪শত বছর থেকে চলে আসছে।

আব্বাসী খলীফা মামুনুর রশীদের শাসনামলে কোরআন সংরক্ষণ সংক্রান্ত ঘটনাবলী নিঃসন্দেহে পাঠকদের মনপুত হবে।

মামুনুর রশীদ তার শাসনামলে জ্ঞান চর্চার মূল্যায়ন করত, যেখানে সকালেরই পবেশাধিকার ছিল। একটি বৈঠকে একজন ইহুদী উপস্থিত ছিল, তার জ্ঞানগর্ব এবং সাহিত্যিকতাপূর্ণ আলোচনায় আকৃষ্ট হয়ে তাকে খলীফা মামুন ইসলাম গ্রহণ করার জন্য দাওয়াত দিল, কিন্তু ইহুদী তা প্রত্যাখ্যান করল, এক বছর পর ঐ ইহুদী আবার ঐ বৈঠকে উপস্থিত হল কিন্তু এসময়ে সে ইসলাম গ্রহণ করেছে, এব্যাপারে মামুনুর রশীদ তাকে জিজ্ঞেস করলে সে বললঃ আমার হাতের লিখা সুন্দর, আমি বই লিখে বিক্রি করি, আমি পরীক্ষামূলক ভাবে তাওরাতের তিনটি কপি লিপিক্র করেছি, সেখানে বহু স্থানে আমি আমার নিজের পক্ষ থেকে কম বেশি করেছি এবং এ কপি নিয়ে ইহুদীদের গীর্জায় গিয়েছি, ইহুদীরা যথেষ্ট আগ্রহ নিয়ে তা ক্রয় করেছে, এরপর ইজিলের তিনটি কপি পরিবর্তন করে লিখে তা চার্চে নিয়ে গেলাম এবং খৃষ্টানদের নিকট তা বিক্রি করলাম, এরপর কোরআন মাজীদের তিনটি কপি নিলাম এবং এখানেও ঐভাবে কম বেশি করে লিখলাম এবং মসজিদে নিয়ে গিয়ে তা মুসলমানদের নিকট বিক্রি করে দিলাম, কিন্তু এ তিনটি কপিই খুব তাড়াতাড়ি আমাকে ফিরিয়ে দেয়া হল এবলে যে, এটাতে পরিবর্তন করা হয়েছে, অথচ তাওরাত এবং ইজিলের সমস্ত কপিগুলো গৃহিত হয়েছে এবং কোন কপিই ফেরত আসে নাই, এ ঘটনার পর আমার বিশ্বাস জন্মাল যে, সত্যিই কোরআন মাজীদ আল্লাহ সংরক্ষণের দায়িত্ব নিয়েছেন, তাই আমি মুসলমান হয়ে গেলাম।<sup>২৬</sup>

#### • ওসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) -এর শাসনামলের পরঃ

ওসমান(রযিয়াল্লাহু আনহু) কোরআন মাজীদের যে কপিটি প্রস্তুত করিয়ে ছিলেন তাছিল যের, যবর, পেশ এবং নজ্জা(ফোটা) বিহীন। আরবী ভাষীদের জন্য এধরণের কোরআন তেলওয়াত করা ততটা কঠিন ছিল না, কিন্তু আনাবদের জন্য তা যথেষ্ট কষ্টকর ছিল, বলা হয়ে থাকে যে সর্বপ্রথম বসরার গর্ভণর যিয়াদ বিন আবুসুফিয়ান একজন আলেম আবুল আসওয়াদ আদদুয়ালীকে এবিষয়ে একটি সমাধান খোঁজার নির্দেশ দিয়ে ছিলেন, তিনি অক্ষরগুলোর উপর নজ্জা (ফোটা) দেয়ার পরামর্শ দিল এবং তা করা হল, আবদুল মালেক বিন মারওয়ান (৬৫-৮৬হিঃ) তার শাসনামলে ইরাকের শাসনকর্তা হাজ্জাজ বিন ইউসুফ কোরআন তেলওয়াতকে আরো সহজতর করার জন্য ইয়াহইয়া বিন ইয়ামার এবং নাসার বিন আসেম লাইসীও হাসান

<sup>২৬</sup> - মাওলানা মুফতি মোহাম্মদ শফি লিখিত মায়ারেফুল কোরআন, খঃ৫, পৃঃ২৭০।

বাসরী (রাহিমাহুল্লাহর) পরামর্শ ক্রমে ঘের, যবর, পেশ সংযোগ করেছে, আবার বলা হয়ে থাকে যে হামযা এবং তাশদীদের আলামতসমূহ খালীল বিন আহমদ (রাহিমাহুল্লাহ) স্থাপন করেছেন। (এব্যাপারে আল্লাহই ভাল জানেন)।

সাহাবা এবং তাবেরীয়নগণের অভ্যাস ছিল যে, তারা সপ্তাহে একবার কোরআ'ন মাজীদ খতম করত, এউদ্দেশ্যে তারা পূর্ণ কোরআ'ন মাজীদকে সাত ভাগে ভাগ করেছেন, যাকে হিয়ব বা মান্জীল বলা হয়। মূলত এই হিয়ব বা মান্জীলের ভাগ সাহাবা কেরামগণের যুগে হয়েছিল, অবশ্য কোরআ'ন মাজীদকে ত্রিশ পারায় ভাগ করা, প্রত্যেক পারাকে চার ভাগে ভাগ করা অর্থাৎ চতুর্থাংশ, অর্ধেক, তৃতীয়াংশ, এমনকি রুকু'র আলামত, আয়াত নাম্বার, অকফ (খামার চিহ্ন) যোগ করা ইত্যাদি মোসহাফ উসমানী (উসমান (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর যুগে একত্রিতকৃত কোরআ'নের পরে করা হয়েছে। যার সংযোজন একমাত্র কোরআ'ন মাজীদে তেলওয়াত এবং মুখস্ত করাকে সহজ করার জন্য করা হয়েছে। কোরআ'ন মাজীদ অবতীর্ণের সময়কালের সাথে এর কোন সম্পর্ক নেই এবং শরীয়তের দৃষ্টিতেও এর কোন বিশেষ বিধান নেই। (এব্যাপারে আল্লাহই ভাল জানেন)।

### নে'মতের বহিঃপ্রকাশঃ

কোরআ'ন লিখনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগ থেকেই কোরআ'ন সংরক্ষণের একটি গুরুত্বপূর্ণ মাধ্যম হিসেবে ছিল। গত ১৪শত বছরের মধ্যে কোরআ'ন মাজীদ লিখনের উন্নতির স্তরসমূহের প্রতি একবার দৃষ্টি দিলে তাদেখে মানব বিবেক আশ্চর্য হয় যে, প্রতিটি যুগের মানুষের মধ্যে আল্লাহ তা'লা কোরআ'ন মাজীদকে অত্যন্ত সুন্দর করে লিখার ব্যাপারে কত ব্যাপক আগ্রহ সৃষ্টি করে দিয়েছেন; শতাব্দীর উন্নত স্তরসমূহ অতিক্রম করার পর আজ আমাদের সামনে পূর্ণাঙ্গ ঘের, যবর, পেশ এবং ওয়াকফ(খামার) চিহ্ন সহ অত্যন্ত সুন্দর এবং সহজতর লিখনীর মাধ্যমে এমন একটি মোসহাফ (কোরআ'ন) আমাদের মাঝে বিদ্যমান যা বিশ্ব ব্যাপী অত্যন্ত সহজভাবে শিখা এবং শিখানো হয়। মূলত এসমস্ত কর্মকাণ্ড আল্লাহ তা'লার পরিপূর্ণ হিকমত এবং সর্বময় ক্ষমতারই বহিঃপ্রকাশ। যার মাধ্যমে আল্লাহ তা'লা কোরআ'ন মাজীদ সংরক্ষণের ওয়াদা করে রেখেছেন। নে'মতের বহিঃপ্রকাশ হিসেবে এবাস্তবতা প্রকাশ করা আমার (লিখকের)জন্য আনন্দের বিষয় যে, কীলানী বংশকেও আল্লাহ তা'লা কোরআ'ন লিখার সুভাগ্য দান করেছেন, যার গুরু সম্মানিত পিতা হাফেজ মোহাম্মদ ইদরীস কীলানী (রাহিমাহুল্লাহর) পূর্ব পুরুষ মৌলবী মোহাম্মদ বখস (রাহিমাহুল্লাহ) (মৃত ১৮৬১ইং)<sup>২৭</sup> মৌলবী

<sup>২৭</sup> - মাওলানা আবদুর রহমান কীলানী (রহমাতুল্লাহি আলাইহির) রিখা অনুযায়ী কীলানী বংশে সুন্দর হস্ত লিপির ধারা আমাদের (লিখকের)পূর্বপুরুষ হাজী মোহাম্মদ আরেফ থেকে শুরু হয়েছে,যে আওরঙ্গ জেব আলমঙ্গীর (১৬৫৫-১৭০৫ইং) সময়ে আমাদের পিত্র পুরুষদের বাসস্থান কীলানোয়ালা (জিলা গুজরা নোয়ালায়) বিচার প্রতি

মোহাম্মদ বখশ (রাহিমাহুল্লাহ) ছেলে মৌলবী ইমামুদ্দীন কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) (মৃত ১৯১৯ইং) তার নাতী মৌলবী নূর এলাহী কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) (মৃত ১৯৪৩ইং) এরপর তার পৌত্র হাফেজ মোহাম্মদ ইদরীস কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) (মৃত ১৯৯২ইং) ব্যতীত কীলানী বংশের আরো কিছু সুভাগ্যবান ব্যক্তিকেও আল্লাহ তা'লা এ সুভাগ্য দান করেছেন যাদের নাম এবং তাদের লিখিত কোরআ'ন মাজীদেবির বিস্তারিত বর্ণনা নিম্ন রূপঃ

- ১) মৌলবী মোহাম্মদ বখশ কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) তিনি বেশ কিছু কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ২) মৌলবী ইমামুদ্দীন কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) তাফসীর ওহীদী(নওয়াব ওয়াহিদুজ্জামান হায়দারাবাদী (রাহিমাহুল্লাহ) এছাড়াও তিনি আরো কিছু কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ৩) মৌলবী মোহাম্মদ দীন কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) তাফসীর ওহীদী(নওয়াব ওয়াহিদুজ্জামান হায়দারাবাদী (রাহিমাহুল্লাহ) এছাড়াও তিনি আরো কিছু কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।<sup>২৮</sup>
- ৪) মৌলবী নূর এলাহী কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) তিনি সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন যার সংখ্যা ১৫টি।<sup>২৯</sup>
- ৫) মোহাম্মদ সুলাইমান কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) তাফসীর আবুল হাসানাত এর ২৬তম পারা পর্যন্ত লিখেছেন, বাকী চার পারা অসুস্থতার কারণে লিখতে পারেন নাই।
- ৬) হাফেজ ইদরীস কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) তাফসীর সানায়ী(মাওলানা সানাউল্লাহ অমৃতসরী রাহিমাহুল্লাহ) এবং তাফসীর আহসানুত তাফসীর (ডেপুটি সায়্যেদ আহমদ হাসান দেহলভী (রাহিমাহুল্লাহ) লিখিত) লিপিবদ্ধ করেছেন।<sup>৩০</sup>
- ৭) আবদুররহমান কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) আশরাফুল হাওয়াসী(মাওলানা মোহাম্মদ আবদুহ লিখিত) লিপিবদ্ধ করেছেন এছাড়া ফিরোজ সানায় এবং তাজ কোম্পানীর বেশ কিছু সাধারণ কোরআ'ন তিনি লিপিবদ্ধ করেছেন।<sup>৩১</sup>

হিসেবে ছিলেন। তার ছেলে আমানুল্লাহ তার ছেলে হেদায় তুদ্বাহরে পর তার ছেলে ফাইজুল্লাহও হাতের লিখা সুন্দর ছিল, তবে কোরআ'ন মাজীদ লিখার ধারা ফাইজুল্লাহর ছেলে মৌলবী মোহাম্মদ বখশ কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) থেকে শুরু হয়েছে।

<sup>২৮</sup> -মৌলবী ইমামুদ্দীন (রাহিমাহুল্লাহ) এবং মৌলবী মোহাম্মদ দীন এ উভয়ে আপন ভাই ছিল, তারা উভয়ে মিলে তাফসীর ওয়াহেদী লিপিবদ্ধ করেছেন।

<sup>২৯</sup> -মৌলবী নূর এলাহী কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) লিখনীর কিছু নমুনা লাহোর জাদুঘরের ১৯৯এবং ২০০ নম্বরে সংরক্ষিত আছে।

<sup>৩০</sup> - লিখকের সম্মানিত পিতা হাফেজ মোহাম্মদ ইদরীস কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ) কোরআ'ন মাজীদ ব্যতীত প্রশিদ্ধ ৬টি হাদীস গ্রন্থ(বোখারী, মুসলিম, আবুদাউদ, তিরমিযী, নাসায়ী, ইবনে মাযাহ)ও লিপিবদ্ধ করেছেন। এছাড়াও মেশকাত এবং বুলুগুল মারামও লিপিবদ্ধ করেছেন।

- ৮) আবদুল গাফুর কীলানী মাওলানা আমীন আহসান ইসলামী লিখিত তাদাব্বুর কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন এছাড়াও পারা পারা অনুবাদ কৃত কোরআ'নও লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ৯) আবদুল গাফফার কীলানী (রাহিমুল্লাহ) তাফহিমুল কোরআ'নের ১ম খন্ড এবং বিভিন্ন সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১০) মোহাম্মদ ইউসুফ কীলানী (রাহিমুল্লাহ) মাওলানা সায়েদ আবুল আলা মাওদুদী লিখিত তাফহিমুল কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন, এছাড়াও বেশ কিছু সাধারণ কোরআ'ন মাজীদও লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১১) খুরসীদ আহমদ কীলানী (রাহিমুল্লাহ) পারা পারা অনুবাদ কৃত কোরআ'নও লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১২) রিয়ায আহমদ কীলানী ময়ীনউদ্দীন সাফেরী লিখিত আরবী তাফসীর জামেউল বায়ান লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১৩) মোহাম্মদ ইয়াকুব কীলানী তাফসীর মাহারী ব্যতীত বেশ কিছু সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১৪) এনায়েতুল্লাহ কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১৫) আবদুর রউফ কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১৬) খালীলুর রহমান কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১৭) মোহাম্মদ সাদ্দী কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১৮) আবদুল ওয়াহীদ কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ১৯) আবদুল ওয়াকীল কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ২০) আবদুল মুয়েদ কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।
- ২১) আবদুল মুগীস কীলানী সাধারণ কোরআ'ন লিপিবদ্ধ করেছেন।

কোরআ'ন লিখন কোন অতিরঞ্জন ছাড়াই বলা যায় যে, একটি বড় সুভাগ্যের ব্যাপার, কীলানী বংশে এর কল্যাণকর ধারা আলহামদু লিল্লাহ আজও আছে, কিন্তু আফসোসের বিষয় হয় কম্পিউটারের যুগে কীলানী বংশসহ সমস্ত কোরআ'ন লিখকদেরকে এ সুভাগ্য থেকে বঞ্চিত

<sup>৩৩</sup> - মদীনাহু বাদশাহু ফাহাদ আলকোরআ'ন একাডেমী থেকে প্রকাশিত ভারত ও পাকিস্তানের জন্য প্রকাশিত কোরআ'ন মাজীদও মাওলানা আবদুর রহমান কীলানী (রাহিমুল্লাহ) (মৃত ১৯৯৫ইং) লিখিত।

করেছে, যদিও কিছু কিছু পুরাতন প্রকাশক টেকনিকেল সুন্দর্যের জন্য আজও হাতের লিখনীকে কম্পিউটারের উপর অগ্রাধিকার দিয়ে থাকে, তবে তাদের সংখ্যা খুবই কম, মূল কথা কোরআ'ন মাজীদে প্রকাশনা এবং প্রচারণা আলহামদুলিল্লাহ দিন দিন বেড়ে চলছে এবং কিয়ামত পর্যন্ত তা চালু থাকবে। অতএব, আল্লাহর জন্য অসংখ্য প্রশংসা।

### কোরআ'ন মাজীদে চলেছে কি?

কোরআ'ন মাজীদ সম্পর্কে কাকেরদের দাবী ছিল এইযে, এটা আল্লাহর নাখিলকৃত কিতাব নয়, বরং মোহাম্মদের নিজস্ব আবিষ্কার, আল্লাহ তা'লা কোরআ'ন মাজীদে এর উত্তর এ দিয়েছেন যে, যদি কোরআ'ন মাজীদ মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিজস্ব আবিষ্কার হয় তাহলে তার অনুরূপ একটি সূরা বা একটি কথা তোমরাও আবিষ্কার করে দেখাও আল্লাহর বাণীঃ

অর্থঃ “তবে কি তারা বলে যে, ওটা সে নিজেই রচনা করেছে? তুমি বলে দাওঃ তাহলে তোমরাও ওর অনুরূপ রচিত দশটি সূরা আনয়ন কর, আর যদি তোমরা সত্যবাদী হও তাহলে (তোমাদের সাহায্যার্থে) আল্লাহ ব্যতীত যাদেরকে ডাকতে পার তাদেরকে ডেকে আন”। (সূরা হুদ-১৩)

দশটি সূরার পর আল্লাহ একটি সূরারও চলেছে দিয়েছেন, আল্লাহর বাণীঃ

﴿وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّمَّنْ مِثْلِهِ ۚ وَادْعُوا

شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٢﴾

অর্থঃ “এবং আমি আমার বান্দার প্রতি যা অবতীর্ণ করেছি, যদি তোমরা তাতে সন্দেহান হও তবে তার অনুরূপ একটি সূরা আনয়ন কর এবং আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের সাহায্যকারীদেরকে ডেকে নাও যদি তোমরা সত্য বাদী হও”। (সূরা বাক্বারা-২৩)

একটি সূরার পর আল্লাহ একটি আয়াতের চলেছে দিয়েছেন, যে একটি সূরা তো অনেক দূরের কথা তোমরা এর অনুরূপ একটি আয়াতও তৈরী করতে পারবে না।

আল্লাহর বাণীঃ

﴿أَمْ يَقُولُونَ نَقُولُهُ ۚ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٣﴾ فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِثْلِهِ ۚ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ

﴿ ٢٤ ﴾

অর্থঃ “তারা কি বলেঃ এ কোরআ’ন তাঁর নিজের রচনা? বরং তারা অবিশ্বাসী। তারা যদি সত্যবাদী হয় তাহলে এর অনুরূপ কোন রচনা উপস্থিত করুক না”। (সূরা ত্বর-৩৩, ৩৪)

সূরা বানীইসরাইলে আল্লাহ্ এত কঠোর চেলেক্ষ করেছেন যা অন্য আর কোথাও করেন নাই। আল্লাহ্র বাণীঃ

﴿ قُلْ لِّينِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ

بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَتْ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴾

অর্থঃ “হে মোহাম্মদ তুমি বলে দাও যদি এই কোরআ’নের অনুরূপ কোরআ’ন আনয়নের জন্য মানুষ ও জ্বিন সমবেত হয় এবং তারা পরস্পরকে সাহায্য করে, তবুও তারা এর অনুরূপ কোরআ’ন আনয়ন করতে পারবে না”। (সূরা বানী ইসরাইল-৮৮)

প্রশ্ন হল এই যে, গত ১৪শত বছর থেকে আরব এবং অনারবে বিদ্বমান কোরআ’ন মাজীদের গোর দুশমনদের কেউ এ চেলেক্ষ গ্রহণ করে নাই।

বাস্তবতা হল এই যে, কিছু উদাহরণ ইতিহাসের পাতায় লিখিত হয়েছে যে, কিছু কিছু ইসলামের শত্রুরা কোরআ’নের সাথে মিল রেখে সূরা তৈরীর চেষ্টা করেছে যেমনঃ

- ১) মুসাইলাম কাঙ্জাব রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগেই নবুয়তের দাবী করেছিল এবং বলে ছিল যে আমার উপর ওহী অবতীর্ণ হয়েছে, প্রমাণ হিসেবে নিম্নের সূরাটি পেশ করেছিল।

অর্থঃ হে ঘেনর ঘেনরকারী ব্যাঙ তুমি যতই ঘেনর ঘেনর কর তুমি কাউকে পানি পান করা থেকে বিরত রাখতে পারবে না, আর না পানিকে নোংরা করতে পারবে।

- ২) মুসাইলামা কাঙ্জাবের দাবী কৃত আরেকটি সূরা দ্রঃ

অর্থঃ হাতী, হাতী কি? তুমি কি জান হাতী কি? তার লেজটি ছোট আর গুঁড়টি বড়।

- ৩) শিয়াদের একটি দলের দাবী নিম্নোক্ত সূরা “বেলায়েত” কোরআ’ন মাজীদের অন্তর্ভুক্তঃ

অর্থঃ বিসমিল্লাহির রহমানির রাহীম, হে লোকেরা যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছ, তোমরা ঈমান আন নবী এবং তাঁর ওলী(বন্ধুর) প্রতি, যাকে আমি প্রেরণ করেছি, তারা উভয়ে তোমাদেরকে সঠিক পথের প্রতি আহ্বান করে। নবী এবং ওলী (নবীর বন্ধু) একে অপরের পরিপূরক, আর আমি সবকিছু জানি এবং সবকিছু সম্পর্কে অবগত। নিশ্চয় যারা আল্লাহ্র অঙ্গিকার পূর্ণ করে, তাদের জন্য রয়েছে নে’মত ভরপুর জান্নাত, আর যারা মিথ্যায় প্রতিপন্ন করে আমার আয়াতসমূহকে যখন তা তাদের নিকট তেলওয়াত করা হয়, নিশ্চয়

তাদের জন্য রয়েছে জাহান্নামে বেদনা দায়ক স্থান, যখন কিয়ামতের দিন তাদেরকে ডাকা হবে যে কোথায় জালেম এবং রাসূলগণকে মিথ্যায় প্রতিপন্নকারীরা, তিনি রাসূলদেরকে সত্য সহকারে সৃষ্টি করেছেন, একটি নিদৃষ্ট সময় পর্যন্ত আল্লাহ তাদেরকে বিজয় করবেন। আর স্বীয় রবের তাসবীহ পাঠ কর তাঁর প্রশংসা সহ, আর আলী সাক্কী দাতাদের অন্তর্ভুক্ত।<sup>৩২</sup>

৪) ১৯৯৯ইং ফিলিস্তিনের একজন ইহুদী ডঃ আনিস সুরস নিম্নোক্ত চারটি সূরা তৈরী করে ছিল।

১) সূরা আল মুসলিমুন, (১১ আয়াত বিশিষ্ট) (২) সূরা আত তাজাসুসুদ (১৫ আয়াত বিশিষ্ট) (৩) সূরা আল ইমান (১০ আয়াত বিশিষ্ট) (৪) সূরা তুল ওসায়া (১৬ আয়াত বিশিষ্ট) এবং সে এদাবী করেছিল যে আমি কোরআ'ন মাজীদে চলেঞ্জ গ্রহণ করে এ সূরাগুলো তৈরী করেছি।<sup>৩৩</sup> এর মধ্যে সূরা মুসলিমুনের কিছু আয়াত নিচে উল্লেখ করা হলঃ

অর্থঃ “আলিফ, লাম, সোয়াদ, মীম, বলঃহে মুসলমান নিশ্চয় তোমরা পথভ্রষ্টতার মাঝে পতিত আছ, নিশ্চয় যারা আল্লাহ এবং তাঁর মাসীহ (ঈসা আঃ)কে অস্বীকার করে তাদের জন্য পরকালে রয়েছে জাহান্নামের আগুন এবং বেদনাদায়ক শাস্তি, ঐ দিন কিছু কিছু চেহারা লাঞ্ছিত এবং কাল হবে, আল্লাহর নিকট ক্ষমা চাও, কিন্তু আল্লাহ যা চান তিনি তাই করেন।

৫) ২০০৫ইং সালের শুরুতে ইহুদী এবং খৃষ্টানরা মিলে অ্যামেরিকায় “ফোরকানুল হক” নামে একটি গ্রন্থ প্রকাশ করেছিল, যেখানে কোরআ'ন মাজীদে অনুকরণে ৭৭টি সূরা লিখে ছিল, ঐ সূরাসমূহের কিছু কিছু আয়াত এ গ্রন্থের উপযুক্ত আলোচনায় পাঠকরা পেয়ে যাবেন, কোরআ'ন মাজীদে অনুকরণে আয়াত এবং সূরা তৈরী করার এসমস্ত উদাহরণ থেকে পরিষ্কারভাবে একথা প্রমাণিত হয় যে, কোরআ'ন মাজীদ আল্লাহর পক্ষ থেকে হওয়ার দাবী (নাউজু বিল্লাহ) একটি বাতেল দাবী।

বাস্তবতা হল এইযে, কোরআ'ন মাজীদে যে বিষয়টিকে চলেঞ্জ করা হয়েছে তা এরকম নয় যে, কোন ব্যক্তি আরবী ভাষার শব্দ বা অক্ষর ব্যবহার করে এধরণের কিছু লাইন কখনো তৈরী করতে পারবে না, যেমন কোরআ'ন মাজীদে আছে। চিন্তা করুন! যে সমাজে বিপ্লব সাহিত্যিকতা পূর্ণ আরবী ভাষার স্বনামধন্য সাহিত্যিকরা ছিল, এমনকি ইমরুল কায়েসের মত বাকপটু কবি বিদ্বান ছিল, তাদের জন্য আরবী ভাষায় কয়েটি

<sup>৩২</sup> - বিস্তারিত দ্রঃ ইরানী ইনকিলাব ইমাম খোমেনী, মাওলানা মোহাম্মদ মানজুর নো'মানী লিখিত শিয়য়ত। প্রকাশকঃ আল ফোরকান বুক ডিপো, লক্ষনৌ পৃঃ২৭৮।

<sup>৩৩</sup> - <http://dialspace.dial.pipex.com/park/geq96/original/muslimoon.htm>

লাইন তৈরী করা কি এমন কঠিন কাজ ছিল? মূলত কোরআ'ন মাজীদ যে বিষয়ের চেলেঞ্জ করেছিল তাছিল এই যে, কিয়ামত পর্যন্ত কোন মানুষ একটি সূরা তো দূরের কথা এমনকি একটি আয়াতও তৈরী করতে পারবে না, যা বিশুদ্ধতা সাহিত্যিকতা শ্রুতিমধুরতা, আকৃষ্টিতা, মানুষের নিকট গ্রহণ যোগ্যতা ইত্যাদি দিক থেকে কোরআ'ন মাজীদের আয়াতের ন্যায় সমমানের হবে। এ চেলেঞ্জের সামনে সমগ্র আরব বিশ্ব অপারগ হয়ে লাজওয়াব হয়ে গিয়েছিল এবং অকপটে স্বীকার করে নিয়ে ছিল যে, এ কোরআ'ন কোন মানুষের কথা নয়। নিচে এর কিছু উদাহরণ পেশ করা হলঃ

- ১) জিমা'দ আজদী (রযিয়াল্লাহু আনহু) যখন সর্ব প্রথম কোরআ'ন মাজীদের তেলওয়াত শুনল তখন সাথে সাথে বলে উঠল, আমি এধরণের কথা কখনো শুনিনি, আমি গণকদের কথা শুনেছি, কবিদের কথা শুনেছি, যাদুকরদের কথা শুনেছি, কিন্তু এবাণী সমুদ্রের অতল তলে পৌঁছে যাবে।
- ২) ওমার (রযিয়াল্লাহু আনহু) সূরা ত্বা-হার আয়াতসমূহ শ্রবণে তার সমস্ত রাগ নিমিষে নিঃশেষ হয়ে গেল আর বলতে লাগল “কত উন্নত এবং উত্তম একথা”।
- ৩) বানী আবদুল আসহাল বংশের সর্দার উসাইদ বিন হুজাইর (রযিয়াল্লাহু আনহু) যখন মোসআব বিন ওমাইর (রযিয়াল্লাহু আনহু) এর মুখে কোরআ'ন মাজীদ শুনে পেল তখন বলতে লাগল “আহ! কত উত্তম এবং উন্নত বাণী”।
- ৪) হজ্জের সময়ে কোরাইশ সর্দারদের একটি পরামর্শ বৈঠক দারুন নাদওয়ায় অনুষ্ঠিত হল, যেখানে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সম্পর্কে তাঁকে যাদুকর, বা পাগল বা কবি বা গণক বলে আখ্যায়িত করে হাজীদেরকে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সম্পর্কে খারাপ ধারণা সৃষ্টি করার সিদ্ধান্ত নেয়া হল। লোকদের বিভিন্ন পরামর্শ সভায় ইসলামের নিকৃষ্ট দূশমন ওলীদ বিন মুগীরা এ সিদ্ধান্ত দিল যে, মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) গণক, পাগল, কবি, জাদুকর নয়, আল্লাহর কসম! তাঁর কথা অত্যন্ত সুন্দর, তাঁর মূল অত্যন্ত সুদৃঢ়, আর ডাল পালা ফলবান, তার ব্যাপারে খুব বেশি বললে যে কথা বলা যায় তাহল, এই যে, সে জাদুকর, তাঁর কথা শুনে বাপ-ছেলে, ভাই-ভাই, স্বামী-স্ত্রীর মাঝে সম্পর্ক হিন্ন হয়ে যায় এবং একথার উপর সবাইকে একমত করতে হবে।
- ৫) কোরাইশ সর্দার ওতবা বিন রাবীয়া রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর মুখে সূরা হা-মীম সাজদাহর আয়াত শুনে এসে কোরাইশ নেতাদেরকে বললঃ আল্লাহর কসম! আমি এমন এক বাণী শুনেছি যা ইতি পূর্বে আর কখনো শুনি নাই, এ বাণী না কোন কবির বাণী না কোন জাদুকরের বাণী। আমার পরামর্শ এইযে, তাঁকে তার অবস্থা মত থাকতে দাও, আল্লাহর কসম! এবাণীর মাধ্যমে বিরাট যুদ্ধ সংঘটিত হবে, যদি সে আরবদের উপর



বিজয়ী হয় তাহলে সরকার তোমাদের সরকার হবে, তাঁর সম্মান তোমাদের সম্মান হবে, আর আরবরা যদি তাঁকে হত্যা করে তাহলে বিনা বদনামীতে তোমাদের উদ্দেশ্য হাসিল হয়ে যাবে।

৬) আল্লাহর দূশমন আবুজাহাল এবং তারা অপর দুই সাথী আবুসুফিয়ান এবং আখনাস বিন শারীক, এ তিন জন রাতের আধারে পৃথক পৃথক ভাবে মক্কার হারামে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর মুখে কোরআ'ন মাজীদ শুনত, দ্বিতীয় দিনও শুনল এর পর তৃতীয় দিনও শুনল, তৃতীয় দিন আখনাস বিন শারীক আবুসুফিয়ানের ঘরে গেল এবং জিজ্ঞেস করল যে, বল মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর তেলওয়াতকৃত বাণী সম্পর্কে তোমার কি অভিমত? আবুসুফিয়ান নিরদিধায় বলে ফেলল এটা কোন মানুষের মুখের বাণী হতে পারেনা, আখনাস বললঃ আমারও একেই অভিমত, এরপর আখনাস আবুজাহালের নিকট গেল এবং জিজ্ঞেস করল মোহাম্মদের তেলওয়াতকৃত বাণী কেমন? আবুজাহাল বললঃ আমাদের বংশ এবং বনী আবদে মানাফের সাথে দীর্ঘকাল ধরে প্রতিযোগীতা চলছে, নেতৃত্ব এবং উদারতায় আমরা উভয়ে সমান, এখন তারা দাবী করছে যে, আমাদের বংশে নবী জন্মগ্রহণ করেছে এরপ্রতিরোধ আমরা কিভাবে করব? তাই আমরা সিদ্ধান্ত নিয়েছি যে, আমরা কখনো তার প্রতি ঈমান আনব না।

৭) হাবশায় হিবরত করার সময় আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু) ও হিজরত করার ইচ্ছা পোষণ করে বের হয়ে ছিলেন, কিন্তু ইবনে দাগিনা তাকে মক্কায় ফিরিয়ে আনল এবং মক্কার হারামে এসে আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু) কে নিরাপত্তা দেয়ার ঘোষণা দিল। কোরাইশ সর্দাররা বললঃ “ইবনে দাগিনা আমরা তোমার নিরাপত্তা দেয়াকে ভঙ্গ করছি না, কিন্তু তুমি আবুবকরকে বলে দাও যে, সেযেন ঘরের ভিতরে থেকে নামায আদায় করে এবং কোরআ'ন তেলওয়াত করে। সে যদি উঁচু কণ্ঠে নামায আদায় করে এবং কোরআ'ন তেলওয়াত করে তাহলে আমাদের বাচ্চারা এবং মহিলারা ফেতনায় পড়ে যাবে। আবুবকর সিদ্দীক (রযিয়াল্লাহু আনহু) কিছু দিন নিচু আওয়াজে কোরআ'ন মাজীদ তেলওয়াত করল, এরপর আবার উঁচু আওয়াজে কোরআ'ন তেলওয়াত করতে শুরু করল, যখন তিনি উঁচু আওয়াজে কোরআ'ন তেলওয়াত করতেন তখন মোশরেকদের বাচ্চা, বৃদ্ধবনিতা কোরআ'ন শোনার জন্য একত্রিত হয়ে যেত, এতে মক্কার মোশরেকরা পেরেশান হয়ে গেল, ইবনে দাগিনাকে ডেকে তার নিকট আভিযোগ করল, ইবনে দাগিনা আবুবকর (রযিয়াল্লাহু আনহু) কে উঁচু আওয়াজে কোরআ'ন তেলওয়াত করতে নিষেধ করল, তখন আবুবকর (রযিয়াল্লাহু আনহু) ইবনে দাগিনাকে তার দেয়া নিরাপত্তা ফেরত দিল এবং বললঃ আমি তোমার দেয়া নিরাপত্তা তোমাকে ফেরত দিলাম এবং আল্লাহর দেয়া নিরাপত্তায় আমি সন্তুষ্ট। (বোখারী)

৮) নবুয়তের ৫ম বছরের ঘটনা একদিন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) হারামে বসে উচ্চ স্বরে সূরা নজম তেলওয়াত করছিলেন, শ্রবণকারীদের মধ্যে মুসলমান কাফের উভয়েই উপস্থিত ছিল, কোরআ'ন মাজীদে প্রতিক্রিয়ার এ অবস্থা ছিল যে, সমস্ত শ্রোতার পিনপতন নিরব হয়ে কোরআ'ন মাজীদ শুনছিল, সূরা তেলওয়াত শেষ করে যখন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সেজদা করছিলেন তখন সমস্ত শ্রোতা নিজেদের অজান্তেই সিজদা করে ফেলেছিল, কাফেরদের একথা স্মরণই ছিল না যে, তারা কি করছে, সেজদা করার পর কাফেররা তাদের একর্মের জন্য লজ্জিত হল, কোরআ'ন মাজীদ তেলওয়াতের এ অলৌকিক প্রতিক্রিয়া তো ছিল আরবীভাষীদের উপর, কিন্তু তার প্রতিক্রিয়ার আরো আশ্চর্য জনক দিক হল যে এ কোরআ'ন আরবদের উপর যেমন প্রভাব ফেলে এমনিভাবে অনারবদের মন মস্তিষ্কের উপরও যথেষ্ট প্রভাব ফেলার যথেষ্ট ক্ষমতা রাখে।

কোরআ'ন মাজীদে প্রতিক্রিয়ায় রাশিয়ার রাষ্ট্র প্রধান খরোশিফের এঘটনাটি পাঠকদেরকে অভিভূত করবে যে, মিশরের রাষ্ট্রপ্রধান জামাল আবদুন নাসের রাশিয়ার রাষ্ট্র প্রধান খরোশীফের সাথে সাক্ষাৎ করার জন্য গেল, আর সাথে করে মিশরের প্রখ্যাত ক্বারী আবদুল বাসেতকেও সাথে নিয়ে গেল, সাক্ষাতে জামাল আবদুন নাসের ক্বারী আবদুল বাসেতকে পরিচয় করিয়ে দিল এবং তার মুখ থেকে কালামুল্লাহ (আল্লাহর বাণী) শোনার জন্য নিবেদন করল, খরোশীফ বললঃ আমি তো আল্লাহকেই মানীনা তাহলে তাঁর বাণী কি করে শোনব? নাসেরের বারংবারের নিবেদনে খোরশীফ কোরআ'ন শুনতে আগ্রহ প্রকাশ করল, ক্বারী আবদুল বাসেত সূরা ত্বা-হার ঐ আয়াতসমূহ তেলওয়াত করতে লাগল যা শ্রবণে ওমার (রযিয়াল্লাহু আনহু) ইসলাম গ্রহণ করে ছিল, সূরা ত্বা-হার তেলওয়াত শুনে খোরশীফের চোখ অশ্রুসজল হয়ে গেল, তেলওয়াত শেষ হলে নাসের খোরশীফকে জিজ্ঞেস করল আপনি তো আল্লাহকে মানেননা তাহলে আপনার চোখ কেন অশ্রুসজল হল? খোরশীফ বললঃ আমি সত্যিই আল্লাহকে মানীনা কিন্তু এবাণী শোনে নয়নাশ্রু নিয়ন্ত্রণ করতে পারি নাই, তারা কারণ আমি বুঝতে পারছি না।<sup>৩৪</sup>

খোরশীফ সত্যিই দুর্ভাগ্যবান মানুষ ছিল, তার মন মস্তিষ্কে মোহর লাগিয়ে দেয়া হয়েছিল, তাই সে তা বিবেচন করার চিন্তাও করে নাই, যে তার চোখে পানি আসার কারণ কি? কিন্তু এধরণের অসংখ্য উদাহরণ রয়েছে যে, লোকেরা কুফরী অবস্থায়ও কোরআ'ন মাজীদে অর্থ নাজেনেই শুধু তেলওয়াত শুনেই চোখে পানি এসে গেছে, তার অন্তরে চেটে সৃষ্টি হয়ে গেছে, মনমস্তিষ্ক জয় হয়ে গেছে, এরপর তখনই মস্তিষ্ক তৃপ্তি লাভ করেছে যখন ইসলাম গ্রহণ করেছে।

ঈমানদারদের বিষয়টি তো ভিন্ন যে, মক্কা এবং মদীনার হারামে রামযান মাসে কিয়ামুল লাইল (তাহাজ্জুদের নামাযে) কোন অতিরঞ্জন ছাড়াই বলা যায় যে, হাজার নয় বরং লক্ষ লক্ষ

মুসলমান উপস্থিত থাকে যাদের মধ্যে কোরআ'ন মাজীদেদের আয়াতের অর্থ বুঝার মত লোক কমই থাকে, কিন্তু ইমামগণের সুললিত কণ্ঠে যখন কোরআ'ন শুনে তখন চোখে অশ্রু ঝরতে থাকে, মনে দুনিয়ার সুখ সমরিকির কথা থাকে না, কান্না থামানো যায় না, আর যারা কোরআ'ন মাজীদ বুঝে তেলওয়াত করে তাদের বিষয়টিতো আরো ভিন্ন, তেলওয়াত করার সময় তাদের মন এত নরম হয় যে শব্দের উচ্চারণ করতে অনেক সময় তাদের কষ্ট হয়। শরীরের পশম দাঁড়িয়ে যায়, অন্তর নরম হয়ে যায়, তেলওয়াত শোনার আগ্রহ আরো বৃদ্ধি পায়, মন মানুষিকতা এমন হয় যে, মানুষ দুনিয়ার চাওয়া পাওয়া থেকে একেবারেই বিমুখ হয়ে যায়, মক্কার হারামের ইমাম শেখ সউদ আশশুয়াইমের(হাফিযাছল্লাহ) পেছনে নামায আদায় করীরা জানে যে, নামাযে সূরা তেলওয়াত করার সময় তাঁর অবস্থা এই হয় যে, কোন কোন সময়ে তিনি সূরা ফাতেহার তেলওয়াত পূর্ণ করতে পারেন না, কষ্ট নিচু হয়ে যায়, নিজের অজান্তেই কান্নায় ভেঙ্গে পড়েন, এটাই ঐ চলেঞ্জ যা কোরআ'ন মাজীদে কিয়ামত পর্যন্ত আগত সমস্ত জিন ও ইনসানকে দেয়া হয়েছে, যদি তোমরা এটা বুঝ যে, কোরআ'ন মাজীদ মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর স্বরচিত তাহলে তোমরাও এধরণের একটি সূরা বা কমপক্ষে একটি আয়াত রচনা করে দেখাও যা পাঠ করে মৃত অন্তর জাগ্রত হবে, যা শ্রবণে চোখ অশ্রুসজল হবে, শরীরের পশম দাঁড়িয়ে যাবে, অন্তর নরম হয়ে যাবে, যা মানুষের মন থেকে দুনিয়ার চাওয়া পাওয়ার চিন্তাকে দূর করে দিবে, যা বারবার তেলওয়াত করলে তেলওয়াত করার বা শ্রবণ করার আগ্রহ আরো বৃদ্ধি পাবে, মানুষের অন্তর তার অজান্তে বলে উঠবে যে এবাণীতো শুধু আমার জন্যই অবতীর্ণ হয়েছে এর অপেক্ষায়ই আমি ছিলাম, এটা ব্যতীত আমার জীবন বৃথা ছিল, এর প্রতি ঈমান এনে আমি আমার জীবনের লক্ষ্য উদ্দেশ্য খোঁজে পেয়েছি।

কোরআ'ন মাজীদেদের সাহিত্যিকতা ছাড়াও তার বিশ্বয়কর আরো অনেক দিক রয়েছে,<sup>৩১</sup> আর এর প্রতিটিই চলেঞ্জের অন্তর্ভুক্ত। এসমস্ত বিশ্বয়কর বিষয়সমূহের মধ্যে একটি গুরুত্বপূর্ণ বিশ্বয়কর বিষয় হল এই যে, অল্পবয়সী বাচ্চাদের পরিপূর্ণ কোরআ'ন এমনভাবে মুখস্ত করে নেয়া যে, কোথাও একটি যের, যবর, পেশের ত্রুটি থাকে না, এথচ এবাচ্চা স্পষ্ট আরবীতো দূরের কথা সাধারণ আরবী শব্দসমূহের অর্থ সম্পর্কেও অবগত নয়, ঐ বাচ্চাকে যদি তার মাতৃ ভাষার কোন বইয়ের কয়েকটি পৃষ্ঠা মুখস্ত করতে দেয়া হয়, তাহলে সেতা মুখস্ত করতে পারবে না, আর

<sup>৩১</sup> -কোরআ'ন মাজীদেদের অন্যান্য বিশ্বয়কর বিষয় সমূহের মধ্যে নিম্নোক্ত বিষয়গুলো অন্তর্ভুক্তঃ

১) কোরআ'ন মাজীদে বর্ণিত ঐসমস্ত কথাবার্তা যা অক্ষরে অক্ষরে বাস্তবতায় রূপ নিচ্ছে (২) অতীত জাতিদের অবস্থা যা আজও কেউ মিথ্যা বলে প্রমাণ করতে পারে নাই। (৩) বৈজ্ঞানিক দর্শন যা আজও কেউ মিথ্যা প্রমাণ করতে পারে নাই আর ভবিষ্যতেও পারবে না। (৪) গায়েবের খবর সমূহ যেমনঃ দাব্বাতুল আরয (মাটি থেকে প্রাণীর আগমন), ইয়াজ্জুজ মাজুজের আগমন।

যদি মুখস্ত করেও তাহলে বেশি দিন পর্যন্ত তা মুখস্ত রাখতে পারবে না। অথচ কোরআ'ন মাজীদ মুখস্তকারী হাফেজরা আজীবন তা পড়ে এবং পড়ায়, তা শুনে এবং শোনায়ে।<sup>৩৬</sup>

অল্প বয়সে, দশ বার বছর বয়সে কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করে নেয়া তো সাধারণ বিষয়, কিন্তু এর চেয়েও কম বয়সে কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করার উদাহরণও রয়েছে।<sup>৩৭</sup>

অল্প বয়স ছাড়াও বয়স্ক হয়ে কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করার উদাহরণও আছে, অথচ এবয়সে মুখস্ত শক্তি লোপ পেতে থাকে।<sup>৩৮</sup> পরিশেষে কি কারণ আছে যে, আজ পৃথিবীতে তাওরাত, ইঞ্জিলের অনুসারীও যথেষ্ট রয়েছে কিন্তু এদের মধ্যে তাওরাত বা ইঞ্জিলের হাফেজ একজনও নেই, অথচ কোরআ'ন মাজীদের হাফেজ কোন অতিরঞ্জন ছাড়া বলা যেতে পারে যে, কোটি কোটি। মন ও মস্তিষ্কে এত সহজে রেখাপাতকারী এবং মুখস্ত হওয়ার উপযুক্ত আয়াত যদি কেউ তৈরী করতে পারে তাহলে তৈরী করে দেখাক, ইহুদী স্কলার ডব্লিউর আনিস যে, “ফোরকানুল হক” লিখেছে তার প্রথম শব্দটিই এত অসমানজস্য এবং অস্পষ্ট যে, তা সহজে মুখে উচ্চারণ করা যায়না এবং মানবিক স্বভাবও তা গ্রহণ করতে আগ্রহী নয়।<sup>৩৯</sup> মূলত কাফেরদের কোরআ'নের সাথে দুশমনীর মূল কারণ এ চলেঞ্জটি যা ১৪শত বছর থেকে তাদেরকে অপারগ এবং লা-জওয়াব করে রেখেছে, হিংসা ও বিদ্বেষের কারণে তারা সবসময় অস্থিরতায় ভোগছে কিন্তু কিছুই করতে পারছে না, যার বহিঃপ্রকাশ তাদের মৌখিক ঠাট্টা বিদ্রোপের মাধ্যমে হয়ে থাকে, আবার কখনো কখনো কোরআ'ন মাজীদকে বাস্তবে অবমাননা এবং বেয়াদবীর মাধ্যমেও করে থাকে।

অতএব, কোন মুসলমানের ‘ফোরকানুল হক’ বা অনুরূপ কোন লিখনী দেখে এড়ুলে পতিত হওয়া ঠিক হবে না যে, কোরআ'ন মাজীদে দেয়া চলেঞ্জ গ্রহণ করা হয়েছে, বা তার গুরুত্ব কমে গেছে, ঐ চলেঞ্জ আজও আলহামদুলিল্লাহ্ ঐ ভাবেই বিদ্রমান আছে যেমন নবী

<sup>৩৬</sup> - আলহামদুলিল্লাহ্ লিখকের সম্মানিতা মা কোন উস্তাদ ব্যতীতই শৈশবে কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করেছে, আজীবন সন্তানদেরকে কোরআ'ন মাজীদ শিক্ষা দিয়ে অতিক্রম করেছেন, আজ ৯০ বছর বয়সেও প্রতি দিন তিন পরা করে তেলওয়াত করার অভ্যাস চালু রেখেছেন।

<sup>৩৭</sup> - ইসলামাবাদের মাদরাসা ফারুকীয়ায় চীন দেশের একজন শিশু পাঁচ বছর বয়সে কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করতে শুরু করেছে এবং সাত বছর বয়সে আলহামদু লিল্লাহ্ পূর্ণ কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করে নিয়েছে। (তাকভীর ২০ নভেম্বর ২০০২ইং)।

<sup>৩৮</sup> - লিখকের সম্মানিত পিতা হাফেজ ইদরীস কীলানী (রাহিমাহুল্লাহ্) ৫৯ বছর বয়সে আলহামদু লিল্লাহ্ দু'বছরে কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করেছেন, বয়স্ক হয়ে কোরআ'ন মাজীদ মুখস্ত করারও অনেক উদাহরণ রয়েছে।

<sup>৩৯</sup> - উল্লেখ্য ‘ফোরকানুল হকের’ প্রথম সূরা ফাতেহা'র শুরু নিম্নোক্ত বাক্য দিয়ে শুরু হয়েছেঃ

অর্থঃ আমি শুরু করছি বাপের নামে, কালিমার নামে এবং রুহুল কুদুসের নামে যে শুধু একমাত্র ইলাহ।

(সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে বিদ্বমান ছিল এবং কিয়ামত পর্যন্ত এভাবেই বিদ্বমান থাকবে।

﴿لَا يَأْتِيهِ الْبَطُلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ﴾ (১৫)

অর্থঃ “কোন মিথ্যা এতে অনুপ্রবেশ করবে না-অগ্রহতেও নয়, পশ্চাত হতেও নয়, এটা প্রজ্ঞাময়, প্রশংসার্হ আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ। (সূরা হা-মীম সাজদাহ-৪২)।

‘ফোরকানুল হকের’ ফেতনাঃ

কাফের মোশরেকদের কোরআ’নের সাথে দুশমনী এখন কোন গোপন বিষয় নয়, আর সময় অতিক্রমের সাথে সাথে এদুশমনী আরো বৃদ্ধি পেতে থাকবে। নিকট অতীত এবং বর্তমানের মোশরেক ও ইহুদী নাসারাদের কোরআ’নের সাথে দুশমনীর কিছু উদাহরণ নিচে পেশ করা হলঃ

- ১) বৃটেনের সাবেক প্রধান মন্ত্রী উইলিয়াম ই গালডিসটোন সংসদে এ বক্তব্য পেশ করেছে যে, যতক্ষণ পর্যন্ত কোরআ’ন মুসলমানদের হাতে, বা তাদের অন্তরে বা মাথায় থাকবে, ততক্ষণ ইউরোপ মুসলিমদেশসমূহে নিজের ক্ষমতা প্রতিষ্ঠিত করতে পারবে না, আর যদি প্রতিষ্ঠিত করেও তাহলে তা স্থায়ী করতে সফল হবে না। এমনকি ইউরোপ নিজে টিকে থাকাও নিরাপদ হবে না।<sup>৪০</sup>
- ২) ১৯০৮-ইং বৃটেনের মন্ত্রী নোআবাদিয়াত এ বক্তব্য পেশ করেছে যে, যতক্ষণ পর্যন্ত মুসলমানদের নিকট কোরআ’ন মাজীদ থাকবে, ততক্ষণ তারা আমাদের পথ আগলে থাকবে, আমাদের উচিত কোরআ’নকে তাদের জীবন থেকে দূর করে দেয়া।<sup>৪১</sup>
- ৩) অবিভক্ত ভারতের ইফপির গভর্ণর স্যার উইলিয়াম মিউর কোরআ’ন মাজীদ সম্পর্কে তার কুমনভাবকে এভাবে প্রকাশ করেছে যে, দু’টি জিনিস মানবতার দুশমন, মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) তালওয়ার এবং মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) কোরআ’ন।<sup>৪২</sup>
- ৪) আলজিরিয়ার উপর ফ্রান্সের উপনিবেশিক শাসনের শতবছর পূর্তিতে ফ্রান্সের রাষ্ট্রনায়ক তার এক বক্তব্য বলেছেঃ মুসলমানদের রাত দিন থেকে কোরআ’ন বের করা এবং আরবী

<sup>৪০</sup> - আনোয়ার বিন আখতার লিখিত উম্মত মুসলিমা কে দিলখোরাস হালাত পৃঃ২০৪।

<sup>৪১</sup> - মরিয়ম জামিলা লিখিত ইসলাম এক নাযরিয়া, এক তাহরিক পৃঃ২২০।

<sup>৪২</sup> - শাইখ মোহাম্মদ আকরাম লিখিত হাওজে কাউসার পৃঃ১৬৩।

ভাষার সাথে তাদের সম্পর্ক নষ্ট করা জরুরী। যাতে করে আমরা সহজে তাদের উপর কতৃৎ প্রতিষ্ঠা করতে পারি।<sup>৪০</sup>

- ৫) ১৯৮৪ইং ভারতে হিন্দুরা নিয়মিত একটি আন্দোলন শুরু করেছে যে হয় কোরআ'ন ছাড় নাহয় ভারত ছাড়। ১৯৮৯ইং কলকাতার একটি আদালতে হিন্দুরা মামলা করেছে যে, কোরআ'ন মাজীদের উপর নিয়মানুবর্তিতা আরোপ করতে হবে।<sup>৪১</sup>
- ৬) নেদার ল্যান্ডের এক ফ্লিম নির্মাতা 'এত্বায়াত' নামে একটি ফ্লিম তৈরী করে সেখানে একজন পতিতার পেটে সূরা নূরের এ আয়াতটি লিখে দিয়েছে:

﴿الرَّانِيَةُ وَالرَّانِي فَأَجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةً وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَشَهِدَ عَذَابُهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ (২)

অর্থঃ “ব্যভিচারী ব্যভিচারিণী তাদের প্রত্যেককে একশ বেত্রাঘাত করবে, আল্লাহর বিধান কার্যকরী করণে তাদের প্রতি দয়া যেন তোমাদেরকে প্রভাবিত না করে, যদি তোমরা আল্লাহ এবং পরকালে বিশ্বাসী হও, মুমিনদের একটি দল যেন তাদের শাস্তি প্রত্যক্ষ করে। (সূরা নূর-২)

এর সাথে একজনের পিঠে বেত্রাঘাতের জখম অবস্থায় দেখানো হয়েছে, এ ফ্লিমের মূল উদ্দেশ্য হল এই যে, ইসলামের এ শাস্তি একটি অবিচার, জুলুম।

- ৭) বর্তমান সময়েও অ্যামেরিকান এক বুদ্ধিজীবী ওয়াশিংটন টাইমে কোরআ'ন মাজীদ সম্পর্কে তার কুমনভাব এভাবে প্রকাশ করেছে যে, মুসলমানদের সন্ত্রাসবাদীতার মূল হল স্বয়ং কোরআ'ন মাজীদের শিক্ষা, একথা বলা ঠিক নয় যে, মুসলমানদের মধ্যে একজন সন্ত্রাসী এবং অল্প সংখ্যক উচ্চাভিলাসী সংখ্যাগরিষ্ঠ মুসলমানদেরকে বন্দী করে রেখেছে। বরং মূল বিষয়টি কোরআ'নী শিক্ষার ফল। এ সমস্যার সমাধান এটাই যে, মধ্যমপন্থী মুসলমানদেরকে কোরআ'ন মাজীদের শিক্ষা পরিবর্তন করার জন্য উদ্ব্যস্ত করা।<sup>৪২</sup>
- ৮) ৭ জুলাই ২০০৫ইং লন্ডনে ঘটে যাওয়া বোমাবাজীর উপর কথা বলতে গিয়ে বৃটেনের প্রধানমন্ত্রী এ বক্তব্য পেশ করেছে যে, ইসলামী সন্ত্রাসীরা ইরাকে ক্ষমতা দখলের জন্য

<sup>৪০</sup> - মাহেনামা মোহকামাত, জুন ১৯৮৯ইং পৃঃ ৩১।

<sup>৪১</sup> - হাফতা রোজা তাকভীর, করাচী, ১ম ডিসেম্বর ২০০৪ইং।

<sup>৪২</sup> - মাহেনামাহ মোহাদ্দেস, লাহোর, মার্চ, ২০০৫ইং, পৃঃ ২২।

পাশ্চাত্য পরিকল্পনার পরিবর্তে শয়তানী দর্শন এ হামলায় উদ্ব্যস্ত করেছে। (হে আল্লাহ্ তুমি তাদের উপর অভিসম্পত কর)<sup>৪৬</sup>

- ৯) ইটালীর প্রশিক্ষিত সাংবাদিক খাতুন এবং ইয়ানা ফালাসী এ বক্তব্য রেখেছে যে, মুসলমানদের পবিত্র কিতাব কোরআ'ন স্বাধীনতা, গণতন্ত্র এবং মানবাধিকারের সাথে কোন সম্পর্ক রাখে না, একথা বলা ভুল হবে যে সন্ত্রাসী অল্প কিছু মুসলমান বরং সমস্ত মুসলমানই এ চেষ্টনা রাখে।<sup>৪৭</sup>

কোরআ'নের সাথে দুশমনীর এ কথাগুলোতো কাফের নেতাদের মুখ দিয়ে বের হয়েছে কিন্তু যে দুশমনী তাদের মনে লুকিয়ে রয়েছে তা আরো মারাত্মক।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بَطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا  
وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ  
بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ﴾ (১১৮)

অর্থঃ “তাদের মুখ থেকেই শত্রুতা প্রকাশিত হয় আর তাদের মনে যা গোপন রাখে তা গুরুতর। (সূরা আল ইমরান-১১৮)।

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে হিংসা ও বিদ্বেষের বসবসী হয়ে কোরআ'ন মাজীদে বিরুদ্ধে প্রচার প্রপাগান্ডার ক্ষেত্রে কাফেরদের মূল উদ্দেশ্য ছিল এই যে, এ কোরআ'ন আল্লাহর পক্ষ থেকে নাযিলকৃত নয় বরং মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) নিজেই তা রচনা করেছে, আজও কাফেরদের মূল লক্ষ্য এবিষয়েই যে, একোরআ'ন মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিজস্ব রচনা বলে প্রমাণ করা, যাতে করে ইসলামের সবকিছু নিজে নিজেই নষ্ট হয়ে যায়।

এউদ্দেশ্যে কোরআ'ন মাজীদে বার বার পরিবর্তন করার জন্য চেষ্টা করা হয়েছে, প্রথমে আরবী ভাষায় পরিবর্তনকৃত কোরআ'ন প্রকাশ করা হয়েছে, এর পর হিব্রু ভাষায় পরিবর্তন কৃত কোরআ'ন প্রকাশ করা হয়েছে, ইহুদী নাসারাদের এককামনাকে নস্যাৎ করার জন্য সৌদী আরব সরকার আজ থেকে ২১ বছর আগে ১৪০৫হিঃ বাদশাহ ফাহাদ কোরআ'ন একাডেমী নামে একটি বিরাট প্রকল্প স্থাপন করেছে, যা প্রতি বছর তিন কোটি কোরআ'ন মাজীদ ছেপে সমগ্র বিশ্বে ফ্রি

<sup>৪৬</sup> -হাফতা রোজা তাকভীর, করাচী, ২১ জুলাই ২০০৫ইং।

<sup>৪৭</sup> -মাহেনামা তায়েবাত, লাহোর, আগস্ট ২০০৫ইং।

বন্টন করার সুভাগ্য লাভ করেছে।<sup>৪০</sup> এই বাদশাহ্ ফাহাদ কোরআ'ন একাডেমী প্রতিষ্ঠিত হওয়ায় ইহুদী নাসারাদের উদ্দেশ্য ধূলায় ধূলিষ্ঠিত হল।

ইহুদী নাসারারা তাদের পরিকল্পনাকে বাস্তবায়নের জন্য এখন একটি নুতন পদ্ধতি গ্রহণ করেছে, আজ থেকে মোটামুটি দশ বছর পূর্বে (৯/১১ ঘটনার পাঁচ ছয় বছর পূর্বে দু'জন ফিলিস্তিনি নী ইহুদী আল মাহদী এবং সান্ফী আরবী ভাষায় কোরআ'ন মাজীদের আদলে একটি কিতাব রচনা করে, তার নামসমূহ কোরআ'ন মাজীদের সূরাসমূহের নামের অনুরূপ করে রাখা হয়েছে, যেমনঃ সূরা ফাতেহা, সূরা সালাম, সূরা নূর, সূরাতুল ঈমান, সূরাতুল তাওহীদ, সূরাতুল মাসীহ, সূরাতুল নিসা, সূরাতুল নিকাহ, সূরাতুল তালাক, সূরাতুল সিয়াম, সূরাতুল সালা ইত্যাদি। এসূরাসমূহে কোরআ'ন মাজীদের সূরাসমূহের আদলে ছোট ছোট আয়াত লিখা হয়েছে, ৯০% শব্দ এবং বাক্য কোরআ'ন মাজীদ থেকে নেয়া হয়েছে। কিতাবটির নামকরণ করা হয়েছে 'ফোরকানুল হক' প্রথম প্রকাশনায় আরবী এবং ইংরেজী ভাষাকে গুরুত্ব দেয়া হয়েছে, প্রতি পৃষ্ঠার অর্ধেক আরবী আর অর্ধেক ইংরেজী অনুবাদ। ১৫x২০ সেঃ মিঃ আকারে ৩৬৬ পৃঃ, কিতাবটি অ্যামেরিকান ইহুদী কোম্পানী "project omega 2001", এবং "Wise press " প্রকাশ করেছে, যার বিক্রয় মূল্য ১৯.৯৯ ডলার, প্রকাশকের পক্ষ থেকে এ ঘোষণা দেয়া হয়েছে যে, এটা ফোরকানুল হকের প্রথম পারা এরপর আরো ১১ পারা প্রকাশিত হবে, ফোরকানুল হকের এসংক্ষিপ্ত পরিচিতির পর আমরা তার বিভিন্ন দিক নিয়ে কিছু আলোকপাত করতে চাই।

**ফোরকানুল হকের বিভিন্ন দিক :** ফোরকানুল হকের বিভিন্ন দিক নিয়ে আলোচনা করার আগে এবিষয়টি বর্ণনাকরা জরুরী যে, ফোরকানুল হককে আল্লাহর পক্ষ থেকে ওহীকৃত কিতাবের আদলে পেশ করা হয়েছে, উদাহরণস্বরূপঃ এক স্থানে লিখা হয়েছেঃ

অর্থঃ আমি এই ফোরকানুল হককে ওহী হিসেবে অবতীর্ণ করেছি। (সূরাতুল তানযিল-৪)

অপর এক স্থানে লিখা হয়েছে

অর্থঃ ফোরকানুল হককে আমি অবতীর্ণ করেছে যাতে করে পথভ্রষ্টদেরকে অন্ধকার থেকে বের করে আলোর পথে নিয়ে আসি। (সূরা মাসীহ-৬)

উল্লেখিত আয়াত সমূহের আলোকে ফোরকানুল হকের লিখকদের নিম্নোক্ত দাবীসমূহ প্রমাণিত হচ্ছে, চাই তারা তা বাস্তবে করে থাকুক আর নাই করুকঃ

১) বক্তা আল্লাহর নবী।

<sup>৪০</sup> -উল্লেখ্য বাদশাহ্ ফাহাদ কোরআ'ন একাডেমী আরবী ছাড়াও উর্দু, বাংলা, ইংরেজী, ফ্রান্সী, আলবেনী, কোরী, থাই, জার্মান, রাশিয়া, চায়না, তুর্কী, পর্তুগালী, ইন্দোনেশী ভাষায় কোরআ'ন মাজীদের অনুবাদও প্রকাশ করেছে, বর্তমানে বাদশাহ্ ফাহাদ একাডেমী অন্ধ লোকদের জন্য কোরআরআ'ন তেলওয়াতের জন্য কোরআরআ'ন মাজীদ প্রস্তুত করেছে। (আল্লাহ তাদেরকে সর্বোত্তম প্রতিদান দিন)।



- ২) জীবরীল ওহী নিয়ে তার নিকট আসে।  
 ৩) ফোরকানুল হকে যা কিছু লিখা হয়েছে তা সবই আল্লাহর পক্ষ থেকে।

কোরআ'ন মাজীদেব আলোকে এ তিনটি দাবীর বিধান এরকমঃ

﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَأُنْزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ﴾

অর্থঃ “আর ঐ ব্যক্তির চেয়ে বড় জালেম কে হতে পারে যে আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করেছে? অথবা এরূপ বলেঃ আমার উপর ওহী নাযিল করা হয়েছে অথচ প্রকৃত পক্ষে তার উপর কোন ওহী নাযিল করা হয় নাই। (সূরা আন'আম-৯৩)

অতএব, ফোরকানুল হকে যাকিছু লিখা হয়েছে তা পরিষ্কার মিথ্যা, অপবাদ এবং বাতেল। এসমস্ত ইবলিসী কথাবর্তা এখানে উল্লেখ করার উদ্দেশ্য হল এই যে, হয়তবা এর মাধ্যমে ইহুদী নাসারাদেরকে নিজেদের বন্ধু এবং সমমনের বলে বিশ্বাসকারীদের চোখ খুলে যাবে এবং তাদের অনুভূতি হবে যে, যারা আল্লাহ এবং তাঁর রাসুলের দুশমন তারা কখনো মুসলমানদের বন্ধু হতে পারে না?

এখন ফোরকানুল হকের ইবলিসী দিকসমূহের কিছু দিক দ্রঃ

### ১) শিরকী দিকঃ

ফোরকানুল হকের প্রতিটি সূরার শুরু নিম্নোক্ত বাক্যের দ্বারা শুরু হয়েছেঃ

অর্থঃ আমি গুরুকরছি বাপের নামে, কালিমার নামে এবং রুহুল কুদুসের নামে যে শুধু একমাত্র ইলাহ।

এটাই তত্ত্ববাদের আকীদা (বিশ্বাস) যা এত অস্পষ্ট এবং বুঝার অনপুযুক্ত যে, আজও কোন বড় খৃষ্টান আলেমও এর সন্তোষ জনক ব্যাখ্যা দিতে পারে নাই।

### ২) আল্লাহর অবমাননাঃ

ফোরকানুল হকের বিভিন্ন স্থানে কোরআ'ন মাজীদ এবং বিধি বিধানের প্রতিবাদ করতে গিয়ে আল্লাহ তা'লাকে মারাত্মকভাবে অবমাননা করা হয়েছে, উদাহরণ সরূপ একটি স্থানের দ্রঃ

অর্থঃ এবং যখন শয়তান বললঃ(নাউযু বিল্লাহ) হে মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আমি তোমাকে আমার রিসালাত এবং ওহীর জন্য সমস্ত লোকদের মধ্য থেকে বাছাই করেছি, অতএব, আমি তোমাকে যা দিচ্ছি সে অনুযায়ী আমল কর, আর আমার নে'মতসমূহকে

স্মরণ কর এবং তার কৃতজ্ঞতা প্রকাশে অপারগতা প্রকাশ কর। (সূরা আল গারানিক-৯) উল্লেখ্য সূরা আ'রাফের ১৪৪ নং আয়াতে আল্লাহ্ তা'লা মূসা (আঃ) কে সন্বেদন করে বলেছেনঃ

অর্থঃ “আমি তোমাকেই আমার রিসালাত ও আমার সাথে বাক্যালাপের জন্য লোকদের মধ্যে হতে মনোনীত করেছি, অতএব, এখন আমি তোমাকে যা কিছু দেই তা তুমি গ্রহণ কর এবং কৃতজ্ঞতা প্রকাশকারীদের অন্তর্ভুক্ত হও।

৩) নবীগণের সাথে ঠাট্টা বিদ্রোপ, তাদেরকে অবমাননা, তাদেরকে হত্যা করা ইহুদীদের এমন এক অপরাধ যার কথা কোরআ'ন মাজীদে বারবার বর্ণনা করা হয়েছে, আর এর একটি জীবন্ত উদাহরণ ফোরকানুল হক। যার একটি আয়াত এইঃ

অর্থঃ আর যখন মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) শয়তানের সাথে একাএকী হল তখন বললঃ আমি তোমার সাথে আছি, অতএব মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আমাকে পরিত্যাগ করে শয়তানকে বন্ধু রূপে গ্রহণ করল। (সূরা আল গারানিক-৮)

অন্য এক স্থানে লিখা হয়েছেঃ

অর্থঃ এক নিরক্ষর কাফের ব্যক্তি (নাউজু বিল্লাহ) নিরক্ষরদেরকে শিক্ষা দিয়েছে ফলে তাদের অজ্ঞতা এবং মুখর্তি আরো বৃদ্ধি পেয়েছে। (সূরা আশশাহাদাত-৪)

#### ৪) জীবরীল (আঃ) এর অবমাননাঃ

কোরআ'ন অবতীর্ণের সময়কাল থেকেই আহলে কিতাব (ইহুদী নাসারারা) জীবরীল (আঃ) এর দুশমন ছিল। তাদের দাবী হল জীবরীল (আঃ) ইসহাকের বংশ ছেড়ে ইসমাইলের বংশে কেন গেল? তাই তারা ফোরকানুল হকে নিজেদের হিংসা ও বিদ্বেষের কথা এভাবে প্রকাশ করেছে।

অর্থঃ মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) নিকট মিথ্যা ও চক্রান্ত মূলক ওহী করা হয়েছে যা শয়তান তার নিকট নিয়ে এসেছে। (সূরা তুল গারানিক-১৫)

এ শয়তানী আয়াতে জীবরীল (আঃ) কে শয়তান (নাউযু বিল্লাহ) এবং কোরআ'নুল কারীমকে মিথ্যা এবং চক্রান্ত বলে আক্ষয়িত করা হয়েছে (নাউযু বিল্লাহ)।

#### ৫) জিহাদ হারামঃ

নিঃসন্দেহে জিহাদ শব্দটি আজ সমগ্র বিশ্বে কাফেরদের জন্য জীবন আতংকের কারণ হয়ে দাঁড়িয়েছে, জিহাদ কাফেরদের ঘুমকে হারাম করে দিয়েছে, মনে হচ্ছে যেন ফোরকানুল হক লিখার মূল উদ্দেশ্যই হল মুসলমানদেরকে জিহাদ থেকে নিরুৎসাহিত করা।

এ সম্পর্কে কিছু ইবলীসী অনর্থক কথাবার্তা দ্রঃ

ক)

অর্থঃ তারা আমাদের দিকে মিথ্যা অপবাদ দিয়েছে যে আমি মুমেনদের কাছ থেকে জান্নাতের বিনিময়ে তাদের জীবন ক্রয় করে নিয়েছি, আর আমার পথে যুদ্ধ করবে, ইঞ্জিলের আলোকে এ অঙ্গিকার পূর্ণ করা আমার দায়িত্ব, সাবধান হও, এধরণের অপবাদ দাতারা মিথ্যুক। পরে আরো বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ আমি পাপিষ্ঠদের জীবন ক্রয় করিনা পাপিষ্ঠদের জীবন মারদুদ শয়তান ক্রয় করে।

আরো একটি উদাহরণ দ্রঃ

খ)

অর্থঃ তোমরাকি ধরাণা করছ যে, আমি বলেছি, আল্লাহর পথে যুদ্ধ কর আর মুমেনদেরকে যুদ্ধের জন্য উৎসাহিত কর,<sup>৪৯</sup> অর্থচ আমার পথে কোন যুদ্ধ নেই, আর না আমি মুমেনদেরকে যুদ্ধের জন্য উৎসাহিত করেছি। বরং পাপিষ্ঠদেরকে মারদুদ শয়তান যুদ্ধের জন্য উৎসাহিত করেছে। (নাউযু বিল্লাহ)(সূরা আল মাওয়েজা-২)

অন্য এক স্থানে লিখেছেঃ

গ)

অর্থঃ আর বিজয়ী হয়ে গেছে (আহলে কিতাবদের জান্নাত) মুসলমানদের ঐ জান্নাতের উপর যার অঙ্গিকার তাদের সাথে করা হয়েছে এবং যার জন্য তারা আনন্দ এবং সুস্বাদু অনুভব করে, ঐ পথে জীবন দেয়, মূলত সেটা ব্যভিচারী এবং পাপিষ্ঠদের জান্নাত। (সূরা রূহ-৩)

৬) গণিমতের মালের নিন্দাঃ

জেহাদের মাধ্যমে অর্জিত গণিমতের মালের বিষয়টিও কাফেরদের জন্য বেদনা দায়ক, এটাকে তারা কোথাও ডাকাতি কোথাও চুরী কোথাও লুট কোথাও জুলুম বলে আক্ষায়িত করেছে, শুধু একটি উদাহরণ দ্রঃ

অর্থঃ আর তোমাদেরকে বলা হয়েছে যারা আল্লাহর প্রতি ঈমান রাখেনা তাদের সাথে যুদ্ধ কর, আর গণিমতের মাল হিসেবে যা পাও তা ভক্ষণ কর, তা হালাল এবং পবিত্র, এটা জালেমদের কথা (নাউজু বিল্লাহ) (সূরা আল আতা-৭)

৭) কোরআ'ন মাজীদে অবমাননাঃ

ইহুদী নাসারারা মৌখিক এবং লিখিত কোন পন্থা অবলম্বন করতে কোন প্রকার ক্রুটি করে নাই, ফোরকানুল হকের ইবলিসী কথা বর্তা তার মুখ দিয়ে বের হয়েছে বলে এক স্থানে প্রমাণিত হয়েছে, তাই সে একস্থানে লিখেছেঃ

<sup>৪৯</sup> - আর মুমেনদেরকে যুদ্ধের জন্য উৎসাহিত কর (সূরা আনফালের ৬৫ নং আয়াতে এশব্দ বর্ণিত হয়েছে)।

অর্থঃ হে লোকেরা তোমাদের নিকট শয়তানের পথভ্রষ্টমূলক আয়াত পড়ে শোনানো হচ্ছে, যাতে করে সে তোমাদেরকে আলো থেকে বের করে অন্ধকারে নিয়ে যেতে পারে, অতএব, তোমরা শয়তানের নির্দেশ অনুসরণ করবে না এবং তাকে তোমাদের নিকৃষ্ট দুশমন হিসেবে জান। (সূরা আল আত্বা-১৫)

### ৮) কোরআ'ন মাজীদে পরিবর্তনঃ

আহলে কিতাবরা আসমানী কিতাবসমূহে পরিবর্তনের একটি স্বাভাবিক অপরাধ পরায়নতা তাদের মধ্যে আছে, তাওরাত এবং ইঞ্জিলের পর কোরআ'ন মাজীদে তার নিকৃষ্টতম পরিবর্তনের অপরাধে লিপ্ত হয়েছে, শাস্তিক পরিবর্তনে উদাহরণতো পাঠ করা ইতিপূর্বে দেখেছে, আর বিধি-বিধানের পরিবর্তনের একটি উদাহরণ আমরা এখানে পেশ করলামঃ

অর্থঃ তোমরা আমার প্রতি মিথ্যাআরোপ করেছে যে, আমি নিষিদ্ধ মাসসমূহে যুদ্ধ হারাম করেছি, আমি যা হারাম করেছিলাম তা আমি রহিত করে দিয়েছি, অতএব, এখন আমি হারাম মাসসমূহে বড় যুদ্ধ করা হালাল করে দিয়েছি। (সূরা আস্সালাম-১১)

### ৯) মুসলমানদের সাথে শত্রুতাঃ

ফোরকানুল হকে মুসলমানদেরকে কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে পথভ্রষ্ট লোকেরা (সূরা আস্সালাম-১)

আবার কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে কাফেররা। (সূরা তাওহীদ)

আবার কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে মুনাফেকরা। (সূরা মাসীহ-১)

আবার কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে মোশরেকরা। (সূরা সালুস-১)

আবার কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে অপরাধীরা (সূরা আল মাওয়েজা-১)

আবার কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে মিথ্যা আরোপকারীরা (সূরা আল ইফক-১৭)

আবার কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে অজ্ঞ লোকেরা (সূরা আল খাতাম-১)

আবার কোথাও বলা হয়েছেঃ

অর্থঃ হে পরিবর্তন কারীরা (সূরা আল আসাতীর-১)

বলে সম্বোধন করা হয়েছে, আর আহলে কিতাবদেরকে সর্বত্র :

অর্থঃ হে ঈমানদাররা। বলে সম্বোধন করা হয়েছে, কোরআ'ন মাজীদে যেভাবে বানী ইসরাঈলদেরকে অপরাধী হিসেবে চিহ্নিত করা হয়েছে এমনভাবে ফোরকানুল হকে মুসলমানদের উপর অসংখ্য অপবাদ দেয়া হয়েছে, আর যে, বিষয়টিকে সবচেয়ে বেশি বড় করে দেখানোর চেষ্টা করা হয়েছে তাহল এই যে, মুসলমানরা হত্যাকারী, ডাকাত, চোর, সন্ত্রাসী এবং দাঙ্গা-হাঙ্গামা সৃষ্টিকারী। কিছু উদাহরণ নিচে পেশ করা হলঃ

ক)

অর্থঃ“তোমরা গীর্জা এবং উপাশানালায়সমূহ বিনষ্ট করেছ, যেখানে আমার নাম স্মরণ করা হত, আর তোমরা আমাদের ঐ মোমেন বান্দাদের উপাশানালায়সমূহ বিনষ্ট করেছ যারা তোমাদেরকে আশ্রয় দিয়েছে, তোমাদের সাথে সদ্ব্যবহার করেছে, তোমাদেরকে জ্ঞান শিক্ষা দিয়েছে, তোমরা তাদের সাথে যুদ্ধ করেছ, অতএব, তোমরা যুলুমকারী। (সূরা আল আসাতীর-৪)

খ)

অর্থঃ তোমরা বলেছঃ দ্বীনের মধ্যে জবর দৃষ্টি নেই, কিন্তু আমার মুমেন বান্দাদের উপর কুফরী চাপিয়ে দেয়ার জন্য জবরদৃষ্টি করছ, যে ব্যক্তি ইসলাম গ্রহণ করেছে সে নিরাপত্তা লাভ করেছে, আর যে ব্যক্তি সত্য দ্বীনের উপর অটল ছিল তাকে পাপিষ্ঠদের ন্যায় হত্যা করা হয়েছে। (সূরা ত্বল মূলুক-১)

গ)

অর্থঃ তোমাদের কর্ম পদ্ধতি, কুফরীকরা, শিরক করা, ব্যাভিচার করা, যুদ্ধ করা, হত্যা করা, লুটপাট করা, নারীদেরকে বন্দী করা, অজ্ঞতা এবং নাকরমানী করা। (সূরা আল কাবায়ের-৩, পৃঃ২৪৯)।

উল্লেখিত ইবলিসী কথাবার্তাসমূহে যেভাবে মুসলমানদের প্রতি ঈর্ষা প্রকাশ করা হয়েছে ফোরকানুল হকের অধিকাংশ অংশে এধরণের ইবলিসী কথাবার্তায় ভরপুর।

### ১০) সত্য গোপন করাঃ

আহলে কিতাবদের অপরাধসমূহের মধ্যে একটি অপরাধ হল সত্য গোপন করা, ফোরকানুল হকেও এউদাহরণ বিভিন্ন স্থানে পাওয়া যায়। একটি উদাহরণ দ্রঃ

সূরা নিসার মধ্যে আল্লাহ তা'লা এরশাদ করেছেনঃ

﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَنْبِئِ فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَتِلْكَ

وَرُبْعٌ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ۝٣﴾

অর্থঃ “তবে নারীদের মধ্যে তোমাদের পছন্দমত দু’টি ও তিনটি ও চারটি বিয়ে কর। কিন্তু যদি তোমরা আশংকা কর যে ন্যায় বিচার করতে পারবে না তবে মাত্র একটি অথবা তোমাদের দক্ষিণ হস্ত যার অধিকারী (ক্রীতদাসীকে বিয়ে কর) এটা অবিচার না করার নিকটবর্তী”। (সূরা নিসা-৩)

ফোরকানুল হকের লিখক কোরআন মাজীদে এ আয়াতটিকে এভাবে লিখেছেঃ

অর্থঃ তোমরা বিয়ে কর দু’টি, তিনটি, চারটি, অথবা ক্রীতদাসীদেরকে।

“যদি তোমরা আশংকা কর যে ন্যায় বিচার করতে পারবে না” এই অংশটুকু বাদ দিয়েছে।

যেখানে একাধিক বিয়ের জন্য অপরিহার্য শর্তহল “ন্যায় বিচার” এর কথা উল্লেখ করা হয়েছে, ন্যায় বিচার ব্যতীত দুই বা তিন বা চার বিয়ের কথা উল্লেখ করে তারা বুঝাল যে, মুসলমানদের শরীয়ত একটি অবিচার মূলক শরীয়ত।

### ১১) ভালবাসা এবং নিরাপত্তার চক্রান্ত :

ফোরকানুল হকে ইহুদী নাসারাদেরকে

অর্থঃ হে ঈমানদাররা। বলে সম্বোধন করা হয়েছে।<sup>৭০</sup>

আর ফোরকানুল হকের দিকনির্দেশনাকে ‘সত্য দিন’ বলে আখ্যায়িত করা হয়েছে।<sup>৭১</sup>

এবং বিভিন্ন স্থানে এদাবী করা হয়েছে যে, ইহুদী নাসারারা ভালবাসা, ন্যায় বিচার, শান্তি ও নিরাপত্তার ধারক ও বাহক।

যেমনঃ

অর্থঃ হে মানবমন্ডলী! আমি ভালবাসা, দয়া, অগ্রহ, ন্যায় বিচার এবং নিরাপত্তা নির্দেশ দিয়ে থাকি। (সূরা আল কতল-৩)

অন্য এক স্থানে বলা হয়েছেঃ

<sup>৭০</sup> -সূরা আল ইঞ্জিল-৬।

<sup>৭১</sup> - সূরা আল আযহা-৫।

অর্থঃ নিশ্চয় দ্বীন হকই ভালবাসা, ভাতৃত্ব, দয়া ও শান্তির দ্বীন। (সূরা আল আজহা-৫)

ভালবাসা, ভাতৃত্ব, দয়া ও শান্তির ধারক, আফগানিস্তান ও ইরাকে সাধারণ জনতার সাথে যেভালবাসা, ভাতৃত্ব, দয়া ও নিরাপত্তার সাথে যে আক্রমণ করেছে বা আফগানিস্তান ও ইরাকের জেলসমূহ এবং কিউবার বন্দীশালায় মুসলমান বন্দীদের সাথে যে ভালবাসা, ভাতৃত্ব ও নিরাপত্তা মূলক আচরণ করা হচ্ছে তা সমগ্র বিশ্ব অবলোকন করছে।

## ১২) দলীয় গোড়ামীঃ

সমগ্র পৃথিবীর সামনে আজ আলোকিত চিন্তা, নিরপেক্ষতা এবং ক্ষমতার বড়াইকারী “উন্নত বিশ্ব” ভিতরে ভিতরে কতটা দলীয় গোড়ামীর অন্ধত্ব এবং উনমাদনায় মত্ত তার অনুমান ফোরকানুল হকের এ দুটি লাইন থেকে অনুমান করুনঃ

অর্থঃ সত্য ইঞ্জিল এবং সত্য ফোরকানুল হকই সত্য দ্বীন, আর যে, ব্যক্তি এ দ্বীন ব্যতীত অন্য কোন দ্বীন অনুেষণ করবে তা তার কাছ থেকে কখনো গ্রহণ করা হবে না। (সূরা আল জুযিয়াহ-১৩)

অর্থঃ আমি সত্য দ্বীনের কথা স্মরণ করানোর জন্য ফোরকানুল হক অবতীর্ণ করেছি, যা সত্য ইঞ্জিলের সত্যায়ন কারী, যাতে করে তাকে অন্যান্য সমস্ত দ্বীনের উপর বিজয়ী করতে পারি, যদিও কাফেররা(মুসলমানরা) তা অপছন্দ করে। (সূরা আর আযহা-৬)

দ্বিতীয় আয়ত থেকে শুধু একথাই প্রমাণিত হয়না যে, ইহুদী নাসারারা তাদের দলীয় ব্যাপারে কত গোড়ামী এবং উনমাদনায় মত্ত আছে, বরং এ কথাও বুঝা যায় যে, তারা সর্বশক্তি প্রয়োগে ইসলামকে পরাজিত এবং ইহুদী ও নাসারাদেরক বিজয়ী করার দৃঢ় প্রত্যয়ী।

এখন ফোরকানুল হকের আলোকিত চিন্তাসম্পন্ন কিছু দিক নির্দেশনার উল্লেখও এখানে করতে চাই যাতে পাঠকরা বুঝতে পারে যে বর্তমান যুগের আলোকিত চিন্তার মূল উৎস কোথায়?

ক) পর্দা নারীজাতির জন্য একটি লাঞ্ছনা এবং অবমাননাঃ

‘আল মাহদী ফোরকানুল হকে লিখেছেঃ

অর্থঃ তোমরা তোমাদের নারীদের মাঝে এবলে প্রচলন প্রতিবন্ধকতা সৃষ্টি করেছ যে, যখন কেউ কোন প্রশ্ন করবে তখন পর্দার আড়াল থেকে প্রশ্ন করবে, আর এটা আমার সৃষ্টিকে লাঞ্ছনা এবং অবমাননা করা। (সূরা নিসা-১০)

খ) নারীদেরকে ঘরে বসিয়ে রাখা অবিচারঃ

ঐ সূরায় পরবর্তীতে লিখা হয়েছেঃ

অর্থঃতোমরা নারীদেরকে তোমাদের একথা দিয়ে বন্দী করে রেখেছ যে, “তোমরা তোমাদের ঘরে থাক” সতর্ক হও ঘরে বসে থাকার নির্দেশ নিকৃষ্ট নির্দেশ, যা জালেমরা দিয়েছে। (সূরা নিসা-১১)

#### গ) পুরুষদেরকে শাসক নির্ধারণ করা জন্ত এবং হিংস্রতাঃ

অর্থঃ তোমরা বল যে পুরুষ নারীদের উপর কত্বশীল, আর যেসমস্ত নারীদের ব্যাপারে তোমরা অবাধ্যতার আশংকা কর তাদেরকে উপদেশ দাও, তাদেরকে বিছানা থেকে পৃথক করে দাও, তাদেরকে প্রহার কর, তাহলে মানুষ, বন্য পশু, হিংস্র প্রাণী এবং চতুষ্পদ জন্তুর মাঝে পার্থক্য কি থাকল ? (সূরা নিসা-৪)

ঘ) উত্তরাধিকারে নারীকে অর্ধেক সম্পদ দেয়া, দুইজন নারীর সাক্ষীকে একজন পুরুষের সাক্ষীর সমান নির্ধারণ করা সম্পর্কেঃ

অর্থঃতোমাদের শরীয়তে নারী পুরুষের অর্ধেক সম্পদ পায়, কেননা (কোরআ’নে বলা হয়েছে)পুরুষ নারীর দ্বিগুণ সম্পদ পাবে, তোমাদের শরীয়তে নারীর সাক্ষীও পুরুষের অর্ধেক, কেননা (কোরআ’নে বলা হয়েছে)যদি দুজন পুরুষ সাক্ষী না পাওয়া যায় তাহলে দু’জন নারী এবং একজন পুরুষ সাক্ষ্য দিবে, তাহলে নারীর উপর পুরুষের একগুণ মর্যাদা বেশি, আর এটা জালেমদের ন্যায় বিচার।

#### ঙ) ত্বালাক হারামঃ

অর্থঃআর আমি বান্দাদেরকে নির্দেশ দিয়েছি ত্বালাক এবং ব্যভিচারের নিকটবর্তীও হবে না। (সূরা আত্বাহর-৯)

#### চ) ত্বালাকপ্রাপ্ত নারীকে বিয়ে করা ব্যভিচার এবং কুফরঃ

অর্থঃযে ব্যক্তি কোন ত্বালাক প্রাপ্ত মহিলাকে বিয়ে করল সে ব্যভিচার করল, আর তার এ কাজটি কুফরী এবং পাপ কাজ। (সূরা আত্বালাক-৩)

#### ছ) একাধিক বিয়ে ব্যভিচারঃ

অর্থঃতোমরা বলেছ যে বিয়ে কর ঐসমস্ত নারীদেরকে যাদেরকে তোমাদের পছন্দ হয়, দুই, তিন, চারটি পর্যন্ত, অথবা ঐসমস্ত কৃতদাসীদেরকে যারা তোমাদের অধিনস্ত, একথা বলে তোমরা বর্বরতার অভ্যাস ব্যভিচারের অবজ্ঞা এবং পাপের দিকে প্রত্যাভর্তন করেছে, তাই তোমরা পবিত্র হতে পারবে না। (সূরা আল মিয়ান-৯)

#### জ) নারী পুরুষের পার্থক্যপূর্ণ অধিকারের দুর্নামঃ



নিম্নোক্ত ইবলিসী কথাবার্তাসমূহে শুধু বিয়েকে গোলামী হিসেবেই দেখায়নি বরং নারী পুরুষের পার্থক্য পূর্ণ অধিকারকে সরাসরি যুলুম হিসেবেও পেশ করা হয়েছে, যেহেতু পুরুষরা চার জন স্ত্রী রাখতে পারবে তাহলে নারী কেন চার জন স্বামী রাখতে পারবে না।

অর্থঃতোমরা নারীদেরকে তোমাদের যৌনকামনা পূরণের মাধ্যম করে রেখেছ, তোমরা যেভাবে খুশী সেভাবে তাকে চাও, কিন্তু নারী তোমাদেরকে যেভাবে খুশী সেভাবে চাইতে পারে না, তোমরা নারীকে যখন খুশী তখন ত্বালাক দিতে পার, অথচ তারা তোমাদেরকে ত্বালাক দিতে পারে না, তোমরা তাদেরকে ভিন্ন করে রাখতে পার, কিন্তু তারা তোমাদেরকে ভিন্ন করে রাখতে পারবে না, তোমরা তাদেরকে প্রহার করতে পার, কিন্তু তারা তোমাদেরকে মারতে পারবে না, তোমরা একজন নারীর সাথে দু'জন, তিন জন, চার জন বা এক জন কৃতদাসী রাখতে পার, কিন্তু তারা দ্বিতীয় স্বামী রাখতে পারে না, তোমরা তাদের উপর কতৃত্বশীল, কিন্তু তারা তোমাদের উপর কতৃত্বশীল নয়, এমন কি তারা তাদের নিজেদের কোন বিষয়েও ভাল সিদ্ধান্ত নিতে পারবে না। (সূরা নিসা ৮,৯)

ঝ) খুনের বদলা খুন একটি ধ্বংসাত্মক কাজঃ

কোরআ'ন মাজীদে আল্লাহ তা'লা বলেছেনঃ

﴿ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَتَأُولَىٰ الْآلَبِ لِعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴾ (১৭৭)

অর্থঃ “হে জ্ঞানবান লোকেরা! (কেসাসের মধ্যে) প্রতিশোধ গ্রহণে তোমাদের জন্য জীবন আছে। (সূরা আল বাক্বারা-১৭৯)

এর অর্থ হল এই যে, হত্যাকারীকে হত্যার বিনিময়ে হত্যা করতে হবে, অথচ পাশ্চাত্যে কেসাসের (হত্যার বিনিময়ে হত্যাকারীকে হত্যা করা) বিধান নাথাকায় আলোকিত চিন্তার বহিঃপ্রকাশ করতে গিয়ে ফোরকানুল হকের লিখক লিখেছেঃ

অর্থঃ আমি তোমাদেরকে কেসাসের (হত্যার বিনিময়ে হত্যা করার নির্দেশ) দেই নাই, হে জ্ঞানী ব্যক্তির তোমাদের জন্য কেসাসে (হত্যার বিনিময়ে হত্যার মধ্যে) রয়েছে ধ্বংস ও বরবাদ। (সূরা আল মোহতাদীন-৭)

ফোরকানুল হকের ইবলিসী কথাবার্তা পড়ার পর এ অনুমান করা দুষ্কর নয় যে, মূলত ইহুদী নাসারারাদের অন্তরে করোআ'ন মাজীদের বিরুদ্ধে শুণ্ড হিংসা বিদ্বেষ গ্রন্থাকারে বের হয়েছে।

সমস্ত ইবলিসী কথাবার্তা সম্পর্কে আমরা পাঠকদেরকে যদিকে দৃষ্টি ফেরাতে চাই তাহল এইযে, আল্লাহ তা'লাকে, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামকে) জিবরীল (আঃ) কে (নাউজু বিল্লাহু আবাবো নাউজু বিল্লাহু) বার বার শয়তান বলে আখ্যায়িতকারী ইহুদী নাসারা

মুসলমানদের বন্ধু হতে পারে? (নাউজ্ব বিল্লাহ) কোরআ'ন মাজীদেকে শয়তানের আয়াত হিসেবে উল্লেখকারী অভিশপ্ত ইহুদী নাসারারা মুসলমানদের বন্ধু হতে পারে? ফোরকানুল হকের শয়তানী আয়াতসমূহ বিশ্বাসকারী ইহুদী নাসারা এবং কোরআ'ন মাজীদে আল্লাহর অবতীর্ণকৃত আয়াতসমূহের প্রতি বিশ্বাসকারী মুসলমানদের উদ্দেশ্য কি এক হতে পারে? সূর্য আলোহীন হতে পারে, চাঁদ টুকরা টুকরা হতে পারে, আকাশ বিদীর্ণ হতে পারে, পৃথিবী ফাটেতে পারে কিন্তু মুসলমান এবং কাফেরদের মাঝে বন্ধুত্ব হতে পারে না।

উল্লেখ্যঃ ইহুদী নাসারাদের মুসলমানদের সাথে দূশমনীর বিষয়টি প্রাকশিত এ কয়েকটি আয়াতের মধ্যেই সীমাবদ্ধ নয়, বরং তা আরো বিস্তৃত।

মিশরীয় সংবাদপত্র 'আল উসবু' ইহুদী নাসারাদের গোপন দলীলসমূহের উদ্ধৃতিতে ফোরকানুল হক লিখার উদ্দেশ্য সম্পর্কে আলোচনা করেছে, আমি সংক্ষিপ্ত আকারে নীচে ঐ নিকৃষ্ট উদ্দেশ্যের কথাও আলোচনা করছিঃ

- ১) মুসলমানদেরকে এবিশ্বাস করানো যে কোরআ'ন মাজীদ আসমানী কিতাব নয় বরং মানব রচিত গ্রন্থ।
- ২) পৃথিবীর বিভিন্ন জাতিসমূহকে একথা বিশ্বাস করানো যে, কোরআ'ন মাজীদ নীতিবাচক দৃষ্টিসম্পন্ন একটি গ্রন্থ যা মানব সংরক্ষণ এবং নিরাপত্তার বিরোধী। আর ফোরকানুল হক ইতিবাচক দৃষ্টি সম্পন্ন একটি গ্রন্থ যেখানে মানবাধিকার, নারীর অধিকার গণতন্ত্রকে সুস্পষ্ট করা হয়েছে।
- ৩) পৃথিবীর বিভিন্ন জাতিসমূহকে একথা বিশ্বাস করানো যে ফোরকানুল হক ভালবাসা, ভাতৃত্ব এবং নিরাপত্তার ধারক বাহক।
- ৪) পৃথিবীতে মুসলমানদের সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধি পাওয়াকে প্রতিরোধ করা।
- ৫) ইহুদী নাসারাদের সম্মিলিত সংস্কৃতিকে সমগ্র বিশ্বে বিজয়ী করা।

এ হল ঐ সমস্ত নিকৃষ্ট উদ্দেশ্য যে উদ্দেশ্য 'ফোরকানুল হক' লিখা হয়েছে, এ সমস্ত উদ্দেশ্য হাসিলের জন্য গোপন দলীলসমূহে দেয়া বিষয়গুলো নিম্নরূপঃ

- ১) প্রথমে ফোরকানুল হক ইউরোপ এবং ইসরাঈলে বণ্টন করা হবে এরপর আস্তে আস্তে অন্যান্য দেশসমূহে বণ্টন করা হবে।<sup>৫২</sup>

<sup>৫২</sup> - কুয়েত ভিত্তিক সাহায্যকারী সংস্থা 'এহইয়াউত্তুরাসের রিপোর্ট অনুযায়ী কুয়েতের ইংলিশ মেডিয়াম স্কুলসমূহ এবং ইউনিভার্সিটিসমূহে ছাত্রদের মাঝে ফোরকানুল হক উপহার হিসেবে বিতরণ করা হয়েছে। (হাফতা রোযা সহিফা আহলে হাদীস, ২৮ জানুয়ারী ২০০৫ইং।

- ২) জন্মসূত্রে মুসলমানদেরকে বাধ্য করা হবে তারা যেন কোরআ'ন মাজীদ পরিত্যাগ করে ফোরকানুল হককে দৃঢ়ভাবে গ্রহণ করে, আর যারা তা গ্রহণ করতে না চাইবে তাদের উপর যুলম ও নির্যাতনের সমস্ত পছা অবলম্বন করা হবে।
- ৩) তিন চার বছর পর ইউরোপ, অ্যামেরিকা এবং ইসরাইলের সেনারা মুসলিম দেশসমূহকে আবরোধ করবে যাতে করে মুসলিম দেশসমূহ ফোরকানুল হকের উপর আমল করতে বাধ্য হয়।
- ৪) আগামী বিশ বছরে পৃথিবীকে ইসলাম মুক্ত করা হবে, যাতে করে একজন মুসলমানও এমন না থাকে যার চিন্তা চেতনায় ইসলাম থাকবে।<sup>৫৩</sup>

﴿لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ  
وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾



অর্থঃ আল্লাহ্‌ই হচ্ছেন মুমিনদের অভিভাবক। তিনি তাদেরকে অন্ধকার থেকে আলোর দিকে নিয়ে যান, আর যারা অবিশ্বাস করেছে শয়তান তাদের পৃষ্ঠপোষক, সে তাদেরকে আলোহতে অন্ধকারের দিকে নিয়ে যায়। (সূরা আল-বাক্বারা-২৫৬)

আল কোরআ'নের আলোকে আক্বীদা (বিশ্বাস)

- (১) ঈমানের রুকনসমূহ
- (২) তাওহীদে বিশ্বাস
- (৩) রিসালাতের প্রতি বিশ্বাস
- (৪) কোরআ'ন এবং তাঁর পূর্ববর্তী কিতাবসমূহের প্রতি বিশ্বাস
- (৫) মৃত্যুর পরবর্তী জীবন

<sup>53</sup> - মিশরীয় পত্রিকা আল উসবুর রিপোর্টের বিস্তারিত করাচীর প্রশিক্ষ সাপ্তাহিকী আহলে হাদীসে ১২-১৮ জানুয়ারী ২০০৫ইং থেকে সংগ্রহ করা হয়েছে।

## اركان الايمان

### ঈমানের রুকনসমূহ

মাসআলা-১ঃ ঈমানের রুকন ছয়টিঃ

অর্থঃ “রাসূল বিশ্বাস রাখেন ঐসমস্ত বিষয় সম্পর্কে যা তাঁর পালনকর্তার পক্ষ থেকে তাঁর নিকট অবতীর্ণ হয়েছে এবং মুসলমানরাও, সবাই বিশ্বাস রাখে (১) আল্লাহর প্রতি (২) তাঁর ফেরেশতাদের প্রতি (৩) তাঁর গ্রন্থসমূহের প্রতি (৪) তার পয়গাম্বরগণের প্রতি। তারা বলে আমরা তাঁর পয়গাম্বরগণের মাঝে কোন পার্থক্য করি না, তারা বলে আমরা শুনেছি এবং গ্রহণ করেছি। আমরা তোমার নিকট ক্ষমা চাই হে আমাদের পালনকর্তা, আর তোমার দিকেই প্রত্যাবর্তন করতে হবে”। (সূরা বাক্বারা-২৮৫)

মাসআলা-২ঃ ঈমানের পঞ্চম রুকন হল পরকালের প্রতি বিশ্বাসঃ

﴿وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَيَآخِرَةُ هُمْ يَرْجُونَ ﴿٨﴾﴾

অর্থঃ “এবং তারা পরকালের প্রতি বিশ্বাস রাখে”। (সূরা বাক্বারা-৪)

মাসআলা-৩ঃ ঈমানের ৬ষ্ঠ রুকন হল ভাগ্যের প্রতি ঈমান রাখাঃ

﴿الَّذِينَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَهُ شَرِيكٌ فِي

الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ تَقْدِيرًا ﴿٩﴾﴾

অর্থঃ “তিনি প্রতিটি জিনিস সৃষ্টি করেছেন অতঃপর তার ভাগ্য নির্ধারণ করেছেন”। (সূরা আল ফোরকান-২)

## التوحيد

## তাওহীদে বিশ্বাস

মাসআলা-৪ঃ আল্লাহ্ এক তিনি অমুখাপেক্ষী তিনি কারো কাছ থেকে জন্ম নেননি এবং তাঁকে কেউ জন্ম দেয়নি, তাঁর অনুরূপ কোন কিছু নেইঃ

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَكِلْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝﴾

অর্থঃ “বল তিনিই আল্লাহ্ একক, আল্লাহ্ কারো মুখাপেক্ষীনন, তাঁর কোন সন্তান নেই এবং তিনিও কারো সন্তান নন এবং তাঁর সমতুল্য কেউ নেই”। (সূরা আল ইখলাস-১-৪)

মাসআলা-৫ঃ যদি এক উপাস্য ব্যতীত আরো কোন উপাস্য থাকত তাহলে আকাশ ও যমিনের সমস্ত নিয়ম কানুন বরবাদ হয়ে যেতঃ

﴿لَوْ كَانَ فِيهِمَا ءِلَهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝﴾

অর্থঃ “যদি আল্লাহ্ ব্যতীত বহু মা'বুদ থাকত আকাশ মন্ডলী ও পৃথিবীতে, তবে উভয়েই ধবংস হয়ে যেত, অতএব তারা যা বলে তাহতে আরশের অধিপতি আল্লাহ্ পবিত্র মহান। (সূরা আল আযীয়া-২২)

## الرسالة

## রিসালাতের প্রতি বিশ্বাস

মাসআলা-৬ঃ মানুষের হেদায়েতের জন্য আল্লাহ তা'লা রাসূল প্রেরণ করেছেনঃ

মাসআলা-৭ঃ কোরআ'ন মাজীদ কোনপ্রকার পার্থক্য করণ ব্যতীত সমস্ত রাসূলগণের প্রতি ঈমান আনয়নের শিক্ষা দেয়ঃ

﴿ءَامَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ

وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا

غُفِرَ لَكُمْ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾

অর্থঃ “রাসূল বিশ্বাস রাখেন ঐসমস্ত বিষয় সম্পর্কে যা তাঁর পালনকর্তার পক্ষ থেকে তাঁর নিকট অবতীর্ণ হয়েছে এবং মুসলমানরাও, সবাই বিশ্বাস রাখে আল্লাহর প্রতি, তাঁর ফেরেশতাদের প্রতি, তাঁর গ্রন্থসমূহের প্রতি, তাঁর পয়গাম্বরগণের প্রতি। তারা বলে আমরা তাঁর পয়গাম্বরগণের মাঝে কোন পার্থক্য করি না, তারা বলে আমরা শুনেছি এবং গ্রহণ করেছি। আমরা তোমার নিকট ক্ষমা চাই হে আমাদের পালনকর্তা, আর তোমার দিকেই প্রত্যাবর্তন করতে হবে”। (সূরা বাক্বারা-২৮৫)

মাসআলা-৮ঃ মোহাম্মাদ বিন আবদুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) নবীগণের আগমনের ধারাবাহিকতার সর্বশেষ রাসূল তাঁর পরে অন্য আর কোন রাসূল আসবে নাঃ

﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ

وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿١٠﴾

অর্থঃ “মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তোমাদের মধ্যে, কোন পুরুষের পিতা নন, বরং সে আল্লাহর রাসূল এবং সর্বশেষ নবী আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্বজ্ঞ”। (সূরা আহযাব-৪০)

মাসআলা-৯ঃ ঈসা বিন মারইয়াম(আঃ) আল্লাহর রাসূল এবং তাঁর নির্দেশ “হুও” এর মাধ্যমে বিনা বাপে তিনি জন্ম গ্রহণ করেছেনঃ

মাসআলা-১০ঃ ঈসা (আঃ) এর প্রতি ঈমান আনা ঐরকম ফরয যেমন অন্যান্য নবীগণের প্রতি ঈমান আনা ফরযঃ

﴿ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ ﴾ (১৭১)

অর্থঃ “নিশ্চয়ই মারইয়াম তনয় ঈসা মাসীহ আল্লাহর রাসূল ও তাঁর বাণী যা তিনি মারইয়ামের প্রতি সঞ্চারিত করেছিলেন এবং তাঁর আদিষ্ট আত্মা অতএব, আল্লাহ্ এবং তদীয় রাসূলগণের প্রতি ঈমান আন”। (সূরা নিসা-১৭১)

মাসআলা-১১ঃ ঈসা (আঃ) আল্লাহর ছেলে নয় এবং মারইয়াম আল্লাহর স্ত্রী নয়ঃ

মাসআলা-১২ঃ ঈসা (আঃ) কে যারা আল্লাহর ছেলে বলে তারা কাকেরঃ

মাসআলা-১৩ঃ জিবরীল (আঃ)ও আল্লাহর ছেলে বা মেয়ে নয়ঃ

﴿ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهٌ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴾ (৭২)

অর্থঃ “নিঃসন্দেহে তারা কাকের যারা বলে যে, আল্লাহ্ তিনের এক, অথচ এক মা'বুদ ব্যতীত সত্য আর কোন মা'বুদ নেই”। (সূরা মায়েদা-৭৩)

নোটঃ কিয়ামতের পূর্বে ঈসা (আঃ) আকাশ থেকে অবতরণ করবেন, মুসলমানদের সাথে মিলে দাজ্জালের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবেন এবং নিজ হাতে তাকে হত্যা করবেন, ঈসা (আঃ) এর আগমনের পর সমগ্র বিশ্বে ইসলামের বিজয় হবে, সর্বত্র নিরাপত্তা, শান্তি, ভালবাসা, ভ্রাতৃত্বের সুবাতাস বইবে, ঈসা (আঃ) চল্লিশ বছর পর্যন্ত রাষ্ট্র পরিচালনা করবেন।

উল্লেখ্যঃ ঈসা (আঃ) আগমনের পর মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) শরীয়ত অনুযায়ী রাষ্ট্র পরিচালনা করবেন।

## القرآن والكتب السابقة

### আল কোরআ'ন এবং পূর্ববর্তী আসমানী কিতাবসমূহঃ

মাসআলা-১৪ঃ কোরআ'ন মাজীদ পূর্বে অবতীর্ণ কিতাবসমূহ (তাওরাত, যবুর, ইঞ্জিল) এর সত্যায়ন কারীঃ

মাসআলা-১৫ঃ কোরআ'ন মাজীদ পূর্বে অবতীর্ণ কিতাবসমূহের মূল শিক্ষার সংরক্ষক যা আহলে কিতাবরা পরবর্তীতে নিজেরা পরিবর্তন করেছেঃ

﴿وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٤٨﴾﴾

অর্থঃ “আর আমি এ কিতাব (কোরআ'ন) কে অবতীর্ণ করেছি তোমার প্রতি যা নিজের সত্যতাগুণে বিভূষিত, তার পূর্ববর্তী কিতাবসমূহের সত্যতা প্রমাণকারী এবং এসব কিতাবের সংরক্ষকও, অতএব, তুমি তাদের পারস্পরিক বিষয়ে আল্লাহর অবতারিত এ কিতাব অনুযায়ী মীমাংসা কর যা তুমি প্রাপ্ত হয়েছ তা থেকে বিরত হয়ে তাদের প্রবৃত্তি অনুযায়ী কাজ কর না”। (সূরা মায়দাহ-৪৮)

মাসআলা-১৬ঃ কোরআ'ন মাজীদ শুধু পূর্ববর্তী কিতাবসমূহের সত্যায়নই করে না বরং ঐ সমস্ত কিতাবসমূহে বর্ণিত মাসায়েল এবং বিধানাবলীর বিস্তারিত বর্ণনাকারীঃ

﴿وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾﴾

অর্থঃ “আর এ কোরআ'ন কল্পনা প্রসূত নয় যে, আল্লাহ ব্যতীত অন্য কারো দ্বারা প্রকাশিত হয়েছে, এটাতো ঐ কিতাবের সত্যায়নকারী যা এর পূর্বে অবতীর্ণ হয়েছে এবং অবশ্যকীয় বিধানসমূহের বিস্তারিত বর্ণনাকারী, এতে কোন সন্দেহ নেই, এটা বিশ্ব প্রতিপালকের পক্ষ থেকে অবতীর্ণ হয়েছে। (সূরা ইউনুস-৩৭)



## الحياة بعد الموت

### মৃত্যুর পরবর্তী জীবনঃ

মাসআলা-১৭ঃ মৃত্যুর পর সমস্ত মানুষকে দ্বিতীয়বার জীবিত করা হবেঃ

﴿وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظْمًا وَّرُفًّا أَوْنَا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿١٩﴾﴾ قُلْ كُونُوا  
حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٢٠﴾ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا  
قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ قُلْ  
عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٢١﴾﴾

অর্থঃ “তারা বলে আমরা অস্তিতে পরিণত ও চূর্ণ-বিচূর্ণ হলেও কি নুতন সৃষ্টি রূপে পুনরুত্থিত হবে? বলঃ তোমরা হয়ে যাও পাথর অথবা লৌহ, অথবা এমন সৃষ্টি যা তোমাদের ধারণায় খুবই কঠিন, তারা বলবেঃ কে আমাদেরকে পুনরুত্থিত করবে? বলঃ তিনিই যিনি তোমাদেরকে প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমার সামনে মাথা নাড়াবে ও বলবে ওটা কবে? বল সম্ভবত শীঘ্রই”। (সূরা বানী ইসরাঈল-৪৯-৫১)

﴿يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ﴿١٩﴾﴾  
وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿٢٠﴾﴾

অর্থঃ “তিনিই মৃত থেকে জীবন্তের আবির্ভাব ঘটান এবং তিনিই জীবন্ত থেকে মৃত্যুর আবির্ভাব ঘটান এবং ভূমির মৃত্যুর পর ওকে পুনর্জীবিত করেন এভাবেই তোমরা উত্থিত হবে।” (সূরা রুম-১৯)

(ب) الاوامر في ضوء القرآن  
কোরআ'ন মাজীদে'র আলোকে নির্দেশাবলীঃ

- (১) ইসলামের রুকনসমূহ
- (২) বংশীয় ধারা
- (৩) আত্মীয়তার সম্পর্ক
- (৪) একাধিক বিয়ে
- (৫) পর্দা
- (৬) দাড়ি
- (৭) কিসাস(হত্যার বিনিময়ে হত্যা)
- (৮) ইসলামী দণ্ড বিধি
- (৯) আল্লাহ্র পথে জিহাদ
- (১০) সৎকাজের আদেশ এবং অসৎ কাজ থেকে নিষেধঃ

## اركان الاسلام

### ইসলামের রুকনসমূহ

মাসআলা-১৮ঃ ইসলামের প্রথম রুকন তাওহীদ (আল্লাহর একত্ববাদ)

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ১নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-১৯ঃ ইসলামের দ্বিতীয় রুকন নামায আর তৃতীয় রুকন যাকাতঃ

﴿فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفُصْلُ الْأَيْتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ﴾ (১১)

অর্থঃ “অতএব, যদি তারা তাওবা করে নেয় এবং নামায আদায় করতে থাকে ও যাকাত দিতে থাকে তবে তারা তোমাদের ধর্মীয় ভাই হয়ে যাবে, আর আমি জ্ঞানী লোকদের জন্য বিধানাবলী বিস্তারিত ভাবে বর্ণনা করে থাকি। (সূরা তাওবা-১১)

মাসআলা-২০ঃ ইসলামের চতুর্থ রুকন রোযাঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ (১৮৩)

অর্থঃ “হে ঈমানদারগণ তোমাদের পূর্ববর্তী লোকদের ন্যায় তোমাদের উপরও রোযাকে ফরয করা হল যেন তোমরা সংযমশীল হতে পার”। (সূরা আল বাক্বারা-১৮৩)

মাসআলা-২১ঃ ইসলামের চতুর্থ রুকন হজ্জঃ

﴿فِيهِ ءَايَاتٌ يَّبَيِّنُ مَقَامَ إِبْرَاهِيمَ وَمَن دَخَلَهُ كَانَ ءَامِنًا وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حُجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ﴾ (১৭)

অর্থঃ “এবং আল্লাহর (সজ্জা লাভের)উদ্দেশ্যে এ গৃহের হজ্জ করা সেরব মানুষের অবশ্য কর্তব্য যারা শরিরীক ও আর্থিকভাবে ঐ পথ অতিক্রমে সমর্থ এবং যদি কেউ অস্বীকার করে তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ সমগ্র বিশ্ববাসী হতে প্রত্যাশা মুক্ত”। (সূরা আলইমরান-৯৭)

## نظام الاسرة

### পরিবার পদ্ধতি

(১) بناء الاسرة.... বিয়ে পরিবার পদ্ধতির ভিত্তিঃ

মাসআলা-২২ঃ বিয়ে নবীগণের রেখে যাওয়া সুন্নাতঃ

﴿وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ

يَأْتِيَ بِكَائِيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ﴾

অর্থঃ “তোমার পূর্বেও আমি অনেক রাসূল প্রেরণ করেছিলাম এবং তাদেরকে স্ত্রী ও সন্তান সন্ততি দিয়েছিলাম”। (সূরা রা'দ-৩৮)

মাসআলা-২৩ঃ আল্লাহ্ তা'লা সমস্ত নারী-পুরুষকে বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ হতে নির্দেশ দিয়েছেনঃ

মাসআলা-২৪ঃ অভাব এবং বেকারত্বের কারণে বিয়ে দেরী করে কার বৈধ নয়ঃ

﴿لِيَجْزِيَهمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ

حِسَابٍ﴾

অর্থঃ “তোমাদের মধ্যে যারা বিপত্নীক পুরুষ বা বিধবা স্ত্রী তাদের বিবাহ সম্পাদন কর এবং তোমাদের দাস ও দাসীদের মধ্যে যারা সং তাদেরও, তারা অভাবগ্রস্ত হলে আল্লাহ্ নিজ অগ্রহে তাদেরকে অভাবমুক্ত করে দিবেন, আল্লাহ্‌তো প্রাচুর্যময়, সর্বজ্ঞ”। (সূরা নূর-৩২)

নোটঃ

- (১) উল্লেখিত আয়াতে অবিবাহিত নারী-পুরুষদেরকে সম্বোধন করা হয়েছে, যে তারা যেন বিয়ে করে এবং এক্ষেত্রে দেরী না করে, যদি কোন নারী বা পুরুষের অভিভাবক না থাকে তাহলে তার নিকট আত্মীয়ও যদি না থাকে তাহলে সমগ্র মুসলিম সমাজ এ আয়াত দ্বারা সম্বোধিত হবে, তারা তাদের মাঝের অবিবাহিত নারী-পুরুষদেরকে বিয়ের জন্য সাহায্য করবে।

(২) বিয়ের ক্ষেত্রে অভিভাবককে সম্বোধন করার মাধ্যমে একথা প্রমাণিত হল যে, মেয়েদের বিয়ের ক্ষেত্রে অভিভাবকের অনুমতি অপরিহার্য।

মাসআলা-২৫ঃ বিয়ের মূল উদ্দেশ্য হল বংশ বিস্তারঃ

মাসআলা-২৬ঃ বিয়ের আরেকটি গুরুত্বপূর্ণ উদ্দেশ্য হল সমাজকে বেহায়াপনা এবং অশ্লীলতা থেকে রক্ষা করাঃ

মাসআলা-২৭ঃ বিয়ে ব্যতীত নারী পুরুষের গোপনসম্পর্ক স্থাপন করা হারামঃ

মাসআলা-২৮ঃ বিয়ে করার বিধান হল জীবনভর নারী-পুরুষ একসাথে থাকার নিয়ত থাকাঃ

﴿فَأَنكِحُوهُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِهِنَّ وَءَاتُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَفَّحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ﴾

অর্থঃ“অতএব তাদের অভিভাবকদের অনুমতিক্রমে ব্যভিচারিণী ও গুপ্ত প্রেমিকা ব্যতীত সতী-সাপ্ত্রীদেরকে বিয়ে কর। (সূরা নিসা-২৫)

﴿نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأَتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُّلَقَوُهُ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ﴾

অর্থঃ“তোমাদের পত্নীগণ তোমাদের জন্য ক্ষেত্র সরূপ, অতএব, তোমরা যখন ইচ্ছা তখন স্বীয় ক্ষেত্রে গমন কর এবং স্বীয় জীবনের জন্য পাথেয় পূর্বেই প্রেরণ কর। (সূরা বাক্বারা-২২৩)

নোটঃ ইহুদীরা বলতঃ পেছন দিক থেকে স্ত্রী সহবাস করলে সন্তান টেরা হবে, উল্লেখিত আয়াতে ইহুদীদের ঐকথার খণ্ডন করা হয়েছে, স্ত্রীর সাথে সামন পেছন উভয় দিক থেকেই সহবাস করা বৈধ, তবে পায়খানার রাস্তা দিয়ে সহবাস করা নিষেধ, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ পায়খানার রাস্তা দিয়ে স্ত্রীসহবাসকারী অভিশপ্ত। (আহমদ)

মাসআলা-২৯ঃবিবাহিত জীবনে আল্লাহ তা'লা মানুষের জন্য আরাম ও শান্তি নিহিত রেখেছেন।

মাসআলা-৩০ঃ বিয়ের পর আল্লাহ তা'লা স্বীয় অনুগ্রহে স্বামী-স্ত্রীর মাঝে ভালবাসার আশ্রয় সৃষ্টি করে দেনঃ

﴿وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ

بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

অর্থঃ “এবং তাঁর নির্দেশনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্যে থেকে সৃষ্টি করেছেন তোমাদের সঙ্গীনিদেরকে, যাতে তোমরা তাদের নিকট শান্তি পাও এবং তিনি তোমাদের মধ্যে পারস্পরিক ভালবাসা ও দয়া সৃষ্টি করেছেন, চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্য এতে অবশ্যই বহু নির্দেশন রয়েছে। (সূরা রুম-২১)

নোটঃ স্বামী স্ত্রীর মাঝে আল্লাহর দেয়া ভালবাসা এবং আন্তরিকতার সীমা আন্তে আন্তে নিজে থেকে সম্প্রসারিত হতে হতে উভয় পরিবারের সদস্যদের মাঝে ছড়িয়ে পড়ে, এরপর এখান থেকে এমন একটি সমাজ গড়ে উঠে যে, এর জন্য পরস্পরের প্রতি দয়া ভালবাসা এবং ত্যাগের মানুষিকতা তৈরী হতে থাকে, এথেকে এ অনুমান করা যায় যে, ইসলামী বিধানে বিয়ের নির্দেশ সমাজে আন্তরিকতা সৃষ্টিতে কত গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা রাখে।

মাসআলা-৩১ঃ সন্মাসী জীবযাপন করতে আল্লাহ তা'লা নিষেধ করেছেনঃ

﴿وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهَابِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا

كُنْتُمْ عَلَيْهَا إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا﴾

অর্থঃ “আর সন্মাসবাদ এটাতো তারা নিজেরাই আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের জন্য প্রবর্তন করেছিল, আমি তাদেরকে এর বিধান দেইনি। (সূরা হাদীদ-২৭)

মাসআলা-৩২ঃ নারী এবং পুরুষ কারোরই গর্বপাত করার অধিকার নেইঃ

﴿وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ حَتَّىٰ إِمْلَأُوا مِنْ نَحْسٍ نَزَرُفُهُمْ وَإِذَا كُنْتُمْ أَنْفُسُكُمْ كَانَتْ

خَطَأًا كَبِيرًا﴾ (২১)

অর্থঃ “তোমাদের সন্তানদেরকে তোমরা দারিদ্র-ভয়ে হত্যা করো না, তাদেরকে এবং তোমাদেরকে আমিই জীবনোপকরণ দিয়ে থাকি, তাদেরকে হত্যা করা মহাপাপ(সূরা বানী ইসরাঈল-৩১)।

## الرجل في نظام الاسرة (১)

### পরিবারে পুরুষের ভূমিকাঃ

মাসআলা-৩৩ঃ পারিবারিক নিয়মে পুরুষ পরিবারের কর্তাঃ

﴿الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ﴾

অর্থঃ“ পুরুষরা নারীদের উপর কতৃত্বশীল, এজন্য যে আল্লাহ্ একের উপর অন্যের বৈশিষ্ট্য দান করেছেন এজন্য যে, তারা তাদের অর্থ ব্যয় করে। (সূরা নিসা-৩৪)

﴿وَاللِّرِّجَالُ عَلَيْهِنَ دَرَجَةٌ﴾

অর্থঃ“আর নারীদের উপর পুরুষদের শ্রেষ্ঠত্ব রয়েছে (সূরা-আলবাক্বারা-২২৮)

মাসআলা-৩৪ঃ ঘরের শৃংখলা রক্ষায় নারীর জন্য পুরুষের অনুসরণ করা ওয়াজিবঃ

﴿فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ﴾

অর্থঃ“আর নেককার স্ত্রীলোকেরা হয় অনুগত এবং আল্লাহ্ যা হেফাযত যোগ্য করে দিয়েছেন লোক চক্ষুর অন্তরালেও তারা তা হেফাযত (সংরক্ষণ) করে। (সূরা নিসা-৩৪)

মাসআলা-৩৫ঃ যদি নারী পুরুষের অনুসরণ না করে তাহলে প্রথমিক পর্যায়ে ভালভাবে নারীকে বুঝানোর জন্য চেষ্টা করতে হবে এতে যদি নারী আনুগত্য স্বীকার না করে তাহলে দ্বিতীয় পর্যায়ে শাসনমূলকভাবে ঘরে পৃথক বিছানায় রাখার অনুমতি দেয়া হয়েছে এরপরও যদি নারী স্বামীর আনুগত্য স্বীকার না করে তাহলে তৃতীয় পর্যায়ে নারীকে হালকা শ্রম করার অনুমতি দেয়া হয়েছেঃ

﴿وَالَّذِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُمْ فَعِظُوهُمْ وَأَهْبِجُوا هُنَّ فِي الْمَصَاجِعِ  
وَأَضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا  
كَبِيرًا ﴿٢٤﴾﴾

অর্থঃ “আর যাদের মধ্যে অবাধ্যতার আশংকা কর তাদেরকে সদুপদেশ দাও, তাদের শয্যা ত্যাগ কর এবং প্রহার কর। যদি তারা তাতে বাধ্য হয়ে যায় তবে আর তাদের জন্য কোন পথ অনুসন্ধান করো না, নিশ্চয় আল্লাহ্ সবার উপর শ্রেষ্ঠ। (সূরা নিসা-৩৪)

মাসআলা-৩৬ঃ ঝগড়ার মুহর্তে ত্বালাক দেয়ার অধিকার পুরুষের রয়েছে নারীর নেইঃ

﴿وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلَعْنِ أَجْلُهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ  
بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ وَلَا  
تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ﴾

অর্থঃ “আর যখন তোমরা স্ত্রীদেরকে ত্বালাক দিয়ে দাও আর তারা নির্ধারিত ইদত সমাপ্ত করে নেয়, তখন তোমরা নিয়ম অনুযায়ী তাদেরকে রেখে দাও, অথবা সহানুভূতির সাথে তাদেরকে মুক্ত করে দাও, আর তোমরা তাদেরকে জ্বালাতন ও বাড়াবাড়ি করার উদ্দেশ্যে আটকে রাখো না, আর যারা এমন করে নিশ্চয়ই তারা নিজেদেরই ক্ষতি করবে। (সূরা আলবাক্বারা-২৩১)

মাসআলা-৩৭ঃ রাজ্যী ত্বালাকের পর (ফেরত যোগ্য) ইদত (মাসিক শেষ) হওয়ার পর স্বামী চাইলে তার স্ত্রীকে ফেরত নিতে পারবে এতে স্ত্রী রাজি থাক বা নাথকুকঃ

﴿وَيُعَوِّلُهَا أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا﴾

অর্থঃ “আর যদি তারা সদ্ভাবে চলতে চায় তাহলে তাদেরকে ফিরিয়ে নেয়ার অধিকার তাদের স্বামীর সৎরক্ষণ করে। (সূরা বাক্বারা-২২৮)



## المرأة فى نظام الاسرة (২)

### পরিবারে নারীর অধিকার

মাসআলা-৩৮ঃ পারিবারিক নিয়মে নারী পুরুষের অধিনস্তঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ৩৫ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-৩৯ঃ নারী পুরুষের অধিনস্ত হওয়ার কারণে নারীর জন্য পুরুষের অনুসরণ করা ওয়াজিবঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ৩৬ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-৪০ঃ নারী ঘরে তার স্বামীর সম্পদ, পরিবার এবং তার সন্তান সংরক্ষণের অধিকার রাখেঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ৩৬ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-৪১ঃ নারী তার ঘরোয়া দায়িত্বের কারণে ভালবাসা, আদর ও দয়া মূলক আচরণ পাওয়ার হকদারঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ১৭৩ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-৪২ঃ ঋণগ্রস্ততার কারণে স্ত্রী যদি স্বামীর কাছ থেকে পৃথক হতে চায় তাহলে আদালতের মাধ্যমে খোলা ত্বালাক নিতে পারবেঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ২২৫ নং মাসআলা দ্রঃ।

## صَلَاةُ الرَّحْمِ

### আত্মীয়তার সম্পর্ক

মাসআলা-৪৩ঃ পরকালীন কল্যাণ তাদের জন্য যারা আত্মীয়তার সম্পর্ক রক্ষা করে চলেঃ

﴿وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ﴾

অর্থঃ “এবং যারা বজায় রাখে ঐ সম্পর্ক, যা বজায় রাখতে আল্লাহ আদেশ দিয়েছেন এবং স্বীয় পালনকর্তাকে ভয় করে এবং কঠোর হিসাবের আশঙ্কা করে (তাদের জন্য রয়েছে পরকালীন কল্যাণ)। (সূরা রা’দ-২১)।

নোটঃ মানব সম্পর্কের মূল ভিত্তি হল “মায়ের উদর” এজন্য আত্মীয়তার হক আদায় করাকে (সিলা রহমী) বলা হয়, উদরের সম্পর্কের প্রথম তালিকায় আসে আপন ভাই, বোন, এরপর আত্মীয়তা অনুযায়ী তাদের অধিকার হবে, আত্মীয়তার সম্পর্কের ব্যাপারে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) হাদীসসমূহ নিম্ন রূপঃ

- ১) আল্লাহ তা’লা আত্মীয়তার সম্পর্ককে সোধেধন করে বলেছেনঃ যে ব্যক্তি তোমার সাথে সম্পর্ক অটুট রাখবে আমি তার সাথে সম্পর্ক রাখব, আর যে ব্যক্তি তোমার সাথে সম্পর্ক ছিন্ন করবে আমি তার সাথে সম্পর্ক ছিন্ন করব। (বোখারী)
- ২) আত্মীয়তার সম্পর্ক আরশের সাথে ঝুলন্ত আর সে ঘোষণা করছে যে, ব্যক্তি আমার সাথে সম্পর্ক অটুট রাখবে, আল্লাহ তার সাথে সম্পর্ক রাখবেন, আর যে ব্যক্তি আমার সাথে সম্পর্ক ছিন্ন করবে, আল্লাহ তার সাথে সম্পর্ক ছিন্ন করবে। (বোখারী ও মুসলিম)
- ৩) যে ব্যক্তি পছন্দ করে যে, তার হায়াত এবং রিযিক বৃদ্ধি করা হোক সেয়েন আত্মীয়তার সম্পর্ক ঠিক রাখে। (বোখারী ও মুসলিম)
- ৪) আত্মীয়তার সম্পর্ক রক্ষার মাধ্যমে বংশে ভালবাসা বৃদ্ধি পায়, সম্পদ বৃদ্ধি পায়, হায়াতে বরকত হয়। (তিরমিযী)
- ৫) ঐ ব্যক্তি আত্মীয়তার সম্পর্ক রক্ষা করল না যেব্যক্তি দায়সার ভাবে এসম্পর্ক রেখে যাচ্ছে বরং আত্মীয়তার সম্পর্ক সেই রক্ষা করল যেব্যক্তির সাথে অন্যরা সম্পর্ক রক্ষা করেনা অথচ সে তাদের সাথে সম্পর্ক রক্ষা করে চলে। (বোখারী)
- ৬) এক ব্যক্তি বললঃ ইয়া রাসূল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমি আমার আত্মীয়দের সাথে আত্মীয়তার সম্পর্ক রক্ষা করে চলি আর তারা আমার সাথে সম্পর্ক ছিন্ন করে, আমি তাদের সাথে ভাল আচরণ করি আর তারা আমার সাথে খারাপ আচরণ করে,

আমি তাদেরকে ক্ষমা সুন্দর দৃষ্টিতে দেখি, আর তারা আমার সাথে বেয়াদবী করে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ যদি তোমার কথা সঠিক হয় তাহলে তুমি তাদের মুখে আগুন ডালছ, যতক্ষণ পর্যন্ত তাদের সাথে এ আচরণ করতে থাকবে ততক্ষণ পর্যন্ত তোমার সাথে আল্লাহর পক্ষ থেকে একজন সাহায্যকারী ফেরেশতা তোমাকে সাহায্য করতে থাকবে। (মুসলিম)

- ৭) যে ব্যক্তি তোমার সাথে আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্ন করে তুমি তার সাথে সম্পর্ক অটুট রাখ, যে তোমাকে বঞ্চিত করে তুমি তাকে সাহায্য কর, যে তোমার প্রতি যুলম করে তুমি তাকে ক্ষমা কর। (আহমদ)
- ৮) আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্নকারী জান্নাতে প্রবেশ করবে না। (বোখারী ও মুসলিম)
- ৯) আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্ন করা এবং অবিচার করা ব্যতীত এমন কোন পাপ নেই যার শাস্তি আল্লাহ দুনিয়াতেও দিবেন এবং পরকালেও দিবেন। (তিরমিযী ও আবুদাউদ)
- ১০) কোন মুসলমানের জন্য জায়েজ নয় যে, সে তার ভায়ের সাথে তিন দিনের বেশি সময় ধরে সম্পর্ক ছিন্ন করে থাকবে, আর যে ব্যক্তি তিন দিনের অধিক সময় ধরে সম্পর্ক ছিন্ন করে থাকবে এবং ঐ অবস্থায় মৃত্যু বরণ করল সে জাহান্নামে যাবে। (আহমদ আবুদাউদ)
- ১১) যে ব্যক্তি তার মুসলমান ভায়ের সাথে এক বছরের বেশি সময় ধরে সম্পর্ক ছিন্ন করে থাকল সেযেন তার ভাইকে হত্যা করল। (আবুদাউদ)
- ১২) (কিয়ামতের দিন) আমানত এবং আত্মীয়তার সম্পর্কে আনা হবে তারা পুলসেরাতের ডানে এবং বামে অবস্থান নিবে। (মুসলিম) আর যেব্যক্তি আমানত এবং আত্মীয়তার হক আদায় করবে না তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে। (আল্লাহুই এব্যাপারে ভাল জানেন)।

\*\*\*

## تعدد الأزواج

### একাধিক বিয়ে

মাসআলা-৪৪ঃ ইসলামে এক সাথে চারজন নারীকে বিয়ে করা বৈধঃ

মাসআলা-৪৫ঃ একাধিক বিয়ের জন্য শর্তহল (স্ত্রীদের মাঝে ন্যায় পরায়নতা) রক্ষা করাঃ

মাসআলা-৪৬ঃ যে ব্যক্তি একাধিক স্ত্রীর মাঝে ন্যায় পরায়নতা রক্ষা করতে পারবে না তার জন্য শুধু একটি বিয়ে করা বৈধঃ

﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَنَىٰ فَإِنَّكُم مَّا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَتِلْكَ

وَرُبُّعٌ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَلِكَ أَذَىٰ ۖ أَلَّا تَعْلَمُوا ۚ﴾ (৩)

অর্থঃ “আর যদি তোমরা ভয় কর যে, এতীম মেয়েদের হক যথাযথ ভাবে পালন করতে পারবে না, তাহলে সেসব মেয়েদের মধ্য থেকে যাদের ভাল লাগে তাদেরকে বিয়ে করে নাও, দুই, তিন কিংবা চারটি পর্যন্ত, আর যদি এরূপ আশংকা কর যে, তাদের মাঝে ন্যায় সঙ্গত আচরণ বজায় রাখতে পারবে না, তবে একটিই, অথবা তোমাদের অধিকার ভুক্ত দাসীদেরকে, এতেই পক্ষপাতিত্বে জড়িত নাহওয়ার অধিকতর সম্ভাবনা। (সূরা নিসা-৩)

নোটঃ

- ১) জাহেলিয়াতের যুগে লোকেরা নয়জন, দশজন নারীকে বিয়ে করত ইসলাম চারজন পর্যন্ত সীমা নির্ধারণ করে এ অবিচারের রাস্তা বন্ধ করেছে,
- ২) কোন কোন লোক এতীম মেয়েদের সুন্দার্য এবং সম্পদের কারণে তাদেরকে বিয়ে করে, কিন্তু তাদের অভিভাবক, উত্তরসূরী নাথাকার কারণে তাদের প্রতি বিভিন্নভাবে যুলুম করে, ইসলাম এতীমদের সাথে সদাচরণের নির্দেশ দিয়েছে, এতে ঈমানদারগণ যথেষ্ট সতর্কতা অবলম্বন করতে লাগল এবং এতীম মেয়েদেরকে বিয়ের করার ব্যাপারে ভয় করতে ছিল তখন এ আয়াত অবতীর্ণ হয়।

## الحجاب

### পর্দা

মাসআলা-৪৭ঃ সমস্ত নারীদেরকে সমস্ত গাইর মাহরাম (যাদের সাথে বিয়ে বৈধ) পুরুষদের সাথে পর্দা করার জন্য নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

মাসআলা-৪৮ঃ পর্দা নারী ও পুরুষদের অন্তরকে শয়তানের কুপ্রবঞ্চনা থেকে রক্ষা করেঃ

﴿وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ﴾

অর্থঃ “তোমরা তাঁর পত্নীগণের নিকট কিছু চাইলে পর্দার আড়াল থেকে চাইবে, এটা তোমাদের অন্তরের জন্য এবং তাদের অন্তরের জন্য অধিকতর পবিত্রতার জন্য। (সূরা আহযাব-৫৩)

নোটঃ যে নির্দেশ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এর স্ত্রীদের জন্য ঐ নির্দেশ উম্মতের জন্য আরো গুরুত্ববহ।

মাসআলা-৪৯ঃ নারীদের চেহারাও পর্দার অন্তর্ভুক্তঃ

﴿وَلَا يَبْدِيَنَّ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ﴾

অর্থঃ “তারা যেন যা সাধারণত প্রকাশমান, তাছাড়া তাদের সৌন্দর্য প্রদর্শন না করে এবং তারা যেন তাদের মাথার ওড়না বক্ষদেশে ফেলে রাখে। (সূরা নূর-৩১)

নোটঃ সাধারণত প্রকাশমান এর অর্থ হলঃ নারীদের বোরকা এবং জুতা যা পুরুষের আকর্ষণের কারণ হতে পারে, তাই তাদের ব্যাপরে সৌন্দর্য শব্দ ব্যবহার করা হয়েছে। (আল্লাহ ই এব্যাপারে ভাল জানেন)।

মাসআলা-৫০ঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এর স্ত্রীগণ এবং অন্যান্য সমস্ত মুসলমান নারীর জন্য পর্দার বিধান একেই রকমঃ

মাসআলা-৫১ঃ পর্দা নারীর সম্মান এবং সম্মম রক্ষকঃ

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلِيبِهنَّ ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٥١﴾﴾

অর্থঃ “হে নবী আপনি আপনার পত্নীগণকে এবং কন্যাগণকে ও মুমেনদের স্ত্রীগণকে বলুন তারা যেন তাদের চাদরের কিয়দংশ নিজেদের উপর টেনে নেয়, এতে তাদেরকে চেনা সহজ হবে, ফলে তাদেরকে উত্তাক্ত করা হবে না, আল্লাহ ক্ষমাশীল পরম দয়ালু। (সূরা আহযাব-৫৯)

মাসআলা-৫২ঃ আবরিত পোষাক আল্লাহ্‌ ভিত্তির বহিঃপ্রকাশঃ

﴿يَبْنِيْءَ آدَمَ قَدْ أَرْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُؤَرَى سَوَاءَ تَكُمُ وَرِيشًا وَلِبَاسُ الْتَقْوَى ذَلِكَ خَيْرٌ ذَلِكَ مِنْ ءَايَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَكَّرُونَ ﴿٥٢﴾﴾

অর্থঃ “হে বানী আদম আমি তোমাদের জন্য পোশাক অবতীর্ণ করেছি, যা তোমাদের লজ্জাস্থান আবরিত করে এবং অবতীর্ণ করেছি সাজ-সজ্জার বস্ত্র এবং পরহেযগারীর পোশাক, এটি সর্বোত্তম। (সূরা আ’রাফ-২৬)

মাসআলা-৫৩ঃ নারী-পুরুষের সংমিশ্রিত অনুষ্ঠান একে অপরের ঘরে বিন অনুমতিতে আসা যাওয়া করা সম্পূর্ণ হারামঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমাদেরকে অনুমতি দেয়া নাহলে তোমরা নবীর গৃহে প্রবেশ কর না। (সূরা আহযাব-৫৩)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٤﴾﴾ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমরা নিজেদের গৃহে প্রবেশ কর না যতক্ষণ না আলাপ-পরিচয় না কর এবং গৃহবাসীদেরকে সালাম না কর, এটাই তোমাদের জন্য উত্তম, যাতে তোমরা স্মরণ রাখ : যদি তোমরা গৃহে কাউকে না পাও তবে অনুমতি গ্রহণ না করা পর্যন্ত সেখানে প্রবেশ কর না। (সূরা নূর ২৭,২৮)

মাসআলা-৫৪ঃ বেপর্দা নারী (যে কোন শারঙ্গ কারণে বে-পর্দা হয়েছে) তার দিকে দেখা নিষেধঃ

মাসআলা-৫৫ঃ চক্ষু দৃষ্টিকে সংরক্ষণ করার মাধ্যমেই লজ্জাস্থান সংরক্ষিত হবেঃ

﴿قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَلِكَ أَزْكَى لَهُمْ إِنَّ

اللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ﴾ (২০)

অর্থঃ “মুমিনদেরকে বলুন তারা যেন তাদের দৃষ্টি নত রাখে এবং তাদের যৌনঙ্গের হেফাযত করে এতে তাদের জন্য খুব পবিত্রতা আছে, নিশ্চয়ই তারা যা করে আল্লাহ তা অবহিত আছেন। (সূরা নূর-৩০)

মাসআলা-৫৬ঃ নারীদের জন্য ইচ্ছা করে পুরুষের দিকে তাকানো চোখে চোখ রেখে ভাষার বিনিময় করা নিষেধঃ

মাসআলা-৫৭ঃ যে মুমিন নারী চোখ সংরক্ষণ করেছে সে তার লজ্জাস্থানও সংরক্ষণ করবেঃ

﴿قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ﴾

অর্থঃ “আপনি ঈমানদার নারীদেরকে বলুন তারা যেন তাদের দৃষ্টিকে নত রাখে এবং তাদের যৌন অঙ্গের হেফাযত করে। (সূরা নূর-৩০)

মাসআলা-৫৮ঃ পর্দারত অবস্থায়ও মুমিন নারীদের এমন কিছু করা উচিত নয় যে কারণে গাইর মাহরাম পুরুষ (যাদের সাথে বিয়ে বৈধ)কে তাদের দিকে আকৃষ্ট করবেঃ

﴿وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا

أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾ (২১)

অর্থঃ “তারা যেন তাদের গোপন সাজ-সজ্জা প্রকাশ করার জন্য জোরে পদচারণা না করে, মুমিনগণ তোমরা সবাই আল্লাহর নিকট তাওবা কর, যাতে তোমরা সফল কাম হও। (সূরা নূর-৩১)

মাসআলা-৫৯ঃ নারীদের জন্য বে-পর্দা হয়ে ঘর থেকে বের হওয়া সম্পূর্ণ জাহেলিয়াতের যুগের কাজঃ

﴿ وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى ﴾

অর্থঃ “তোমরা গৃহ অভ্যন্তরে অবস্থান করবে, জাহেলিয়াতের যুগের ন্যায় নিজেদেরকে প্রদর্শন করবে না। (সূরা আহযাব-৩৩)

মাসআলা-৬০ঃ বৃদ্ধা নারী যারা বিবাহের আশা রাখে না যদি তারা তাদের সৌন্দর্য প্রকাশ না করে, তাদের বস্ত্র খুলে রাখে তাদের জন্য দোষ নেই, তবে পর্দার প্রতি আত্মহী থাকা তাদের জন্য সোয়াবের কারণ হবেঃ

﴿ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَغْفِرْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴾

অর্থঃ “বৃদ্ধা নারী যারা বিবাহের আশা রাখে না যদি তারা তাদের সৌন্দর্য প্রকাশ না করে তাদের বস্ত্র খুলে রাখে তাদের জন্য দোষ নেই, তবে এথেকে বিরত থাকাই তাদের জন্য উত্তম আল্লাহ সর্ব শ্রোতা সর্বজ্ঞ” (সূরা নূর-৬০)

মাসআলা-৬১ঃ যে সমস্ত আত্মীয়দের সাথে পর্দা করতে হবে না তারা নিম্ন রূপঃ

(১) স্বামী, (২) পিতা, (৩) স্বশ্বশুর, (৪) পুত্র, (৫) স্বামীর পুত্র, (৬) কন্যার পুত্র (৭) ভ্রাতা, (৮) ভ্রাতুষ্পুত্র, (৯) ভগ্নি পুত্র এসমস্ত আত্মীয় ব্যতীত অন্য সমস্ত আত্মীয় গাইর মাহরাম (তাদের সাথে বিয়ে বৈধ) তাদের সাথে পর্দা করতে হবেঃ

মাসআলা-৬২ঃ উল্লেখিত আত্মীয় ব্যতীত সচরাচর যাদের সাথে দেখা সাক্ষাত হয়, লজ্জাশীলা ভদ্র নারী, ক্রীতদাসী, অল্পবয়সী মেয়েদের সামনে সাজ সজ্জা প্রকাশ করা যাবেঃ



﴿وَلَا يَبْدِيكَ زَيْنَتُهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَنُهُنَّ أَوْ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولَى الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَتِ النِّسَاءِ﴾

অর্থঃ “এবং তারা যেন তাদের স্বামী, পিতা, শ্বশুর, পুত্র, স্বামীর পুত্র, ভ্রাতা, ভ্রাতুষ্পুত্র, ভগ্নি পুত্র, স্ত্রী লোক অধিকার ভুক্ত বাঁদী, যৌনকাম মুক্ত পুরুষ ও বালক, যারা নারীদের গোপন অঙ্গ সম্পর্কে অজ্ঞ, তাদের ব্যতীত কারো নিকট তাদের সৌন্দর্য প্রকাশ না করে। (সূরা নূর-৩১)

নোটঃ

- (১) উল্লেখ্যঃ চাচা, মামা, দুধসূত্রের আত্মীয়ও মাহরাম (তাদের সাথে বিয়ে অবৈধ)
- (২) হাদীসে বর্ণিত পর্দা সংক্রান্ত বিধি-বিধানসমূহ নিম্ন রূপঃ
- (৩) ক) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ নারীর সর্বাপ পর্দা, যখন সে বে-পর্দা - হয়ে বের হয় তখন শয়তান তাকে তৃপ্তিসহকারে দেখে নেয়।
- খ) চোখের ব্যভিচার গাইর মাহরামদের (যাদের সাথে বিয়ে বৈধ তাদের)দিকে তাকানো (মুসলিম)
- গ) মাহরাম অবস্থায় পর্দা না করার জন্য নারীদেরকে নির্দেশ দেয়া হয়েছে, (তিরমিযী)।

এ নির্দেশ থেকে একথা স্পষ্ট যে ইহরাম ব্যতীত অন্য সময় পর্দাকরা নির্দেশিত, আয়শা (রাযিল্লাহু আনহা) বলেছেনঃহজ্জের সময় যখন আরোহীরা আমাদের পাশদিয়ে অতিক্রম করত তখন আমরা চেহারা এবং মাথায় চাঁদর দিতাম, কিন্তু যখন আরোহীরা আমাদেরকে অতিক্রম করে চলে যেত তখন আমরা চেহারা থেকে পর্দা সরিয়ে দিতাম।(আহমদ ইবনে মাযা,) চেহারায় পর্দা করার ব্যাপারে এটা স্পষ্ট দলীল।

- ঘ) ইফকের ঘটনায় (আয়শা রাযিয়াল্লাহু আনহা) গলার হার হারানোর ঘটনা)সম্পর্কে আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেনঃ যে সাফওয়ান বিন মোয়াত্তাল আমাকে পর্দার বিধানের আগে দেখেছিল, যখন সে আমাকে দেখল তখন বললঃ ইল্লা লিল্লাহি ওয়া ইল্লা

ইলাইহি রাজিউন, তখন আমি ঘুম থেকে উঠে আমার চেহার চাদর দিয়ে আবরিত করে নিলাম। (বোখারী ও মুসলিম)

- ঙ) পর্দার বিধান নাযিল হওয়ার পর উম্মু সালামা এবং উম্মু মাইমুনা (রাযিয়াল্লাহু আনহুমা) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)এর পাশে বসে ছিল তখন একজন অন্ধ সাহাবী আবদুল্লাহ বিন উম্মে মাকতুম (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাঁর নিকট আসলে তিনি তাদের উভয়কে পর্দা করার জন্য নির্দেশ দিলেন, উম্মু সালামা (রাযিয়াল্লাহু আনহা)জিজ্ঞেস করল ইয়া রাসূলুল্লাহ সেতো অন্ধ? রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ তুমিতো দৃষ্টি সম্পন্ন। (তিরমিযী)
- চ) এক মহিলা (উম্মু খাল্লাদ) পর্দা করে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)এর নিকট উপস্থিত হল এবং নিজের ছেলে সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে কিছু জিজ্ঞেস করল, সাহাবাগণ আশ্চর্য হয়ে বললঃ এ মহিলা তার নিহত ছেলে সম্পর্কে জানতে এসেছে অথচ সে পর্দা করে আছে? মহিলা বললঃ আমার ছেলে নিহত হয়েছে কিন্তু লজ্জাতো রয়েছে। (আবুদাউদ)
- ছ) আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) পর্দার বিধান অবতীর্ণ হওয়ার আগে তাঁর দুধ সম্পর্কের চাচা (আফলাহ) এর সাথে পর্দা করত না, পর্দার বিধান নাযিল হওয়ার পর যখন (আফলাহ) আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) এর নিকট আসল তখন আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) তাকে ঘরের বাহিরে অপেক্ষা করতে দিল, ভিতরে আসার অনুমতি দিল না, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ এটা তোমার চাচা তার সাথে কোন পর্দা নেই, তখন আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) তাকে ভিতরে আসার অনুমতি দিলেন। (বোখারী ও মুসলিম)
- জ) আনাস (রাযিয়াল্লাহু আনহু) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর খাদেম ছিল, তাই পর্দার বিধান অবতীর্ণ হওয়ার পূর্বে সে বিনা বাধায় তাঁর ঘরে আসা যাওয়া করত, পর্দার বিধান অবতীর্ণ হওয়ার পর রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাকে ঘরে প্রবেশ করতে নিষেধ করলেন। (বোখারী ও মুসলিম)
- ঝ) এক সফরে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এবং উম্মুল মুমেনীন সাকিয়া (রাযিয়াল্লাহু আনহা) একটি উটে আরোহী ছিলেন, উটটি হোঁচট খেলে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এবং উম্মুল মুমেনীন সাকিয়া (রাযিয়াল্লাহু আনহা) উটের পিঠ থেকে পড়ে গেল, ত্বালহা এবং আনাস (রাযিয়াল্লাহু আনহু) সাথে ছিল, ত্বালহা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে উঠানোর জন্য এগিয়ে আসলে তিনি বললেনঃমহিলার প্রতি লক্ষ্য রেখ, তখন ত্বালহা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) প্রথমে নিজের চেহারা চাদর দিয়ে ঢেকে এর পর সাকিয়া (রাযিয়াল্লাহু আনহা)

এর নিকট গেল এবং তার উপর চাদর দিয়ে তাকে ঢেকে সোয়ারীর উপর উঠাল।  
(বোখারী)

এঃ) এক মহিলা পর্দার আড়ালে থেকে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে কোন বিষয়ে জিজ্ঞেস করল, তিনি বললেনঃ এটা কি পুরুষের হাত না মহিলার? সে বললঃ মহিলা। তিনি বললেনঃ মহিলার হাত, তাহলে কমপক্ষে নখে মেহেন্দী মাখবে।  
(আবুদাউদ)

ট) একদা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কুলির বেঁচে যাওয়া পানি আবু মুসা এবং বেলাল (রাযিয়াল্লাহু আনহুমা)কে দিলেন যে এপানি পান কর এবং চেহারায় মাখ, উম্মু সালামা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) পর্দার আড়াল থেকে তা দেখছিলেন এবং বললেনঃ এ বরকতময় পানির কিছু পানি ময়ের জন্যও রেখে দিও। (বোখারী)

ঠ) ফাতেমা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) মৃত্যুর পূর্বে এ ওসিয়ত করলেন যে, আমার দাফন রাতে করবে এবং পর্দার প্রতি পূর্ণ খেয়াল রাখবে। এ সমস্ত ঘটনাবলী নারীর চেহারা পর্দারা ব্যাপারে স্পষ্ট দলীল।

(অতএব যে চায় সে যেন তা মানে আর যে চায় সে যেন তা প্রত্যাখ্যান করে।)



## الحياة

### দাড়ি

মাসআলা-৬৩ঃ দাড়ি রাখা নবীগণের সূনাতঃ

অর্থঃ "তিনি বললেনঃ হে আমার জননী-তনয়, আমার দাড়ি এবং কেশ ধরে আকর্ষণ করো না, আমি আশংকা করছিলাম যে, তুমি বলবেঃ তুমি বানী ইসরাঈলদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টি করছ এবং আমার বাক্য পালনে যত্ববান নও। (সূরা ত্বা-হা-৯৪)

নোটঃ দাড়ি সম্পর্কে বর্ণিত বিধি-বিধানের আলোকে আলেমগণ এটাকে ওয়াজিব বলেছেন, এসম্পর্কে কিছু হাদীস নিম্নে পেশ করা হলঃ

- ১) মোশরেকদের বিরোধিতা কর দাড়ি ছাড় আর মোচ কাট। (বোখারী)
- ২) আমাকে নির্দেশ দেয়া হয়েছে, যেন মোচ কাটি এবং দাড়ি ছাড়ি। (মুসলিম)
- ৩) দশটি বিষয় ফিতরাত (ইসলামী স্বভাবগত অভ্যাসের অন্তর্ভুক্ত), যার মধ্যে একটি হল, মোচ কাটা এবং দাড়ি বড় করা। (মুসলিম)
- ৪) একজন অগ্নিপূজক রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট আসল, তার দাড়ি মুন্ডানো ছিল আর মোচ ছিল বড় রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাকে জিজ্ঞেস করলেনঃ তোমাদেরকে দাড়ি মুন্ডাতে এবং মোচ বড় করার অনুমতি কে দিল, সে বললঃ আমার রব, (অর্থাৎ আমার বাদশাহ) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেঃ আমার রব তো আমাকে দাড়ি বড় করতে এবং মোচ ছোট করতে নির্দেশ দিয়েছেন। (ত্বাবাকাত ইবনু সা'দ)
- ৫) পারস্যের বাদশাহর দু'জন সৈন্য রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে প্রেফতার করার জন্য আসল, তাদের উভয়ের দাড়ি মুন্ডানো ছিল, আর মোচ বড় ছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাদেরকে দেখে তাঁর চেহারা অন্যদিকে ফিরিয়ে নিলেন এবং বললেঃ তোমাদের উভয়ের জন্য ওয়াইল জাহান্নাম, তোমাদেরকে কে এরকম করার অনুমতি কে দিল? তারা বললঃ আমাদের রব, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ আমার রব তো আমাকে দাড়ি বড় করতে এবং মোচ ছোট করতে নির্দেশ দিয়েছেন। (আল বেদায়া ওয়ান নেহায়া)

## القصاص

### কেসাস (হত্যার বিনিময়ে হত্যা)

মাসআলা-৬৪ঃ ইচ্ছাকৃত হত্যার শাস্তি হত্যাকারীকে হত্যা করাঃ

মাসআলা-৬৫ঃ নিহতের উত্তর সূরীরা যদি হত্যার বিনিময়ে হত্যা চায় তাহলে তারা তা চাইতে পারে, আর যদি রক্তপন চায় তাহলে রক্তপনও নিতে পারবে, আর যদি ক্ষমা করে দিতে চায় তাহলে তাও পারবেঃ

মাসআলা-৬৬ঃ হত্যাকারী স্বাধীন হলে স্বাধীনকে হত্যা করা হবে, হত্যাকারী যদি কৃতদাস হয় তাহলে কৃতদাসকে হত্যা করা হবে, হত্যাকারী নারী হলে নারীকেই হত্যা করা হবেঃ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقَصَاصُ فِي الْقَتْلِ الْحَرْمِ وَالْحَرْمِ وَالْعَبْدِ بِالْعَبْدِ  
وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ فَمَنْ عَفَىٰ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَإِنِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَنٍ  
ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنْ أَعْدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٨﴾

অর্থঃ “হে ঈমানদারগণ তোমাদের প্রতি নিহতদের ব্যাপারে কেসাস গ্রহণ করা বিধিবদ্ধ করা হয়েছে, স্বাধীন ব্যক্তি স্বাধীন ব্যক্তির বদলায়, দাস দাসের বদলায় এবং নারী নারীর বদলায়, অতঃপর তার ভায়ের তরফ থেকে যদি কাউকে কিছুটা মারফ করে দেয়া হয়, তবে প্রচলিত নিয়মের অনুসরণ করবে এবং ভালভাবে তাকে তা প্রদান করতে হবে, এটা তোমাদের পালনকর্তার তরফ থেকে সহজ এবং বিশেষ অনুগ্রহ, এরপরও যে ব্যক্তি বাড়াবাড়ি করে তার জন্য রয়েছে বেদনাদায়ক শাস্তি (সূরা বাক্বারা-১৭৮)

নোটঃ

- (১) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি হত্যার বিনিময়ে হত্যা করার ক্ষেত্রে যে প্রতিবন্ধক হয় তার উপর আল্লাহর অভিসম্পাত এবং গজব তার কোন ফরয এবং নফল ইবাদত আল্লাহর নিকট কবুল হবে না। (আবুদাউদ ও নাসায়ী)
- (২) রক্তপনের পরিমাণ একশত উট বা তার সমপরিমাণ অর্থ।

মাসআলা-৬৭ঃ ভুল কৃত হত্যার শাস্তি হল একজন মুসলমান গোলাম আযাদ করা এবং রক্তপন দেয়াঃ

মাসআলা-৬৮ঃ নিহতের উত্তরাধিকারীরা যদি হত্যাকারীকে ক্ষমা করে দিতে চায় তাহলে নিজের ইচ্ছা অনুযায়ী ক্ষমা করতে পারবেঃ

﴿وَمَا كَانُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَنْ يَقْتُلُوا مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسْلَمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ﴾

অর্থঃ “যে ব্যক্তি কোন মুমেনকে ভুল করে হত্যা করে সে একজন মুমেন কৃতদাস আযাদ করবে এবং রক্ত বিনিময় সমর্পন করবে তার স্বজনদেরকে, আর যদি তারা ক্ষমা করে দেয় (তাহলে তা তাদের ইচ্ছা)। (সূরা নিসা-৯২)

নোটঃ

- (১) ভুলকৃত হত্যার অর্থ হলঃ যেখানে হত্যার নিয়ত বা ইচ্ছা থাকে না, এমনকি ঝগড়ার সময় এমন কোন অস্ত্র ব্যবহার করা হয়নাই যদিও সাধারণত হত্যা করা হয়ে থাকে, যেমনঃ ছুরি, তরবারী।
- (২) উল্লেখ্যঃ ভুলকৃত হত্যায় নিহতের ওয়ারিসরা কেসাস দাবী করতে পারবে না।

মাসআলা-৬৯ঃ যে ব্যক্তি গোলাম আযাদ করার ক্ষমতা রাখেনা সে একাধারে দুই মাস রোযা রাখবেঃ

﴿وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسْلَمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا﴾ (৯২)

অর্থঃ “আর যে ব্যক্তি নাপায় (রক্ত পণ আদায়ের সমর্থ না রাখে) সে আল্লাহর কাছ থেকে গোনাহ মাফ করানোর জন্য উপর্যুপরি দুইমাস রোযা রাখবে। আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়। (সূরা নিসা-৯২)

নোটঃ রোযা রাখা কালে যদি কোন রোযা বাদ পড়ে, তাহলে আবার নুতন করে দুই মাস রোযা রাখতে হবে, তবে যদি শরয়ী কারণে রোযা ভাংসে তাহলে নুতন করে দুইমাস রোযা রাখতে হবে না, যেমনঃ হায়েয, নেফাস, কঠিন কোন রোগ হার ফলে রোযা রাখা কষ্টকর হয়। (আহসানুল বায়ান)

## الحدود الشرعية

### ইসলামী দণ্ড বিধিঃ

#### حد السرقة

#### চুরীর শাস্তি

মাসআলা-৭০ঃ চোর পুরুষ হোক আর নারী তার হাত কাটা ইসলামের বিধানঃ

﴿وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءُ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللَّهِ

وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ (২৮)

অর্থঃ “আর যে পুরুষ চুরি করে এবং যে নারী চুরি করে, তোমরা তাদের কৃতকর্মের বিনিময়ে তাদের ডান হাত কেটে দাও, এটা আল্লাহর পক্ষ থেকে শাস্তি আর আল্লাহ্ অতিশয় ক্ষমতাবান, মহা প্রজ্ঞাময়। (সূরা মায়দা-৩৮)

#### حد قطع الطريق

#### ডাকাতির শাস্তিঃ

মাসআলা-৭১ঃ সন্ত্রাস ডাকাতির অপরাধে লিগু ডাকাত ডাকাতি করার সময় যদি কাউকে হত্যা করে কিন্তু মাল লুট করতে না পারে, তাহলে এর শাস্তি হিসেবে তাকে হত্যা করতে হবেঃ

মাসআলা-৭২ঃ যদি সন্ত্রাস ডাকাতির অপরাধে লিগু ডাকাত, ডাকাতি করার সময় কাউকে হত্যা করে এবং মাল লুট করে নেয়, তাহলে এর শাস্তি হিসেবে তাকে ফাসি দিতে হবেঃ

মাসআলা-৭৩ঃ যদি অপরাধিরা মাল লুট করে কিন্তু কাউকে হত্যা না করে তাহলে এর শাস্তি হিসেবে তার হাত পা বিপরীত ভাবে কাটতে হবে (অর্থাৎঃ ডান হাত এবং বাম পা, বা বাম হাত এবং ডান পা কেটে শাস্তি দিতে হবেঃ

মাসআলা-৭৪ঃ যদি সন্ত্রাস ডাকাতির অপরাধে লিগু ডাকাত ডাকাতি করার চেষ্টা করে, কিন্তু মাল লুট করতে না পারে এবং কাউকে হত্যাও না করে তাহলে এর শাস্তি হিসেবে তাকে দেশান্তরিত করতে হবেঃ



﴿ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خَلْفٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴾ (৩২)

অর্থঃ “যারা আল্লাহর সাথে ও তাঁর রাসূলের সাথে সংগ্রাম করে আর ভূ-পৃষ্ঠে অশান্তি সৃষ্টি করে বেড়াই, তাদের শাস্তি এটাই যে, তাদেরকে হত্যা করা হবে, অথবা এক দিকের হাত ও অপর দিকের পা কেটে ফেলা হবে, অথবা ভূ-পৃষ্ঠ হতে বের করে দেয়া হবে, এটা তো ইহলোকে তাদের জন্যে ভীষণ অপমান, আর পরকালেও তাদের জন্যে ভীষণ শাস্তি রয়েছে। (সূরা মায়দা-৩৩)

নোটঃ আলেমগণের মতে ইসলামী রাষ্ট্রের বিরুদ্ধে বিদ্রোহকারীদের জন্য এ শাস্তি। (এ ব্যাপারে আল্লাহই ভাল জানেন।)

## حد القذف

### (৩) মিথ্যা অপবাদের শাস্তি

মাসআলা-৭৫ঃ নিরপরাধ নারীকে ব্যভিচারের মিথ্যা অপবাদদাতাকে ৮০টি বেত্রাঘাত করার নির্দেশ দেয়া হয়েছে, ইসলামের পরিভাষায় তাকে মিথ্যা অপবাদের শাস্তি বলা হয়ঃ

﴿ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴾ (১)

অর্থঃ “যারা সতী-সাধবী রমণীর প্রতি অপবাদ আরোপ করে এবং চারজন সাক্ষী হাজির করে না, তাদেরকে আশিটি বেত্রাঘাত করবে এবং কখনো তাদের সাক্ষ্য গ্রহণ করবে না তারাইতো সত্য-ত্যাগী। (সূরা নূর-৪)

## حَدُّ الزَّانَا (৪)

### ব্যভিচারের শাস্তি

মাসআলা-৭৭ঃ অবিবাহিত নর বা নারীকে ব্যভিচারের শাস্তি হিসেবে একশত বেত্রাঘাত করার নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

﴿الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَشَهِدَ عَدَاؤُهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ٢﴾

অর্থঃ “ব্যভিচারিণী ও ব্যভিচারী তাদের প্রত্যেককে একশ বেত্রাঘাত করবে, আল্লাহর বিধান কার্যকরি করণে তাদের প্রতি দয়া যেন তোমাদেরকে প্রভাবিত না করে, যদি তোমরা আল্লাহ্ এবং পরকালে বিশ্বাসী হও, মুমিনদের একটি দল যেন তাদের এশাস্তি প্রত্যক্ষ করে। (সূরা নূর-২)

মাসআলা-৭৮ঃ বিবাহিত নর বা নারী ব্যভিচার করলে তার শাস্তি হল পাথর মেরে হত্যা করাঃ

নোটঃ

- (১) বিবাহিত নর বা নারীকে ব্যভিচারের শাস্তি হিসেবে পাথর মেরে হত্যা করার বিধান সহীহ এবং ধারাবাহিক সূত্রে বর্ণিত হাদীস দারা প্রমাণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে এর এর পরবর্তীতে খোলাফায়ে রাশেদীনের যুগেও রজম (পাথর মেরে হত্যার) বিধান কার্যকর ছিল, উল্লেখ্যঃ রজমের আয়াত কোরআন মাজীদে সূরা আহযাবে অবতীর্ণ হয়ে ছিল, কিন্তু পরবর্তীতে তার তেলওয়াত রহিত হয়ে গেছে, তবে বিধানটি বলবৎ আছে। (আশরাফুল হাওয়াশী, সূরা নূর হাশিয়া নম্বর-৯, পৃঃ৪১৮)
- (২) যদি নর এবং নারীর উভয়ের সম্মতিতে ব্যভিচার হয়ে থাকে তাহলে এ শাস্তি তাদের উভয়েরই হবে, কিন্তু যদি তাদের উভয়ের মধ্যে কোন একজনে জোরপূর্বক তা করে থাকে তাহলে যে জোরপূর্বক ব্যভিচার করেছে তাকেই এই শাস্তি দেয়া হবে, যাকে জোর করে বাধ্য করা হয়েছে সে নির্দোষ বলে প্রমাণিত হবে।
- (৩) উল্লেখ্যঃ শরিয়ত ব্যভিচারের অপরাধ শিথিল যোগ্য কোন অপরাধ নয়, যার প্রমাণ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর যুগে ঘটে যাওয়া এ ঘটনাটি, এক বেদুইন রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট উপস্থিত হয়ে আবেদন করল যে, ইয়া রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আমি আপনাকে আল্লাহর কসম দিয়ে

বলছি, আমাদের মাঝে আপনি আল্লাহর কিতাবের আলোকে ফায়সালা করুন, মামলার অপর পক্ষ অধিক জ্ঞানবান ছিল, সে বললঃ হাঁ হে আল্লাহর রাসূল আমাদের মাঝে আল্লাহর কিতাব অনুযায়ী ফায়সালা করুন, কিন্তু আমাকে কথা বলার সুযোগ দিন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ আচ্ছা বল, সে বললঃ আমার ছেলে তার ঘরে কাজ করত, সে তার মনিবের স্ত্রীর সাথে ব্যভিচার করেছে, লোকেরা আমাকে বলেছেঃ তোমার ছেলেকে পাথর মেরে হত্যা করতে হবে, আমি এর বিনিময়ে একশত বকরী সাদকা করেছি এবং একজন ক্রীতদাসী আযাদ করেছি, এর পর আমি আলেমদেরকে জিজ্ঞেস করেছি, তারা বলেছে তোমার ছেলেকে একশত বেত্রাঘাত করতে হবে এবং এক বছরের জন্য তোমার ছেলেকে দেশান্তরিত করতে হবে, আর অপরপক্ষের স্ত্রীকে পাথর মেরে হত্যা করতে হবে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ ঐ সত্ত্বার কসম! ঐর হাতে আমার প্রাণ! আমি তোমাদের মাঝে আল্লাহর কিতাব অনুযায়ীই ফায়সালা করব, প্রথম পক্ষকে নির্দেশ দিল যে তুমি তোমার বকরী এবং ক্রীতদাসী ফেরত নাও, তোমার ছেলেকে একশত বেত্রাঘাত করতে হবে এবং এক বছরের জন্য দেশান্তরিত করতে হবে। এরপর এক সাহাবীকে নির্দেশ দিলেন যে, তুমি আগামী দিন ঐ মহিলাকে গিয়ে জিজ্ঞেস করবে যে, যদি সে ব্যভিচারের কথা স্বীকার করে তাহলে তাকে পাথর মেরে হত্যা করবে, ঐ সাহাবী পরের দিন ঐ মহিলাকে জিজ্ঞেস করলে মহিলা ব্যভিচারের কথা স্বীকার করল, তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর ফায়সালা অনুযায়ী তাকে পাথর মেরে হত্যা করা হল। (বোখারী ও মুসলিম)

## حد شرب الخمر (৫)

### মদ পানের শাস্তি

মাসআলা-৭৯ঃ মদপানের শাস্তি ৮০টি বেত্রাঘাতঃ

অর্থঃ“ আনাস বিন মালেক (রাযিয়াল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট এক ব্যক্তিকে আনা হল, সে মদ পান করেছিল, দু’টি লাঠি দিয়ে ৪০টি বেত্রাঘাত করা হল, (বর্ণনাকারী বলেন) আবুবকর (রাযিয়াল্লাহু আনহু)ও তার শাসনামলে এ বিধান কার্যকর রেখেছেন, ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তার শাসনামলে সাহাবাগণের সাথে পরামর্শ করলেন, আবদুর রহমান বিন আওফ (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বললঃ সমস্ত শাস্তির মধ্যে সবচেয়ে হালকা শাস্তি হল ৮০টি বেত্রাঘাত, অতঃপর ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহু) ৮০টি বেত্রাঘাত কার্যকর রাখার জন্য নির্দেশ দিলেন। (মুসলিম)<sup>৭৯</sup>

<sup>৭৯</sup> -কিতাবুল হুদুদ, বাব হুদুদ খামর।

নোটঃ

- (১) উল্লেখ্যঃ আল্লাহর নির্ধারিত দণ্ডবিধিতে পরিবর্তন পরিবর্ধনতো দূরের কথা এমনকি আল্লাহর দণ্ড বিধিতে সুপারিশ করাও কঠোরভাবে নিষেধ, মাখযুম বংশের মহিলা ফাতেমা চুরী করলে, কোরাইশরা উসামা বিন যায়েদ (রাযিয়াল্লাহু আনহু) কে সুপারিশকারী হিসেবে পাঠাল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)রাগান্বিত হয়ে বললেনঃ উসামা তুমি কি আল্লাহর নির্ধারিত দণ্ডবিধিতে সুপারিশ করছ। যদি মোহাম্মদের মেয়ে ফাতেমাও চুরী করে তাহলে আমি তার হাত কেটে দিব। (এক্ষেত্রে কারো কোন সুপারিশ গ্রহণ করব না) ((বোখারী ও মুসলিম)।
- (২) চুরী এবং ডাকাতি হওয়া মালের মালিক তার মালের অধিকার ক্ষমা করতে পারে তিনি চোর বা ডাকাতির শাস্তি ক্ষমা করার অধিকার রাখে না।
- (৩) কেসাসের (হত্যার বিনিময়ে হত্য)ক্ষেত্রে সুপারিশ বা ক্ষমা করা জায়েয।

\*\*\*

## الجهاد في سبيل الله

### আল্লাহর পথে জিহাদ

মাসআলা-৭৯ঃ মুসলমানদেরকে সর্বদা কাফেরদের বিরুদ্ধে অস্ত্র তাক করে রাখতে নির্দেশ দেয়া হয়েছে, যাতে কাফেররা মুসলমানদের ভয়ে ভীত থাকেঃ

﴿وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَءَاخِرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ﴾ (১০)

অর্থঃ “তোমরা কাফিরদের মোকাবেলা করার জন্য যথাসাধ্য শক্তি ও সদা সজ্জিত অশ্ববাহিনী প্রস্তুত রাখবে, যাদ্বারা আল্লাহর শত্রু ও তোমাদের শত্রুদেরকে ভীত সন্ত্রস্ত করবে, এছাড়া অন্যদেরকেও, যাদেরকে তোমরা জাননা কিন্তু আল্লাহ জানেন, আর তোমরা আল্লাহর পথে যা কিছু ব্যয় কর তার প্রতিদান তোমাদেরকে পুরোপুরি দেয়া হবে, তোমাদের প্রতি অত্যাচার করা হবে না। (সূরা আনফাল-৬০)

মাসআলা-৮০ঃ যুদ্ধের জন্য অন্যান্য মুসলমানদের কেও উৎসাহিত করতে নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَبَرُوا يَغْلِبُوا مِائَتِينَ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ﴾ (১০)

অর্থঃ “হে নবী মুমিনদেরকে জিহাদের জন্য উদ্বুদ্ধ কর, তোমাদের মধ্যে যদি বিশজন ধৈর্যশীল মুজাহিদ থাকে তবে তারা দশ জন কাফেরের উপর জয়যুক্ত হবে, আর তোমাদের মধ্যে একশ জন থাকলে তারা একহাজার কাফেরের উপর বিজয়ী হবে, কারণ তারা এমন এক সম্প্রদায় যাদের বোধ শক্তি নেই, কিছু বোঝে না। (সূরা আনফাল-৬৫)

মাসআলা-৮১ঃ স্বীয় জ্ঞান ও মাল দিয়ে আল্লাহর পথে যুদ্ধ করার প্রতিফল হল জান্নাতঃ

﴿ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِآتٍ لَهُمُ  
الْجَنَّةُ يُقَرَّبُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا  
فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ  
فَأَسْتَبِشِرُوا بِيَعْيَكُمْ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾ ۝

অর্থঃ “নিঃসন্দেহে আল্লাহ মুমিনদের নিকট থেকে তাদের প্রাণ ও তাদের ধন-সম্পদ সমূহকে এর বিনিময়ে ক্রয় করে নিয়েছেন যে, তাদের জন্য জান্নাত রয়েছে, তারা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করে অতঃপর মারে ও মরে, তাওরাত, ইঞ্জিল ও কোরআ’ নে তিনি এ সত্য প্রতিশ্রুতিতে অবিচল। আর আল্লাহর চেয়ে প্রতিশ্রুতি রক্ষায় কে অধিক? সুতরাং তোমরা আনন্দিত হও সে লেন-দেনের উপর, যা তোমরা করছ তাঁর সাথে, আর এহল মহান সাফল্য। (সূরা তাওবা-১১১)

মাসআলা-৮১ঃ স্বীয় জান ও মাল দিয়ে আল্লাহর পথে যুদ্ধকারীদের জন্য নিম্নোক্ত চারটি সুসংবাদ (১)বেদনাদায়ক শাস্তি থেকে মুক্তি(২) সমস্ত গোনাহসমূহ ক্ষমা (৩)জান্নাতে প্রবেশ(৪)জান্নাতে উত্তম ঘরঃ

﴿ يَأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا هَلْ أَذِلَّكُمْ عَلَىٰ تَحَرُّمِ شَيْءٍ مِّنْ عَذَابِ إِلِيمٍ ﴿١١٠﴾ تَوَمَّنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ  
وَجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١١﴾ يَغْفِرْ  
لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَىٰ مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ذَٰلِكَ  
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٢﴾ ۝

অর্থঃ “হে মুমিনগণ আমি কি তোমাদেরকে এমন এক ব্যবসার সন্ধান দিব, যা তোমাদেরকে যন্ত্রনাদায়ক শাস্তি থেকে মুক্তি দিবে? তাএই যে, তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসুলের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করবে এবং আল্লাহর পথে নিজেদের ধন-সম্পদ ও জীবনপণ করে যুদ্ধ করবে, এটাই তোমাদের জন্য উত্তম, যদি তোমরা বোঝ, তিনি তোমাদের পাপরাশি ক্ষমা করবেন এবং এমন জান্নাতে প্রবেশ করাবেন যার পাদদেশে নদী প্রবাহিত এবং বসবাসের জান্নাতে উত্তম বাসগৃহে, এটা মহা সাফল্য। (সূরা আসসফ-১০-১২)

## الامر بالمعروف والنهي عن المنكر সৎকাজের আদেশ এবং অসৎ কাজে নিষেধ

মাসআলা-৮৩ঃ মুসলমানদের মধ্যে ক্ষমতাবান এবং আলেমদের উপর সৎ কাজের আদেশ এবং অন্যায় কাজের নিষেধ করা ওয়াজিবঃ

﴿وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ﴾  
(১-৫)

অর্থঃ “আর তোমাদের মধ্যে এমন একটি দল থাকা উচিত যারা আহ্বান জানাবে সৎকর্মের প্রতি, নির্দেশ দিবে ভাল কাজের এবং বারণ করবে অন্যায় কাজ থেকে, আর তারা ইহল সফল কাম। (সূরা আল ইমরান-১০৪)

নোটঃ সৎ কাজের আদেশ এবং অসৎ কাজের নিষেধ সংক্রান্ত কিছু হাদীস নিম্ন রূপঃ

- ১) যে ব্যক্তি কোন অন্যায় কাজ হতে দেখে, (সে যদি ক্ষমতাবান হয়) তাহলে তার উচিত হাত দিয়ে তাতে বাধা দেয়া, যদি হাত দিয়ে বাধা দেয়ার ক্ষমতা না থাকে, তাহলে মুখ দিয়ে বাধা দেয়ার চেষ্টা করবে, আর মুখ দিয়েও যদি বাধা না দিতে পারে তাহলে মনে মনে তা ঘৃণা করবে। আর এটা ঈমানের সর্ব নিম্ন স্তর (মুসলিম)
- ২) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বানী ইসরাঈলের অধঃপতনের প্রথমিক পর্যায়ে এছিল যে, এক ব্যক্তি অপর ব্যক্তির সাথে সাক্ষাত হলে ঐ ব্যক্তিকে কোন অন্যায় কাজ করতে দেখলে তখন তাকে বলতঃ যে হে ভাই তুমি আল্লাহকে ভয় কর এবং এ অন্যায় কাজ করনা, এটা তোমার জন্য জায়েয নয়, (কিন্তু সেতা মানত না), যখন পরের দিন তার সাথে আবার দেখা হত তখন (তার সাথে রাগ না করে) আগের সম্পর্কের জের ধরে তার সাথে পূর্বের ন্যায় পানাহার, উঠা বসা শুরু করত, যখন লোকেরা এভাবেই চলতে লাগল তখন আল্লাহ তাদের সকলের অন্তর একরকম করে দিলেন, এর পর নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এআয়াত তেলওয়াত করলেনঃ বানী ইসরাঈলের মধ্যে যারা কুফরী করেছিল তাদের উপর দাউদ ও ঈসা (আঃ) এর যবানে অভিসম্পাত করেছেন, কেনান তারা নাফরমানী করতে ছিল, সীমা লঙ্ঘন করত, একে অপরকে ঐ সমস্ত মন্দ কাজ থেকে বাধা দিত না যা তারা করত। (তিরমিযী)

- ৩) যখন মানুষ তার সামনে অন্যায় হতে দেখবে, আর ঐ অন্যায়কারীকে বাধা দিবে না তাহলে খুব শীঘ্রই তাদের উপর ঐ সময় আসবে যখন আল্লাহ সকলকে শাস্তিতে নিক্ষেপ করবেন। (ইবনু মাযা, তিরমিযী)
- ৪) ঐ ব্যক্তি আমার উম্মতের অন্তর্ভুক্ত নয় যে, মানুষকে সৎ কাজের আদেশ এবং অন্যায় কাজ থেকে নিষেধ করে না। (তিরমিযী)
- ৫) ঐ সত্তার কসম যার হাতে আমার প্রাণ! তোমরা সৎ কাজের আদেশ দিতে থাক এবং অন্যায় কাজ থেকে নিষেধ করতে থাক, অন্যথায় আল্লাহ তোমাদের উপর আযাব চাপিয়ে দিবেন আর তখন তোমরা দোয়া করতে থাকবে অথচ তখন তোমাদের দোয়া কবুল করা হবে না। (তিরমিযী)
- ৬) যে সমস্ত লোক আল্লাহর বিধান অমান্য করীদের মাঝে থাকে, আর ঐ অপরাধ প্রতিরোধ করতে সক্ষম হওয়া সত্ত্বেও তা প্রতিহত করেনা, আল্লাহ ঐ সমস্ত লোকদেরকে তাদের মৃত্যুর আগে আযাবে নিপতিত করবেন। (আবুদাউদ, ইবনু মাযা)
- ৭) আল্লাহ তা'লা জিবরীল (আঃ)কে নির্দেশ দিলেন যে, ওমুক ওমুক শহরকে তার অধিবাসীসহ ধ্বংস করে দাও, জিবরীল (আঃ) বললঃ ঐ শহরে অমুক বান্দা আছে যে কখনো তোমার কোন নাফরমানী করে নাই, আল্লাহ তা'লা বললেনঃ তাকেও ধ্বংস করে দাও, কেননা মন্দকাজ হতে দেখে সে কখনো তাতে বাধা দেয় নাই। (বাইহাকী)
- ৮) মুসলিম সামাজ্যে সৎকাজের আদেশ এবং অন্যায় কাজে নিষেধ এদায়িত্ব যারা পালন করে না, তাদের উদাহরণ দিতে গিয়ে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ তাদের উদাহরণ হল এমন যে, কোন জাহাজের উপরে তলায় কিছু লোক আরোহণ করল আবার কিছু লোক তর নিচ তলায় আরোহণ করল, পানির জন্য নিচের লোকদের উপরে যেতে হয়, ফলে উপরের লোকদের কষ্ট হয়, তাই নিচের লোকেরা তাদের আরামের জন্য জাহাজে ছিদ্র করতে চাইল, তখন যদি উপরের লোকেরা তাদেরকে বাধা দেয়, তাহলে তারা নিজেরাও বেঁচে যাবে আবার অন্যদেরকেও বাঁচাতে পারবে, আর বাধা না দিলে তাদেরকেও মৃত্যুর মুখে ঠেলে দিবে, আবার নিজেরাও মৃত্যুর মুখে পড়বে। (বোখারী)
- ৯) মানুষের স্ত্রী, সম্পদ, জীবন, তার সন্তান, তার প্রতিবেশির মাঝে ফিতনা রয়েছে। যা নামায, রোযা, সাদকা, সৎকাজের আদেশ এবং অসৎ কাজের নিষেধের মাধ্যমে দূর হয়ে যায়। (মুসলিম)



## (ج) النواهی فی ضوء القرآن

আলকোরআ'নের আলোকে নিষেধাবলীঃ

- (১) মিথ্যা
- (২) গীবত (পরনিন্দা)
- (৩) ঘুষ
- (৪) সুদ
- (৫) ছবি
- (৬) যাদু
- (৭) গান-বাজনা
- (৮) মদ
- (৯) জুয়া
- (১০) ব্যভিচার
- (১১) সমকামিতা
- (১২) আত্ম হত্যা
- (১৩) হত্যা
- (১৪) ইহুদী নাসারাদের সাথে বন্ধুত্ব
- (১৫) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে ঠাট্টা বিদ্রোপ
- (১৬) মোরতাদ

# كذب

## মিথ্যা

মাসআলা-৮৪: মিথ্যা বলা কবীরা গোনাহঃ

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ﴾

অর্থঃ “নিশ্চয় আল্লাহ সীমালংঘনকারী, মিথ্যাবাদীকে পথ প্রদর্শন করেন না (সূরা মু'মিন-২৮)

নোটঃ মিথ্যা কি? তা বর্ণনা করতে গিয়ে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি তার বাচ্চাকে বললঃ আমার নিকট আস আমি তোমাকে কিছু দিব, অতঃপর কিছু দিল না তাহলে এটা মিথ্যা হবে। (আহমদ)

মিথ্যা সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কিছু হাদীস নিম্নে পেশ করা হলঃ

- ১) যখন কোন ব্যক্তি কোন মিথ্যা কথা বলে, তখন মিথ্যার গন্ধে ফেরেশতা তার কাছ থেকে একমাইল দূরে সরে যায়। (তিরমিযী)
- ২) মিথ্যা থেকে বেঁচে থাক, কেননা মিথ্যা পাপের দিকে নিয়ে যায়, আর পাপ জাহান্নামে নিয়ে যায়। (বোখারী)
- ৩) ঐ ব্যক্তি ধবংস হয়ে গেল যে মানুষকে হাসানোর জন্য মিথ্যা বলে, তার জন্য জাহান্নাম, তার জন্য জাহান্নাম। (তিরমিযী)
- ৪) মিথ্যা ইবাদতের সোয়াবকে নষ্ট করে দেয়ঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ রোযাদার মিথ্যা বলা এবং ঐ অনুযায়ী কাজ করা পরিহার না করলে আল্লাহর কোন প্রয়োজন নেই যে সে পানাহার ত্যাগ করবে। (বোখারী)
- ৫) কবীরা গোনাহসমূহের মধ্যে সবচেয়ে বড় গোনাহ হলঃ শিরক, পিতা-মাতার নাফরমানী, মিথ্যা সাক্ষী, মিথ্যা কথা। (মুসলিম)
- ৬) কিয়ামতের দিন আল্লাহ তিন প্রকার লোকের দিকে দৃষ্টি দিবেন না এবং তাদেরকে বেদনাদায়ক আযাব দিবেন। (১)বৃদ্ধ ব্যভিচারী (২)মিথ্যুক শাসক(৩) গরীব অহংকারী। (মুসলিম)

- ৭) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) স্বপ্নে দেখতে পেলেন, এক ব্যক্তি চিত হয়ে গুয়ে আছে, আর অপর ব্যক্তি একটি লোহার আঁকড় নিয়ে দাঁড়িয়ে আছে এবং তার চেহারার এক পার্শ্বের ঠোট থেকে ঘাড় পর্যন্ত এবং চোখ থেকে ঘাড় পর্যন্ত চিরে দিচ্ছে, আবার তার চেহারার অপর পার্শ্ব গিয়ে অপর ঠোট থেকে ঘাড় পর্যন্ত এবং অপর চোখ থেকে ঘাড় পর্যন্ত চিরে দিচ্ছে। ততক্ষণে চেহারা পূর্বের অংশের চোখ ঘাড় পর্যন্ত ঠিক হয়ে যায়, তখন ঐ লোকটি আবার এসে তা চিরতে শুরু করে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) জিবরীল (আঃ) কে জিজ্ঞেস করল এটা কে? জিবরীল (আঃ) বললঃ সে ঐ ব্যক্তি যে সকালে তার ঘর থেকে বের হয়ে মিথ্যা বলত এর পর তার ঐ মিথ্যা সমগ্র বিশ্বে ছড়িয়ে পড়ত। (বোখারী)

## الغسيبة

### গীবত (পরনিন্দা)

মাসআলা-৮৫ঃ গীবত করা কবীর গোনাহঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَحْسَبُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾﴾

অর্থঃ “একে অপরের পশ্চাতে নিন্দা কর না, তোমাদের মধ্যে কি কেউ তার মৃত ভায়ের গোশত ভক্ষণ করতে চাইবে? বস্তুত তোমরাতো এটাকে ঘৃণাই মনে কর, তোমরা আল্লাহ কে ভয় কর, আল্লাহ তাওবা কবুলকারী, পরম দয়ালু। (সূরা হুজুরাত-১২)

নোটঃ গীবত (পরনিন্দা) কাকে বলে তা বর্ণনা করতে গিয়ে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেনঃ গীবত হল এই যে, তুমি তোমার ভাইকে এমনভাবে স্মরণ করবে যা তার অপছন্দনীয়। সাহাবাগণ আরয় করল, যদি ঐ দোষ তার মধ্যে থাকে তাহলে? রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ যদি তা তার মধ্যে থাকে তাহলে এটা গীবত (পরনিন্দা) আর যদি না থাকে তাহলে তাকে মিথ্যা অপবাদ দেয়া হল। (মুসলিম, আবুদাউদ, তিরমিযী, নাসায়ী)

গীবত (পরনিন্দা) সম্পর্কিত রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কিছু হাদীস নিম্ন রূপঃ

- ১) গীবত (পরনিন্দা) ব্যভিচারের চেয়েও কঠিন পাপ, সাহাবাগণ জিজ্ঞেস করল ইয়া রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) গীবত (পরনিন্দা) কি করে ব্যভিচারের চেয়ে কঠিন পাপ? তিনি বললেনঃ কোন ব্যক্তি যদি ব্যভিচার করে এরপর যদি তাওবা করে তাহলে আল্লাহ তার তাওবা কবুল করেন এবং তাকে ক্ষমা করে দেন, কিন্তু গীবতকারীকে ততক্ষণ পর্যন্ত ক্ষমা করা হবে না যতক্ষণ না তাকে ঐ ব্যক্তি ক্ষমা করবে যার সে গীবত (পরনিন্দা) করেছে। (বাইহাকী)
- ২) মায়েয আসলামীকে ব্যভিচারের অপরাধে পাথর মেরে হত্যা করা হয়েছিল, তখন এক ব্যক্তি অপর জনকে বললঃ এই ব্যক্তির প্রতি লক্ষ কর, আল্লাহ তার পাপকে ঢেকে দিয়ে ছিলেন, কিন্তু তার প্রবৃত্তি তাকে ছাড়ে নাই, যতক্ষণ না কুকুরের ন্যায় তাকে মারা হল,

রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এই কথাটি শুনে নিল, পথিমধ্যে তিনি কিছু গাধার মৃতদেহ দেখতে পেলেন, তখন রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) থেমে গেলেন এবং এ উভয় ব্যক্তিকে নির্দেশ দিলেন, আস এগুলো ভক্ষণ কর, তারা বললঃ ইয়া রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এগুলো কে খাবে? তিনি বললেনঃ যেভাবে তোমরা তোমার ভায়ের ইজ্জতকে নষ্ট করলে সেটা এই মৃতদেহ ভক্ষণ করার চেয়ে কয়েকগুণ বেশি অপরাধ। (আবুদাউদ)

৩) আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) উম্মুল মুমেনীন হাফসা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে বললঃ সে এরকম ঐরকম, (খাঁট) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ আয়শা তুমি এমন কথা বললেঃ যে কথাটিকে যদি সমুদ্রে নিক্ষেপ করা হয়, তাহলে তা সমুদ্রকে ভিত্ত করে দিবে। (আহমদ,তিরমিযী, আবুদাউদ)

৪) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে রাতে আমি মে'রাজে গিয়েছিলাম ঐ রাতে আমি এমন কিছু লোক দেখতে পেলাম, যাদের নখ ছিল তারা তাদের নখ দিয়ে স্বীয় মুখ এবং বুকের মাংস কাটছিল, আমি জিজ্ঞেস করলাম, এরা কারা? জিবরীল (আঃ) বললঃ তারা ঐ সমস্ত লোক যারা পৃথিবীতে মানুষের মাংস ভক্ষণ করত, (পরনিন্দা) করত এবং তাদের সম্মান নষ্ট করত। (আবুদাউদ)

\*\*\*

## الرشوة

### ঘুষ

মাসআলা-৮৬ঃ ঘুষ গ্রহণ করা কবীরা গোনাহঃ

﴿وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

অর্থঃ“এবং তোমরা নিজেদের মধ্যে পরস্পরের ধন-সম্পত্তি অন্যায়ভাবে গ্রাস কর না এবং তা বিচারকের নিকট এ জন্য উপস্থিত কর না, যাতে তোমরা জ্ঞাত সারে লোকের ধনের অংশ অন্যায়ভাবে গ্রাস করতে পার। (সূরা বাক্বারা-১৮৮)

নোটঃ ঘুষ সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) থেকে বর্ণিত কিছু হাদীস নিম্নরূপঃ

- ১) ঘুষ দাতা এবং গ্রহিতার উপর আল্লাহর অভিসাপ। (ইবনু মাযা)
- ২) বিচার পাওয়ার জন্য ঘুষ দাতা এবং গ্রহিতার উপর আল্লাহর অভিসাপ। (মাজমাউযযাওয়ায়েদ)
- ৩) যে ব্যক্তি বিচার করার জন্য ঘুষ নেয় ঐ ঘুষ তার মাঝে এবং জান্নাতের মাঝে আড় হয়ে যায়। (কানযুল উম্মাল)
- ৪) যে জাতির মাঝে ঘুষ প্রথা ব্যাপকতা লাভ করে ঐ জাতিকে কাফেরদের ভয়ে ভীত করা হয়। (মোসনাদ আহমদ)

হারাম উপার্জন সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)এর নির্দেশনা নিম্নরূপঃ

- ১) হারাম উপার্জনে ঘটিত মাংস জান্নাতে যাবে না, যে মাংস হারাম উপার্জন দ্বারা ঘটিত হয়েছে তা জাহান্নামেরই উপযুক্ত। (আহমদ)
- ২) হারাম উপার্জনের সম্পদের দান গ্রহণ করা হয় না। (আহমদ)
- ৩) যে ব্যক্তি একটি কাপড় দশ দিরহাম দিয়ে ক্রয় করল, আর ঐ দিরহামসমূহের মধ্যে এক দিরহাম ছিল হারাম উপার্জন, তাহলে যতক্ষণ সে ঐ কাপড় পরিধান করবে ততক্ষণ তার নামায় আল্লাহ কবুল করবেন না। (আহমদ)
- ৪) কোন ব্যক্তি দীর্ঘ পথ অতিক্রম করে ক্লাস্ত শরীরে, এলোকেশে (হজ্ব করার) জন্য আসে, আর উভয় হাত উর্ধ্বে উঠিয়ে দোয়া করতে থাকে “হে আমার রব! হে আমার রব! অথচ তার অবস্থা হল এইয়ে, তার পানাহার, পোশাক সব হারাম পন্থায় উপার্জিত সম্পদ দিয়ে প্রস্তুত কৃত, তার শরীর হারাম উপার্জিত সম্পদ দ্বারা লালিত, তাহলে তার দোয়া কিভাবে কবুল হবে? (মুসলিম)

## الرِّبَا

## সুদ

মাসআলা-৮৭ঃ সুদ দেয়া এবং নেয়ার মাধ্যমে সম্পদের বরকত নষ্ট হয়ে যায়ঃ

﴿يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزِيلُ الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ﴾ (১৭)

অর্থঃ“আল্লাহ্ নষ্ট করেন এবং দান খয়রাতকে বর্ধিত করেন, আল্লাহ্ পছন্দ করেন না কোন অবিশ্বাসী পাপিকে। (সূরা বাক্বরা-২৭৬)

﴿وَمَا آتَيْتُم مِّن رَّبِّا لِّرَبِّوٓا۟ فِيۢ أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرِبُّوٓا۟ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا آتَيْتُم مِّن

زَكٰوٰةٍ تَّرِبُّوٓا۟ وَجَهِ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ﴾ (১৮)

অর্থঃ“যে সম্পদ তোমরা মানুষকে সুদ হিসেবে দিয়ে থাক যাতে করে তাদের সম্পদের মাধ্যমে তোমাদের সম্পদ বৃদ্ধি পায়, আল্লাহ্র নিকট তা বৃদ্ধি পায় না, অবশ্য আল্লাহ্র চেহারা (সন্তুষ্টির) উদ্দেশ্যে তোমরা যে যাকাত দিয়ে থাক মূলত তা তোমাদের সম্পদ বৃদ্ধি করে। (সূরা রুম-৩৯)

মাসআলা-৮৮ঃ সুদের লাভ গ্রহণ কার নিষেধঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ﴾

﴿(১৮৮)﴾

অর্থঃ“হে ঈমানদারগণ তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং সুদের যেসমস্ত বকেয়া আছে তা পরিত্যাগ কর, যদি তোমরা ঈমানদার হয়ে থাক। (সূরা বাক্বরা-২৭৮)

মাসআলা-৮৯ঃ সুদ ভিত্তিক সমাজ ব্যবস্থা পরিচালনাকারীদের প্রতি আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসুলের যুদ্ধ ঘোষণাঃ

﴿فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ

أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ﴾ (১৮৯)

অর্থঃ“ অতঃপর যদি তোমরা পরিত্যাগ না কর, তবে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের সাথে যুদ্ধ করতে প্রস্তুত হয়ে যাও, কিন্তু যদি তোমরা তাওবা কর, তবে তোমরা নিজেরা মূলধন পেয়ে যাবে, তোমরা কারো প্রতি অত্যাচার কর না এবং কেউ তোমাদের উপর অত্যাচার করবে না। (সূরা বাক্বার-২৭৯)

মাসআলা-৯০ঃ সুদ দাতা এবং গ্রহিতার জন্য পরকালে বেদনাদায়ক শাস্তি :

﴿وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْباطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا﴾ (৯০)

অর্থঃ“ আর একারণে যে, তারা সুদ গ্রহণ করত অথচ এব্যাপারে নিষেধাজ্ঞা আরোপ করা হয়েছিল এবং একারণে যে তারা অপরের সম্পদ ভোগ করত অন্যায়ভাবে। বস্তুতঃ আমি কাফেরদের জন্য তৈরী করে রেখেছি বেদনাদায়ক আযাব। (সূরা নিসা-১৬১)

মাসআলা-৯১ঃ সুদ গ্রহণকারী তার কবর থেকে শয়তান আসর কৃত মোহাবিষ্টের ন্যায় দণ্ডয়মান হবেঃ

মাসআলা-৯২ঃ সুদ গ্রহণকারী (মুসলমান) দীর্ঘসময় পর্যন্ত জাহান্নামে থাকবেঃ

﴿الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ﴾ (৯২)

অর্থঃ“যারা সুদ খায়, তারা কিয়ামতের দিন দণ্ডয়মান হবে, যেভাবে শয়তান আসর করে মোহাবিষ্ট করে দেয়। তাদের এ অবস্থার কারণ এই যে, তারা বলছেঃ ক্রয় বিক্রয়ও তো সুদ নেয়ারই মত, অথচ আল্লাহ ক্রয় বিক্রয় বৈধ করেছেন এবং সুদ হারাম করেছেন, অতঃপর যার কাছে তার পালনকর্তার পক্ষ থেকে উপদেশ এসেছে এবং সে বিরত হয়েছে, পূর্বে যা হয়ে গেছে তা তার এবং তার ব্যাপারে ফায়সালা আল্লাহর উপর, আর যারা পুনঃগ্রহণ করবে তারাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী সেখানেই তারা চিরকাল থাকবে। (সূরা বাক্বার-২৭৫)

নোটঃ সুদ সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নির্দেশনা নিম্নরূপঃ

- ১) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) সুদ গ্রহণকারী, তার লেখক, তার সাক্ষীদের উপর অভিসম্পাত করেছেন এবং বলেছেনঃ এরা সবাই পাপের দিক থেকে সমান : (মুসলিম)



- ২) জেনে শুনে সুদ গ্রহণ করার পাপ ৩৬ বার ব্যাভিচার করার পাপের চেয়ে মারাত্মক (মোসনাদ আহমদ, ত্বাবারানী)
- ৩) সুদের গোনাহ সত্তর রকমের, এর মধ্যে সবচেয়ে নিম্নমানের গোনাহ হল নিজের মায়ের সাথে ব্যাভিচার করার মত : (ইবনু মাযা)
- ৪) সুদের মাল কারো নিকট যত অধিকই হোকনা কেন তা শেষ হয়ে যায় (তার বরকত শেষ হয়ে যায়)। (ইবনু মাযা)
- ৫) যে জাতির মধ্যে সুদ ব্যাপকতা লাভ করে তাদের মাঝে দুর্ভিক্ষ চাপিয়ে দেয়া হয়। (মোসনাদ আহমদ)
- ৬) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ মেরাজের রাতে আমি এক ব্যক্তিকে রক্তের নদীতে দেখতে পেলাম, আর অপর এক ব্যক্তি নদীর তীরে পাথর নিয়ে দাঁড়িয়ে আছে, যখন নদীর লোকটি উপরে উঠতে চায় তখন তীরে দণ্ডমান লোকটি তার মুখে পাথর নিক্ষেপ করে, আর ঐ লোকটি তখন কাঁদতে কাঁদতে ফিরে যায়, নদীর লোকটি পুনরায় উপরে উঠার জন্য চেষ্টা করলে তখন তীরের লোকটি আবার তার মুখে পাথর মারে, তখন ঐ লোকটি আবার কাঁদতে কাঁদতে পেছনে ফিরে যায়, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) জিজ্ঞেস করলে জিবরীল (আঃ) বললঃ এটা সুদ খোর। (বোখারী)
- ৭) যখন কোন অঞ্চলে ব্যাভিচার এবং সুদ ব্যাপকতা লাভ করে তখন ঐ অঞ্চলে আল্লাহ র আযাব নেমে আসে। (হাকেম, ত্বাবারানী)
- ৮) মেরাজের রাতে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কিছু লোককে দেখতে পেলেন যাদের পেট কোন স্থানের ন্যায় (বড় বড়) আর তার মাঝে শুধু সাপ আর সাপ, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) জিজ্ঞেস করলে জিবরীল (আঃ) বললঃ তারা সুদখোর। (মোসনাদ আহমদ)
- ৯) ঐ সত্ত্বার কসম! যার হাতে মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর প্রাণ! আমার উম্মতের কিছু লোক গৌরব ও অহংকারে, খেলা ধূল্য রাতযাপন করতে থাকবে, কিন্তু সকালে বানর ও গুরুর পরিণত হবে, আর তাহবে হালালকে হারাম, গাযিকা, মদপান, সুদ এবং রেশমী কাপড়ের ব্যবহার ব্যাপকতা লাভ করার কারণে। (আহমদ)
- ১০) ধবংস কারী সাতটি পাপের একটি হল সুদ (বোখারী)
- ১১) চার প্রকার লোককে আল্লাহ জান্নাতে প্রবেশ করাবেন না, (১) মদপানকারী (২) সুদখোর (৩) এতীমের সম্পদ ভক্ষণকারী (৪) পিতা-মাতার অবাধ্য সন্তান। (মোসনাদরাক হাকেম)

## التصوير

## ছবি

মাসআলা-৯৩ঃ জীবন্ত জিনিসের ছবি তোলা কবীরা গোনাহঃ

﴿إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا

مُهِينًا﴾

অর্থঃ“যারা আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসূলকে কষ্ট দেয় আল্লাহ্ তাদের প্রতি ইহকালে এবং পরকালে অভিসম্পাত করেন এবং তাদের জন্য প্রস্তুত রেখেছেন অবমাননাকর শাস্তি। (সূরা আহযাব-৫৭)

নোটঃ উল্লেখিত আয়াত সম্পর্কে ইকরেমা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বলেনঃ তারা হল ঐ সমস্ত লোক যারা ছবি তৈরী করে।<sup>৭৫</sup>

ছবি সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) থেকে বর্ণিত হাদীসসমূহ নিম্নরূপঃ

- ১) ছবি তৈরীকারীর উপর আল্লাহ্র অভিসম্পাত (বোখারী)
- ২) কিয়ামতের দিন সমস্ত লোকদের তুলনায় সবচেয়ে কঠিন শাস্তি দেয়া হবে ঐসমস্ত লোকদেরকে যারা ছবি উঠায়। (বোখারী ও মুসলিম)
- ৩) যারা ছবি উঠায় তারা প্রত্যেকে জাহান্নামে যাবে এবং প্রত্যেক ছবির বদলায় একটি প্রতিকৃতি তৈরী করা হবে এবং যা তাকে শাস্তি দিতে থাকবে। (বোখারী ও মুসলিম)
- ৪) যে ব্যক্তি কোন প্রাণীর ছবি উঠায় তাকে কিয়ামতের দিন আযাবে পতিত করা হবে এবং বলা হবে যে, এতে প্রাণ দাও যা সে কখনো পারবে না। (বোখারী)
- ৫) যেসমস্ত ঘরে কোন প্রাণীর ছবি থাকে ঐসমস্ত ঘরে রহমতের ফেরেশতা প্রবেশ করে না। (বোখারী ও মুসলিম)
- ৬) কোন প্রাণীর ছবি তৈরীকারীরা আল্লাহ্র সৃষ্টির মধ্যে সবচেয়ে নিকৃষ্ট সৃষ্টি। (বোখারী ও মুসলিম)

<sup>৭৫</sup> - শাইখ আহমদ বিন হাজার (রাহিমাহুল্লাহ) লিখিত মোয়াশারা কি বিমারিয়া আওর উনকা ইলাজ, পৃঃ ৫০৬।



- ৭) কিয়ামতের দিন জাহান্নাম থেকে একটি গর্দান বের হবে, তার দু'টি চোখ থাকবে, যার দ্বারা সে দেখবে, তার দু'টি কান হবে যার দ্বারা সে শুনবে, তার যবান থাকবে যার দ্বারা সে কথা বলবে, সে বলবেঃ আমি তিন প্রকার লোককে শাস্তি দেয়ার জন্য প্রেরিত হয়েছি, (১) আল্লাহর বিরুদ্ধে উদ্ধত্য প্রকাশকারী এবং সত্যের সাথে এক গুঁয়েমী কারী(২) আল্লাহর সাথে শিরককারী(৩)যারা ছবি উঠায়। (তিরমিযী)
- ৮) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) আলী (রাযিয়াল্লাহু আনহু)কে মূর্তি ভাঙ্গা, উচু কবর সমতল করা, ছবি নষ্ট করার দায়িত্ব দিয়েছেন এবং বলেছেনঃ“যে ব্যক্তি এ বিষয়গুলোর মধ্যে কোন একটি বিষয় করল সে এ নির্দেশনাকে প্রত্যাখ্যান করল যা মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর উপর অবতীর্ণ করা হয়েছে। (মুসলিম)
- ৯) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাঁর ঘরে পর্দা বুলানো দেখলেন, যার মধ্যে ছবি ছিল, এতে রাগে তাঁর চেহারার রং পরিবর্তন হয়ে গেল, তিনি পর্দা ছিড়ে ফেললেন এবং বললেনঃ কিয়ামতের দিন কঠিন শাস্তি তাদেরকে দেয়া হবে যারা আল্লাহর সৃষ্টির ন্যায় সৃষ্টি করার চেষ্টা করে। (মুসলিম)
- ১০) উম্মু সালামা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) হাবশার গির্জা দেখলেন, যেখানে মূর্তি ছিল, উম্মু সালামা তা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট পেশ করল, তখন তিনি বললেনঃতাদের অবস্থা ছিল এই যে, যখন তাদের মধ্যে কোন ভাল লোক মারা যেত, তখন তার কবরের উপর উপাশানালায় তৈরী করা হত, এরপর ঐ উপাশানালায়ে বয়ুর্গদের মূর্তি রেখে দেয়, তারা নিকৃষ্টতম সৃষ্টি। (বোখারী ও মুসলিম)

নোটঃ \* যে ছবি অপরাধীদেরকে ধরার জন্য বা পাসপোর্টে ব্যবহার করার জন্য বা পরিচয় পত্রের জন্য উঠানো হয় তা বৈধ বলে ওলামাগণ ফতোয়া দিয়েছেন। (এব্যাপারে আল্লাহই ভাল জানেন)।

\* উল্লেখ্যঃ হাতে অংকিত ছবি এবং ক্যামেরা দিয়ে উঠানো ছবির বিধান একেই।

\*\*\*

## السحر

### যাদু

মাসআলা-৯৪ঃ যাদু করা এবং তা শিখা কুফরীঃ

﴿وَاتَّبِعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكٍ سُلَيْمَنَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَنُ

وَلَكِنَّ الشَّيْطَانَ كَفَرُوا يَعْلَمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ ۚ﴾ (১-২)

অর্থঃ“ এবং সুলাইমানের রাজত্বকালে শয়তানরা যা আবৃত্তি করত তারা তারই অনুসরণ করছে এবং সুলাইমান অবিশ্বাসী হয়নি, কিন্তু শয়তানরাই অবিশ্বাস করছিল, তারা লোকদেরকে যাদু বিদ্যা শিক্ষা দিত। (সূরা বাক্বারা-১০২)

নোটঃ

- ১) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ তিন ব্যক্তি জান্নাতে যাবে না, (১) মদ পানকারী (২) আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্নকারী (৩) যাদু সত্য বলে বিশ্বাসকারী (সত্যবলে তা পালনকারী) (আহমদ, আবু ইয়ালা, ইবনু মাযা)
- (২) যাদুকরদের ব্যাপারে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে তাদেরকে হত্যা করে দাও। (তিরমিযী)
- (৩) ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাঁর কর্মচারীদেরকে দিক নির্দেশনা দিলেন যে, প্রত্যেক যাদুকর নারী ও পুরুষকে হত্যা কর, ফলে তার নির্দেশক্রমে তিন জন যাদুকরকে হত্যা করা হল। (বোখারী)

\*\*\*

## الغنا

## গান বাজনা

মাসআলা-৯৫ঃ গান-বাজনা, নাচ, মদ, যুবক যুবতীদের মিলন মেলা এবং অনইসলামী আনন্দ উৎসবকারীদের জন্য রয়েছে বেদনাদায়ক শাস্তি :

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ  
وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾ وَإِذَا نُتِلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَاتُنَا وَلَّىٰ  
مُتَّكِبًا كَانَ لَمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَسَّطَهُ بَعْدَآبِ الْإِيمِ ﴿٧﴾﴾

অর্থঃ “মানুষের মধ্যে কেউ কেউ অজ্ঞতাবসতঃ আল্লাহর পথ থেকে (মানুষকে) বিচ্যুত করার জন্য অসার বাক্য ক্রয় করে নেয় এবং আল্লাহ প্রদর্শিত পথ নিয়ে ঠাট্টা বিদ্রূপ করে, তাদের জন্য রয়েছে অবমাননাকর শাস্তি : যখন তার নিকট আমার আয়াত আবৃত্তি করা হয় তখন সে দম্ভভরে মুখ ফিরিয়ে নেয় যেন সে এটা শুনতে পায়নি, যেন তার কর্ণ দু’টি বধির, অতএব, তাকে যন্ত্রনাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ দিয়ে দাও। (সূরা লোকমান-৬, ৭)

নোটঃ অসার বাক্য (গান বাজনা সম্পর্কে) মোফাসসরীনগণ নিম্নোক্ত বক্তব্য রেখেছেনঃ

- ১) আল্লাহর কসম এর অর্থ গানবাজনা (আবদুল্লাহ বিন মাসউদ(রাযিয়াল্লাহু আনহু)।
- ২) এর অর্থ গান বাজনা এবং অনুরূপ বিষয়াদী (আবদুল্লাহ বিন আব্বাস (রাযিয়াল্লাহু আনহুমা)।
- ৩) এ আয়াতটি গান এবং তার যন্ত্রাদির নিন্দায় অবতীর্ণ হয়েছে।(হাসান বাসরী (রাহিমাহুল্লাহ)।
- ৪) এর অর্থ গানবাজনা(আল্লামা কোরতুবী)।
- ৫) প্রত্যেক ঐ জিনিস যা মানুষকে আল্লাহর স্মরণ থেকে অন্যমনস্ক করে রাখে, যেমনঃ গান, খেলাধুলা, ইত্যাদি (আল্লামা ইবনুল কায়্যিম)।
- ৬) প্রত্যেক ঐ জিনিস যা কোরআন মাজীদ এবং শরীয়তের অনুসরণ থেকে বিরত রাখে (ইবনু জারীর (রাহিমাহুল্লাহ)।
- ৭) এর অর্থ গান বাজনা ঢোল ইত্যাদি (আল্লামা ইবনু কাসীর (রাহিমাহুল্লাহ)

- ৮) 'লাহুয়াল হাদীসের' ব্যবহার হাসি-তামসা, ঠাট্টা, অনর্থক গল্প, নোভেল, গান-বাজনা ইত্যাদির ক্ষেত্রে হয়ে থাকে। (সায়োদ আবুল আ'লা মওদুধী রাহিমাহুল্লাহ)।
- ৯) 'লাহুয়াল হাদীসের' অর্থঃ ঐসমস্ত খেলা ধূলা যা মানুষকে দ্বীন থেকে পথভ্রষ্ট হওয়া এবং অন্যদেরকে পথভ্রষ্ট করার কারণ হয়। (মুফতি মোহাম্মদ শফি রাহিমাহুল্লাহ)।
- ১০) 'লাহুয়াল হাদীসের' অর্থঃ গান বাজনা, তার যন্ত্রাদি, বাদ্য এবং প্রত্যেক ঐসমস্ত জিনিস যা মানুষকে কল্যাণ ও সোয়াবের পথ থেকে দূরে রাখে, যাতে কিসসা, কাহিনী, নাটক, নোভেল, যৌন সুরসুরি, বেহায়া উলঙ্গপনা মূলক সংবাদ মাধ্যম, সবই এর অন্তর্ভুক্ত, এমনিভাবে অধুনিক অবিস্কারসমূহের মধ্যে রেডিও, টি,ভি, ভিসিআর, ভিডিও ফ্লিমও এর অন্তর্ভুক্ত। (মাওলানা হাফেয সালাহউদ্দীন ইফসুফ)।
- ১১) এর উদ্দেশ্য প্রত্যেক ঐ কর্ম, খেলা ধূলা যা মানুষকে আল্লাহর স্মরণ থেকে বিরত রাখে, চাই সেকাজ গান-বাজনা হোক, বা মনপুত নোভেল, নাটক, ক্লাব, বা ঘরের খেলাধূলা, বা টি,ভি, বা নাটক বা সিনেমা। (মাওলানা আবদুর রহমান কীলানী রাহিমাহুল্লাহ)।
- ১২) খেলা-ধূলা, গান-বাজনা, হাসি-ঠাট্টা, মিথ্যা কল্প কাহিনী, প্রত্যেক ঐ পাপ যা আল্লাহর পথ থেকে সরিয়ে শয়তানের পথে নিয়ে আসে তাই 'লাহুয়াল হাদীস'।

\* গান-বাজনা সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কিছু হাদীস নিম্ন রূপে:

- ১) যে ব্যক্তি গানের মজলিসে বসে গান শুনবে, কিয়ামতের দিন তার কানে গলিত শিশা ঢেলে দেয়া হবে। (ত্বাবারানী)।
- ২) যখন কোন ব্যক্তি চিৎকার করে গান গাইতে থাকে, তখন শয়তান তাকে কাবু করে ফেলে, সে স্বীয় পাদিয়ে গায়কের বুকে চড়ে নাচতে থাকে। (ত্বাবারানী)।
- ৩) আমার উম্মতের কিছু লোক ব্যভিচার, রেশম, মদ এবং গান বাজনাকে হালাল মনে করবে। (বোখারী)।
- ৪) আমার উম্মতের কিছু লোক মদ পান করবে, কিন্তু তার তার অন্য কোন নাম দিবে, তার তত্ত্বাবধানে বাজনা বাজবে, গায়িকারা গান করবে, আল্লাহ তাকে জমিনে ধসিয়ে দিবেন এবং কাউকে কাউকে বানর ও গুয়রে পরিণত করবেন। (ইবনু মাযা)।
- ৫) শেষ যামানায় ভূমি ধস, সতী নারীকে মিথ্যা অপবাদ, মানব আকৃতির পরিবর্তন ঘটবে, জিজ্ঞেস করা হল ইয়া রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এটা কখন হবে? তিনি বললেনঃ যখন গানবাজনার যন্ত্র, গানবাজনাকারী নারী এবং মদপান হালাল মনে করা হবে। (ত্বাবারানী)

- ৬) ঐ সত্তার কসম! যার হাতে মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) প্রাণ! আমার উম্মতের কিছু লোক গৌরব ও অহংকারে, খেলাধুলায় রাতযাপন করতে থাকবে, কিন্তু সকলে বানর ও গুরুর পরিণত হবে, আর তাহবে হালালকে হারাম, পায়িকা, মদপান, সুদ এবং রেশমী কাপড়ের ব্যবহার ব্যাপকতা লাভ করার কারণে। (আহমদ)
- ৭) নিশ্চয়ই আল্লাহ মদ, জুয়া, তবলা, তাম্বুরা এবং সমস্ত নেসাদার জিনিসকে হারাম করেছেন। (মোসনাদ আহমদ)
- ৮) যে ব্যক্তি গান-বাজনার কাজ করে আর যে তাদেরকে নিজেদের ঘরে লালন পালন করে তাদের উভয়ের উপর আল্লাহর অভিসম্পাত। (বাইহাকী)।
- ৯) আমি গানবাজনা যন্ত্রাদি ভাংগার জন্য প্রেরিত হয়েছি। (নাইলুল আওতার)।
- ১০) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর একজন উট চালনা কারী ছিল, যখন সে গান গাইতে শুরু করত, তখন উট দ্রুত চলত, এক সফরে মহিলারাও উটের উপর আরাহী ছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাকে নির্দেশ দিলেন, যে শিসা ভাংগবে না। (বোখারী ও মুসলিম)
- এ হাদীসের ব্যাখ্যা করতে গিয়ে মাওলানা মোহাম্মদ সাদেক খলীল (রাহিমাহুল্লাহ) বলেছেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) ভয় করছিলেন যে, নারীরা যারা শিসার মত দুর্বল, তারা যেন তার সুমধুর কণ্ঠ শুনে ফেতনায় পতিত না হয়, তাই তিনি তাকে নির্দেশ দিলেন যেন সে উচ্চ স্বরে গান করে উট না চালায়। (মেশকাতুল মাসাবীহ, কিতাবুল আদাব, বাবুল বায়ান ওয়াশশেয়ের। আল ফাসলুস সালেস।
- ১১) গান অন্তরে এমনভাবে মুনাক্ষকী সৃষ্টি করে যেমন পানি ফসলকে সুফলা করে। (বাইহাকী)।
- ১২) আবদুল্লাহ বিন ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহুমা) বাশির আওয়াজ শুনে তার উভয় কানে আঙ্গুল ঢুকিয়ে দিলেন, রাস্তা থেকে নেমে গিয়ে উল্ট দিকে চলতে শুরু করলেন, কিছুক্ষণ পর স্বীয় সাথীকে জিজ্ঞেস করলেন, বাশির আওয়াজ কি আসতেছে? সাথী বললঃ না, তখন তিনি তার উভয় কান থেকে আঙ্গুল নামালেন এবং বললেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর সাথে ছিলাম, তিনি বাশির আওয়াজ শুনতে পেয়ে ঐরকম করলেন যেমন আমি করেছি। (আহমদ, আবুদাউদ)।



## الخمر

### মদ

মাসআলা-৯৬ঃ মদপান করা কবীরা গোনাহঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَمُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ

فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٦﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ, এই যে, মদ, জুয়া, প্রতিমা এবং ভাগ্য-নির্ধারক সরসমূহ এসব শয়তানের অপবিত্র কার্য বৈ তো নয়, অতএব, এগুলো থেকে বেঁচে থাক, যাতে তোমরা কল্যাণ প্রাপ্ত হও। (সূরা মায়িদা-৯০)

নোটঃ মদ সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) থেকে বর্ণিত কিছু হাদীস নিম্নরূপঃ

- ১) আল্লাহ তা'লা মদ এবং তার মূল্যকে হারাম করেছেন। (আবুদাউদ)
- ২) মদ পানকারী মদপানকরার সময় মোমেন থাকে না। (বোখারী, মুসলিম, আবুদাউদ, তিরমিযী, নাসায়ী)।
- ৩) মদ পানের কারণে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) নিনোক্ত দশ প্রকার লোকের উপর অভিসম্পাত করেছেনঃ
  - ১) মদ প্রস্তুতকারী, (২) যে মদ প্রস্তুত করায় (৩) মদ পানকারী (৪) মদ বহনকারী (৫) মদ হাশিলকারী (৬) যে মদ পানকরায় (৭) যে মদ বিক্রি করে (৮) মদের মূল্য ভক্ষণকারী (৯) মদ ক্রয়কারী (১০) যার জন্য মদ ক্রয় কার হয়। (তিরমিযী)।
- ৪) যে ব্যক্তি ব্যভিচার করে বা মদ পান করে আল্লাহ তার মধ্য থেকে ঈমান এমনভাবে বের করে নেন, যেমন কোন ব্যক্তি তার মাথার উপর দিয়ে কাপড় খুলে বের করে। (হাকেম)।
- ৫) তিন ব্যক্তি জান্নাতে যাবে না, (১) মদপানকারী (২) আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্নকারী (৩) যাদু সত্য বলে বিশ্বাসকারী (সত্য বলে তা পালনকারী) (আহমদ, আবু ইয়াল্লা, ইবনু মাযা)।
- ৬) মদ পানকারীকে জাহান্নামে জাহান্নামীদের ঘাম পান করানো হবে। (মুসলিম)।
- ৭) মদ সমস্ত অপকর্মের মূল। যে ব্যক্তি মদ পান করে চল্লিশ দিন পর্যন্ত তার নামায কবুল হবে না, আর সে যদি ঐ অবস্থায় মারা যায় যে তার পেটে মদ ছিল তাহলে সে জাহেলিয়াতের অবস্থায় মৃত্যু বরণ করল। (তাবারানী)।

- ৮) মদ সমস্ত অপকর্মের মূল এবং সমস্ত গোনাহসমূহের মধ্যে বড় গোনাহ, যে ব্যক্তি মদ পান করল সে তার মা, খালা, ফুফুর সাথেও ব্যভিচার করতে পারবে। (ত্বাবারানী)।
- ৯) মদ পানকারী মূর্তি পুঁজারীদের ন্যায়। (ইবনু মাযা)।
- ১০) মদকে ঔষধ হিসেবে ব্যবহার করা সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে জিজ্ঞেস করা হল, তিনি বললেনঃ মদ ঔষধ নয় মদ রোগ। (মুসলিম)।
- ১১) একজন পতিতা একজন আবেদকে কোন বাহানায় তার ঘরে ডাকল এবং ব্যভিচারের জন্য আহ্বান করল, আবেদ তা প্রত্যাখ্যান করল, পতিতা তাকে বললঃ হয় তুমি আমার চাহিদা পূর্ণ কর অথবা এই বাচ্চাটিকে হত্যা কর, বা মদ পান কর, এ তিনটির কোন একটি তোমাকে করতে হবে, অন্যথায় আমি চিল্লা চিল্লি করে তোমার বদনাম করব, আবেদ বদনামীর ভয়ে মদ পানকরার শর্তটি কবুল করল, কিন্তু মদ পানকরার পর নিশাশ্রুত অবস্থায় বাচ্চাটিকে হত্যা করল এবং পতিতার সাথে ব্যভিচারও করল। (ইবনু হিব্বান)।
- ১২) যে ব্যক্তি আল্লাহ এবং কিয়ামতের দিনের প্রতি বিশ্বাস রাখে সে এমন দস্তুরখানায় কখনো বসবে না যেখানে মদ রাখা হয়েছে। (মোসনাদ আহমদ)।
- ১৩) কিয়ামতের আলামত সমূহের মধ্যে কিছু আলামত হলঃ অজ্ঞতা বৃদ্ধি পাবে, ইসলামী জ্ঞান লোপ পাবে, ব্যভিচার ব্যাপকতা লাভ করবে, যত্রতত্র মদপান করা হবে। (বোখারী)
- ১৪) তিন প্রকার লোক জান্নাতে প্রবেশ করবে না (১) দাইউস(২)পুরুষের সাদৃশ্যতা অবলম্বনকারী নারী, (৩) মদ পানকারী। (ত্বাবারানী)
- ১৫) অনুগ্রহ করার পর খেঁটা দানকারী, পিতা-মাতার অবাধ্য শস্তান, মদ পানকারী জান্নাতে প্রবেশ করবে না। (নাসায়ী)।
- ১৬) শেষ যামানায় ভূমি ধস, সতী নারীকে মিথ্যা অপবাদ, মানব আকৃতির পরিবর্তন ঘটবে, জিজ্ঞেস করা হল ইয়া রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এটা কখন হবে? তিনি বললেনঃ যখন গানবাজনার যন্ত্র, গান-বাজনাকারী নারী এবং মদপান হালাল মনে করা হবে (ত্বাবারানী)।
- ১৭) ঐ সত্ত্বার কসম! যার হাতে মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) প্রাণ! আমার উম্মতের কিছু লোক গৌরব ও অহংকারে, খেলাধূলায় রাতযাপন করতে থাকবে, কিন্তু সকালে বানর ও শুয়রে পরিণত হবে, আর তা হবে হালালকে হারাম, গায়িকা, মদপান, সুদ এবং রেশমী কাপড়ের ব্যবহার ব্যাপকতা লাভ করার কারণে। (মোসনাদ আহমদ)।

- ১৮) আমার উম্মতের কিছু লোক মদ পান করবে কিন্তু তার তার অন্য কোন নাম দিবে, তার তত্ত্বাবধানে বাজনা বাজবে, গায়িকা গান করবে, আল্লাহ্ তাকে জমিনে ধসিয়ে দিবেন এবং কাউকে কাউকে বানর ও শুয়ে পরিণত করবেন। (ইবনু মাযা)।
- ১৯) আমার উম্মতের কিছু লোক ব্যভিচার, রেশম, মদ এবং গান বাজনাকে হালাল মনে করবে। (বোখারী)
- ২০) ইসলামী জ্ঞান লোপ পাওয়া, অজ্ঞতা বৃদ্ধি পাওয়া, মদ পান ব্যাপক হওয়া, প্রকাশ্যে ব্যভিচার হওয়া কিয়ামতের আলামত। (মুসলিম)।
- ২১) আ'শা নামক এক ব্যক্তি ঈমান আনার জন্য মদীনার দিকে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট আসছিল, পথিমধ্যে তার মুশরেকদের সাথে সাক্ষাৎ হল, তারা বললঃ ঈমান আনার পর নামায আদায় করতে হবে, আ'শা বললঃ আল্লাহ্ ইবাদত করা ওয়াজিব, মোশরেকরা বললঃ যাকাতও দিতে হবে, আ'শা বললঃ এটাতো ভাল কাজ, মোশরেকরা বললঃ ব্যভিচার ত্যাগ করতে হবে, আ'শা বললঃ এটাতো খুবই অশ্লীল কাজ, আমি এটা পছন্দ করি না, মোশরেকরা বললঃ মদ পান ত্যাগ করতে হবে, আ'শা বললঃ এটা ছাড়াতো আমি ধৈর্যধরতে পারব না, তখন সে ফিরে চলে গেল, যাতে করে এক বছর ব্যাপী বেশি করে মদ পান করে নিতে পারে এবং এর পরের বছর ঈমান গ্রহণ করতে পারে, পরের বছর ঈমান গ্রহণের জন্য আবার আসতে ছিল কিন্তু পথিমধ্যে ঘোড়ার পিঠ থেকে পড়ে গিয়ে মারা গেল। (মাওলানা মোহাম্মদ মুনির কামার লিখিত, তাফসীর কোরতুবী, বে হাওয়ালা শরাব কি হরমত ও মুযিম্মাত, পৃঃ ৪৫।)

## الميسر

### জুয়া

মাসআলা-৯৭ঃ জুয়া খেলা কবীরা গোনাহর অন্তর্ভুক্তঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا إِنَّمَا الْحَقُّرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَمُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ

فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٧﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! নিশ্চয়ই মদ, জুয়া, মূর্তি এবং লটারীর তীর, এসব গর্হিত কাজ, শয়তানী কাজ ছাড়া আর কিছুই নয়, সুতরাং এথেকে সম্পূর্ণ রূপে বিরত থাক যাতে তোমাদের কল্যাণ হয়। (সূরা মায়েদা-৯০)।

নোটঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি তার সাথীকে বলে যে, চল জুয়া খেলব তার তাওবা করা উচিত : (বোখারী)।

যে কাজের নিয়ত করার কারণেই কাফ্ফারা আদায় করতে হয় তাহলে ঐ কাজ করলে কত বড় শাস্তি হতে পারে তা অনুমান করা কঠিন কিছু নয়।

উল্লেখ্যঃ জুয়া ঐসমস্ত খেলা এবং কাজে হবে যেখানে পরস্পরের সম্মতিপূর্ণ বিষয়কে উপার্জন এবং ভাগ্য পরীক্ষা ও মাল বন্টনের মাধ্যম হিসেবে গ্রহণ করা হয়। (তাফহিমুল কোরআন, ১ম খঃ, পৃঃ ৫০)।

অতএব, শর্ত সাপেক্ষে প্রতিযোগিতায় অংশগ্রহণ করা যেমনঃ ঘোড়া দৌড়, প্রাইজ বন্ড, ইত্যাদির মাধ্যমে নাম্বার নেয়া জুয়ার অন্তর্ভুক্ত।

\*\*\*

## الزنا ব্যভিচার

মাসআলা-৯৮ঃ ব্যভিচার কবীরা গোনাহর অন্তর্ভুক্ত :

﴿ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ﴾ (২২)

অর্থঃ “তোমরা অবৈধ যৌন সংযোগের নিকটবর্তী হয়োনা, এটা অশ্লীল এবং নিকৃষ্ট আচরণ। (সূরা বানী ইসরাইল-৩২)

মাসআলা-৯৯ঃ সমাজে বে-হায়াপনা এবং অশ্লীলতা বিস্তারকারীরা ইহকাল এবং পরকাল উভয় জগতেই বেদনা দায়ক শাস্তির সম্মুখীন হবেঃ

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ ءَامَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴾ (১১)

অর্থঃ “যারা মুমিনদের মধ্যে অশ্লীলতার প্রসার কামনা করে তাদের জন্য আছে দুনিয়া ও আখেরাতে বেদনাদায়ক শাস্তি এবং আল্লাহ্ জানেন তোমরা জাননা। (সূরা নূর-১৯)

নোটঃ ব্যভিচার সম্পর্কে আরো আয়াত সমূহ নিম্ন রূপঃ

- ১) আল্লাহর বান্দা সে যে, ব্যভিচার করে না। (২৫ঃ৬৮)।
- ২) মুক্তি সেই পাবে যে তার লজ্জাস্থানকে সংরক্ষণ করে। (১৩ঃ৫)।  
ব্যভিচার সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ
- ১) কেউ যখন ব্যভিচার করে তখন তার ঈমান চলে যায়। (আবুদাউদ)
- ২) যে অঞ্চলে ব্যভিচার এবং সুদ ব্যাপকতা লাভ করে সেখানে আল্লাহর আযাব নেমে আসে। (হাকেম, ত্বাবারনী)।
- ৩) কিয়ামতের আগে আগে ব্যভিচার ব্যাপকতা লাভ করবে। (বোখারী)।
- ৪) কিয়ামতের দিন ব্যভিচারী নারীর লাজ্জাস্থান দিয়ে রক্ত এবং পুঁজের ঝর্ণা জারি হবে, যার দূরগন্ধ সমস্ত জাহান্নামীদেরকে কষ্ট দিবে, তার নাম হবে গোতা ঝর্ণা, বলা হবে এই রক্ত এবং পুঁজ পৃথিবীতে যারা মদ পানকরত তাদেরকে পান করানো হবে। (মোসনাদ আহমদ, আবু ইয়ালা, ইবনু হিব্বান, হাকেম)।

- ৫) কিয়ামতের দিন আল্লাহ তিন প্রকার লোকের সাথে কথা বলবেন না, তাদেরকে পবিত্র করবেন না, তাদের প্রতি করুণার দৃষ্টি দিবেন না, তাদের জন্য রয়েছে বেদনাদায়ক শাস্তি, (১) বৃদ্ধ ব্যভিচারকারী (২) মিথ্যুক বিচারপতি (৩) অহংকার অভাবী। (মুসলিম নাসায়ী)।
- ৬) যখন কোন ব্যক্তি ব্যভিচার করে বা মদ পানকরে আল্লাহ তার মধ্য থেকে ঈমান এমনভাবে বের করে নেন যেমন কোন ব্যক্তি তার মাথার উপর দিয়ে কাপড় খুলে বের করে। (হাকেম)।
- ৭) চার ব্যক্তির প্রতি আল্লাহ অসন্তুষ্টঃ (১) কসম খেয়ে মাল বিক্রি কারী, (২) অহংকারকারী ভিক্ষুক (৩) বৃদ্ধ ব্যভিচার কারী (৪) জালেম বাদশাহ। (নাসায়ী)
- ৮) যে ব্যক্তি কোন নারীর স্বামীর অনপস্থিতিতে তার বিছানায় বসে, কিয়ামতের দিন আল্লাহ তার জন্য একটি সাপ নির্ধারণ করে দিবেন (যা তাকে ধ্বংশন করতে থাকবে)।
- ৯) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ আমি স্বপনে একটি চুলা দেখতে পেলাম যার উপরের অংশ ছিল চাপা, আর নিচের অংশ প্রস্তুত, আর সেখানে আগুন উত্তপ্ত হচ্ছিল, ভিতরে নারী পুরুষরা চিল্লাচিল্লি করছিল, আগুনের শিখা উপরে আসলে তারা উপরে উঠছে, আবার আগুন স্তিমিত হলে তারা নিচে যাচ্ছিল, সর্বদা তাদের এ অবস্থা চলছিল, আমি জিবরীল (আঃ) কে জিজ্ঞেস করলামঃ এরা কারা? জিবরীল (আঃ) বললঃ তারা ব্যভিচারকারী নারী পুরুষ। (বোখারী)।
- ১০) কিয়ামতের দিন আল্লাহ বৃদ্ধ ব্যভিচারকারী এবং ব্যভিচারকারিনী দের প্রতি করুণার দৃষ্টি দিবেন না। (তাবারানী)।
- ১১) অর্ধ রাতের পর আকাশের দরজা খুলে দেয়া হয় এবং সকলের দেয়া কবুল করা হয় শুধুমাত্র ব্যভিচারিনী ব্যতীত, যে তার লজ্জাস্থান নিয়ে স্থানান্তরিত হয় বা অন্যায় ভাবে টেক্স গ্রহণ করে। (তাবারানী, মোসনাদ আহমদ)।
- ১২) যে জাতির মাঝে অশ্লীলতা ব্যাপকতা লাভ করে এবং খোলা মেলা ভাবে ব্যভিচার চলতে থাকে ঐ জাতির উপর প্লেগ রোগ এবং অভাব বিস্তার লাভ করে। (ইবনু মাযা)।
- ১৩) যে জাতির মধ্যে ব্যভিচার ব্যাপকতা লাভ করে আল্লাহ ঐ জাতির উপর মৃত্যু চাপিয়ে দেন। (হাকেম, বাইহাকী)।
- ১৪) কিয়ামতের আলামত সমূহের মধ্যে কিছু আলামত হলঃ অজ্ঞতা বৃদ্ধি পাওয়া, ইসলামী জ্ঞান লোপ পাবে, ব্যভিচার ব্যাপকতা লাভ করবে, যত্রতত্র মদপান করা হবে। (বোখারী)।
- ১৫) আমার উম্মতের কিছু লোক ব্যভিচার, রেশম, মদ এবং গান-বাজনাকে হালাল মনে করবে। (বোখারী)।

## اللوّاط সমকামিতা

মাসআলা-১০০ঃ সমকামিতা কবীরা গোনাহর অন্তর্ভুক্ত :

﴿وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾﴾

অর্থঃ “আর আমি লূতকে নবুয়ত দান করে পাঠিয়ে ছিলাম, যখন সে তার কাউমকে বলেছিলঃ তোমরা এমন অশ্লীল এবং কুকর্ম করছ যা তোমাদের পূর্বে পৃথিবীতে আর কেউ করেনি, তোমরা স্ত্রীলোকদেরকে বাদ দিয়ে পুরুষদের দ্বারা নিজেদের যৌন ইচ্ছা নিবারণ করে নিছ, প্রকৃত পক্ষে তোমরা হচ্ছে সীমালংঘনকারী সম্প্রদায়। (সূরা আ’রাফ-৮০-৮১)।

মাসআলা-১০১ঃ সমকামিতায় লিঙ্গ জাতিকে আল্লাহু পাথর বৃষ্টি বর্ষণের মাধ্যমে নিশ্চিহ্ন করে দিয়েছেনঃ

﴿فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَلَىٰهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ مَّنْضُودٍ ﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾﴾

অর্থঃ “অতঃপর যখন আমার নির্দেশ এসে পৌঁছল, আমি ঐ ভূ-খন্ডের উপরিভাগকে নীচে করে দিলাম এবং তার উপর ঝামা পাথর বর্ষণ করতে লাগলাম যা একাধারে ছিল, যা বিশেষ চিহ্নিত করা ছিল, তোমার প্রতিপালকের নিকট, আর ঐ জনপদগুলি এই যালেমদের থেকে বেশি দূরে নয়। (সূরা হুদ-৮২,৮৩)।

নোটঃ

(১) ব্যভিচার সম্পর্কে কোরআ’ন মাজীদে (আলিফ, লাম) ব্যতীত

অর্থঃ “নিশ্চয়ই ব্যভিচার একটি অশ্লীল কাজ।

আর লূত (আঃ) এর কাউমের ব্যাপারে (আলিফ, লাম) সহ ব্যবহৃত হয়েছে।

যার অর্থ দাঁড়ায় লূত (আঃ) এর কাউমের অপরাধটি ব্যাভিচারের চেয়েও মারাত্মক অপরাধ ছিল, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ আমি আমার উম্মতের ব্যাপারে অন্য কোন বিষয়ে এতটা ভয় করিনা যতটা ভয়করি লূত (আঃ) এর অপরাধ সম্পর্কে। (ইবনু মাযা)।

একটি হাদীসে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) লূত (আঃ) এর কাউমের অপরাধে লিগুদের উপর তিন বার অভিসম্পাত করেছেন। (ত্বাবারানী)।

অপর এক হাদীসে বর্ণিত হয়েছেঃ চার প্রকার লোক আল্লাহর গযবে লিগু থেকে সকাল সন্ধ্যা অতিবাহিত করে। (১) নারীদের সাদৃশ্য অবলম্বনকারী পুরুষ (২) পুরুষের সাদৃশ্য অবলম্বনকারী নারী (৩) চতুশ্পদ জন্তুর সাথে ব্যাভিচারকারী (৪) সমকামিতায় লিগু ব্যক্তি। (ত্বাবারানী)।

(৩) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর জীবন অবস্থায় লূত (আঃ) এর কাউমের অপরাধে কেউ লিগু হয় নাই, কিন্তু নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তার শাস্তি সম্পর্কে বলেছেনঃ যেব্যক্তি এ অপরাধ করছে এবং যার সাথে করছে তাদের উভয়কে হত্যা কর। (ইবনু মাযা)।

অপর এক হাদীসে বর্ণিত হয়েছেঃ তাদের উভয়কে পাথর মেরে হত্যা কর। (ইবনু মাযা)।

(৪) চতুশ্পদ জন্তুর সাথে ব্যাভিচারে লিগু ব্যক্তির শাস্তি সম্পর্কে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ অপরাধী এবং চতুশ্পদ জন্তু উভয়কেই হত্যা কর। (ইবনু মাযা)।

চতুশ্পদ জন্তুর সাথে ব্যাভিচারকারীর উপরও নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) অভিসম্পাত করেছেন (ত্বাবারানী)।

তিনি বলেছেন যে, চতুশ্পদ জন্তুর সাথে ব্যাভিচারে লিগু ব্যক্তি আল্লাহর গজবে লিগু থেকে সকাল করে এবং আল্লাহর অসন্তুষ্টি নিয়ে সন্ধ্যা উপনিত হয় (ত্বাবারানী)।

(৫) যে ব্যক্তি পায়খানার রাস্তা দিয়ে তার স্ত্রীর সাথে সহবাস করে সে অভিসম্পদ। (আবুদাউদ)।

অপর এক হাদীসে বর্ণিত হয়েছে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি তার স্ত্রীর পায়খানার রাস্তা দিয়ে সহবাস করে কিয়ামতের দিন আল্লাহ তার প্রতি করুণার দৃষ্টি দিবেন না। (ইবনু মাযা, মোসনাদ আহমদ)।

তৃতীয় একটি হাদীসে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) যে ব্যক্তি হায়েয অবস্থায় স্ত্রীসহবাস করে বা স্ত্রী পায়খানার রাস্তা দিয়ে সহবাস করে বা গণকের নিকট যায় এবং তার কথা বিশ্বাস করে সে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর উপর অবতীর্ণ কৃত বিষয়াবলীকে অস্বীকার করল (তিরমিযী)

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ স্ত্রীর সাথে তার পায়খানার রাস্তা দিয়ে সহবাস করা ছোট দেওয়াতাত(লূত (আঃ) এর কাউমের অপরাধ)। (মোসনাদ আহমদ)।



## الانتحار আত্ম হত্যা

মাসআলা-১০২ঃ আত্ম হত্যা করা কবীরা গোনাহর অন্তর্ভুক্ত :

﴿يَتَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ  
تَكُونَ بَحْرَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ  
رَحِيمًا ﴿١٩﴾﴾

অর্থঃ “তোমরা নিজেদেরকে হত্যা কর না নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের প্রতি ক্ষমাশীল।  
(সূরা নিসা-২৯)

নোটঃ আত্মহত্যা সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কিছু বাণী নিম্ন  
রূপঃ

- (১) যে ব্যক্তি কোন পাহাড় থেকে পড়ে গিয়ে আত্ম হত্যা করল সে জাহান্নামের আগুনে সর্বদা পতিত হতে থাকবে, যে ব্যক্তি বিষ খেয়ে আত্ম হত্যা করবে সে জাহান্নামের আগুনে সর্বদা বিষ খেতে থাকবে, যে ব্যক্তি লোহার কোন হাতিয়ার দিয়ে আত্ম হত্যা করল ঐ ব্যক্তি সর্বদা জাহান্নামে ঐ হাতিয়ার দিয়ে তার পেটে আঘাত করতে থাকবে, এথেকে সে কখনো মুক্তি পাবে না। (বোখারী ও মুসলিম)।
- (২) যে ব্যক্তি স্বীয় গলায় ফাঁসি দিয়ে আত্ম হত্যা করল সে সর্বদা জাহান্নামে তার গলায় ফাঁসি দিতে থাকবে, যে ব্যক্তি কোন অস্ত্র বা অন্য কিছু মাধ্যমে আত্মহত্যা করল সে জাহান্নামের আগুনে ঐ হাতিয়ার দিয়ে সর্বদা আঘাত করতে থাকবে, যে ব্যক্তি পড়ে গিয়ে আত্ম হত্যা করল সে জাহান্নামেও সর্বদা এভাবে পড়তে থাকবে। (বোখারী)
- (৩) পূর্ববর্তী লোকদের মধ্যে এক ব্যক্তি আহত হল, ফলে যথেষ্ট রক্ত প্রবাহিত হল, আর সে অনেক চিল্লা চিল্লি এবং কাঁনা কাটি করল, এরপর একটি ছুড়ি নিয়ে তা দিয়ে নিজের হাত কেটে ফেলল, রক্ত আর বন্ধ হল না তখন সে মারা গেল, আল্লাহ বললেনঃ আমার ফায়সালায় আগেই সে তাকে হত্যা করেছে। (বোখারী ও মুসলিম)।
- (৪) এক ব্যক্তির চেহায়ায় একটি ফোড়া হল, যখন এর ব্যাথা শুরু হল তখন সে তার থলে থেকে একটি তীর বের করে তা দিয়ে ফোড়াটিকে কেটে দিল ফলে প্রচুর রক্ত খরণে সে মারাগেল, আল্লাহ বললেনঃ আমি তার উপর জান্নাত হারাম করে দিলাম। (মুসলিম)।
- (৫) যে ব্যক্তি যে জিনিস দিয়ে আত্ম হত্যা করেছে কিয়ামতের দিন তাকে ঐ জিনিস দিয়ে আযাব দেয়া হবে। (বোখারী ও মুসলিম)।

## الْقَتْل

### হত্যা

মাসআলা-১০৩ঃ ইচ্ছা করে হত্যা করা কবীরা গোনাহ যার শাস্তি দীর্ঘ দিন জাহান্নামে থাকাঃ

মাসআলা-১০৪ঃ হত্যাকারী পৃথিবীতে আল্লাহর গজবে নিমজ্জিত থাকবে এবং তাঁর রহমত থেকে বঞ্চিত হবে আর পরকালে কঠিন শাস্তি ভোগ করবেঃ

﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا

وَعَظِيبَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَلَعْنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا﴾ (১২)

অর্থঃ “যে কেউ স্বেচ্ছায় কোন মুমিনকে হত্যা করে তার শাস্তি জাহান্নাম, সেখানে সে সদা অবস্থান করবে এবং আল্লাহ তার প্রতি ক্রুদ্ধ হয়েছেন, তাকে অভিশপ্ত করেছেন এবং তার জন্য ভিষণ শাস্তি প্রস্তুত করেছেন। (সূরা নিসা-৯৩)।

নোটঃ হত্যা সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কিছু বাণী নিম্ন রূপঃ

- ১) কিয়ামতের দিন (বান্দার হকের মধ্যে) সর্বপ্রথম মানুষের মাঝে হত্যার ফায়সালা করা হবে। (বোখারী ও মুসলিম)।
- ২) একজন মুসলমানকে হত্যার মোকাবেলায় আল্লাহর নিকট সমগ্র পৃথিবী বরবাদ হয়ে যাওয়া সহনীয়। (ইবনু মাযা)
- ৩) একজন মুসলমানকে হত্যা করার জন্য যদি আকাশ ও যমিনের সমস্ত সৃষ্টি অংশগ্রহণ করে তাহলে আল্লাহ তাদের সকলকে উপর করে জাহান্নামে নিক্ষেপ করবেন। (তিরমিযী)
- ৪) নিহত ব্যক্তি হত্যাকারীকে কিয়ামতের দিন এমনভাবে নিয়ে আসবে যে হত্যাকারীর কপাল ও মাথা নিহতের হাতে থাকবে, নিহতের রগসমূহ দিয়ে রক্ত প্রবাহিত হতে থাকবে, আর সে বলতে থাকবে হে আমার রব সে আমাকে হত্যা করেছে, (একথা বলতে বলতে) সে তাকে আল্লাহর আরশের নিকট নিয়ে যাবে। (তিরমিযী, নাসায়ী ও ইবনু মাযা)
- ৫) এক সাহাবী জিজ্ঞেস করল ইয়া রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কোন কাফের যদি তলওয়ার দিয়ে আমার হাত কেটে দেয়, আর আমি যখন তাকে হত্যা করার সুযোগ পাব তখন সে লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ পড়ল তাহলে কি আমি তাকে হত্যা করব? তিনি

বললেনঃ না। সাহাবী বললঃ ইয়া রাসূলুল্লাহ্ সেতো আমার হাত কেটে দিয়েছিল? তিনি বললেনঃ কালেমা পড়ার পর যদি তুমি তাকে হত্যা কর তাহলে সে (তোমার এ যুলুমের কারণে)ঐ স্থানে চলে যাবে যেখানে তুমি তাকে হত্যা করার পূর্বে ছিলে। (বোখারী ও মুসলিম)

- ৬) যে ব্যক্তি কোন যিম্মি (ইসলামী রাষ্ট্রে বিধর্মী প্রজা) হত্যা করল আল্লাহ্ তার জন্য জান্নাত হারাম করে দিবেন। (আবুদাউদ

## حب اليهود والنصارى

### ইহুদী ও নাসারাদের সাথে বন্ধুত্ব

মাসআলা-১০৫ঃ ইসলামের শত্রু কাফেরদের সাথে বন্ধুত্ব রাখা নিষেধঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ؕ أُرِيدُوا أَن يَجْعَلُوا إِلَهَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مِّثْلًا ۖ﴾ (১৫৮)

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমরা মুমিনগণ ব্যতীত কাফেরদেরকে বন্ধু রূপে গ্রহণ কর না, তোমরা কি তোমাদের বিরুদ্ধে আল্লাহকে স্পষ্ট প্রমাণ দিতে চাও। (সূরা নিসা-১৪৪)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ مِنكُمْ فَإِنَّهُ مِنهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ﴾ (১৫৯)

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমরা ইহুদী ও খ্রিষ্টানদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করবে না, তারা পরস্পর বন্ধু, আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি তাদের সাথে বন্ধুত্ব করবে নিশ্চয়ই সে তাদের অন্তর্ভুক্ত বলে গণ্য হবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ অত্যাচারী কাওমকে সুপথ দেখান না। (সূরা মায়দা-৫১)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوا ءَابَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ ۚ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾ (১৬০)

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমরা নিজেদের পিতৃদেরকে ও ভ্রাতাদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ কর না যদি তারা ঈমানের মোকাবেলায় কুফরীকে প্রিয় মনে করে, আর তোমাদের মধ্যে যারা তাদের সাথে বন্ধুত্ব রাখবে বস্ত্রত ঐসমস্ত লোকই হচ্ছে বড় অত্যাচারী। (সূরা তাওবা-২৩)

নোটঃ ইসলামের শত্রু কাফেরদের সাথে বন্ধুত্ব না রাখা সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)-এর কিছু হাদীস দ্রঃ

- ১) যে ব্যক্তি মোশরেকদের সাথে উঠা বসা করে, তাদের সিদ্ধান্ত মাথা পেতে মেনে নেয়, সেও তাদেরই অন্তর্ভুক্ত। (আবুদাউদ)
- ২) মোশরেকদের সিদ্ধান্ত মাথা পেতে মেনে নিবে না এবং তাদের সাথে উঠা বসা করবে না, যে ব্যক্তি তাদের সিদ্ধান্ত মাথা পেতে মেনে নেয় বা তাদের সাথে উঠা বসা করে সে আমার উম্মতের অন্তর্ভুক্ত নয়। (হাকেম)
- ৩) আমি প্রত্যেক ঐ মুসলমানের ঘিন্মাদারী থেকে মুক্ত যে কাফেরদের মাঝে থাকে। (আবুদাউদ)
- ৪) মুসলমান এবং কাফেরদের চুলা এক সাথে ঝলতে পারে না। (আবুদাউদ)
- ৫) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) জারীর (রাযিয়াল্লাহু আনহুর) বাইআত নিম্ন লিখিত শর্তের আলোকে গ্রহণ করেছিলেনঃ

১) আল্লাহর ইবাদত করবে (২)নামায কায়েম করবে(৩)যাকাত আদায় করবে (৪)মুসলমানদের সাথে ভাল সম্পর্ক রাখবে (৫)মুশরেকদের কাছ থেকে দূরে থাকবে।(৬)আল্লাহ্ ঐ ব্যক্তির কোন আমল কবুল করেন না, যা সে ইসলাম গ্রহণ করার পর পালন করেছে, যতক্ষণ না সে কাফেরদের সঙ্গ ত্যাগ করে মুসলমানদের নিকট ফিরে চলে আসে। (ইবনু মাযা)

\*\*\*

استهزاء النبي صلى الله عليه وسلم

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)-কে বিদ্রূপ করা

মাসআলা-১০৬ঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে বিদ্রূপ<sup>৬৬</sup> করা আল্লাহর গজব এবং রাগান্বিত কারী পাপঃ

﴿ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴾

অর্থঃ “আমিই যথেষ্ট তোমার জন্য বিদ্রূপকারীদের বিরুদ্ধে। (সূরা হিজর-৯৫)

মাসআলা-১০৭ঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে অবমাননা এবং বিদ্রূপকারী ইসলামের গন্ডি থেকে বাহিরেঃ

﴿ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝١٠٦ ﴾

অর্থঃ “জাহান্নাম ওটাই তাদের প্রতি ফল, যেহেতু তারা সত্য প্রত্যাখ্যান করেছে এবং আমার নির্দেশনাবলী ও রাসূলদেরকে গ্রহণ করেছে বিদ্রূপের বিষয় রূপে। (সূরা কাহফ- ১০৬)

মাসআলা-১০৮ঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে অবমাননা এবং বিদ্রূপকারীর উপর আল্লাহর অভিসম্পাত এবং পরকালে সে লজ্জনাদায়ক আযাব ভোগ করবেঃ

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا

مُهِينًا ۝١٠٧﴾

অর্থঃ “যারা আল্লাহ এবং তাঁর রাসূলকে পীড়া দেয়, আল্লাহ তো তাদেরকে দুনিয়া ও আখেরাতে অভিশপ্ত করেন এবং তিনি তাদের জন্য রেখেছেন লাঞ্ছনাজনক আযাব। (সূরা আহযাব-৫৭)

নোটঃ নবীকে অবমাননা করার শাস্তি হত্যা কার, এর কিছু ঘটনা নিম্নরূপঃ

<sup>৬৬</sup> -উল্লেখ্যঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কথা বা কাজের উপর বিরোপ মন্তব্য করাও তাঁকে অবমাননা করার অন্তর্ভুক্ত।

- ১) যে ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে গালী দেয় তাকে হত্যা করতে হবে, আর যে ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর সাহাবীগণকে গালী দেয় তাকে বেদ্বাঘাত করতে হবে। (আস্ সারেমূল মাসলুল, পৃঃ ৯২)
- ২) এক অন্ধ সাহাবীর কৃতদাসী রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে গালী দিত, সাহাবী তাকে বাধা দিত কিন্তু সে তা থেকে বিরত থাকত না, এক রাতে কৃতদাসী রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে গালী দিল তখন ঐ সাহাবী তাকে হত্যা করে ফেলল। পরের দিন সকালে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) ঘটনা সম্পর্কে জানতে পারলেন, তখন তিনি বললেনঃ সাক্ষ্য থাক কৃতদাসীকে হত্যা করা সঠিক হয়েছে। (আবুদাউদ)।
- ৩) আবু বারযা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বলেনঃ কোন এক ব্যক্তি আবুবকর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) কে গালী দিল, আমি বললামঃ আমাকে অনুমতি দিন আমি তাকে হত্যা করে ফেলি, আবুবকর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বললেনঃ আল্লাহর কসম! মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর পরে এহত্যা কার বৈধ নয়। (আবুদাউদ, নাসায়ী)
- ৪) খোঁতামা বংশের এক মহিলা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর অবমাননা করল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) জানতে পেরে বললেনঃ ঐ মহিলার নিকট কে যাবে? এক সাহাবী ওমাইর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বললঃ আমি হে আল্লাহর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম), ওমাইর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) গেল এবং তাকে হত্যা করল। মহিলার বংশের লোকেরা ওমাইর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) কে জিজ্ঞেস করল তুমি কি তাকে হত্যা করেছ? ওমাইর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) বললঃ হ্যাঁ আমি তাকে হত্যা করেছি, তোমরা যা করতে চাও কর এবং আমাকে কোন সুযোগ দিও না। ঐ সত্ত্বার কসম যার হাতে আমার প্রাণ! তোমরাও যদি ঐ কথা বল যা ঐ মহিলা বলেছিল তাহলে আমি তোমাদেরকেও হত্যা করব। অথবা আমি নিজে তোমাদের হাতে নিহত হব। (আস্ সারেমূল মাসলুল পৃঃ ৯৪)
- ৫) আবু আফাক রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে বিদ্রূপ করত, আর লোকদেরকে তাঁর বিরুদ্ধে ক্ষেপিয়ে তোলত, সালেম বিন ওমাইর মান্নত করলেন, যে আমি আবু আফাককে হত্যা করব অথবা তার হাতে নিজে মারা যাব, অতএব, সুযোগ বুঝে সালেম (রাযিয়াল্লাহু আনহু) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর দুষমনকে হত্যা করল। (আস্ সারেমূল মাসলুল-পৃঃ ১০৪)
- ৬) কা'ব বিন আশরাফ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর বিদ্রূপে কবিতা আবরিত করত, আর মানুষকে তাঁর বিরুদ্ধে ক্ষেপেয়ি তোলত, এক বার রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে হত্যাকরার ষড়যন্ত্রও করেছিল, রাসূলুল্লাহ

(সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নির্দেশ ক্রমে মোহাম্মদ বিন মাসলামা তাকে হত্যা করল। (বোখারী)

- ৭) ইহুদী আবু রাফেও রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম)কে কষ্ট দিত, কোন কোন সাহাবী রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট ঐলোককে হত্যা করার ব্যাপারে অনুমতি চাইল, তিনি তাদেরকে অনুমতি দিলেন, তখন আবদুল্লাহ বিন আতীকের নেতৃত্বে হয় জন সাহাবীর একটি দল আবু রাফেকে হত্যা করল। (ফাতহুল বারী)
- ৮) হারেস বিন হেলালও রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর বিদ্রোহ করত, মক্কা বিজয়ের দিন আলী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাকে হত্যা করেছিলেন। (ফাতহুল বারী)

\*\*\*



## الارتداد

## মোরতাদ (ইসলাম গ্রহণ করার পর ইসলাম থেকে বের হয়ে যাওয়া)

মাসআলা-১০৯ঃ ঈমান আনার পর কুফরীকারীদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করার নির্দেশঃ

﴿ وَإِنْ تَكَفَّرُوا بِمِثْلِهِمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَيْمَةً  
الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَنَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴾ (১২)

অর্থঃ “আর যদি তারা অঙ্গীকার করার পর নিজেদের শপথ গুলোকে ভঙ্গ করে ফেলে এবং তোমাদের ধর্মের প্রতি দোষারোপ করে, তবে তোমরা কুফরের অগ্রনায়কদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, (তখন) তাদের শপথ থাকবে না, হয়ত তারা বিরত থাকবে। (সূরা তাওবা-১২)

মাসআলা-১১০ঃ ঈমান আনার পর কুফরীকারীদের সমস্ত নেক আমল বরবাদ হয়ে যায় আর পরকালে তাদের জন্য রয়েছে চিরস্থায়ী জাহান্নামের আযাবঃ

﴿ وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ - فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ  
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا  
خَالِدُونَ ﴾ (১৩)

অর্থঃ “আর তোমাদের মধ্যকার কেউ যদি স্বধর্ম থেকে ফিরে যায় এবং ঐ কাফের অবস্থায় তার মৃত্যু ঘটে, তাহলে তার ইহকাল সংক্রান্ত এবং পরকাল সংক্রান্ত সমস্ত সাধনাই ব্যর্থ হয়ে যাবে তাড়াতাড়ি জাহান্নামের অধিবাসী এবং তারই মধ্যেই তারা চিরকাল অবস্থান করবে। (সূরা বাক্বারা-২১৭)

নোটঃ (১) ইসলাম কবুল করার পর যেকোনো কাফের হয়ে যায় তাকে হত্যা করতে হবে এসম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর আরো কিছু হাদীস নিম্ন রূপঃ

১) যে ব্যক্তি (মুসলামান) তার দীন পরিবর্তন করে ফেলে তাকে হত্যা কর। (বোখারী)

- ২) কোন মুসলমানের রক্ত ততক্ষণ পর্যন্ত হলাল হবে না যতক্ষণ না সে বিবাহিত হওয়ার পর অন্য কোন নারীর সাথে ব্যভিচার করবে, বা মুসলমান হওয়ার পর মোরতাদ হয়ে যাবে, (নাসায়ী বাব যিকরু মাইয়া হিল্লু বিহি দামুল মুসলিম)।
- ৩) কোন মুসলমানের রক্ত তিনটি কারণ ব্যতীত হলাল হবে না, (১)কোন ব্যক্তি মুসলমান হওয়ার পর কাফের হয়ে যাওয়া(২)বিবাহিত ব্যক্তি ব্যভিচার করা(৩)অন্যভাবে কাউকে হত্যা করা।(নাসায়ী)
- ৪) মূসা আশআরী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) ইয়ামেনের গভর্ণর ছিল, একজন ইহুদী মুসলমান হল এর পর আবার ইহুদী হয়ে গেল, মূসা আশআরী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাকে হত্যা করার নির্দেশ দিলেন।(বোখারী, আবুদাউদ, নাসায়ী)
- ৫) উহুদ যুদ্ধের সময় এক মহিলা মোরতাদ হয়ে গেল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) নির্দেশ দিলেন যে, তাকে তাওবা করাও, আর যদি সে তাওবা না করে তাহলে তাকে হত্যা করে ফেল।(বাইহাকী)
- ৬) আবুবকর সিদ্দীক (রাযিয়াল্লাহু আনহু) এর শাসনামলে এক মহিলা মোরতাদ হয়ে গেল, আবুবকর সিদ্দীক (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাকে তাওবা করার জন্য আহ্বান করলেন, সে তাওবা করল না তখন আবুবকর সিদ্দীক (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাকে হত্যা করার নির্দেশ দিলেন।(দারকুতুনী, বাইহাকী)
- ৭) ঈমান আনার আগে ইসলাম সকলকে এই স্বাধীনতা দিয়েছে যে, সে ইচ্ছা করলে মুসলমান হবে আর ইচ্ছা নাহলে ইসলাম গ্রহণ করবে না, এর সাথে সাথে ইসলাম এই আহ্বানও করেছে যে, পৃথিবীতে যত দ্বীন আছে এর মধ্যে শুধু ইসলামই মানুষকে কল্যাণ ও মুক্তির পথে নিয়ে যাওয়ার দ্বীন। আর অন্য সমস্ত দ্বীন মানুষকে ধ্বংস ও বরবাদীর দিকে নিয়ে যায়। অতএব, যখন একজন লোক তার পূর্ণ স্বাধীনতা নিয়ে, স্বজ্ঞানে, বুঝে শুনে, ইসলামে প্রবেশ করে তখন ইসলাম চায় যে, সে তার মৃত্যু পর্যন্ত কল্যাণ ও মুক্তির এ দ্বীনের উপর অটল থাকক। ইসলাম গ্রহণ করার পর আবার কাফেদের সাথে গিয়ে মিলিত হলে একটি ইসলামী রাষ্ট্রের জন্য যে ফেতনা হতে পারে তার রাস্তা বন্ধ করার জন্য প্রকাশ্য ভাবে ইসলাম কঠোর ব্যবস্থা গ্রহণ করেছে, কিন্তু মূলত বর্ণনাতীত বিজ্ঞানময় এক ব্যবস্থা গ্রহণ করেছে, যে ব্যক্তি ইসলাম গ্রহণ করার পর কাফের হয়ে যাবে তাকে হত্যা কর। এবিধানে নিহিত কল্যাণ এবং হিকমত সম্পর্কে জানার জন্য সায়েদ আবুল আলা মৌদুদী লিখিত 'মোরতাদ কি সাযা দঃ'।

## (د) الحقوق في ضوء القرآن

### আল কোরআ'নের আলোকে অধিকারসমূহঃ

- (১) বান্দার অধিকারসমূহ
- (২) পিতা-মাতার অধিকার সমূহ
- (৩) সন্তানদের অধিকারসমূহ
- (৪) পেটের বাচ্চাদের অধিকারসমূহ
- (৫) নারীদের অধিকারসমূহ
- (৬) আত্মীয়দের অধিকারসমূহ
- (৭) প্রতিবেশীদের অধিকারসমূহ
- (৮) বন্ধুদের অধিকারসমূহ
- (৯) মেহমানদের অধিকারসমূহ
- (১০) এতীমদের অধিকারসমূহ
- (১১) মিসকীনদের অধিকারসমূহ
- (১২) ফকীরদের অধিকারসমূহ
- (১৩) মুসাফিরদের অধিকারসমূহ
- (১৪) ক্রীতদাসদের অধিকারসমূহ
- (১৫) সাথীদের অধিকার
- (১৬) মৃতদের অধিকারসমূহ
- (১৭) বন্দীদের অধিকারসমূহ
- (১৮) অমুসলিমদের অধিকারসমূহ
- (১৯) চতুষ্পদ জন্তুদের অধিকারসমূহ

## حقوق العباد

### বান্দাদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-১১১ঃ সমস্ত আদম সন্তান, নারী হোক বা পুরুষ, গরীব হোক বা আমীর, কাল হোক বা সাদা, আরাবী হোক বা অনারবী, মানুষ হিসেবে সকলে সমভাবে মর্যাদা এবং সম্মান পাওয়ার অধিকার রাখেঃ

﴿ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَهُمْ فِي الْوَحْشِ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَهُمْ مِنْ

الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴾ (৭০)

অর্থঃ “আমি তো আদম সন্তানকে মর্যাদা দান করেছি, স্থলে ও সমুদ্রে তাদের চলাচলের বাহন দিয়েছি, তাদের উত্তম জীবনোপকরণ দান করেছি এবং যাদের আমি সৃষ্টি করেছি তাদের অনেকের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছি। (সূরা বানী ইসরাইল-৭০)

মাসআলা-১১২ঃ সমস্ত আদম সন্তানের প্রাণ সমমূলের চাই সে যে বংশের যে রংয়ের বা যে ভাষার বা যে দেশের বা যে মতাদর্শেরই হোক না কেন

﴿ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ

أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا

فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ

كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعَدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لُمُسْرِفُونَ ﴾ (২২)

অর্থঃ যে ব্যক্তি কোন ব্যক্তিকে হত্যা করে অন্য প্রাণের বিনিময় ব্যতীত কিংবা তার দ্বারা ভূ-পৃষ্ঠে কোন ফাসাদ বিস্তার ব্যতীত, তবে সেযেন সমস্ত মানুষকে হত্যা করে ফেলল, আর যে ব্যক্তি কোন ব্যক্তিকে রক্ষা করল তবে সেযেন সমস্ত মানুষকে রক্ষা করল। (সূরা মায়েদাহ-৩২)

মাসআলা-১১৩ঃ সমস্ত মানুষ একেই পিতা-মাতার সন্তান তাই সমস্ত মানুষ মানব হিসেবে সমান অধিকার রাখেঃ

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتَقَى اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾﴾

অর্থঃ “হে মানুষ আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি একজন পুরুষ এবং একজন নারী থেকে, পরে তোমাদেরকে বিভক্ত করেছি বিভিন্ন জাতি ও গোত্রে, যাতে তোমরা একে অপরের সাথে পরিচিত হতে পার। (সূরা হুজুরাত-১৩)

মাসআলা-১১৪ঃ প্রত্যেক ব্যক্তির তার নিজের জীবন, বংশগত বিষয়সমূহ, একাকীত্ব এবং ব্যক্তিগত বিষয়সমূহ সংরক্ষণের অধিকার রয়েছেঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমরা বহুবিধ অনুমান থেকে দূরে থাক, কারণ কোন কোন অনুমান পাপ এবং তোমরা একে অপরের গোপনীয় বিষয় অনুসন্ধান করো না এবং একে অপরের পশ্চাতে নিন্দা করো না”। (সূরা হুজুরাত-১২)

মাসআলা-১১৫ঃ কোন বড় ব্যক্তির কোন ছোট ব্যক্তির উপর বা কোন শক্তির কোন দুর্বলের উপর যুলুম, অবিচার, কঠোরতা বা অমনাবিক এবং অবমাননামূলক আচরণ করার কোন অধিকার নেইঃ

﴿إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾﴾

অর্থঃ “শুধু তাদের বিরুদ্ধে ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে যারা মানুষের উপর অত্যাচার করে এবং পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে বিদ্রোহাচরণ করে বেড়ায়, তাদের জন্য রয়েছে বেদনাদায়ক শাস্তি। (সূরা শূরা-৪২)

মাসআলা-১১৬ঃ প্রত্যেক ব্যক্তি তার পছন্দনীয় আদর্শ গ্রহণ করার অধিকার রয়েছেঃ

## ﴿لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ﴾

অর্থঃ “ধর্ম সম্বন্ধে বল প্রয়োগ নেই। (সূরা বাক্বারা-২৫৬)

## ﴿وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ﴾

অর্থঃ “বলঃ সত্য তোমাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে প্রেরিত, সুতরাং যার ইচ্ছা বিশ্বাস করুক আর যার ইচ্ছা প্রত্যাখ্যান করুক। (সূরা কাহ্ফ-২৯)

নোটঃ ১) উল্লেখ্যঃ ইসলাম গ্রহণ করার পর ইসলামী বিধি-বিধান পালন করা অপরিহার্য হয়ে যায়।

২) ধর্মীয় কিছু কল্যাণের কারণে ইসলাম গ্রহণ করার পর মাযহাব পরিবর্তনের স্বাধীনতাও থাকে না।

মাসআলা-১১৭ঃ প্রত্যেক ব্যক্তির তার সম্মান নিরাপত্ত্বসহ জীবন যাপনের অধিকার রয়েছেঃ

## ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ

مِنْ نِسَاءٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ

الْإِثْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَنْ لَمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! কোন পুরুষ যেন অপর কোন পুরুষকে উপহাস না করে, কেননা যাকে উপহাস করা হয় সে উপহাসকারী অপেক্ষা উত্তম হতে পারে এবং কোন নারী অপর কোন নারীকেও যেন উপহাস না করে, কেননা যাকে উপহাস করা হয় সে উপহাসকারিণী অপেক্ষা উত্তম হতে পারে। তোমরা একে অপরের প্রতি দোষারোপ করে না এবং তোমরা একে অপরকে মন্দ নামে ডেকো না। (সূরা হুজুরাত-১১)

মাসআলা-১১৮ঃ সমস্ত আদম সন্তানের কোন মাধ্যম ব্যতীত আল্লাহর নিকট দোয়া করার অধিকার রয়েছেঃ

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ  
فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِلَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ﴾ (১৮১)

অর্থঃ “এবং যখন আমার বান্দাগণ আমার ব্যাপারে তোমাকে জিজ্ঞাসা করে, তখন তাদেরকে বলে দাও : নিশ্চয়ই আমি সন্নিহিতবর্তী, কোন আহ্বানকারী যখন আমাকে আহ্বান করে তখনই আমি তার আহ্বানে সাড়া দেই, সুতরাং তারাও যেন আমার ডাকে সাড়া দেয় এবং আমাকে বিশ্বাস করে, তাহলেই তারা সঠিকপথে চলতে পারবে। (সূরা বাক্বারা-১৮৬)

মাসআলা-১১৯ঃ “কোন ব্যক্তি কোন ব্যক্তিকে বা কোন জাতি কোন জাতিকে নিজের ক্রীতদাস বানাতে পারে না, স্বাধীনভাবে জীবন যাপন করার অধিকার প্রত্যেক ব্যক্তি এবং জাতির রয়েছেঃ

﴿مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنَّبُوءَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ  
كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ الْكِتَابَ  
وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ﴾ (৭৯)

অর্থঃ “এটা কোন মানুষের জন্য উপযোগী নয় যে, আল্লাহ্ যাকে কিতাব, নবুয়ত ও বিজ্ঞান দান করেন, তৎপরে সে মানব মন্ডলীর মধ্যে বলেঃ তোমরা আল্লাহ্কে পরিত্যাগ করে আমার উপাসক হও। বরং প্রভূরই ইবাদত কর, কারণ তোমরাই কোরআ'ন শিক্ষা দান কর এবং ওটা পাঠ করে থাক। (সূরা আল ইমরান-৭৯)

মাসআলা-১২০ঃ কারো প্রতি কেউ কোন যুলুম করলে তার প্রতিবাদ করার অধিকার মাযলুমের রয়েছেঃ

﴿إِنْ يُبَدُّوا خَيْرًا أَوْ تُخَفُّوهُ أَوْ تُعَفُّوهُ عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا﴾ (১৫৭)

অর্থঃ “আল্লাহ্ কারো অত্যাচারিত হওয়া ব্যতীত অপ্রিয় বাক্য প্রকাশ করা ভালবাসেন না। (সূরা নিসা-১৪৮)

মাসআলা-১২১ঃ ন্যায়বিচার চাওয়া মানুষের ন্যায্য অধিকারঃ

﴿وَأْمَرْتُ لِعَدَالٍ بَيْنَكُمْ﴾

অর্থঃ “এবং আমি আদিষ্ট হয়েছি তোমাদের মাঝে ন্যায্যবিচার করতে। (সূরা শূরা-১৫)

মাসআলা-১২২ঃ প্রত্যেক ব্যক্তির জীবনোপকরণ অন্বেষণে সমান অধিকার রয়েছেঃ

﴿وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ

وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾ (৭২)

অর্থঃ “তিনি তাঁর দয়ায় তোমাদের জন্য করেছেন রজনী ও দিবস, যেন তাতে তোমরা বিশ্রাম করতে পার এবং তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার এবং কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করতে পার। (সূরা কাসাস-৭৩)

\* \* \*



## حقوق الوالدين

### পিতা-মাতার অধিকারসমূহ

মাসআলা-১২৩ঃ পিতা-মাতার সাথে সদ্ব্যবহার করার জন্য নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

মাসআলা-১২৪ঃ বৃদ্ধ বয়সে পিতা-মাতাকে 'উহ' ও বলা যাবে না এবং তাদেরকে ধমকও দেয়া যাবে নাঃ

মাসআলা-১২৫ঃ পিতা-মাতার সম্মান ও মর্যাদার প্রতি দৃষ্টি রেখে তাদের সাথে নরম স্বরে কথা বলতে হবেঃ

﴿ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِنَّمَا يُبَلِّغُنَّ عَنْكَ  
الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍ وَلَا تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا  
كَرِيمًا ۝ ٢٣ ﴾

অর্থঃ “তোমাদের প্রতি পালক তোমাদেরকে নির্দেশ দিয়েছেন যেন তোমরা তিনি ব্যতীত অন্য কারো ইবাদত করবে না এবং পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার করবে, তাদের একজন অথবা উভয়ই তোমার জীবদ্দশায় বার্ষিকো উপনীত হলেও তাদেরকে বিরক্তি সূচক কিছু বলা না এবং তাদেরকে ভৎসনা কর না, তাদের সাথে বল সম্মান সূচক নম্র কথা। (সূরা বানী ইসরাইল-২৩)

মাসআলা-১২৬ঃ আজীবন নিজে পিতা-মাতার প্রতি করুনার দৃষ্টি দিতে হবে এবং আত্মাহুর নিকট তাদের জন্য দোয়া করতে হবে তিনি যেন তাদের প্রতি করুনা করেনঃ

﴿ وَأَخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذَّلِيلِ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا ۝ ٢٤ ﴾

অর্থঃ “অনুকম্পায় তাদের প্রতি বিনয়ানত থাক এবং বলঃ হে আমার প্রতিপালক! তাদের উভয়ের প্রতি দয়া করুন যেভাবে শৈশবে তারা আমাকে প্রতি পালন করেছিল। (সূরা বানী ইসরাইল-২৪)

মাসআলা-১২৭ঃ যদি পিতা-মাতা শিরক বা অন্য কোন ইসলাম বিরোধী কাজ করার নির্দেশ দেয় তাহলে তাদের কথা মানা যাবে না কিন্তু কথা বলার সময় তাদের মর্যাদা এবং সম্মানের প্রতি লক্ষ্য রাখতে হবে তাদের সাথে বে-আদবী করা যাবে নাঃ

﴿وَإِنْ جَهَدَاكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا  
وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَىٰ تُمْ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ  
فَأُنْشِئْكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾﴾

অর্থঃ “তোমার পিতা-মাতা যদি তোমাকে পীড়াপীড়ি করে আমার সমকক্ষ দাঁড় করাতে যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তবে তুমি তাদের কথা মানবে না, তবে পৃথিবীতে তাদের সাথে বসবাস করবে, সংভাবে এবং যে বিস্তৃত চিন্তে আমার অভিমুখী হয়েছে তার পথ অবলম্বন কর, অতঃপর তোমাদের প্রত্যাবর্তন আমারই নিকট এবং তোমরা যা করতে সে বিষয়ে আমি তোমাদেরকে অবহিত করব। (সূরা লোকমান-১৫)

নোটঃ পিতা-মাতার অধিকার সম্পর্কে কিছু হাদীস নিম্নরূপঃ

- ১) পিতা-মাতার সন্তুষ্টিতে আল্লাহর সন্তুষ্টি আর পিতা-মাতার অসন্তুষ্টিতে আল্লাহর অসন্তুষ্টি। (ত্বাবারানী)
- ২) আল্লাহর সাথে শিরক এবং পিতা-মাতার অবাধ্যতা কবীর গোনাহের অন্তর্ভুক্ত। (তিরমিযী)
- ৩) তিন ব্যক্তির প্রতি আল্লাহ করুনরা দৃষ্টি দিবেন না, (১) পিতা-মাতার অবাধ্য ব্যক্তি (২) মদপানকারী (৩) অনুগ্রহ করে খোঁটা দাতা। (নাসায়ী)
- ৪) তিন প্রকার লোক জান্নাতে প্রবেশ করবে না (১) পিতা-মাতার অবাধ্য ব্যক্তি (২) দাইউস (৩) পুরুষের সাদৃশ্য অবলম্বনকারিণী নারী, নারীর সাদৃশ্য অবলম্বনকারী পুরুষ। (নাসায়ী)
- ৫) ঐ ব্যক্তির নাক ধুলায় ধূলিষ্ঠিত হোক, ঐ ব্যক্তির নাক ধুলায় ধূলিষ্ঠিত হোক, ঐ ব্যক্তির নাক ধুলায় ধূলিষ্ঠিত হোক, যে তারা পিতা-মাতার কোন একজনকে বৃদ্ধ বয়সে পেল অথচ তাদের সেবা করে জান্নাত হাসিল করতে পারল না। (মুসলিম)
- ৬) নিজের পিতা-মাতাকে গালীদাতার প্রতি আল্লাহর অভিসম্পাত। (হাকেম)
- ৭) পিতা জান্নাতের দরজা সমূহের মধ্যে উত্তম দরজা অতএব, যে ব্যক্তি চায় সে তা সংরক্ষণ করুক আর যে চায় সে তা নষ্ট করুক। (ইবনুমাযা)
- ৮) জান্নাত মাযের পদতলে। (নাসায়ী)
- ৯) এক সাহাবী জিজ্ঞেস করল আমার সদাচারণ পাওয়ার সবচেয়ে উপযুক্ত কে? রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ তোমার মা, দ্বিতীয় বার জিজ্ঞেস করলে, উত্তরে তিনি বললেনঃ তোমার মা, তৃতীয় বার জিজ্ঞেস করলে উত্তরে তিনি বললেনঃ তোমার মা। চতুর্থ বার জিজ্ঞেস করলে তিনি বললেনঃ তোমার পিতা। (বোখারী)

## حقوق الاولاد

### সন্তানদের অধিকার

মাসআলা-১২৮ঃ সন্তানদেরকে ইসলামী শিক্ষা-দিক্ষা দেয়া এবং তাদেরকে জাহান্নামের আগুন থেকে বাঁচানো পিতা-মাতার জন্য ফরযঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦﴾﴾

অর্থঃ“হে মুমিনগণ! তোমরা নিজেদেরকে এবং তোমাদের পরিবার পরিজনকে জাহান্নাম থেকে রক্ষা কর, যার ইন্ধন হবে মানুষ ও প্রস্তর, যাতে নিয়োজিত আছে নির্মম হৃদয়, কঠোর স্বাভাব ফেরেশতাগণ, যারা অমান্য করে না আল্লাহ তাদেরকে যা আদেশ করেন তা এবং তারা যা করতে আদিষ্ট হয় তারা তাই করে। (সূরা তাহরীম-৬)

মাসআলা-১২৯ঃ সন্তানদের ধর্মীয় অধিকার আদায় না করীরা কিয়ামতের দিন সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত হবেঃ

﴿فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِي قُلْ إِنَّ الْخَيْرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١٥﴾﴾

অর্থঃ“অতএব, তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যার ইচ্ছা তার ইবাদত কর, বলঃ কিয়ামতের দিন ক্ষতিগ্রস্ত তারাই যারা নিজেদের ও নিজেদের পরিবারবর্গের ক্ষতি সাধন করে, যেনে রাখ এটাই সুস্পষ্ট ক্ষতি। (সূরা যুমার-১৫)

## حقوق الجنين

### পেটের বাচ্চাদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-১৩০ঃ গর্ভবতী হওয়ার পর ইচ্ছা করে গর্ভপাত করানো কবীরা গোনাহঃ

﴿وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ

خَطَاً كَبِيراً﴾ (৩১)

অর্থঃ “তোমাদের সন্তানদেরকে তোমরা দারিদ্র্যভয়ে হত্যা করো না, তাদেরকে এবং তোমাদেরকে আমিই জীবনোপকরণ দিয়ে থাকি, তাদেরকে হত্যা করা মহাপাপ। (সূরা বানী ইসরাইল-৩১)

নোটঃ

১) এক মহিলা রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট উপস্থিত হয়ে আবেদন করল যে, ইয়া রাসূলুল্লাহ্ ! আমাকে পবিত্র করুন, তিনি মুখ ফিরিয়ে নিলেন, তখন মহিলা বললঃ ইয়া রাসূলুল্লাহ্ আমি (অবৈধ ভাবে) গর্ভবতী হয়েছি, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) গর্ভাবস্থায় তাকে পাথর মেরে হত্যা করতে অস্বীকৃতি জানালেন, যাতে করে মায়ের পেটে বিদ্ধমান একটি নিশাপাপ শিশু নষ্ট নাহয়ে যায়, তাই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ যখন বাচ্চা প্রসব করবে তখন আসবে, বাচ্চা প্রসবের পর ঐ মহিলা দ্বিতীয় বার আসল তখন রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাকে পাথর মেরে হত্যা করার নির্দেশ দিলেন। (মুসলিম)

\*\*\*

## حقوق المرأة

নারীদের অধিকার সমূহঃ

(الف) حقوق المرأة الانسانية

(ক) নারীর মানবিক অধিকারসমূহঃ

মাসআলা-১৩১ঃ নারী ও পুরুষ মানুষ হিসেবে একেই সৃষ্টি অতএব, মানুষ হিসেবে উভয়ের অবস্থা একইঃ

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا



অর্থঃ “হে মানব মন্ডলী! তোমরা তোমাদের প্রভুকে ভয় কর, যিনি তোমাদেরকে একেই ব্যক্তি থেকে সৃষ্টি করেছেন এবং তা থেকে তদীয় স্ত্রী সৃষ্টি করেছেন এবং তাদের উভয় হতে বহু নর ও নারী ছড়িয়ে দিয়েছেন। (সূরা নিসা-১)

মাসআলা-১৩২ঃ সমস্ত নর-নারী একেই পিতা-মাতার সন্তান অতএব মানুষ হিসেবে উভয়েই সমানঃ

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ

أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتَقَىٰكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

অর্থঃ “হে মানুষ ! আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি এক পুরুষ ও এক নারী থেকে, পরে তোমাদেরকে বিভক্ত করেছি বিভিন্ন জাতি ও গোত্রে, যাতে তোমরা এক অপরের সাথে পরিচিত হতে পার, তোমাদের মধ্যে ঐ ব্যক্তিই আল্লাহর নিকট অধিক মর্যাদা সম্পন্ন যে অধিক পরহেযগার, আল্লাহ্ সবকিছু জানেন এবং সবকিছুর খবর রাখেন। (সূরা হুজুরাত-১৩)

মাসআলা-১৩৩ঃ ইসলামের দৃষ্টিতে মানুষ হিসেবে নারীর জীবনও ততটা মূল্যবান যেমন পুরুষের জীবন মূল্যবানঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ১১২ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-১৩৪ঃ মুসলিম সমাজে নারীও ঐ মর্যাদা পাওয়ার অধিকারিণী যে মর্যাদা পুরুষ পাওয়ার অধিকার রাখেঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ১১১ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-১৩৫ঃ স্ত্রীর উপর স্বামীর যেমন অধিকার আছে যে স্ত্রী তার প্রতি লক্ষ্য রাখবে এমনভাবে স্বামীর প্রতিও স্ত্রীর অধিকার আছে যে, স্বামী তার প্রতি লক্ষ্য রাখবেঃ

﴿ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ ﴾

অর্থঃ “তারা (স্ত্রীরা) তোমাদের জন্য আবরণ আর তোমরা (স্বামীরা) তাদের জন্য আবরণ। (সূরা বাক্বার-১৮৭)

মাসআলা-১৩৬ঃ নারীকে ভুচ্ছ মনে করা এবং পুরুষের জন্য অবমাননাকর মনে করা কবীরা গোনাহঃ

﴿ وَإِذَا الْمَوْءُدَةُ سُئِلَتْ ۖ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۖ ﴾

অর্থঃ “যখন জীবন্ত প্রথিতা কন্যাকে জিজ্ঞেস করা হবে যে কি অপরাধে তাকে হত্যা করা হয়ে ছিল? (সূরা তাকভীর-৮, ৯)

মাসআলা-১৩৭ঃ প্রত্যেকের দায়িত্ব হিসেবে ইসলাম পুরুষের জন্য যেমন অধিকার নির্ধারণ করেছে তেমনিভাবে নারীর জন্যও তার অধিকার নির্ধারণ করেছেঃ

﴿ وَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴾

অর্থঃ “আর নারীদের উপর তাদের (পুরুষদের) যেমন সত্ত্ব আছে নারীদেরও তদানুরূপ (পুরুষদের উপর) ন্যায়সঙ্গত সত্ত্ব আছে। (সূরা বাক্বার-২২৮)

## (ব) حقوق المرأة الدينية (খ) নারীর ধর্মীয় অধিকার সমূহঃ

মাসআলা-১৩৮ঃ সৎ আমলসমূহের সোয়াবে নারী পুরুষের সমান অধিকারঃ

﴿لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ﴾

অর্থঃ “পুরুষ যা অর্জন (ইবাদত) করে সেটা তার অংশ আর নারী যা অর্জন (ইবাদত) করে সেটা তার অংশ। (সূরা নিসা-৩২)

মাসআলা-১৩৯ঃ কোন নারীর সোয়াব আল্লাহু এজন্য কম দিবেন না যে সে নারী আবার কোন পুরুষের সোয়াব আল্লাহু এজন্য বেশি দেবেন না যে সে পুরুষঃ

﴿وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا﴾

﴿ ১২৬ ﴾

অর্থঃ “পুরুষ অথবা নারীর মধ্যে যে সৎকর্ম করে এবং সে ঈমানও রাখে তবে তারাই জান্নাতে প্রবেশ করবে এবং তারা খেজুর কণা পরিমাণেও অত্যাচারিত হবে না। (সূরা নিসা-১২৪)

মাসআলা-১৪০ঃ নারী বা পুরুষ কারো সৎ আমলের প্রতিদানই আল্লাহুর নিকট বৃথা হয়না বরং প্রত্যেকের সৎ আমলের প্রতিদানই সংরক্ষিত থাকেঃ

﴿فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَمَلٍ مِّنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ

بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِينِهِمْ وَأُودُوا فِي سَبِيلِي

وَقُتِلُوا وَقَاتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ

تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ﴾ ﴿ ১১০ ﴾

অর্থঃ “অনন্তর তাদের প্রতিপালক তাদের জন্য ওটা স্বীকার করলেন যে, আমি তোমাদের পুরুষ অথবা নারীর মধ্য হতে কোন কর্মীর কৃতকার্য ব্যর্থ করব না, তোমরা পরস্পর এক, অতএব যারা দেশ ত্যাগ করেছে, ও স্বীয় গৃহসমূহ বিতাড়িত হয়েছে ও আমার পথে নির্যাসিত হয়েছে এবং সংগ্রাম করেছে ও নিহত হয়েছে, নিশ্চয়ই তাদের জন্য আমি তাদের অমঙ্গলসমূহ

আবরিত করব এবং নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে জান্নাতে প্রবেশ করাব যার নিম্নে স্রোতধিনীসমূহ প্রবাহিত, এটা আল্লাহর নিকট হতে প্রতিদান এবং আল্লাহর নিকটই উত্তম প্রতিদান রয়েছে। (সূরা আল ইমরান-১৯৫)

মাসআলা-১৪১ঃ আল্লাহর অনুগত্যাগকারী নর হোক বা নারী, সত্যবাদী নর হোক বা নারী, ধৈর্যশীল নর হোক বা নারী, আল্লাহকে ভয়কারী নর হোক বা নারী, দানকারী নর হোক বা নারী, রোযা পালনকারী নর হোক বা নারী, সৎভাবে জীবন যাপনকারী নর হোক বা নারী, আল্লাহর যিকিরকারী নর হোক বা নারী, এদের সকলের জন্য আল্লাহর পক্ষ থেকে ক্ষমা ও বিরাট প্রতিদানের অঙ্গীকার রয়েছেঃ

﴿ إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنِينَ  
وَالْقَنِاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ  
وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّاتِمِينَ وَالصَّاتِمَاتِ  
وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا  
وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝۳০ ﴾

অর্থঃ “আবশ্য আত্মসমর্পণকারী পুরুষ এবং আত্মসমর্পণকারী নারী, মুমিন পুরুষ ও মুমিন নারী, অনুগত পুরুষ ও অনুগত নারী, সত্যবাদী পুরুষ ও সত্যবাদী নারী, ধৈর্যশীল পুরুষ ও ধৈর্যশীল নারী, বিনীত পুরুষ ও বিনীত নারী, দানশীল পুরুষ ও দানশীল নারী, রোযা পালনকারী পুরুষ ও রোযা পালনকারী নারী, যৌনাসংরক্ষণকারী পুরুষ ও যৌনাসংরক্ষণশালী নারী, আল্লাহকে অধিক স্মরণকারী পুরুষ ও অধিক স্মরণকারী নারী-এদের জন্য আল্লাহ রেখেছেন ক্ষমা ও মহা প্রতিদান। (সূরা আহযাব-৩৫)

মাসআলা-১৪২ঃ সৎকাজের আদেশ এবং অসৎ কাজে বাধা দেয়ার গুরুত্বপূর্ণ ফরয যেমন পুরুষদের জন্য ফরয তেমনিভাবে মেয়েদের জন্যও ফরযঃ

মাসআলা-১৪৩ঃ সৎ কাজের আদেশ এবং অসৎকাজে বাধাদান এফরয আদায়কারী, নামায আদায়কারী, যাকাত প্রদানকারী মোমেন নারী হোক বা পুরুষ তাদের উভয়ের জন্য সমপরিমাণের সোয়াব রয়েছেঃ



﴿وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ  
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللَّهُ  
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا  
وَمَسْكَنٍ ظِلِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ  
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾﴾

অর্থঃ “আর মুমিন পুরুষরা ও মুমিন নারীরা হচ্ছে পরস্পর একে অন্যের বন্ধু, তারা সৎ বিষয়ে আদেশ দেয় এবং অসৎ বিষয় থেকে বাধা দেয়, আর নামাযে পাবন্দী করে ও যাকাত প্রদান করে, আর আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের আদেশ মেনে চলে, এসব লোকের প্রতি আল্লাহ আবশ্যই করুণা বর্ষণ করবেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ অতিশয় ক্ষমতাবান, হিকমত ওয়ালা। (সূরা তাওবা-৭১, ৭২)

মাসআলা-১৪৪ঃ আল্লাহর নিকট দোয়া করার অধিকার নারীরও তেমানিই আছে যেমন পুরুষের আছেঃ

﴿وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي  
سَيَخْلُقُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٧١﴾﴾

অর্থঃ “তোমাদের প্রতিপালক বলেনঃ তোমরা আমাকে ডাক, আমি তোমাদের ডাকে সাড়া দিব। (সূরা আল মুমেন-৬০)

মাসআলা-১৪৫ঃ কুফর ও মুনাফেকীর পদ্ধতি অবলম্বনকারী চাই নর হোক বা নারী উভয়ের শাস্তি সমমানেরঃ

﴿وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَّ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ﴾ (৬৮)

অর্থঃ “আল্লাহ্ মুনাফেক পুরুষদের, মুনাফেক নারীদের এবং কাফেরদের সাথে জাহান্নামের আগুনের অঙ্গিকার করেছেন, যেখানে তারা চিরকাল থাকবে, এটা তাদের জন্য যথেষ্ট, আর আল্লাহ্ তাদেরকে লানত করেছেন এবং তাদের জন্য রয়েছে চিরস্থায়ী শাস্তি। (সূরা তাওবা-৬৮)

\*\*\*

মাসআলা-১৫৪ঃ উত্তরাধিকারীদের মধ্যে যদি একাধিক বোন থাকে কোন ভাই না থাকে তাহলে সমস্ত সম্পদের মধ্যে দুই তৃতীয়াংশ সমস্ত বোনদের মধ্যে সমান ভাবে বন্টন করতে হবেঃ

﴿فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثُ مَا تَرَكَ﴾

অর্থঃ “অতঃপর (উত্তরাধিকার) যদি শুধু নারীই হয় দুয়ের অধিক তাহলে তাদের জন্য ঐ মালের তিন ভাগের দুই ভাগ। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৫ঃ মৃত ব্যক্তির যদি সন্তান থাকে আবার পিতা-মাতাও থাকে তখন মৃতের সম্পদ থেকে তারা উভয়ে ৬ষ্ঠাংশ করে পাবেঃ

﴿وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ﴾

অর্থঃ “মৃতের পিতা-মাতার মধ্য থেকে প্রত্যেকের জন্য ত্যাজ্য সম্পত্তির ছয়ভাগের এক ভাগ, যদি মৃতের পুত্র থাকে। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৬ঃ যদি মৃত ব্যক্তির সন্তান না থাকে এবং ভাই বোনও না থাকে তাহলে মা এক তৃতীয়াংশ পাবে আর পিতা দুই তৃতীয়াংশ পাবেঃ

﴿فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ﴾

অর্থঃ “আর যদি মৃতের পুত্র না থাকে এবং পিতা-মাতাই ওয়ারিস হয় তাহলে মাতা পাবে তিন ভাগের এক ভাগ। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৭ঃ মৃত ব্যক্তি যদি অবিবাহিত হয় কিন্তু তার ভাই বোন থাকে তাহলে পিতা-মাতার মধ্যে মা ৬ষ্ঠাংশ এবং পিতা পাবে ৬ভাগের ৫ভাগঃ

﴿فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ الشُّدُسُ﴾

অর্থঃ অতঃপর যদি মৃতের কয়েকজন ভাই থাকে তাহলে তার মা পাবে ছয়ভাগের এক ভাগ। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৮ঃ যদি মৃত ব্যক্তির সন্তান না থাকে তাহলে স্ত্রী তার স্বামীর সম্পদের এক চতুর্থাংশ পাবে আর যদি সন্তান থাকে তাহলে এক অষ্টমাংশ পাবেঃ

মাসআলা-১৫৪ঃ উত্তরাধিকারীদের মধ্যে যদি একাধিক বোন থাকে কোন ভাই না থাকে তাহলে সমস্ত সম্পদের মধ্যে দুই তৃতীয়াংশ সমস্ত বোনদের মধ্যে সমান ভাবে বন্টন করতে হবেঃ

﴿فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ﴾

অর্থঃ “অতঃপর (উত্তরাধিকার) যদি শুধু নারীই হয় দুয়ের অধিক তাহলে তাদের জন্য ঐ মালের তিন ভাগের দুই ভাগ। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৫ঃ মৃত ব্যক্তির যদি সন্তান থাকে আবার পিতা-মাতাও থাকে তখন মৃতের সম্পদ থেকে তারা উভয়ে ঊষ্ঠাংশ করে পাবেঃ

﴿وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ﴾

অর্থঃ “মৃতের পিতা-মাতার মধ্য থেকে প্রত্যেকের জন্য ত্যাজ্য সম্পত্তির ছয়ভাগের এক ভাগ, যদি মৃতের পুত্র থাকে। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৬ঃ যদি মৃত ব্যক্তির সন্তান না থাকে এবং ভাই বোনও না থাকে তাহলে মা এক তৃতীয়াংশ পাবে আর পিতা দুই তৃতীয়াংশ পাবেঃ

﴿فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ﴾

অর্থঃ “আর যদি মৃতের পুত্র না থাকে এবং পিতা-মাতাই ওয়ারিস হয় তাহলে মাতা পাবে তিন ভাগের এক ভাগ। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৭ঃ মৃত ব্যক্তি যদি অবিবাহিত হয় কিন্তু তার ভাই বোন থাকে তাহলে পিতা-মাতার মধ্যে মা ঊষ্ঠাংশ এবং পিতা পাবে ঊভাগের ৫ভাগঃ

﴿فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ﴾

অর্থঃ অতঃপর যদি মৃতের কয়েকজন ভাই থাকে তাহলে তার মা পাবে ছয়ভাগের এক ভাগ। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৮ঃ যদি মৃত ব্যক্তির সন্তান না থাকে তাহলে স্ত্রী তার স্বামীর সম্পদের এক চতুর্থাংশ পাবে আর যদি সন্তান থাকে তাহলে এক অষ্টমাংশ পাবেঃ

﴿وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ حَتَّىٰ إِمْلَأَ نَحْنُ نَرْزُقَهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ

خَطَاً كَبِيراً ﴿٣١﴾﴾

অর্থঃ “তোমাদের সন্তানদেরকে তোমরা দারিদ্র্যে হতা করো না, তাদেরকে এবং তোমাদেরকে আমিই জীবনোপকরণ দিয়ে থাকি, তাদেরকে হত্যা করা মহাপাপ। (সূরা বানী ইসরাইল-৩১)

মাসআলা-১৫১ঃ পিতা-মাতা এবং অন্যান্য আত্মীয়দের রেখে যাওয়া সম্পদে পুরুষের ন্যায় নারীদেরও অধিকার রয়েছেঃ

﴿لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ

وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿٧﴾﴾

অর্থঃ “পুরুষদের জন্য পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের পরিত্যক্ত বিষয় সম্পত্তিতে অংশ রয়েছে এবং পিতা-মাতা ও আত্মীয় স্বজনের পরিত্যক্ত সম্পত্তিতে নারীদেরও অংশ আছে, অল্পহোক কিংবা বেশি, এ অংশ নির্ধারিত। (সূরা নিসা-৭)

মাসআলা-১৫২ঃ উত্তরাধিকারী হিসেবে বোনের সাথে যদি ভাই থাকে তাহলে বোন ভায়ের অর্ধেক পাবেঃ

﴿يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَىٰ﴾

অর্থঃ “আল্লাহ তোমাদের এবং তোমাদের সন্তানদের সম্পর্কে আদেশ করেনঃ একজন পুরুষের অংশ দুজন নারীর অংশের সমান। (সূরা নিসা-১১)

মাসআলা-১৫৩ঃ উত্তরাধিকারী যদি শুধু মেয়ে হয় তার কোন ভাই নাথাকে তাহলে মেয়ে সমস্ত সম্পদের অর্ধেক পাবেঃ

﴿وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ﴾

অর্থঃ “এবং (উত্তরাধিকারী) যদি একজন নারী হয় তাহলে তার জন্য অর্ধেক।

(সূরা নিসা-১১)

## (ج) حقوق المرأة الاقتصادية

### (গ) নারীদের অর্থনৈতিক অধিকারসমূহ

মাসআলা-১৪৬ঃ বিয়েতে নির্ধারণকৃত মোহর নারীর ন্যায্য অধিকার যা আদায় করা স্বামীর জন্য ফরযঃ

﴿وَأَتُوا النِّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ نِحْلَةً﴾

অর্থঃ “আর নারীদেরকে তাদের মোহর প্রদান কর খুশীমনে। (সূরা নিসা-৪)

মাসআলা-১৪৭ঃ যদি নারী তার ব্যক্তি স্বাধীনতার আলোকে তা ক্ষমা করতে চায় তাহলে সে তা করতে পারবেঃ

মাসআলা-১৪৮ঃ নারী তার নিজের সম্পদ থেকে তার ইচ্ছা অনুযায়ী দান করতে পারবেঃ

﴿فَإِنْ طِبَّنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هِيَئًا مَّيِّتًا﴾

অর্থঃ আর যদি তারা সন্তুষ্ট চিত্তে পরে কিয়দাংশ তোমাদেরকে প্রদান করে তবে বিবেচনা মত তত্ত্বির সাথে ভোগ কর। (সূরা নিসা-৪)

মাসআলা-১৪৯ঃ বিয়ের পর স্ত্রীর সমস্ত ব্যয়ভার বহন করা স্বামীর উপর ফরয চাই স্ত্রী স্বামীর চেয়ে যতই সম্পদশালী হোক না কেনঃ

﴿الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ﴾

অর্থঃ “পুরুষ নারীর উপর কর্তৃত্বশীল, যেহেতু আল্লাহ তাদের মধ্যে একের উপর অপরকে গৌরবান্বিত করেছেন এবং যেহেতু তারা (স্বামী) তাদের স্ত্রীর ধন-সম্পদ থেকে ব্যয় করে থাকে (সূরা নিসা-৩৪)

মাসআলা-১৫০ঃ বিয়ের পূর্বে মেয়েদের ব্যয়ভার বহনকরা পিতার উপর ফরযঃ

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا  
 هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَّ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٨﴾

অর্থঃ “আল্লাহ্ মুনাফেক পুরুষদের, মুনাফেক নারীদের এবং কাফেরদের সাথে জাহান্নামের আগুনের অঙ্গিকার করেছেন, যেখানে তারা চিরকাল থাকবে, এটা তাদের জন্য যথেষ্ট, আর আল্লাহ তাদেরকে লা'নত করেছেন এবং তাদের জন্য রয়েছে চিরস্থায়ী শাস্তি। (সূরা তাওবা-৬৮

\*\*\*

﴿ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوَصِّينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ ﴾

অর্থঃ “স্ত্রীদের জন্যে এক- চতুর্থাংশ ঐ সম্পত্তির, যা তোমরা ছেড়ে যাও যদি তোমাদের কোন সন্তান না থাকে, আর যদি তোমাদের সন্তান থাকে তাহলে তাদের জন্য হবে ঐ সম্পত্তির আট ভাগের এক ভাগ যা তোমরা ছেড়ে যাও ওসিয়তের পর, যা তোমরা কর এবং ঋণ পরিশোধের পর। (সূরা নিসা-১২)

মাসআলা-১৫৯ঃ মৃত ব্যক্তি যদি কালিলা (ঐ নারী বা পুরুষ যার পিতা বা সন্তান নেই) আর তার ওয়ারিস হয় এমন ভাই বোন যাদের মা এক কিছ্র বাপ ভিন্ন ভিন্ন, তারা যদি এক ভাই বোন হয় তাহলে বোন ভায়ের অংশের সমান পাবে, অর্থাৎ সম্পদের এক ষষ্ঠাংশ পাবে ভাই এবং অপর এক ষষ্ঠাংশ পাবে বোনঃ

মাসআলা-১৬০ঃ যদি কালিলা (ঐ নারী বা পুরুষ যার পিতা বা সন্তান নেই) আর তার ওয়ারিস হয় এমন ভাই বোন যাদের মা এক কিছ্র বাপ ভিন্ন ভিন্ন, আর তাদের সংখ্যা যদি একাধিক হয় অর্থাৎ দুই বা ততোধিক তাহলে মৃতের সম্পদের এক তৃতীয়াংশের মধ্যে সমস্ত ভাই বোন অংশিদার হবেঃ

﴿ وَإِنْ كَانَتْ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوْ امْرَأَةً وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ ﴾

অর্থঃ “যে পুরুষের তাজ্য সম্পত্তি তার যদি পিতা-পুত্র কিংবা স্ত্রী না থাকে এবং ঐ মৃতের এক ভাই কিংবা এক বোন থাকে তাহলে উভয়ের প্রত্যেকে ছয়ভাগের এক ভাগ পাবে, আর যদি ততোধিক থাকে তাহলে তারা এক তৃতীয়াংশে অংশিদার হবে। (সূরা নিসা-১২)

মাসআলা-১৬১ঃ মৃত ব্যক্তি যদি কালিলা হয় আর তার ওয়ারিস হয় আপন ভাই বোন বা এক বাপ কিছ্র মা ভিন্ন ভিন্ন তাহলে সম্পদ নিম্নোক্ত পদ্ধতিতে বন্টন করতে হবেঃ



- ১) যদি এক ভাই হয় বোন না থাকে তাহলে সে সমস্ত সম্পদের অধিকারী হয়ে যাবে।
- ২) আর যদি এক বোন থাকে কোন ভাই না থাকে তাহলে সে সম্পদের অর্ধেক পাবে।
- ৩) যদি বোন একাধিক হয় ভাই না থাকে তাহলে দু'বোন সম্পদের দুই তৃতীয়াংশ পাবে, এতে সমস্ত বোনেরা সমানভাবে অংশীদার হবে।
- ৪) যদি ওয়ারিস ভাই এবং বোন উভয়েই থাকে তাহলে সমস্ত ভাই ও বোনেরা সাধারণ নিয়ম অনুযায়ী দুই বোন এক ভায়ের সমপরিমান অংশ পাবে।

﴿يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِن كَانَتَا أُخْتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلَثَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِن كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾﴾

অর্থঃ “মানুষ আপনার নিকট ফতোয়া জানতে চায়, -অতএব, আপনি বলে দিন, আল্লাহ তোমাদেরকে কালিলা এর মিরাস সম্পর্কে সুস্পষ্ট নির্দেশ বাতলে দিচ্ছেন, যদি কোন পুরুষ মারা যায় এবং তার কোন সন্তানাদি না থাকে এবং এক বোন থাকে তাহলে সে পাবে তার পরিত্যক্ত সম্পত্তির অর্ধেক অংশ এবং সে যদি নিঃসন্তান হয়, তবে তার ভাই তার উত্তরাধিকারী হবে, তার দুই বোন থাকলে তাদের জন্য তার পরিত্যক্ত সম্পত্তির দুই তৃতীয়াংশ, পক্ষান্তরে যদি ভাই ও বোন উভয়েই থাকে তাহলে একজন পুরুষের অংশ দু'জন নারীর সমান। (সূরা নিসা-১৭৬)

## (د) حقوق المرأة الاجتماعية

### (ঘ) নারীর সামাজিক অধিকারসমূহঃ

#### (الف) الام

#### (ক) মা

মাসআলা-১৬২ঃ মায়ের সাথে সদাচরণ করা সুভাগ্য এবং সুপরিণতির নিদর্শনঃ

﴿وَبِرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۝۳২﴾

অর্থঃ “আর আমার মাতার প্রতি অনুগত থাকতে এবং তিনি আমাকে উদ্ধত ও অহংকারী করেন নাই। (সূরা মারইয়াম-৩২)

﴿وَبِرًّا بِوَالِدِيهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝۱২﴾

অর্থঃ “পিতা-মাতার অনুগত এবং সে উদ্ধত (স্বচ্ছাচারী) ও অবাধ্য ছিল না। (সূরা মারইয়াম-১৪)

মাসআলা-১৬৩ঃ বৃদ্ধ বয়সে পিতা এবং মাতার সামনে ‘উহ’ পর্যন্ত বলা যাবে নাঃ

মাসআলা-১৬৪ঃ পিতা এবং মাতার সামনে অত্যন্ত নম্রতা ও ভদ্রতা এবং সম্মান দিয়ে কথা বলতে হবেঃ

﴿وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَنًا ۖ إِنَّمَا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ

الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍ وَلَا نَهْرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا

كَرِيمًا ۝۱২﴾

অর্থঃ “তোমার প্রতিপালক নির্দেশ দিয়েছেন যে, তোমরা তিনি ব্যতীত অন্য কারো ইবাদত করবে না এবং পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার করবে, তাদের একজন বা উভয়েই তোমার জীবদ্দশায় বার্ধক্যে উপনীত হলেও তাদেরকে বিরক্তি সূচক কিছু বল না এবং তাদেরকে ভৎসনা কর না, তাদের সাথে সম্মান সূচক ও নম্র কথা বল। (সূরা বানী ইসরাইল-২৩)

মাসআলা-১৬৫ঃ পিতা-মাতার সামনে অত্যন্ত নম্রতা এবং ভালবাসা নিয়ে উপস্থিত হতে হবে এবং তাদের জন্য সর্বদা দোয়া করতে হবেঃ

﴿وَأَخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا﴾ (১১)

অর্থঃ “অনুকম্পায় তাদের প্রতি বিনয়বানত থেকে এবং বল হে আমার প্রতি পালক! তাদের উভয়ের পতি দয়া করুন যেভাবে তারা শৈশবে আমাকে প্রতিপালন করেছিল। (সূরা বানী ইসরাইল-২৪)

মাসআলা-১৬৬ঃ যদি পিতা-মাতা তাদের সন্তানদেরকে শিরক বা ইসলাম বিরোধী কোন কাজ করতে বলে তাহলে সন্তানদের উচিত তা থেকে বিরত থাকা অবশ্য এরপরও তাদের সাথে সদাচরণের ক্ষেত্রে কোন ত্রুটি করা যাবে নাঃ

﴿وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ﴾ (১০)

অর্থঃ “তোমার পিতা-মাতা যদি তোমাকে পীড়া পীড়ি করে আমার সমকক্ষ দাঁড় করাতে যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই তবে তুমি তাদের কথা মানবে না, তবে পৃথিবীতে তাদের সাথে বসবাস করবে সংভাবে এবং যে বিপুল চিন্তে আমার অভিযুক্ত হয়েছ তার পথ অবলম্বন কর, অতঃপর তোমাদের প্রত্যাবর্তন আমারই নিকট এবং তোমরা যা করতে সে বিষয়ে আমি তোমাদেরকে অবহিত করব। (সূরা লোকমান-১৫)

মাসআলা-১৬৭ঃ জন্ম এবং প্রতিপালনের ক্ষেত্রে সন্তানদের প্রতি মায়ের ভূমিকা বেশি তাই সন্তানদের উচিত পিতার তুলনায় মায়ের প্রতি বেশি কৃতজ্ঞ থাকাঃ

﴿وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَلَدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَى وَهْنٍ وَفِصْلَهُ فِي عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَلَدِكَ إِلَى الْوَصِيرِ﴾ (১৬)

অর্থঃ “আমিতো মানুষকে তার পিতা-মাতার প্রতি সদাচরণের নির্দেশ দিয়েছে, তার জননী তাকে কষ্টের পর কষ্ট বরণ করে গর্ভে ধারণ করে এবং দুধ ছাড়ানো হয় দুই বছরে, সুতরাং আমার প্রতি এবং তোমার পিতা-মাতার প্রতি কৃতজ্ঞ হও। প্রত্যাবর্তন তো আমারই নিকট। (সূরা লোকমান-১৪)

নোটঃ উল্লেখ্যঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) পিতার তুলনায় মায়ের প্রতি তিনগুণ বেশি সৎব্যবহার করার জন্য নির্দেশ দিয়েছেন। (বোখারী)

## (২) الْبِنْتِ

## (২) মেয়ে হিসেবে

মাসআলা-১৬৮ঃ মেয়েকে তুচ্ছ জ্ঞান করা বা অবমাননার করণ বলে বিবেচনা করা কবীরা গোনাহঃ

﴿وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ٥٨﴾

الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ أَلَا سَاءَ مَا

يَخْتَكُمُونَ ﴿٥٩﴾

অর্থঃ “তাদের কাউকে যখন কন্যা সন্তানের সুসংবাদ দেয়া হয় তখন তার মুখমন্ডল কাল হয়ে যায় এবং সে অসহনীয় মনস্তাপে ক্লিষ্ট হয়। তাকে যে, সংবাদ দেয়া হয় তার গ্লানী হেতু সে নিজ সম্প্রদায় থেকে আত্ম গোপন করে, সে চিন্তা করে যে হীনতা সত্ত্বেও সে তাকে রেখে দিবে, না মাটিতে পুঁতে দিবে, সাবধান! তারা যা সিদ্ধান্ত করে তা কতই না নিকৃষ্ট। (সূরা নাহাল-৫৮, ৫৯)

মাসআলা-১৬৯ঃ মেয়েকে ধর্মীয় শিক্ষা দেয়া, সুসন্তান হিসেবে গড়ে তোলা, বাল্যে হওয়ার পর তাকে বিয়ে দেয়া পিতার উপর ফরযঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا

مَلَائِكَةٌ غُلَظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦١﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমরা নিজেদেরকে এবং তোমাদের পরিবার পরিজনকে রক্ষা কর, অগ্নি হতে, যার ইন্ধন হবে মানুষ ও প্রস্তর, যাতে নিয়োজিত আছে নির্মম হৃদয়, কঠোর স্বভাব ফেরেশতাগণ, যারা অমান্য করে না আল্লাহ তাদেরকে যা আদেশ করেন তা এবং তারা যা করতে আদিষ্ট হয় তারা তাই করে। (সূরা তাহরীম-৬)

## (৩) الزوجة

### (৩) স্ত্রী হিসেবেঃ

মাসআলা-১৭০ঃ স্ত্রীর সাথে ভাল ব্যবহার করার নির্দেশঃ

মাসআলা-১৭১ঃ যদি স্বামী তার স্ত্রীর কোন কোন বিষয় অপছন্দ করে তাহলে স্ত্রীর অন্যান্য ভাল দিক গুলোর কথা স্মরণ করে ধৈর্যের সাথে তাকে বুঝানোর জন্য চেষ্টা করা উচিতঃ

﴿وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ۝١٩﴾

অর্থঃ “এবং নারীদের সাথে সদ্ভাবে জীবন যাপন কর, অতঃপর যদি তাদেরকে অপছন্দ কর, তবে হয়ত তোমরা এমন এক জিনিসকে অপছন্দ করছ, যাতে আল্লাহ অনেক কল্যাণ রেখেছেন। (সূরা নিসা-১৯)

মাসআলা-১৭২ঃ স্বামীর উচিত স্ত্রীর সাথে ভালবাসা এবং কোমলতাপূর্ণ আচরণ করাঃ

﴿وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝٢١﴾

অর্থঃ “এবং তার নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্যে থেকে সৃষ্টি করেছেন তোমাদের স্ত্রীদেরকে, যেন তোমরা তাদের নিকট শান্তি পাও এবং তিনি তোমাদের মধ্যে পারস্পরিক ভাল বাসা ও দয়া সৃষ্টি করেছেন। চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্য এতে অবশ্যই বহু নিদর্শন রয়েছে। (সূরা রুম-২১)

মাসআলা-১৭৩ মোহর নারীর অধিকার যা পুরুষকে তার সন্তুষ্ট চিত্তে আদায় করতে হবেঃ

﴿وَأَتُوا النِّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ نِحْلَةً فَإِنْ طِبَّنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَاكُوهُ هُنَّ حَرَامٌ عَلَيْكُمْ ۝٢٤﴾

অর্থঃ “আর নারীদেরকে তাদের মোহর প্রদানকর, কিন্তু যদি তারা সন্তুষ্ট চিত্তে পরে কিয়দংশ তোমাদেরকে প্রদান করে তবে বিবেচনা মত ভৃগুর সাথে ভোগ কর। সূরা নিসা-৪)

মাসআলা-১৭৪ঃ স্ত্রীর থাকা-খাওয়াসহ অন্যান্য ব্যয়ভার প্রত্যেকে তার অবস্থা অনুযায়ী সম্ভব চিন্তে বহন করবেঃ

﴿لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِۦ وَمَن قُدِّرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُۥ فَلِيُنْفِقْ مِمَّا ءَاتَاهُ اللَّهُ لَا يَكْلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا ءَاتَاهَا سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا﴾ (৭)

অর্থঃ “বিস্তারিত নিজ সামর্থ অনুযায়ী ব্যয় করবে এবং যার জীবনোপকরণ সীমিত সে আল্লাহ্ যা দান করেছেন তা থেকে ব্যয় করবে, আল্লাহ্ যাকে যে সামর্থ দিয়েছেন তদপেক্ষা গুরুতর বোঝা তিনি তার উপর চাপান না, আল্লাহ্ কষ্টের পর দিবেন স্বস্তি। (সূরা ত্বালাক-৭)

মাসআলা-১৭৫ঃ স্বামীর উচিত স্ত্রীর সম্মম এবং ইজ্জত রক্ষা করাঃ

﴿هُنَّ لِيَاسٍ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِيَاسٌ لَهُنَّ﴾

অর্থঃ “তারা তোমাদের জন্য আবরণ তোমরা তাদের জন্য আবরণ। (সূরা বাক্বারা-১৮৭)

মাসআলা-১৭৬ঃ স্বামীকে তার স্ত্রীর যৌন অধিকার পূরণ করতে হবেঃ

﴿فَالَّذِينَ بَشِرُواْ وَعَدُواْ مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُواْ وَأَشْرَبُواْ﴾

অর্থঃ “অতঃপর তোমরা নিজেদের স্ত্রীদের সাথে সহবাস কর এবং যাকিছু তোমাদের জন্য আল্লাহ্ দান করেছেন, তা আহরণ কর। (সূরা বাক্বারা-১৮৭)

মাসআলা-১৭৭ঃ একাধিক স্ত্রী থাকলে তাদের প্রত্যেকের প্রতি ন্যায়পরায়নতা রক্ষা করা ফরযঃ

﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُواْ فِي الْبَيْنِ فَاَنْكِحُواْ مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنٍ وَتِلْكَ وَرُبْعٌ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُواْ فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعْوِلُوا﴾ (২)

অর্থঃ তবে সেসব মেয়েদের মধ্য থেকে যাদেরকে ভাল লাগে তাদেরকে বিয়ে করে নাও, দুই, তিন, বা চারটি পর্যন্ত, আর যদি এরূপ আশঙ্কা কর যে, তাদের মধ্যে ন্যায় সঙ্গত আচরণ করতে পারবে না তবে একটিই, অথবা তোমাদের অধিকার ভুক্ত দাসীদেরকে, এতেই পক্ষপাতিত্বে জড়িত নাহওয়ার অধিকতর সম্ভাবনা। (সূরা নিসা-৩)

মাসআলা-১৭৮ঃ যদি স্ত্রী কোন কারণে তার স্বামীকে পছন্দ না করে এবং কোনভাবেই স্বামীর সাথে সংসার করতে না চায় তাহলে স্বামীকে কিছু দিয়ে তার কাছ থেকে খোলা ত্বালাক নেয়ার অধিকার স্ত্রীর রয়েছেঃ

﴿الطَّلَاقُ مَرَّتَانٍ فَإِمْسَاكَ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَنٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا بِمَمَّا آتَيْنَاهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾

অর্থঃ “(ফেরত যোগ্য) ত্বালাক দু’বার পর্যন্ত, তারপরে হয় নিয়ম অনুযায়ী রাখবে আর নাহয় সহৃদয়তার সাথে বর্জন করবে, আর নিজের দেয়া সম্পদ থেকে কিছু ফিরিয়ে নেয়া তোমাদের জন্য জায়েয নয় তাদের কাছ থেকে, কিন্তু যেক্ষেত্রে স্বামী ও স্ত্রী উভয়েই এব্যাপারে ভয় করে যে, তারা উভয়ে আল্লাহর নির্দেশ বজায় রাখতে পারবে না, তাহলে সেক্ষেত্রে স্ত্রী যদি বিনিময় দিয়ে অব্যাহতি নিয়ে নেয় তবে উভয়ের মধ্যে কারোরই কোন পাপ নেই, এহল আল্লাহ কর্তৃক নির্ধারিত সীমা, কাজেই তা অতিক্রম কর না, বস্তুত যারা আল্লাহ কর্তৃক নির্ধারিত সীমা অতিক্রম করে তারাই হল যালেম। (সূরা বাক্বারা-২২৯)

## المطابقة (৫)

### ত্বালাক প্রাপ্তা হিসেবে

মাসআলা-১৭৯ঃ ত্বালাক প্রাপ্তা নারী তার ইচ্ছা অনুযায়ী বিয়ে করতে পারবেঃ

﴿وَوَصَّي بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يٰبَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ﴾

অর্থঃ “আর যখন তোমরা স্ত্রীদেরকে ত্বালাক দিয়ে দাও এবং তার পর তারাও নির্ধারিত মেয়াদ পূর্ণ করতে থাকে, তখন তাদেরকে পূর্ব স্বামীদের সাথে পারস্পরিক সম্মতির ভিত্তিতে নিয়ম অনুযায়ী বিয়ে করতে বাধা দান কর না, এ উপদেশ তাকেই দেয়া হচ্ছে, যে আল্লাহ ও কিয়ামত দিনের উপর বিশ্বাস স্থাপন করেছে, এর মধ্যে তোমাদের জন্য রয়েছে একান্ত পরিশুদ্ধতা ও অনেক পবিত্রতা। আর আল্লাহ জানেন তোমরা জান না। (সূরা বাক্বারাহ-১৩২)

মাসআলা-১৮০ঃ ত্বালাক প্রাপ্তা স্ত্রীকে কষ্ট দিয়ে সংকটাপন্ন করার উদ্দেশ্যে ফেরত নেয়া নিষেধঃ

﴿فَإِذَا بَلَغَ أَجْلُهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ﴾

অর্থঃ “অতঃপর তারা যখন তাদের মেয়াদে উপনীত হয় তখন তাদেরকে তাদের যথোপযুক্ত পন্থায় রেখে দিবে, অথবা যথোপযুক্তভাবে ছেড়ে দিবে। (সূরা ত্বালাক-২)

মাসআলা-১৮১ঃ ত্বালাকের মেয়াদ চলাকালে স্ত্রীকে স্বামীর ঘরে রাখতে হবে এবং পূর্বের নিয়ম অনুযায়ী তার ব্যয়ভারও বহন করতে হবেঃ

﴿أَسْكِنُوهُنَّ مِمَّنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ﴾

অর্থঃ “তোমরা তোমাদের সামর্থ অনুযায়ী যেকোন গৃহে বাস কর তাদেরকেও বসবাসের জন্য ঐরূপ গৃহ দাও। তাদেরকে কষ্ট দিয়ে সংকটাপন্ন কর না। (সূরা ত্বালাক-৬)

মাসআলা-১৮২ঃ ত্বালাকপ্রাপ্তা নারী যদি গর্ভবতী হয় তাহলে সন্তান ভূমিষ্ট হওয়া পর্যন্ত স্বামী তার থাকা খাওয়া এবং অন্যান্য খরচ বহন করবেঃ



﴿وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾

অর্থঃ “যদি তারা গর্ভবতী হয় তাহলে সন্তান প্রসব পর্যন্ত তাদের ব্যয়ভার বহন করবে।  
(সূরা ত্বালাক-৬)

মাসআলা-১৮৩ঃ যদি সন্তান প্রসবের পর পিতা ত্বালাক প্রাপ্তা স্ত্রীর কাছ থেকে সন্তানকে দুধ পান করাতে চায় তাহলে তাকে কথা অনুযায়ী খরচ দিতে হবেঃ

﴿فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُمْ أَجُورَهُنَّ وَأَتِمُّوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَإِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَسَرِّضُوا  
لَهُنَّ أُخْرَى﴾

অর্থঃ “যদি তারা তোমাদের সন্তানদেরকে স্তন্য দান করে, তবে তাদেরকে প্রাপ্য পারিশ্রমিক দিবে এবং সন্তানের কল্যাণ সম্পর্কে পরস্পর সংযতভাবে পরামর্শ করবে। (সূরা ত্বালাক-৬)

## الارملة

### বিধবা হিসেবে নারী

মাসআলা-১৮৪ঃ বিধবা (গরীব মিসকীন) দের সাথে সদাচরণ করতে হবেঃ

﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا  
وَذَى الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا  
الصَّلَاةَ وَءَاتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ  
مُقَرَّبُونَ﴾ (১৮)

অর্থঃ “আর যখন আমি বানী ইসরাঈল হতে অঙ্গীকার নিয়েছিলাম যে, তোমরা আল্লাহ ব্যতীত আর কারো উপাসনা করবে না, পিতা-মাতার সাথে সদ্যবহার করবে এবং আত্মীয়দের সাথে, পিতৃহীনদের ও মিসকিনদের সাথেও (সদ্যবহার করবে) আর তোমরা মানুষের সাথে উত্তম ভাবে কথা বলবে, নামায প্রতিষ্ঠিত করবে, যাকাত প্রদান করবে, তৎপর তোমাদের মধ্য হতে অল্পসংখ্যক ব্যতীত তোমরা সকলেই বিমুখ হয়েছিলে, যেহেতু তোমরা অগ্রাহ্যকারী ছিলে। (সূরা বাক্বারা-৮৩)

মাসআলা-১৮৫ঃ উত্তরাধিকারীদের মাঝে সম্পদ বন্টনের সময় যদি কোন বিধবা বা গরীব মিসকীন চলে আসে তাহলে তাদেরকেও কিছু দেয়া উচিতঃ

﴿وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُوا الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينُ فَأَرْزُقُوهُمْ مِنْهُ  
وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا﴾ (৮)

অর্থঃ “আর যখন বন্টনের সময় স্বজনরা, পিতৃহীনরা, দরিদ্ররা উপস্থিত হয়, তখন তাথেকে তাদেরকেও জীবিকা দান কর এবং তাদের সাথে সজ্ঞাবে কথা বল। (সূরা নিসা-৮)

মাসআলা-১৮৬ঃ বিধবাকে সাহায্য করা সং আমলের অন্তর্ভুক্তঃ

নোটঃ (১) এ সংক্রান্ত আয়াতটি ৫১১ নং মাসআলা দ্রঃ

- (২) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ মিসকীন এবং বিধবাদের সাহায্যকারীদের সোয়াব আল্লাহর পথে জিহাদকারীদের সমান, বা ঐ ব্যক্তির সোয়াবের সমান যে ধারাবাহিকভাবে দিনে রোযা রাখে এবং রাতে ধারাবাহিকভাবে জাগরণ করে। (বোখারী)

## حقوق الأقارب

### আত্মীয়দের অধিকারসমূহ

মাসআলা- ১৮৭ঃ নিকট আত্মীয়দেরকে অর্থনৈতিকভাবে সাহায্য করা অনেক সোয়াবের কাজঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ২১৪নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-১৮৮ঃ নিকট আত্মীয়দের প্রতি অনুগ্রহ করার জন্য নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ১৯১ নং মাসআলা দ্রঃ।

বিঃদ্রঃ নিকট আত্মীয় অর্থনৈতিক সাহায্যের মোখাপেক্ষী হলে তাকে অর্থনৈতিকভাবে সাহায্য করা উচিত, আর যদি অর্থনৈতিক সাহায্যের মুখাপেক্ষী না হয় তাহলে তার দুঃখ আনন্দে অংশীদার হওয়া উচিত, তার ভাল মন্দের খবর নেয়া, তার সাথে সম্পর্ক রাখাও তাদের অধিকারের অন্তর্ভুক্ত।

মাসআলা-১৮৯ঃ আত্মীয়দের অধিকার আদায় করলে আল্লাহ সন্তুষ্ট হনঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ২১৮ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-১৯০ঃ আত্মীয়দের অধিকার আদায় না করা কিয়ামতের দিন ক্ষতির কারণ হবেঃ

﴿الَّذِينَ يَتَّقُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ

يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ﴾ (১৭)

অর্থঃ“আর যারা আল্লাহর সাথে দৃঢ়ভাবে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হওয়ার পর তা ভঙ্গ করে এবং ঐসব সম্বন্ধ ছিন্ন করে যা অবিচ্ছিন্ন রাখতে আল্লাহ নির্দেশ দিয়েছেন এবং যারা পৃথিবীতে বিবাদের সৃষ্টি করে তারাই পূর্ণ ক্ষতিগ্রস্ত। (সূরা বাক্বারা-২৭)

নোটঃ নিকট আত্মীয়দের মধ্যে সর্বপ্রথম আসবে আপন ভাই বোন এবং এরপর আসবে স্ত্রীর অনুযায়ী অন্যান্য আত্মীয়রা।

## حقوق الجيران

### প্রতিবেশিদের অধিকার সমূহঃ

মাসআলা-১৯১ঃ প্রতিবেশি আত্মীয় হোক আর অনাত্মীয় তার সাথে ভাল ব্যবহার করার জন্য নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

﴿وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَنًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ  
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ  
بِالْجُنُبِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ  
مُخْتَالًا فَخُورًا﴾ (৩৭)

অর্থঃ “আর উপাসনা কর আল্লাহর শরীক কর না তাঁর সাথে অন্য কাউকে, পিতা-মাতার সাথে সৎ ও সদয় ব্যবহার কর এবং নিকট আত্মীয়, এতীম মিসকীন, প্রতিবেশি, অসহায় মুসাফির এবং নিজের দাস-দাসীর প্রতিও। (সূরা নিসা-৩৬)

নোটঃ হাদীসে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) প্রতিবেশির প্রতি সদব্যবহারের ব্যাপারে কঠোরতা আরোপ করেছেন।

\* এসম্পর্কে কিছু হাদীস নিম্ন প্রদান করা হলঃ

- ১) আল্লাহর কসম ঐ ব্যক্তি মোমেন নয়, আল্লাহর কসম ঐ ব্যক্তি মোমেন নয়, আল্লাহর কসম ঐ ব্যক্তি মোমেন নয়, জিজ্ঞেস করা হল ইয়া রাসূলুল্লাহ কে? তিনি বললেনঃ ঐ ব্যক্তি যার প্রতিবেশি তার অনিষ্টতা থেকে নিরাপদ নয়। (বোখারী)
- ২) ঐ ব্যক্তি জান্নাতে যাবে না যার প্রতিবেশি তার অনিষ্টতা থেকে নিরাপদ নয়। (বোখারী)
- ৩) জিবরীল (আঃ) প্রতিবেশি সম্পর্কে আমাকে বারবার সতর্ক করতে ছিল এমন কি আমার মনে হচ্ছিল যে একজন প্রতিবেশিকে অপরাধের ওয়ারিস করে দেয়া হবে। (মুসলিম)
- ৪) সত্যুর কসম যার হাতে আমার প্রাণ! কোন ব্যক্তি ততক্ষণ মোমেন হতে পারবে না যতক্ষণ না সে তার প্রতিবেশির জন্য ঐ জিনিস পছন্দ না করবে যা সেতার নিজের জন্য পছন্দ করে। (মুসলিম)

- ৫) এক সাহাবী জিজ্ঞেস করল ইয়া রাসূলুল্লাহ্ কোন পেনাহটি সবচেয়ে বড়? তিনি বললেনঃ শিরক, সাহাবী আবার জিজ্ঞেস করল এরপর কোনটি? তিনি বললেনঃ অভাবের ভয়ে সন্তানকে হত্যা করা, সাহাবী আবার জিজ্ঞেস করল এর পর কোনটি? তিনি বললেনঃ প্রতিবেশির স্ত্রীর সাথে ব্যভিচার করা : (বোখারী ও মুসলিম)
- ৬) প্রতিবেশির স্ত্রীর সাথে ব্যভিচার করা অন্য দশজন নারীর সাথে ব্যভিচার করার চেয়েও মারাত্মক। (মোসনাদ আহমদ, ত্বাবারানী)
- ৭) ঐ ব্যক্তি আমার প্রতি ঈমান আনে নাই যে, রাতভর আরাম করে ঘুমাল অথচ তার প্রতিবেশি ক্ষুধার্ত অবস্থায় আছে আর সে এব্যাপারে অবগত। (ত্বাবারানী)
- ৮) কোন মুসলমান নারী তার প্রতিবেশিকে তুচ্ছ মনে করবে না এবং তাকে হাদীয়া পাঠাবে যদিও বকরীর পাই হোক না কেন। (বোখারী, মুসলিম)

## حقوق الاحياء

### বন্ধুদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-১৯২ঃ বন্ধুদের একে অপরের ঘরে বিনা অনুমতিতে যাতায়াত করা নিষেধঃ

মাসআলা-১৯৩ঃ বন্ধুদের ঘরে প্রবেশ করার আগে তাদের সন্তুষ্ট চিন্তে অনুমতি নিতে হবেঃ

মাসআলা-১৯৪ঃ বন্ধুদের ঘরে প্রবেশ করার আগে উঁচু আওয়াজে সালাম দিতে হবেঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا  
وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾﴾

অর্থঃ “হে মুমিনগণ, তোমরা নিজেদের গৃহ ব্যতীত অন্যগৃহে প্রবেশ কর না, যে পর্যন্ত না আলাপ পরিচয় না কর এবং গৃহবাসীদেরকে সালাম না কর। এটাই তোমাদের জন্য উত্তম যাতে তোমরা স্মরণ রাখ। (সূরা নূর-২৭)

মাসআলা-১৯৫ঃ বাড়ীর মালিক কোন কারণে যদি সময় দিতে নাচায় তাহলে মনে কোন কষ্ট না নিয়ে ফিরে যেতে হবেঃ

﴿فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ازْجِعُوا  
فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾﴾

অর্থঃ “যদি তোমরা গৃহে কাউকে নাপাও তবে অনুমতি গ্রহণ নাকরা পর্যন্ত সেখানে প্রবেশ করবে না, যদি তোমাদেরকে বলা হয় ফিরি যাও তাহলে ফিরে যাবে। এতে তোমাদের জন্য অনেক পবিত্রতা আছে এবং তোমরা যা কর আল্লাহ তা ভালভাবে জানেন। (সূরা নূর-২৮)

## حقوق الضيوف

### মেহমানদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-১৯৬ঃ নিজের অবস্থা অনুযায়ী মেহমানদারী করা ওয়াজিবঃ

﴿ هَلْ أُنَبِّئُكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ﴿٢٥﴾ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ﴿٢٦﴾ فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٧﴾ ﴾

অর্থঃ “তোমার নিকট ইবরাহীমের সম্মানিত মেহমানদের বৃত্তান্ত এসেছে কি? যখন তারা তাঁর নিকট উপস্থিত হয়ে বললঃ সালাম। উত্তরে সে বললঃ সালাম। এরাতো অপরিচিত লোক অতঃপর ইবরাহিম(আঃ) তার স্ত্রীর নিকট গেল এবং একটি ভাজা মাংসল গো-বৎস নিয়ে আসল। (সূরা যারিয়াত ২৪-২৬)

মাসআলা-১৯৭ঃ মেহমানদের সম্মান এবং সেবা করা ওয়াজিবঃ

﴿ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ قَالَ يَنْقَوْمُ ﴿٧٨﴾ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ﴿٧٩﴾ ﴾

অর্থঃ “আর তার কাউম তার নিকট ছুটে আসল এবং তারা পূর্ব হতে কুকার্যসমূহ করেই আসছিল, লূত (আঃ) বললঃহে আমার কাউম! আমার এই কন্যারা রয়েছে, এরা তোমাদের জন্য অতি উত্তম, অতএব তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার মেহমানদের সামনে আমাকে অপমানিত কর না, তোমাদের মধ্যে কি সুবোধ কোন লোক নেই? (সূরা হুদ-৭৮)

নোটঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি আল্লাহ এবং পরকালের প্রতি বিশ্বাস রাখে তার উচিত মেহমানের সম্মান করা। (বোখারী)

## حقوق اليتيم

### এতীমদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-১৯৮ঃ কোরআ'ন মাজীদে এতীমদের সাথে ভাল এবং অনুগ্রহপূরায়ন আচরণ করার জন্য নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ

مُعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾

অর্থঃ “যখন আমি বানী ইসরাঈলের কাছ থেকে অঙ্গীকার নিলাম যে, তোমরা আল্লাহ ব্যতীত কারো উপাসনা করবে না, পিতা-মাতা আত্মীয়-স্বজন, এতীম ও দীন-দরিদ্রদের সাথে সদ্ব্যবহার করবে, মানুষকে সৎ কথাবার্তা বলবে, নামায প্রতিষ্ঠা করবে, যাকাত দিবে, তখন সামান্য কয়েক জন ব্যতীত তোমরা মুখ ফিরিয়ে নিলে, তোমরাই অগ্রায্যকারী। (সূরা বাক্বারা-৮৩)

মাসআলা-১৯৯ঃ যতক্ষণ পর্যন্ত এতীমরা প্রাপ্ত বয়স্ক নাহয় ততক্ষণ পর্যন্ত এতীমদের ওয়ারিসদের উচিত তাদের সম্পদ সংরক্ষণ করা, আর যখন এতীম তার সম্পদ সংরক্ষণ করার উপযুক্ত হবে তখন আমনতদারীর সাথে তাদের সম্পদ তাদের নিকট হস্তান্তর করা উচিতঃ

﴿وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَن يَكْبَرُوا وَمَن كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَن كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ

حَسِيبًا ﴿٩٦﴾

অর্থঃ “আর এতীমদের প্রতি বিশেষভাবে নজর রাখবে, যতক্ষণ না তারা বিয়ের বয়সে পৌঁছে, যদি তাদের মধ্যে বুদ্ধি-বিবেচনার উন্মেষ আঁচ করতে পার, তবে তাদের সম্পদ তাদের



হাতে অর্পণ করতে পার, এতীমের মাল প্রয়োজনাতিরিক্ত খরচ কর না, বা তারা বড় হয়ে যাবে মনে করে তাড়াতাড়ি খেয়ে ফেল না, যারা স্বচ্ছল তারা অবশ্যই এতীমের মাল খরচ করা থেকে বিরত থাকবে, আর যে অভাবগ্রস্ত সে সঙ্গত পরিমাণ থেকে পারবে, যখন তাদের সম্পদ তাদের নিকট প্রত্যাপন্ন কর তখন সাক্ষী রাখবে, অবশ্য আল্লাহ্‌ই হিসাব নেয়ার ব্যাপারে যথেষ্ট। (সূরা নিসা-৬)

মাসআলা-২০০ঃ যে ব্যক্তি এতীম মেয়েদেরকে বিয়ে করবে তাদের জন্য ওয়াজিব তাদের অধিকার এমনভাবে আদায় করা যেভাবে অন্য নারীদের অধিকার আদায় করা হয়, অন্যথায় তাদেরকে বিয়ে করবে নাঃ

﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِسُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَنِّي وَتِلْكَ

وَرُبْعٌ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُعَدِلُوا فَوَاحِدَةٌ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ﴿٢﴾﴾

অর্থঃ “আর যদি তোমরা ভয় কর যে এতীম মেয়েদের হক যথাযথভাবে পূরণ করতে পারবে না, তবে সেসব মেয়েদের মধ্য থেকে যাদেরকে ভাল লাগে তাদেরকে বিয়ে কর, দুই, তিন বা চারটি পর্যন্ত। (সূরা নিসা-৩)

মাসআলা-২০১ঃ এতীমের সম্পদ অবৈধভাবে ভক্ষণকারী তার পেটে জাহান্নামের আগুন ভরছেঃ

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا

وَسَيَصْلُونَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾﴾

অর্থঃ “যারা এতীমদের অর্থ সম্পদ অন্যায় ভাবে খায়, তারা নিজেদের পেটে আগুনই ভর্তি করছে এবং সত্ত্বরই তারা জাহান্নামে প্রবেশ করবে। (সূরা নিসা-১০)

মাসআলা-২০২ঃ এতীমদেরকে তাদের সম্পদ ফেরত দেয়ার সময় পূর্ণ আমনতদারী এবং স্বীনদারী রক্ষাকরে তা হস্তান্তর করা উচিত, তাদের ভাল সম্পদগুলোকে নিজেদের নিম্নমানের সম্পদের সাথে পরিবর্তন করা বা তাতে কম বেশি করা বড় গোনাহঃ

﴿وَأَتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَيْرَ بِالْطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ

كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٢﴾﴾

অর্থঃ“ এতীমদেরকে তাদের সম্পদ বুঝিয়ে দাও, খারাপ সম্পদের সাথে ভাল সম্পদ অদল-বদল কর না, আর তাদের ধন-সম্পদ নিজেদের ধন-সম্পদের সাথে সংমিশ্রিত করে তা গ্রাস কর না, নিশ্চয় এটা বড়ই মন্দ কাজ। (সূরা নিসা-২)

মাসআলা-২০৩ঃ কোন এতীমের অভিযন্তার না দেখে তার সাথে ভাল আচরণ করা উচিতঃ

﴿ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ① ﴾

অর্থঃ“সুতরাং আপনি এতীমদের প্রতি কঠোর হবেন না। (সূরা জোহা-৯)

মাসআলা-২০৪ঃএতীম যদি ক্ষুধার্ত এবং অভাবী হয় তাহলে তাকে খাবার দেয়া এবং সাহায্য করা উচিতঃ

﴿ وَطُغْمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حَيْثُ مَسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ⑧ إِنَّمَا تُطْعَمُونَ لُوحِيهِ اللَّهِ لَا تُرِيدُ

مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا ⑨ ﴾

অর্থঃ“তারা আল্লাহর হেমে অভাবগ্রস্ত, এতীম ও বন্দীকে আহার্য দান করে, তারা বলে কেবল আল্লাহর সন্তুষ্টির জন্য আমরা তোমাদেরকে আহার্য দান করি এবং তোমাদের নিকট কোন পতিদান বা কৃতজ্ঞতা কামনা করি না। (সূরা দাহার-৮,৯)

মাসআলা-২০৫ঃ এতীমদেরকে সম্মান দেয়া উচিতঃ

﴿ كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ⑩ ﴾

অর্থঃ“এটা অমূলক বরং তোমরা এতীমকে সম্মান কর না। (সূরা ফজর-১৭)

মাসআলা-২০৬ঃনিকট আত্মীয় এতীমদের প্রতি বিশেষ খেয়াল রাখা উচিতঃ

﴿ فَلَا أَفْنَحَمُ الْعَقَبَةَ ⑪ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ⑫ فَكَرَقَبَةُ ⑬ أَوْ إِطْعَمٌ فِي يَوْمٍ

ذِي مَسْغَبَةٍ ⑭ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ⑮ أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ⑯ ﴾

অর্থঃ “কিন্তু সে গিরি সংকটে প্রবেশ করল না, তুমি কি জান যে, গিরি সংকট কি? এটা হচ্ছে দাসকে মুক্তি প্রদান, অথবা দুর্বিষেকের দিনে আহার্য দান, পিতৃহীন আত্মীয়কে অথবা ধূলায় লুপ্তিত দরিদ্রকে। (সূরা বালাদ-১১,১৬)

মাসআলা-২০৭ঃসরকারের উচিত গনীমতের মাল থেকে কিছু মাল এতীমদের লালন-পালনে ব্যয় করাঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ২৫০ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-২০৮ঃ এতীমদের প্রতি যুলুম ঐ ব্যক্তিই করে যে পরকালকে অস্বীকার করেঃ

﴿أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالذِّبِّ ﴿١﴾ فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ﴿٢﴾ وَلَا يَحْضُرُ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ﴾

অর্থঃ “তুমি কি দেখেছ তাকে যে কর্মফলকে মিথ্যা বলে থাকে? সেতো ঐ ব্যক্তি যে পিতৃহীনকে রূঢ়ভাবে তাড়িয়ে দেয় এবং সে অভাবগ্রস্তকে খাদ্যদানে উৎসাহ প্রদান করে না। (সূরা মাউন-১,৩)

নোটঃ

- (১) এতীমদের সাথে ভাল ব্যবহার করা সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ আমি এবং এতীমের লালন-পালন কারী এভাবে জান্নাতে থাকবে, এরপর রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) তাঁর মধ্যম আঙ্গুল এবং শাহাদাত আঙ্গুল একত্রিত করে দেখালেন। (বোখারী)
- (২) অন্য এক হাদীসে বর্ণিত হয়েছে, তিনি বলেছেনঃ মুসলমানদের ঘর সমূহের মধ্যে সর্বোত্তম ঐ ঘর যেখানে কোন এতীম থাকে এবং তার সাথে ভাল ব্যবহার করা হয়, আর সবচেয়ে নিকৃষ্ট ঘর ঐটি যেখানে কোন এতীম থাকে আর তার সাথে খারাপ ব্যবহার করা হয়। (ইবনু মাযা)

\*\*\*

## حقوق المساكين

### মিসকীনদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-২০৯ঃ মিসকীন এবং অভাবীদের অধিকার যারা আদায় করে না তাদের কাছ থেকে আল্লাহ তাঁর নে'মতসমূহকে উঠিয়ে নেনঃ

﴿ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَصَّالُونَ ﴿١٦﴾ بَلْ نَحْنُ مُعْرَمُونَ ﴿١٧﴾ ﴾

অর্থঃ “অতঃপর তারা চলল নিম্ন স্তরে কথা বলতে বলতে, অদ্য যেন তোমাদের নিকটে কোন অভাবগ্রস্ত ব্যক্তি প্রবেশ করতে না পারে, অতঃপর তারা নিবৃত্ত করতে সক্ষম, এই বিশ্বাস নিয়ে প্রভাতকালে বাগানে যাত্রা করল, অতঃপর তারা যখন বাগানের অবস্থা প্রত্যক্ষ করল, তারা বললঃ আমরা তো দিশা হারিয়ে ফেলেছি, না আমরা তো বঞ্চিত। (সূরা কালাম-২৬, ২৭)

মাসআলা-২১০ঃ মিসকীন এবং অভাবীদের অধিকারসমূহ আদায় না করা জাহান্নামে যাওয়ার কারণসমূহের মধ্যে একটি কারণঃ

﴿ مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ﴿١٢﴾ قَالُوا لَوْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ﴿١٤﴾ ﴾

﴿ وَكُنَّا نَحُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ﴿١٥﴾ وَكُنَّا نَكْذِبُ بَيَّوْمِ الدِّينِ ﴿١٦﴾ حَتَّىٰ أَتَيْنَا الْبَقِيَّةَ ﴿١٧﴾ ﴾

﴿ ١٧ ﴾

অর্থঃ “তোমাদেরকে কিসে সাকার (জাহান্নামে) নিক্ষেপ করেছে? তারা বলবেঃ আমরা নামাযীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলাম না, আমরা অভাবগ্রস্তদেরকে আহাৰ্য দান করতাম না এবং আমরা সমালোচনাকারীদের সাথে সমালোচনায় নিমগ্ন থাকতাম, আমরা কর্মফল দিবস অস্বীকার করতাম, আমাদের নিকট মৃত্যুর আগমন পর্যন্ত। (সূরা মুদ্দাসসির-৪২, ৪৭)

মাসআলা-২১১ঃ সরকারের উচিত গনীমতের মাল থেকে কিছু মাল মিসকীন এবং অভাবীদের উন্নয়নে খরচ করাঃ

নোটঃএসংক্রান্ত আয়াতটি ২২১ নং মাসআলায় দ্রঃ।

মাসআলা-২১২ঃ আদায়কৃত যাকাতের মাল ব্যয়করার ক্ষেত্রসমূহের মধ্যে মিসকীনদেরকে সাহায্যকরাও একটি ক্ষেত্রঃ

নোটঃএসংক্রান্ত মাসআলাটি ২১৪ নং মাসআলায় দ্রঃ।

মাসআলা-২১৩ঃযাকাত ব্যতীত দান খয়রাত ইত্যাদি থেকে মিসকীন এবং অভাবীদেরকে দানকারী সত্যিকার অর্থে মোমেনঃ

নেটঃ

- (১) এসংক্রান্ত আয়াতটি ২১৪ নং মাসআলা দ্রঃ।
- (২) মিসকীন এবং অভাবীদের অধিকারের গুরুত্বের কথা বর্ণনা করতে গিয়ে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃবিধবা এবং মিসকীনদের লালন-পালনকারী আল্লাহর পথে জিহাদকারীর ন্যায় সোয়াব পাবে। (বোখারী)
- (৩) সর্বোত্তম দান এই যে, তুমি কোন ক্ষুধার্তকে তার পেট ভরে আহার করাবে। (বাইহাকী)
- (৪) এক হাদীসে বর্ণিত হয়েছে, কিয়ামতের দিন আল্লাহ এক ব্যক্তিকে জিজ্ঞেস করবেন যে আদম সন্তান আমি তোমার নিকট অন্য চেয়েছিলাম তুমি আমাকে অন্য দেওনি, ঐ ব্যক্তি বলবে : হে আল্লাহ তুমিতো সকলের পালনকর্তা আমি তোমাকে কি করে অন্য দিব? আল্লাহ বলবেনঃ তোমার কি মনে নেই যে, আমার অমুক বান্দা তোমার নিকট খাবার চেয়েছিল অথচ তুমি তাকে খাবার দেওনি, যদি তুমি তাকে খাবার দিতা তাহলে এর সোয়াব আমার নিকট পেতে। এমনি ভাবে অপর এক ব্যক্তিকে জিজ্ঞেস করবেন যে, আমি তোমার নিকট পানি চেয়েছিলাম অথচ তুমি আমাকে পানি পান করাও নি? ঐ ব্যক্তি বলবেঃ হে আল্লাহ তুমি স্বয়ং বিশ্ব পালনকর্তা আমি তোমাকে কি করে পানি পান করাব? আল্লাহ বলবেনঃ আমার অমুক বান্দা তোমার নিকট পানি চেয়েছিল কিন্তু তুমি তাকে পানি পান করাওনি, যদি তুমি তাকে পানি পান করাতে তাহলে তার সোয়াব আমার নিকট পেতে (মুসলিম)
- (৫) যে ব্যক্তি কোন বস্ত্রহীন মুসলমানকে কাপড় পরিধান করাবে আল্লাহ তাকে জান্নাতে সবুজ রেশম পরিধান করাবেন, যে ব্যক্তি কোন ক্ষুধার্ত মুসলমানকে আহার করাবে আল্লাহ তাকে জান্নাতের মেওয়া খাওয়াবেন, যে ব্যক্তি কোন পিপাসার্ত মুসলমানকে পানি পান করাবে আল্লাহ তাকে জান্নাতে উন্নতমানের শরাব পান করাবেন। (আবুদাউদ, তিরমিযী)
- (৬) যে মুসলমান অপর মুসলমানকে বস্ত্র পরিধান করায় সে ততক্ষণ পর্যন্ত আল্লাহর হেফাযতে থাকবে যতক্ষণ পর্যন্ত ঐ কাপড় ঐশরীতে থাকবে। (আহমদ, তিরমিযী)

## حقوق السائلين

### ভিক্ষুকদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-২১৪ঃ পথিকদের চাহিদা পূরণকারী সাত্যিকার অর্থে মুমেন এবং মুস্তাকীঃ

﴿لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَءَاتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَءَاتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ﴾ (١٧٧)

অর্থঃ “তোমরা তোমাদের মুখমন্ডল পূর্ব বা পশ্চিম দিকে প্রত্যাবর্তিত কর তাতে পুণ্য নেই, বরং পুণ্য তার, যে ব্যক্তি আল্লাহ, পরকাল, ফেরেশতা, কিতাব ও নবীগণের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং তাঁরই প্রেমে আত্মীয়-স্বজন, পিতৃহীনরা, মিসকীন, মুসাফির-ভিক্ষুক ও মুক্তিকামী ক্রীতদাসদের জন্যে, আর যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত দান করে এবং যারা কৃত প্রকিজ্জা সম্পাদনকারী এবং অভাবে, রোগে-শোকে ও যুদ্ধের সময় ধৈর্যধারণকারী তারাই হল সত্যশ্রয়ী, আর তারাই পরহেযগার। (সূরা বাক্বারা-১৭৭)

মাসআলা-২১৫ঃ ধনীলোকদের সম্পদে পথিকদের অধিকার রয়েছে যা তাদের আদায় করা উচিতঃ

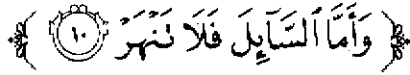
﴿وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ﴾ (١٩)

অর্থঃ “আর তাদের ধন-সম্পদে রয়েছে অভাবগ্রস্ত ও বঞ্চিতের হক। (সূরা যারিয়াত-১৯)

নোটঃ ভিক্ষুক ঐ অভাবী যারা তাদের অভাবের কথা অন্যদের সামনে পেশ করে, আর বঞ্চিত ঐ মুখাপেক্ষী যে তার অভাবের কথা অন্যদের সামনে পেশ করে না এবং মানুষও তাকে স্বচ্ছল মনে করে।

অতএব বঞ্চিত এর অর্থঃ ঐসমস্ত ব্যক্তি যারা তাদের অর্থনৈতিক মাধ্যমসমূহ থেকে বঞ্চিত হয়, যেমনঃ এতীম, বেকার, ব্যবসায় পুঞ্জী হারা হওয়া, কোন মহিলার বিধবা হয়ে যাওয়া।

মাসআলা-২১৬ঃ যদি কোন ব্যক্তি ভিক্ষকের প্রয়োজন পূরণ নাও করে তবুও ভিক্ষকের সাথে নরম স্বরে কথা বলা উচিত এবং তাকে ধমক দেয়া নিষেধঃ



অর্থঃ “আর ভিক্ষকদেরকে ধমক দিবে না”। (সূরা জোহা-১০)

নোটঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর বাণীঃ

- (১) যে ব্যক্তি তার কোন মুসলমান ভায়ের প্রয়োজন পূরণ করার চেষ্টা করে আল্লাহ তার প্রয়োজন পূরণ করবেন। (বোখারী ও মুসলিম)
- (২) ঐ ব্যক্তি সবচেয়ে নিকট যার নিকট আল্লাহর নাম নিয়ে কিছু চাওয়া হল অথচ সে কিছুই দিল না। (আহমদ)
- (৩) ভিক্ষক কে কিছু না কিছু দান কর চাই তা বকরীর ক্ষুরই হোক না কেন। (আহমদ, আবুদাউদ, তিরমিযী)
- (৪) খুশী মনে কোন মুসলমান ভায়ের পাত্রে পানি দেয়াও সোয়াবের কাজ। (আহমদ, তিরমিযী)
- (৫) সৎ লোকদের নিকট চাও। (আবুদাউদ, নাসায়ী)

## حقوق المسافرين মুসাফিরগণের অধিকার

মাসআলা-২১৭ঃ মুসাফিরদের সাথে সদাচরণ করতে হবেঃ

নোটঃএসংক্রান্ত আয়াতটি ১৯২ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-২১৮ঃআল্লাহর সন্তুষ্টি অর্জনের লক্ষ্যে মুসাফিরদের অধিকার আদায়কারী পরকালে মুক্তি পাবেঃ

﴿ فَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ، وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴾ (৩৮)

অর্থঃ“আত্মীয়-স্বজনদেরকে তাদের প্রাপ্য দিন এবং মিসকীন ও মুসাফিরদেরকেও, এটা তাদের জন্য উত্তম যারা আল্লাহর সন্তুষ্টি কামনা করে, তারাই সফল কাম। (সূরা রুম-৩৮)

মাসআলা-২১৯ঃ পাথেয়হীন মুসাফিরদেরকে সাহায্যকরা ঈমান এবং তাকওয়ার নিদর্শনঃ

নোটঃএসংক্রান্ত আয়াতটি ২১৪ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-২২০ঃ ধনী মুসাফির যদি কোন কারণে পাথেয়হীন হয়ে যায় তাহলে যাকাতের মাল থেকে তাকে সাহায্য করা যাবে

﴿ إِنَّمَا الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغُرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنَ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴾ (১০)

অর্থঃ “যাকাত হল কেবল ফকীর, মিসকীন, যাকাত আদায়কারী ও যাদের চিত্ত আকর্ষণ প্রয়োজন তাদের হক এবং তা দাস মুক্তির জন্যে, ঋণগ্রস্তদের জন্যে আল্লাহর পথে জিহাদকারীদের জন্যে এবং মুসাফিরদের জন্যে, এটিই হল আল্লাহর নির্ধারিত বিধান। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়। (সূরা তাওবা-৬০)



মাসআলা-২২১ঃ সরকারের গনীমতের মাল থেকে কিছু অংশ মুসাফিরদের সাহায্যার্থে ব্যয় করা উচিতঃ

﴿وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ  
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَآبِ السَّبِيلِ إِن كُنتُمْ أَمْنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَنَا عَلَىٰ  
عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّلَاقِ الْجَمْعَانِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾﴾

অর্থঃ “আর একথাও জেনে রাখ যে, কোন বস্তু সামগ্রীর মধ্য থেকে যা কিছু তোমরা গনীমত হিসেবে পাবে, তার এক পঞ্চমাংশ হল আল্লাহর জন্য, রাসূলের জন্য, তাঁর নিকট আত্মীয়-স্বজনের জন্য এবং এতীম অসহায় ও মুসাফিরের জন্য, যদি তোমাদের বিশ্বাস থাকে আল্লাহর উপর এবং সে বিষয়ের উপর যা আমি আমার বান্দার উপর অবতীর্ণ করেছি ফায়সালা দিনে, যেদিন সম্মুখীন হয়ে যায় উভয় সেনাদল, আর আল্লাহ সবকিছুর উপরই ক্ষমতাশীল। (সূরা আনফাল-৪১)

নোটঃ নিকট আত্মীয় বলতে বুঝায় রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর জিবদশায় তাঁর নিকট আত্মীয় এবং তাঁর মৃত্যুর পর ঐ বংশের গরীব লোকেরা। (তাফহিমুল কোরআন)

মাসআলা-২২২ঃ মুসাফিরদের হক আনন্দ চিন্তে আদায় করা চাইঃ

﴿وَأَتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمَسْكِينِ وَآبِ السَّبِيلِ وَلَا بُدْرَ تَبَذِيرًا ﴿٤٢﴾﴾

অর্থঃ “আত্মীয়-স্বজনকে তার হক দান কর এবং অভাবগ্রস্ত ও মুসাফিরদেরকেও এবং কিছুতেই অপব্যয় কর না। (সূরা বানী ইসরাঈল-২৬)

নোটঃ

- (১) মুসাফিরের অধিকার আদায় করা বলতে শুধু অর্থনৈতিক সাহায্যকেই বুঝায় না বরং তাদের অধিকারের অন্তর্ভুক্ত এটাও যে, মুসাফির অসুস্থ হয়ে গেলে তার দেখা শোনা করা, পথিমধ্যে রাত হয়ে গেলে তার থাকা-খাওয়ার ব্যবস্থা করা, কোন সমস্যায় পতিত হলে তাকে সাহায্যহীনভাবে ছেড়ে না দেয়া বরং তার কষ্ট দূর করার জন্য চেষ্টা করা উচিত।
- (২) হাদীসে বর্ণিত হয়েছে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি জঙ্গলে তার প্রয়োজনের অতিরিক্ত পানি রাখে আর সে কোন মুসাফিরকে পানি নিতে বাধা দেয়, (অথচ অন্য কোথাও পানির ব্যবস্থা নেই) তখন কিয়ামতের দিন আল্লাহ তার সাথে কোন কথা বলবেন না, তার প্রতি করুনার দৃষ্টিতে তাকাবেন না, বরং তাকে বেদনাদায়ক শাস্তিতে নিষ্পেক্ষ করবেন। (মুসলিম, কিতাবুল ইমান)

## حقوق العبيد

### অধিনস্ত লোকদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-২২৩ঃ অধিনস্ত লোকদের সাথে অনুগ্রহপরায়ন হওয়ার জন্য নির্দেশ দেয়া হয়েছেঃ

﴿وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَنًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ  
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ  
بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ  
مُخْتَالًا فَخُورًا﴾ (৩১)

অর্থঃ“ আর উপাসনা কর আল্লাহর, শরীক করনা তার সাথে অপর কাউকে, পিতা-মাতার সাথে সৎ ও সদয় ব্যবহার কর এবং নিকট আত্মীয়, এতীম-মিসকীন, প্রতিবেশী অসহায় মুসাফির এবং নিজের দাস-দাসীর প্রতিও। নিশ্চয়ই আল্লাহ্ অপছন্দ করেন না দাম্ভিক গর্বিত জনকে। (সূরা নিসা-৩৬)

মাসআলা-২২৪ঃ যদি কোন ক্রীতদাস মুক্তির জন্য মনিবের সাথে চুক্তি বন্ধ হতে চায় তাহলে তাকে চুক্তি বন্ধ করা উচিতঃ

মাসআলা-২২৫ঃ সাধারণ মুসলমানদের উচিত চুক্তি বন্ধ ক্রীতদাসদেরকে মুক্তির জন্য অর্থনৈতিক সাহায্য করাঃ

﴿وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ  
الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا وَءَاتُوهُمْ مِّن مَّالِ اللَّهِ  
الَّذِي ءَاتَاكُمْ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْإِغْيَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّنَبْتِنَا أَعْرَضَ الْحَيَوةِ  
الدُّنْيَا وَمَن يُكْرِهِنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ (৩২)

অর্থঃতোমাদের অধিকার ভুক্তদের মধ্যে যারা মুক্তির জন্যে লিখিত চুক্তি করতে চায়, তাদের সাথে তোমরা লিখিত চুক্তি কর যদি জান যে, তাদের মাঝে কল্যাণ আছে, তারা তোমাদেরকে যে অর্থ -কড়ি দিয়েছে, তা থেকে তাদেরকে দান কর । (সূরা নূর-৩৩)

নোটঃ চুক্তি বদ্ধ হওয়ার অর্থ হলঃ মনিব এবং ক্রীতদাসের মধ্যে এমন লিখিত চুক্তি যা পূর্ণ করার পর ক্রীতদাস মনিবের গোলামী থেকে স্বাধীন হতে পারবে ।

\*\*\*

## حقوق صاحب الجنب

### প্রতিবেশি

মাসআলা-২২৬ঃ প্রতিবেশির প্রতি অনুগ্রহ করার নির্দেশঃ

অর্থঃ“আর উপাশনা কর আল্লাহর , শরীক কর না তার সাথে অন্য কাউকে, পিতা-মাতার সাথে সৎ ও সদয় ব্যবহার কর এবং নিকট আত্মীয় এতীম-মিসকীন, প্রতিবেশি, অসহায় মুসাফির এবং নিজের দাস-দাসীর প্রতিও ।

নোটঃ

- (১) এখানে প্রতিবেশী বলতে বোঝানো হয়েছে এক সাথে চলা চলকারী বন্ধু বা এমন অপরিচিত লোক যার সাথে বাসে, ট্রেনে, গ্লেনে ভ্রমণের সময় বসা হয়েছে, বা বাজারে সাক্ষাৎ হয়েছে, বা দোকানে দেখা হয়েছে, বা কোন বিশ্রামের স্থানে দেখা হয়েছে, এ ধরনের প্রতিবেশিকে বুঝানো হয়েছে ।
- (২) প্রতিবেশির সাথে অনুগ্রহ করার অর্থ হল তাকে কোন ধরনের কষ্ট না দেয়া, তার প্রয়োজনের প্রতি লক্ষ্য রাখা, তার কোন সাহায্যের দরকার হলে তাকে সাহায্য করা ।(এব্যাপারে আল্লাহই ভাল জানেন) ।

\*\*\*

## حقوق الميت

### মৃতের অধিকার সমূহ

মাসআলা-২২৭ঃ মৃত্যুর পর মৃতের রেখে যাওয়া সম্পদ থেকে সর্বপ্রথম তার বৈধ অসিয়তসমূহ পূরণ করতে হবে, এরপর তার ঋণ পরিশোধ করতে হবে, এরপর তার রেখে যাওয়া সম্পদ তার ওয়ারিসদের মাঝে বন্টন করতে হবেঃ

﴿ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرِ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ



অর্থঃ “আর যদি ততোধিক থাকে তাহলে তারা এক তৃতীয়াংশে অংশীদার হবে, ওছিয়তের পর, যা করা হয়, অথবা ঋণ(আদায়ের) পর, এমতাবস্থায় যে অপরের ক্ষতি না করে, এবিধান আল্লাহর, আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সহনশীল। (সূরা নিসা-১২)

নোটঃ মৃত ব্যক্তির অধিকার সম্পর্কিত কিছু হাদীস নিম্ন রূপঃ

- ১) মৃত ব্যক্তির উপর যদি হজ্ব ফরয হয় অথচ কোন কারণে সেতা আদায় করতে পারে নাই তাহলে তার রেখে যাওয়া সম্পদ থেকে তার পক্ষ থেকে হজ্ব করানো উচিত। (বোখারী)
- ২) মৃত ব্যক্তির আত্মীয়দের উচিত তাকে ভালভাবে কাফনের ব্যবস্থা করা। (মুসলিম)
- ৩) তার জানাযার নামাযের ব্যবস্থা করা উচিত। (বোখারী)
- ৪) তাকে দাফন করার জন্য লাসের সাথে যাওয়া উচিত। (মুসলিম)
- ৫) মৃত ব্যক্তির ভাল দিক গুলো আলোচনা করা উচিত, আর খারাপ দিকগুলো নিয়ে আলোচনা করা উচিত নয়। (নাসায়ী)
- ৬) মৃত ব্যক্তির হাডিড ভাঙ্গা উচিত নয়। (আবুদাউদ)

## حقوق الاسارى

### বন্দীদের অধিকারসমূহ

মাসআলা-২২৮ঃ বন্দীদেরকে খাবার দেয়া আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের অমলসমূহের অন্তর্ভুক্তঃ

﴿وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حَيْثُ مَسْكِنًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا﴾ (٨) إِنَّمَا نَطْعِمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ

مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا ﴿١﴾

অর্থঃ “আর আল্লাহর প্রেমে অভাব গ্রস্ত, এতীম ও বন্দীকে আহাৰ্য দান করে, তারা বলে কেবল আল্লাহর সন্তুষ্টির জন্যে আমরা তোমাদেরকে আহাৰ্য দান করি এবং তোমাদের নিকট কোন প্রতিদান ও কৃতজ্ঞতা কামনা করি না। (সূরা দাহার-৮,৯)

নোটঃ বন্দীদের অধিকার সম্পর্কিত রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কিছু হাদীস নিম্ন রূপঃ

- ১) বন্দীদের সাথে ভাল আচরণ কর। (বোখারী)
- ২) বন্দী হয়ে আসা মায়ের কাছ থেকে তার শিশুকে পৃথক করে রাখবে না। (তিরমিযী)
- ৩) গর্ভবতী বন্দী নারীর সাথে ব্যভিচার করবে না। (তিরমিযী)
- ৪) বন্দীকে ইসলাম গ্রহণের জন্য জ্বরদস্তি করবে না। (আবুদাউদ)
- ৫) যদি কোন বন্দী স্ব ইচ্ছায় মুসলমান হয়ে যায় তাহলে তাকে কাফেরদের নিকট হস্তান্তর করবে না। (আবুদাউদ)
- ৬) বন্দীকে নিরাপত্তা দেয়ার পর তাকে বিনা বিচারে হত্যা করবে না। (ইবনু মাযা)

\*\*\*

## حقوق غير المسلمين

### অমুসলিমদের অধিকার সমূহ

মাসআলা-২২৯ঃ কাফের ক্রীতদাস যদি মুসলমানদের শত্রু নাহয় আর সে মুক্তির জন্য তার মনিবের সাথে চুক্তি বন্ধ হয়, তাহলে সাধারণ মুসলমানদের উচিত তাকে মুক্ত করতে অর্থনৈতিকভাবে সাহায্য করাঃ

﴿وَالَّذِينَ يَبِغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا  
وَأَتَوْهُمْ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَيْنَاكُمْ﴾

অর্থঃ তোমাদের অধিকার ভুক্তদের মধ্যে যারা মুক্তির জন্যে লিখিত চুক্তি করতে চায়, তাদের সাথে তোমরা লিখিত চুক্তি কর যদি জান যে, তাদের মাঝে কল্যাণ আছে, তারা তোমাদেরকে যে অর্থ -কড়ি দিয়েছে, তা থেকে তাদেরকে দান কর । (সূরা নূর-৩৩)

মাসআলা-২৩০ঃ ইসলাম ও মুসলমানদের সাথে শত্রুতা রাখে না এমন কাফেরদের সাথে ভাল আচরণ করা উচিতঃ

﴿لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ  
وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ﴾

অর্থঃ “ধর্মের ব্যাপারে যারা তোমাদের বিরুদ্ধে লড়াই করেনি এবং তোমাদেরকে দেশ থেকে বের করেনি, তাদের প্রতি সদাচরণ এবং ইনসারফ করতে আল্লাহ তোমাদেরকে নিষেধ করেন না । নিশ্চয় আল্লাহ ইনসারফকারীদেরকে ভালবাসেন । (সূরা মোমতাহেনা-৮)

মাসআলা-২৩১ঃ কুফর বা শিরক ত্যাগ করার জন্য কাফের বা মোশরেকদেরকে জবরদস্তি করা নিষেধঃ

﴿لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ﴾

অর্থঃ “দ্বীনের ব্যাপারে কোন জবর দস্তি বা বাধ্য-বাধকতা নেই । (সূরা বাক্বারা-২৫৬)

নোটঃ

- ১) ইসলামী রাষ্ট্রে কাফের এবং মোশরেক বন্দী অবস্থায় তাদের কুফরী এবং শিরকী জীবন যাপন করতে পারবে।
- ২) ইসলামী রাষ্ট্রে কাফের এবং মুশরেক তাদের ভ্রাতৃ আক্বীদার (বিশ্বাসের) প্রচার করতে পারবে না।

মাসআলা-২৩২ঃ যুদ্ধ চলা কালে যদি কোন কাফের বা মোশরেক ইসলাম সম্পর্কে জানতে চায় তাহলে তাকে নিরাপত্তা দিয়ে ইসলাম সম্পর্কে বুঝাতে হবে, এরপর যদি সে ইসলাম গ্রহণ করতে না চায় তাহলে তাকে নিরাপত্তা সহ তার ঠিকানা মত পৌঁছানোর নির্দেশ রয়েছেঃ

﴿وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابْلِغْهُ  
مَأْمَنَهُ، ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ٦﴾

অর্থঃ “আর মুশরেকদের কেউ যদি তোমাদের নিকট আশ্রয় চায় তবে তাকে আশ্রয় দিবে, যাতে সে আল্লাহর বাণী শুনতে পায়, অতঃপর তাকে তার নিরাপদ স্থানে পৌঁছে দিবে, এটি এজন্য যে তারা জ্ঞান রাখে না। (সূরা তাওবা-৬)

নোটঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি কোন যিম্মিকে অন্যায়ভাবে হত্যা করল সে জান্নাতের সুম্মাণও পাবে না, অথচ জান্নাতের সুম্মাণ চল্লিশ বছরের দূরত্বের পথ থেকে পাওয়া যাবে। (বোখারী)

\*\*\*

## حقوق الحيوانات

### জন্তুদের অধিকার সমূহ

মাসআলাঃ ২৩৪ঃ বিনা কারণে কোন জন্তুকে কষ্ট দেয়া বা হত্যা করা নিষেধঃ

﴿وَتَقَعَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهَدْدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ﴾ (১০)

لَاُعَذِّبُهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَا أَذِيعَتْهُ أَوْ لِيَأْتِيَنِي بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ﴾ (১১)

অর্থঃ “সুলাইমান (আঃ) পাখীদের খোঁজ খবর নিলেন, অতঃপর বললেনঃ কি হল হুদহুদকে দেখছিনা কেন? নাকি সে অনুপস্থিত? আমি অবশ্যই তাকে কঠোর শাস্তি দিব কিংবা হত্যা করব অথবা সে উপস্থিত করবে উপযুক্ত কারণ। (সূরা নামল-২০, ২১)

﴿حَقٌّ إِذَا أَتَوْا عَلَى وَادِ التَّمَلِّ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسْكَنَكُمْ لَا

يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ﴾ (১৮)

অর্থঃ “যখন তারা পিপীলিকা অধ্যুষিত উপত্যকায় পৌঁছল তখন এক পিপীলিকা বললঃ হে পিপীলিকাদল তোমরা তোমাদের গৃহে প্রবেশ কর অন্যথায় সুলায়মান এবং তার বাহিনী অজ্ঞাতসারে তোমাদেরকে পিষ্ট করে ফেলবে। (সূরা নামল-১৮)

নোটঃ জন্তুদের অধিকার সম্পর্কে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কিছু বাণী দ্রঃ

- ১) যে ব্যক্তি জীবিত জন্তুর নাক, কান কতিত করল এবং তাওয়া নাকের মারাগেল, তাহলে কিয়ামতের দিন আল্লাহ তার নাক, কান কেটে দিবেন। (আহমদ)
- ২) কোন প্রাণীকে জবেহ করার সময় ছুরি ভাল করে ধার কর, ছুরি প্রাণীর কাছ থেকে আড়ালে রাখ, আর জবেহ করার সময় দ্রুত জবেহ করবে। (ইবনু মাযা)
- ৩) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) একটি গাধার চেহার দেখলেন, যার চেহারা দাগানো ছিল, আর সেখান থেকে রক্ত পড়ছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ আল্লাহ এই ব্যক্তির উপর লানত করুন যে এই প্রাণীটিকে দাগিয়েছে, এরপর বললেনঃ চেহারায় দাগও দেয়া যাবে না এবং চেহারায় মারাও যাবে না। (তিরমিযী)



- ৪) আবদুল্লাহ বিন ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহুমা) কিছু লোককে দেখতে পেলেন যে, তারা মুরগী আটকিয়ে রেখে তাতে তীর নিক্ষেপের প্রশিক্ষণ নিচ্ছে, আবদুল্লাহ বিন ওমার (রাযিয়াল্লাহু আনহুমা) বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) ঐ ব্যক্তির প্রতি লানত করেছেন যে, কোন জন্তকে নিশান করে তাতে তীর নিক্ষেপ করে। (বোখারী ও মুসলিম)
- ৫) এক মহিলা একটি বিড়ালকে আটকিয়ে রেখে তাকে কোন খাবার-দাবার দেয় নাই, আর এভাবেই বিড়ালটি মারা গেল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ বিড়ালের প্রতি যুলুম করার কারণে সে জাহান্নামী হয়েছে। (মুসলিম)
- ৬) এক ব্যক্তি সফরের সময় কুয়া থেকে পানি পান করছিল, আর ঐ কুয়ার পাশে একটি পিপাশার্ত কুকুর ছিল, লোকটি তার জুতা দিয়ে পানি উঠিয়ে কুকুরকে পান করাল, আর এ উহ্লায় আল্লাহ তার গোনাহ সমূহ ক্ষমা করে দিয়েছেন। (বোখারী)
- ৭) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি কোন পাখীকে বিনা কারণে হত্যা করে কিয়ামতের দিন ঐ পাখী চিল্লিয়ে চিল্লিয়ে বলবেঃ হে আল্লাহ্ আমুক ব্যক্তি আমাকে হত্যা করেছে, আমাকে হত্যার পেছনে তার কোন কল্যাণ ছিল না। (নাসায়ী)
- ৮) একবার সফর করার সময় কোন এক ব্যক্তির উট রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট এসে মাথা নিচু করে দিল, কিছুক্ষণ পর তিনি জিজ্ঞেস করলেন এ উটের মালিক কে? মালিক উপস্থিত হলে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ এই উটটি আমার নিকট বিক্রি করে দাও, মালিক বললঃ ইয়া রাসূলুল্লাহ্ আপনি চাইলে আমি এই উটটি আপনাকে উপহার হিসেবে দিয়ে দিব, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ না মূল কথা হল এই উটটি আমার নিকট অভিযোগ করেছে যে তাকে খাবার কম দেয়া হয় আর পরিশ্রম বেশি করানো হয়। অতএব এই জন্তটির সাথে কোমল আচরণ কর। (শরহসুননাহ)
- ৯) এক ব্যক্তি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকট উপস্থিত হল এমনাবস্থায় যে, তার চাদরের মধ্যে পাখী ছিল, সে বললঃ আমি বৃষ্কের ডালের পাশদিয়ে অতিক্রম করছিলাম এমনাবস্থায় আমি পাখীর আওয়াজ শুনতে পেলাম, তখন আমি এই বাচ্চাগুলি ধরে নিয়ে আসলাম, তখন তাদের মা এসে আমার মাথার উপর উড়তে লাগল তখন আমি চাদর খুলে দিলাম ফলে বাচ্চাগুলোর মাও এসে বসে গেল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ যেখান থেকে বাচ্চাগুলোকে ধরে নিয়ে এসেছ ওখানে বাচ্চা এবং তাদের মাকে রেখে আস। (আবুদাউদ)

## معارضة الكفر مع الاسلام في ضوء القرآن

### আল কোরআ'নের আলোকে ইসলাম ও কুফরীর দন্দ

- ১) ইহুদীরা... ফেতনাবাজ, অভিশপ্ত এবং আল্লাহর অসন্তুষ্ট জাতি
- ২) নাসারারা... পথভ্রষ্ট জাতি
- ৩) অন্যান্য মোশরেকরা মুসলমানদের নিকৃষ্ট দুষমন
- ৪) মুনাফেক ইসলামের জন্য ভয়ানক একটি দল
- ৫) নূহ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ
- ৬) হুদ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ
- ৭) সালেহ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ
- ৮) ইবরাহিম (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ
- ৯) লূত(আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ
- ১০) শুআইব (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ
- ১১) মূসা (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ
- ১২) রাসূলগণের একটি দল
- ১৩) ঈসা (আঃ) এবং ইহুদীরা
- ১৪) নবীগণের সর্দার মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এবং কোরাইশ সর্দারগণ

## اليهود... مفسدون وملعونون ومغضوبون

ইহুদীরা... ফেতনাবাজ, অভিশপ্ত এবং আল্লাহর অসন্তুষ্ট জাতি

মাসআলা-২৩৫: ইহুদীদের প্রতি আল্লাহ তা'লা অভিসম্পাত করেছেন:

﴿أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَنْ يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَنْ يَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ٥٢﴾

অর্থঃ “এরা হল ঐ সমস্ত লোক যাদের উপর আল্লাহ লা'নত করেছেন, বন্ধুত আল্লাহ যার উপর লা'নত করেন তুমি তার কোন সাহায্যকারী খুঁজে পাবে না। (সূরা নিসা-৫২)

﴿وَلَكِنَّ لَعَنَهُمُ اللَّهُ يَكْفُرْهُمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ٥٣﴾

অর্থঃ “কিন্তু আল্লাহ তাদের প্রতি অভিসম্পাত করেছেন, তাদের কুফরীর কারণে, অতএব, তারা ঈমান আনছে না, কিন্তু অতি অল্প সংখ্যক। (সূরা নিসা-৪৬)

﴿وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِن قَبْلُ

يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ

فَلَعَنَهُ اللَّهُ عَلَى الْكَافِرِينَ ٥٤﴾

অর্থঃ “যখন তাদের নিকট আল্লাহর পক্ষ থেকে কিতাব এসে পৌঁছল, যা সে বিষয়ের সত্যায়ন করে, যা তাদের নিকট রয়েছে অথচ এ কিতাব আসার পূর্বে তারা নিজেরা কাফেরদের বিরুদ্ধে বিজয়ের জন্য দোয়া করত, অবশেষে যখন তাদের নিকট পৌঁছল যাকে তারা চিনে রেখেছিল, তখন তারা তা অস্বীকার করে বসল, অতএব, অস্বীকার কারীদের উপর আল্লাহর অভিসম্পাত। (সূরা বাক্বারা-৮৯)

মাসআলা-২৩৬: ইহুদীরা সত্য থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়ার জাতি এবং সত্য গোপনকারীঃ

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ٧١﴾

অর্থঃ “হে আহলে কিতাবগণ, কেন তোমরা সত্যকে মিথ্যার সাথে সংমিশ্রণ করছ এবং সত্যকে গোপন করছ, অথচ তোমরা তা জান। (সূরা আল ইমরান-৭১)

মাসআলা-২৩৭ঃ ইহুদীরা ধোঁকাবাজ এবং চক্রান্তকারী জাতিঃ

﴿ وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ ءَامِنُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا وَجَءَ  
التَّهَارِ وَكُفُّوا ءَاخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴾ (৭২)

অর্থঃ "আর আহলে কিতাবদের একদল বললঃ মুসলমানদের উপর যাকিছু অবতীর্ণ হয়েছে, তাকে দিনের প্রথম ভাগে মেনে নাও, আর দিনের শেষ ভাগে অস্বীকার কর, হয়ত তারা মুখ ফিরিয়ে নিতে পারে। (সূরা আল ইমরান-৭২)

মাসআলা-২৩৮ঃ ইহুদীরা যালেম জাতিঃ

মাসআলা-২৩৯ঃ ইহুদীরা মানুষকে ইসলাম গ্রহণে বাধা দেয়ঃ

মাসআলা-২৪০ঃ ইহুদীরা সুদখোর জাতিঃ

মাসআলা-২৪১ঃ ইহুদীরা হালাল ও হারামের মাঝে পার্থক্য করে নাঃ

﴿ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ ءَامِنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ  
قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَكَّمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ  
الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴾ (৭০)  
﴿ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ  
اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴾ (৭১)

অর্থঃ "বস্তুতঃ ইহুদীদের জন্য আমি হারাম করে দিয়েছি বহু পুত-পবিত্র বস্তু যা তাদের জন্য হালাল ছিল, তাদের পাপের কারণে এবং আল্লাহর পথে অধিক পরিমাণে বাধা দেয়ার কারণে। আর একারণে যে, তারা সুদ গ্রহণ করত, অথচ এব্যাপারে নিষেধাজ্ঞা আরোপ করা হয়েছিল এবং একারণে যে, তারা অপরের সম্পদ ভোগ করত অন্যায়ভাবে, বস্তুতঃ আমি তাদের মধ্যে কাফেরদের জন্য তৈরী করে রেখেছি বেদনাদায়ক আযাব। (সূরা নিসা-১৬০, ১৬১)

মাসআলা-২৪২ঃ ইহুদীদের অধিকাংশ লোক সর্বদা যুলম এবং সীমালংঘনের জন্য প্রস্তুত থাকেঃ

মাসআলা-২৪৩ঃ ইহুদীদের অধিকাংশ লোক হারাম খোরঃ

মাসআলা-২৪৪ঃ ইহুদীদের দরবেশ ও পাদ্রীরা তাদের কাউমকে অপরাধ থেকে বিরত থাকতে উৎসাহিত করে নাঃ

﴿وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسْرِعُونَ فِي الْأَثْمِ وَالْعُدُونِ وَأَكْلِهِمُ الشَّحْتِ لَيْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْأَثْمَ وَأَكْلِهِمُ الشَّحْتِ لَيْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾﴾

অর্থঃ“ আর আপনি তাদের অনেককে দেখবেন যে, দৌড়ে দৌড়ে পাপে, সীমালঙ্ঘনে এবং হারামে পতিত হচ্ছে, তারা অত্যন্ত মন্দ কাজ করছে। দরবেশ ও আলেমরা কেন তাদেরকে পাপকথা বলতে এবং হারাম ভক্ষণ করতে নিষেধ করে না? তারা খুবই মন্দ কাজ করছে। (সূরা মায়দা-৬২, ৬৩)

মাসআলা-২৪৫ঃ ইহুদীরা মুসলমানদেরকে কাফের বানাতে চায়ঃ

অর্থঃ“আহলে কিতাবদের অনেকেই প্রতিহিংসা বশতঃ চায় যে, মুসলমান হওয়ার পর তোমাদেরকে যেকোন উপায়ে কাফের বানাতে, তাদের নিকট সত্য প্রকাশিত হওয়ার পর (তারা এটা চায়) যাক তোমারা আল্লাহর নির্দেশ আসা পর্যন্ত তাদেরকে ক্ষমা কর এবং উপেক্ষা কর, নিশ্চয় আল্লাহ সব কিছুর উপর ক্ষমতা বান।

মাসআলা-২৪৬ঃ ইহুদীরা চক্রান্তকারী জাতিঃ

﴿وَمَكُرُوا وَمَكَّرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكِرِينَ ﴿٥٤﴾﴾

অর্থঃ“তারা ষড়যন্ত্র করছিল, আর আল্লাহ কৌশল করলেন এবং আল্লাহ শ্রেষ্ঠতম কৌশলী। (সূরা আল ইমরান-৫৪)

মাসআলা-২৪৭ঃ ইহুদীরা আল্লাহর অসন্তুষ্ট জাতিঃ

﴿يَسْمَا أَشْتَرُوا بِوَدِّ أَنْفُسِهِمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَنْ يَنْزِلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩١﴾﴾

অর্থঃ “যার বিনিময়ে তারা নিজেদেরকে বিক্রি করছে তা খুবই মন্দ, যেহেতু তারা আল্লাহ যা নাযিল করছেন তা অস্বীকার করছে, এই হঠকারিতার দরুন যে, আল্লাহ স্বীয় বান্দাদের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা তার প্রতি অনুগ্রহ নাযিল করেন, অতএব, তারা ক্রোধের উপর ক্রোধ অর্জন করছে, আর কাফেরদের জন্য রয়েছে অপমানকর শাস্তি। (সূরা বাক্বারাহ-৯০)

নোটঃ ক্রোধের উপর ক্রোধ অর্জন করার অর্থহলঃ ইহুদীদের উপর আল্লাহর প্রথম গজব এজনা নাযিল হয়েছিল যে, তারা ঈসা (আঃ) কে অস্বীকার করছিল এবং তাওরাতের পরিবর্তন করেছিল, দ্বিতীয় গজব অবতীর্ণ হয়েছিল এজন্য যে, তারা কোরআন মাজীদ এবং নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে অস্বীকার করেছিল। (আল্লাহই এব্যাপারে ভাল জানেন)।

মাসআলা-১৪৮ঃ ইহুদীরা নবীগণকে হত্যাকারী জাতিঃ

﴿ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الدَّلِيلَ أَنْ مَا تُقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ مِنَ النَّاسِ وَبَاءُ وَبِغَضَبٍ  
مِّنَ اللَّهِ وَضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةَ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِمَا كُنْتَ اللَّهُ  
وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١٣٢﴾

অর্থঃ “আল্লাহর প্রতিশ্রুতি এবং মানুষের প্রতিশ্রুতি ব্যতীত ওরা যেখানেই অবস্থান করছে, সেখানেই তাদের উপর লাঞ্ছনা চাপিয়ে দেয়া হচ্ছে, আর উপার্জন করছে আল্লাহর গজব এবং দারিদ্রে আক্রান্ত হচ্ছে, আর তা এজন্য যে তারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে অনবরত অস্বীকার করছে এবং নবীগণকে অন্যায়ভাবে হত্যা করছে, তার কারণ তারা নাকরমানী করছে এবং সীমালংঘন করছে। (সূরা আল ইমরান-১১২)

মাসআলা-১৪৯ঃ ইহুদীরা পার্থিব সম্পদের প্রতি লোভী, নিজেরা পথভ্রষ্ট এবং অন্যদেরকে পথভ্রষ্টকারীঃ

﴿ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن  
تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿١١﴾

অর্থঃ “তুমি কি ওদেরকে দেখ নাই, যারা কিতাবের কিছু অংশ প্রাপ্ত হয়েছে, অথচ তারা পথভ্রষ্টতা খরিদ করে এবং কামনা করে যাতে তোমরাও আল্লাহর পথ থেকে বিভ্রান্ত হয়ে যাও। (সূরা নিসা-৪৪)

মাসআলা-২৫০ঃ ইহুদীরা ওয়াদা ভঙ্গকারী জাতিঃ

মাসআলা-২৫১ঃ ইহুদীরা আল্লাহর বিধানসমূহ মিথ্যায় প্রতিপন্নকারী জাতিঃ

মাসআলা-২৫২ঃ ইহুদীরা নবীগণকে হত্যাকারী এবং তাদের সাথে বিদ্বেষকারী জাতিঃ

মাসআলা-২৫৩ঃ ইহুদীরা মারইয়াম (আঃ) এর প্রতি ব্যতীচারের অপবাদ দিয়েছেঃ

মাসআলা-২৫৪ঃ ইহুদীদের অপরাধ প্রবণতার কারণে আল্লাহ তাদেরকে হেদায়েত থেকে বঞ্চিত করেছেনঃ

﴿وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ  
وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِيرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا  
إِلَيْهِ رَاغِبُونَ ﴿١٥٦﴾﴾

অর্থঃ “অতএব, তারা যে, শাস্তি প্রাপ্ত হয়েছিল, তাছিল তাদেরই অসীকার ভঙ্গের জন্য এবং অন্যায়ভাবে রাসূলগণকে হত্যা করার কারণে এবং তাদের এই উজির দরুন যে, আমাদের হৃদয় আচ্ছন্ন, অবশ্য তানয় বরং কুফরীর কারণে স্বয়ং আল্লাহ তাদের অন্তরের উপর মোহর এঁটে দিয়েছেন, ফলে তারা ঈমান আনেনা তবে খুবই অল্প সংখ্যক। আর তাদের কুফরী এবং মারইয়ামের প্রতি মহা অপবাদ আরোপ করার কারণে। (সূরা নিসা-১৫৫, ১৫৬)

মাসআলা-২৫৫ঃ ইহুদীরা ততক্ষণ পর্যন্ত মুসলমানদের দুষমন হিসেবে থাকবে যতক্ষণ না তারা তাদের নিজেদের ধীন প্রত্যাক্ষাণ না করবেঃ

﴿وَلَنَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودَ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۚ قُلْ إِنْ هَدَىٰ اللَّهُ هُوَ  
الْهُدَىٰ وَلَئِنْ أَتَبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا  
نَصِيرٍ ﴿١٦٠﴾﴾

অর্থঃ “ইহুদী ও খৃষ্টানরা কখনই আপনার প্রতি সন্তুষ্ট হবে না, যেপর্যন্ত না আপনি তাদের ধর্মের অনুসরণ করেন। (সূরা বাক্বারা-১২০)

মাসআলা-২৫৬ঃ ইহুদীদের অপরাধের কারণে আল্লাহ তাদের চেহারা পরিবর্তন করে তাদেরকে বানর ও গুরুরে পরিণত করেছেনঃ

﴿ قُلْ هَلْ أَنْبَيْتُكُمْ بِشَرِّ مِّنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ أُولَئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَوَاءً السَّبِيلِ ﴾



অর্থঃ “বলুনঃ আমি কি তোমাদেরকে বলবঃ তাদের মধ্যে কার মন্দ ফল রয়েছে আল্লাহর নিকট? যাদের প্রতি আল্লাহ অভিসম্পাত করেছেন, যাদের প্রতি তিনি ক্রোধাবিত হয়েছেন, যাদের কতককে বানর ও শুয়রে পরিণত করেছেন, যারা শয়তানের ইবাদত করছে, তারাই মর্যাদার দিক দিয়ে নিকৃষ্ট তর এবং সত্য পথ থেকেও অনেক দূরে। (সূরা মায়েরা-৬০)

মাসআলা-২৫৭ঃ ইহুদীরা আল্লাহ কে অবমাননাকারী এবং বেয়াদব জাতিঃ

﴿ وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ

كَيْفَ يَشَاءُ ﴾

অর্থঃ “আর ইহুদীরা বলে আল্লাহর হাত বন্ধ হয়ে গেছে, তাদেরই হাত বন্ধ হোক, একথা বলার জন্য তাদের প্রতি অভিসম্পাত, বরং তাঁর উভয় হস্ত উন্মুক্ত, তিনি যেৱপ ইচ্ছা ব্যয় করেন। (সূরা মায়েরা-৬৪)

মাসআলা-২৫৮ঃ ইহুদীরা যুদ্ধের প্ররোচনাকারী এবং পৃথিবীতে ফাসাদ সৃষ্টিকারী জাতিঃ

﴿ كَلَّمَآ أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ وَسَعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ

الْمُفْسِدِينَ ﴾

অর্থঃ “তারা যখনই যুদ্ধের আগুন প্রজ্জলিত করে, আল্লাহ তা নির্বাপিত করে দেন, তারা দেশে অশান্তি সৃষ্টি করে বেড়ায়, আল্লাহ অশান্তি ও বিশৃঙ্খলা সৃষ্টিকারীদেরকে পছন্দ করেন না। (সূরা মায়েরা-৬৪)

মাসআলা-২৫৯ঃ ইহুদীরা মুসলমানদের নিকৃষ্টতম দূশমনঃ

﴿ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ ءَامَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ﴾



অর্থঃ “তুমি মানবমন্ডলীর মধ্যে মুসলিমদের সাথে অধিক শত্রুতা পোষণকারী পাবে ইহুদী ও মুশরেকদেরকে। (সূরা মায়দা-৮২)

মাসআলা-২৬০ঃ ইহুদীরা নবীগণের সাথে বেয়াদবীকারী জাতিঃ

﴿مَنْ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا  
وَأَسْمَعُ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَرَاعِنَا لِيَّا لَالْسِنَتِهِمْ وَطَعْنَا فِي الدِّينِ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا  
وَأَطَعْنَا وَأَسْمَعُ وَأَنْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ  
إِلَّا قَلِيلًا﴾ (১৭)

অর্থঃ “আর তারা বলে আমরা শুনেছি কিন্তু অমান্য করেছি, তারা আরো বলে শোন না শোনার মত, মুখ বাকিয়ে ধীরে প্রতি তাকিল্য প্রদর্শনের উদ্দেশ্যে বলে ‘রায়েনা’ আমাদের রাখাল, অথচ যদি তারা বলত যে, আমরা শুনেছি এবং মান্য করেছি এবং যদি বলত যে শোন এবং আমাদের প্রতি লক্ষ্য রাখ, তবে তাই ছিল তাদের জন্য উত্তম, আর সেটাই ছিল যতার্থ ও সঠিক, কিন্তু আল্লাহ তাদের প্রতি অভিসম্পাত করেছেন তাদের কুফরীর দরুন, অতএব, তারা ঈমান আনছেন না কিন্তু অতি অল্প সংখ্যক। (সূরা নিসা-৪৬)

মাসআলা-২৬১ঃ ইহুদীরা মুসলমানদেরকে দেয়া নে’মতের প্রতি হিংসা ও বিদ্বেষ পোষণকারী জাতিঃ

﴿أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ  
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا﴾ (৫৫)

অর্থঃ “নাকি যাকিছু আল্লাহ তাদেরকে স্বীয় অনুগ্রহে দান করেছেন সেবিষয়ের জন্য মানুষকে হিংসা করে, অবশ্যই আমি ইবরাহীমের বংশধরদেরকে কিতাব ও হিকমত দান করেছিলাম, আর তাদেরকে দান করেছিলাম বিশাল রাজ্য। (সূরা নিসা-৫৪)

মাসআলা-২৬২ঃ ইহুদীরা আল্লাহ এবং তাঁর রাসুলের বিরোধীতাকারী জাতিঃ

﴿ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ. وَمَنْ يُشَاقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ﴾ (৬১)

অর্থঃ “এটা একারণে যে তারা আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসূলের বিরুদ্ধাচরণ করছে, যে আল্লাহ্‌র বিরুদ্ধাচরণ করে তার জন্য উচিত যে, আল্লাহ্‌ কঠোর শাস্তি দাতা। (সূরা হাশর-৪)

মাসআলা-২৬৩ঃ ইহুদীরা আল্লাহ্ এবং তাঁর ফেরেশতাগণের দূশমনঃ

﴿مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ

عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ﴾ (১৮)

অর্থঃ “যে ব্যক্তি আল্লাহ্, তাঁর ফেরেশতা ও রাসূলগণ এবং জিবরাঈল ও মিকাইলের শত্রু হয়, নিশ্চিতই আল্লাহ্ সেসব কাফেরের শত্রু। (সূরা বাক্বারা-৯৮)

মাসআলা-২৬৪ঃ ইহুদীদের কোরআ’নের সাথে শত্রুতা থাকার কারণে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) য়ায়েদ বিন সাবেত (রাযিয়াল্লাহু আনহুকে) ইহুদীদের ভাষা শিখতে নির্দেশ দিয়েছিলেনঃ

অর্থঃ “যায়েদ বিন সাবেত (রাযিয়াল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ যখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) মদীনাতে আগমন করলেন তখন আমাকে তাঁর নিকট উপস্থিত করানো হল, আমি তাঁর নিকট আগত চিঠি-পত্রসমূহ তাঁকে পড়ে শোনাতাম, তিন আমাকে বললেনঃ তুমি ইহুদীদের ভাষা শিখ, আমি তাদের পক্ষ থেকে কোরআ’ন মাজীদকে নিরাপদ মনে করি না। (যাতে করে তারা তাদের ভাষায় কোরআ’ন সম্পর্কে উলটা পালটা কিছু না লিখতে পারে)। (হাকেম)<sup>৭৭</sup>

\*\*\*

## النصارى..... ضالون

### নাসারারা পথভ্রষ্ট জাতি

মাসআলা-২৬৫ঃ নাসারার তত্ত্ববাদের আকীদা (বিশ্বাস) তৈরী করে কুফরী করেছেঃ

﴿لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ (৩৩)

অর্থঃ “নিশ্চয় তারা কাফের, যারা বলেঃ আল্লাহ তিনের এক, অথচ এক উপাস্য ব্যতীত কোন উপস্য নেই, যদি তারা তাদের উক্তি থেকে বিরত নাহয় তাহলে তাদের মধ্যে যারা কুফরীতে অটল থাকবে, তাদের উপর যন্ত্রনাদায়ক শাস্তি পতিত হবে। (সূরা মায়দা-৭৩)

মাসআলা-২৬৬ঃ নাসারারা ইহুদীদের বন্ধু মুসলমানদের নয়ঃ

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ﴾ (৫১)

অর্থঃ “হে মুমিনগণ! তোমরা ইহুদী এবং খ্রিস্টানদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ কর না, তারা একে অপরের বন্ধু, তোমাদের মধ্যে যে তাদের সাথে বন্ধুত্ব করবে, সেতাদেরই অন্তর্ভুক্ত। আল্লাহ যালেমদেরকে পথ প্রদর্শন করবেন না। (সূরা মায়দা-৫১)

মাসআলা-২৬৭ঃ নাসারারাও লোকদেরকে ইসলামের পথে আসতে বাধা দেয় এবং ইসলামের রাস্তাকে ভ্রান্ত বলে প্রমাণ করার জন্য চেষ্টা করেঃ

﴿قُلْ يَتَاهَلِ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبَعُونَهَا عَوَجًا وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ وَمَا اللَّهُ بِغَفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ﴾ (১১)

অর্থঃ “বলুন হে আহলে কিতাবরা, কেন তোমরা আল্লাহর পথে ঈমানদারদেরকে বাধা দান কর, তোমরা তাদের দ্বীনের মধ্যে বক্রতা অনুপ্রবেশ করানোর পন্থা অনুসন্ধান কর, অথচ তোমরা

এপথের সত্যতা প্রত্যক্ষ করছ। বস্তুত আল্লাহ তোমাদের কার্যকলাপ সম্পর্কে অনবগত নন।  
(সূরা আল ইমরান-৯৯)

মাসআলা-২৬৮ঃ নাসারাদের অধিকাংশ লোক ফাসেক ফাজেরঃ

﴿وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ﴾

অর্থঃ “আর তাদের অধিকাংশই ফাসেক (পাপচারী) (সূরা হাদীদ-২৭)।

মাসআলা-২৬৯ঃ নাসারারা মুসলমানদের সাথে ততক্ষণ শত্রুতা রাখবে যতক্ষণ না মুসলমানরা তাদের ধীন ত্যাগ করবেঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ২৮৪ নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-২৭০ঃ নাসারাদের মধ্যে কেউ কেউ মুসলমানদের সাথে সুসম্পর্ক রাখেঃ

﴿لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ ءَامَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا  
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِلَّذِينَ ءَامَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي  
ذَٰلِكَ بِأَن مِّنْهُمْ قَسِيصِينَ وَرُهَبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ﴾ (৯২)

অর্থঃ “আপনি সব মানুষের চাইতে মুসলমানদের অধিক শত্রু ইহুদী ও মুশরেকদেরকে পাবেন এবং আপনি সবার চাইতে মুসলমানদের সাথে বন্ধুত্বে অধিক নিকটবর্তী তাদেরকে পাবেন, যারা নিজেদেরকে খ্রীষ্টান বলে, এর কারণ এই যে, খ্রীষ্টানদের মধ্যে আলেম রয়েছে, দরবেশ রয়েছে এবং তারা অহংকার করে না। (সূরা মায়েদা-৮২)

নোটঃ ইসলামে বৈরাগ্যবাদের কোন স্থান নেই এটা নাসারাদের পথভ্রষ্টতার অন্তর্ভুক্ত।

## المشركون.... كلهم اعداء المسلمين

### সমস্ত মুশরেকরা মুসলমানদের শত্রু

মাসআলা-২৭১ঃ সমস্ত মুশরেকরা মুসলমানদের নিকৃষ্টতম শত্রুঃ

﴿لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ ءَامَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا﴾

অর্থঃ“আপনি সব মানুষের চাইতে মুসলমানদের অধিক শত্রু ইহুদী ও মুশরেকদেরকে পাবেন। (সূরা মায়দা-৮২)

মাসআলা-২৭২ঃ মুশরেকরা পৃথিবীতে সবচেয়ে নিকৃষ্ট সৃষ্টিঃ

﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ﴾

অর্থঃ“আহলে কিতাব এবং মুশরেকদের মধ্যে যারা কাফের, তারা জাহান্নামের আগুনে স্থায়ী থাকবে, তারাই সৃষ্টির অধম। (সূরা বায়িনা-৬)

মাসআলা-২৭৩ঃ মুশরেক এবং কাফেররা চতুষ্পদ জন্তুর চেয়েও নিকৃষ্টঃ

﴿وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنسِ هُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُصِيرُونَ بِهَا وَهُمْ ءَاذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَئِكَ كَأَلْأَنفَمِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ﴾

অর্থঃ“আর আমি সৃষ্টি করেছি জাহান্নামের জন্য বহু জীন ও মানুষ, তাদের অন্তর রয়েছে, তার দ্বারা তারা বিবেচনা করে না, তাদের চোখ রয়েছে তার দ্বারা তারা দেখে না, তাদের কান রয়েছে তার দ্বারা তারা শোনে না, তারা চতুষ্পদ জন্তুর মত, বরং তাদের চেয়েও নিকৃষ্টতর, তারাই হল গাফেল, শৈথিল্যপরায়ণ। (সূরা আ'রাফ-১৭৯)

মাসআলা-২৭৪ঃ মুশরেকরা দীন ইসলামকে পরিপূর্ণ রূপে শেষ করে দিতে চায়ঃ

﴿ يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴾ (৯)

অর্থঃ “তারা মুখের ফুৎকারে আল্লাহর আলো নিভিয়ে দিতে চায়, আল্লাহ তাঁর আলোকে পূর্ণ রূপে বিকশিত করবেন যদিও কাফেররা তা অপছন্দ করে। (সূরা সাফ-৮)

মাসআলা-২৭৫ঃ মুশরেকরা কোরআন মাজীদে শিক্ষা বিস্তারে বাধা দেয়ঃ

﴿ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي

مَسْكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴾ (১১)

অর্থঃ “আর কাফেররা বলে, তোমরা এ কোরআন শ্রবণ কর না এবং এর আবৃত্তিতে হট্টগোল সৃষ্টি কর যাতে তোমরা জরীহও। (সূরা হা-মীম সাজদা-২৬)

মাসআলা-২৭৬ঃ কাফেররা মুসলমানদেরকে আল্লাহর ইবাদত থেকে বাধা দেয়ঃ

নোটঃ এসংক্রান্ত আয়াতটি ৩১৭নং মাসআলা দ্রঃ।

মাসআলা-২৭৭ঃ কাফেররা কোরআন মাজীদে তাদের ইচ্ছামত রদবদল করতে চায়ঃ

﴿ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا آتَتْ

بَشَرًا مِّثْلَ بَشَرٍ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ ﴾

অর্থঃ “আর যখন তাদের নিকট আমার প্রকৃষ্ট আয়াতসমূহ পাঠ করা হয়, তখন সেসমস্ত লোক বলে যাদের আশা নেই আমার সাক্ষাতের, নিয়ে এস কোন কোরআন এটি ব্যতীত, অথবা একে পরিবর্তিত করে দাও। (সূরা ইউনুস-১৫)

মাসআলা-২৭৮ঃ কাফেররা কোরআন মাজীদে প্রতি ঈমান না আনার অঙ্গিকার করেছেঃ

﴿ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ﴾

অর্থঃ “কাফেররা বলে আমরা কখনো এ কোরআন বিশ্বাস করব না এবং এর পূর্ববর্তী কিতাবও নয়। (সূরা সাবা-৩১)

মাসআলা-২৭৯ঃ কাফেররা কোরআন মাজীদে সাথে বিরোধীতা এবং অহংকারের কারণেই শত্রুতা করে থাকেঃ

﴿صَّ وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ۝١ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزِّهِمْ وَشِقَاقٍ ۝٢﴾

অর্থঃ“ সোয়দ- শপথ উপদেশপূর্ণ কোরআ’নের, বরং যারা কাফের তারা অহংকার ও বিরোধীতায় লিপ্ত। (সূরা-সোয়দ-১,২)

মাসআলা-২৮০ঃ কাফেরদের তাওহীদ সংক্রান্ত আয়াতসমূহের সাথে গভীর শক্রতাঃ

﴿وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا ذُكِّرْتُمْ رَبَّكَ فِي

الْقُرْآنِ وَحَدَّهُ وَلَوْ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ فَهَمًا ۝٤٦﴾

অর্থঃ যখন আপনি কোরআ’নে পালনকর্তার একত্ব(তাওহীদ) আবৃত্তি করেন তখনো অনীহা বশতঃওরা পৃষ্ঠ পদর্শন করে চলে যায়। (সূরা বানী ইসরাঈল-৪৬)

মাসআলা-২৮১ঃ কাফেররা কোরআ’নের আয়াতসমূহের সাথে ঠাট্টা করেঃ

﴿عَلَيْهَا سَعَةٌ عَشْرٌ ۝٣ وَمَا جَعَلْنَا أَحْصَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً

لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَفِيقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزِدَّادَ الَّذِينَ ءَامَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا

الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلَيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ

اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ ۝٣١﴾

অর্থঃ“এর উপর নিয়োজিত আছে উনিশ ফেরেশতা, আমি জাহান্নামের তত্ত্বাবধায়ক ফেরেশতাই রেখেছি, আমি কাফেরদেরকে পরীক্ষা করার জন্যই তার এই সংখ্যা করেছি। (সূরা মুদ্দাস্ সির-৩০,৩১)

নোটঃ সূরা মুদ্দাস্‌সিরের উল্লেখিত আয়াতটি শোনে কোরাইশ সর্দাররা ঠাট্টা করতে শুরু করল যে, পৃথিবীর সমস্ত কাফেরদের জন্য এতবড় জাহান্নাম, অথচ তার তত্ত্বাবধায়ক মাত্র উনিশ জন, আবু জাহাল বললঃ হে আমার ভায়েরা তোমরা দশজনেও কি জাহান্নামের এক একজন তত্ত্বাবধায়ককে কাবু করতে পারবে না? এক ব্যক্তি বললঃ সতের জন তত্ত্বাবধায়কের জন্য তো আমি একাই যথেষ্ট আর বাকী দু’জনকে তোমরা কাবু করবে। (তাকহিমুল কোরআ’ন)

## المنافقون .... فنة خطرة للاسلام

### মুনাফেকরা ইসলামের জন্য ভয়ানক একটি দল

মাসআলা-২৮২ঃ খন্দকের যুদ্ধের সময় মুসলমান সৈন্যদের মধ্যে বিদ্বমান মুনাফেকদের দল আরব মুশরেক এবং ইহুদী ও নাসারাদের সংঘবদ্ধ সৈন্যদের মদীনা আক্রমণ করতে দেখে ভয়ে তাদের রক্ত শুকিয়ে গেল, মৃত্যুর ভয়ে আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসূল ও ঈমানদারদের সাথে বিশ্বাস ঘাতকতা করলঃ

﴿وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝﴾

অর্থঃ “এবং যখন মুনাফেক ও যাদের অন্তরে রোগ ছিল তারা বলছিল, আমাদেরকে প্রদত্ত আল্লাহর রাসূলের প্রতিশ্রুতি প্রতারণা বৈ নয়। (সূরা আহযাব-১২,১৩)

মাসআলা-২৮৩ঃ বদরের যুদ্ধের সময় মুনাফেকরা ঈমানদারদেরকে দলীয় গোড়ামী এবং কট্টোর পন্থী বলে অপবাদ দিয়েছিলঃ

অর্থঃ “যখন মুনাফেকরা বলতে লাগল এবং যাদের অন্তর ব্যাধিগ্রস্ত, এরা নিজেদের ধর্মের উপর গর্বিত, বস্তুত যারা ভরসা করে আল্লাহর উপর, সে নিশ্চিত, কেননা আল্লাহ্ অতি পরাক্রমশীল, সু বিজ্ঞ।

মাসআলা-২৮৪ঃ তাবুকের যুদ্ধের সময় মুসলমানদেরকে জেহাদের জন্য বেরহওয়ার জন্য নির্দেশ দেয়া হল, তখন এক মুনাফেক (জাদ বিন কায়েস) এসে এ আপত্তি পেশ করল যে, আমি রূপবতীদের প্রতি দুর্বল তাই আমি রোমানদের সুন্দরী নারীদেরকে দেখে ফেতনায় পড়ে যাব, তাই আমাকে আপনাদের সাথে যাওয়া থেকে বিরত থাকার অনুমতি দিনঃ

﴿وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ أَسْأَلُكَ فِي الْفِتْنَةِ سَقَطًا ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝﴾



অর্থঃ “আর তাদের কেউ কেউ বলে আমাকে অব্যাহতি দিন পথ ভ্রষ্ট করবেন না, শোনে রাখ তারা তো পূর্ব থেকেই পথ ভ্রষ্ট এবং নিঃসন্দেহে জাহান্নাম এই কাকেরদেরকে পরিবেষ্টন করে রেখেছে। (সূরা তাওবা-৪৯)

মাসআলা-২৮৫ঃ মুনাফেকরা সর্বদা জেহাদের ব্যাপারে প্রভৃতির অনুসরণ করেঃ

﴿ فَرَحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خَلَفَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴾ (৪১)

অর্থঃ “পেছনে বসে থাকা লোকেরা আল্লাহর রাসূল থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে বসে থাকতে পেরে আনন্দ লাভ করেছে, আর জান ও মালের দ্বারা আল্লাহর রাহে জেহাদ করতে অপছন্দ করেছে এবং বলছে এই গরমের মধ্যে অভিযানে বের হয়ো না, বলে দাও উত্তাপে জাহান্নামের আগুন প্রচন্ডতম, যদি তাদের বিবেচনা শক্তি থাকত। (সূরা তাওবা-৮১)

মাসআলা-২৮৬ঃ মুনাফেকরা নিজেরা নিজেদেরকে ভাল ও কল্যাণের ধারক ও বাহক বলে মনে করে অথচ সবচেয়ে বড় বিশৃঙ্খলাকারী তারাইঃ

﴿ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ﴾ (১২)

অর্থঃ “আর যখন তাদেরকে বলা হয় যে, পৃথিবীতে দাঙ্গা-হাঙ্গামা সৃষ্টি কর না, তখন তারা বলে আমরা তো মীমাংসার পথ অবলম্বন করছি। মনে রেখ তারাই হাঙ্গামা সৃষ্টিকারী, কিন্তু তারা তা উপলব্ধি করে না। (সূরা বাক্বারা-১১,১২)

মাসআলা-২৮৭ঃ মুনাফেকরা সার্বিক ভাবে ইসলাম এবং মুসলমানদের ক্ষতি করার চেষ্টা করবেঃ

﴿ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا أَكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴾ (১১)

অর্থঃযারা মিথ্যা অপবাদ রটনা করেছে, তারা তোমাদেরই একটি দল, তোমরা একে নিজেদের জন্য খারাপ মনে কর না, বরং এটা তোমাদের জন্য মঙ্গল জনক, তাদের প্রত্যেকের জন্য ততটুকু আছে, যতটুকু সে গোনাহ করেছে এবং তাদের মধ্যে যে, এব্যাপারে অগ্রণী ভূমিকা নিয়েছে তার জন্য রয়েছে বিরাট শাস্তি। (সূরা নূর-১১)

নোটঃ উল্লেখ্য বানী মোস্তালেফ যুদ্ধ থেকে ফিরার পথে মুনাফেক সর্দার আবদুল্লাহ্ বিন উবাই, আয়শা (রাযিয়াল্লাহু আনহা) প্রতি ব্যভিচারের অপবাদ দিল, যার উদ্দেশ্য ছিল রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) পবিত্র পরিবারের উপর ব্যভিচারের অভিযোগ এনে তাঁর চরিত্রের ব্যাপারে সন্দেহ সৃষ্টি করা, যাতে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লামের) দীর্ঘ দিন থেকে যথেষ্ট পরিশ্রম এবং সাধনার মাধ্যমে যে মিশন বাস্তবায়ন করে আসছিলেন তা যেন নিজে থেকেই নষ্ট হয়ে যায়। উল্লেখিত আয়াতে ঐ দিকেই ইংঙ্গিত করা হয়েছে।

মাসআলা-২৮৮ঃ মুনাফেকরা নিজেদেরকে সত্যবাদী বলে প্রমাণ করার জন্য নিজেদেরকে ইসলাম ও মুসলমানদের স্বপক্ষে বলে খুব প্রচার প্রপাগান্ডা চালায়ঃ

﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ﴾

﴿وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ﴾

অর্থঃ “মুনাফেকরা আপনার নিকট এসে বলে আমরা সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আপনি নিশ্চয়ই আল্লাহর রাসূল, আল্লাহ জানেন যে আপনি নিশ্চয়ই আল্লাহর রাসূল এবং আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে মুনাফেকরা অবশ্যই মিথ্যাবাদী। (সূরা মুনাফেক-১)

মাসআলা-২৮৯ঃ মুনাফেকরা কাফেরদের দোসরঃ

﴿وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ ءَامَنُوا قَالُوا ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شُيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ

﴿إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَءُونَ﴾

অর্থঃ “আর তারা যখন ঈমানদারদের সাথে মিশে, তখন বলে আমরা ঈমান এনেছি, আবার যখন তাদের শয়তানদের সাথে একান্তে সাক্ষাৎ করে তখন বলেঃ আমরা তোমাদের সাথে রয়েছি, আমরা তো (মুসলমানদের) সাথে উপহাস করি মাত্র। (সূরা বাক্বারা-১৪)

## نَبِيْنَا نُوحٌ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَ الْمَلَأُ قَوْمَهُ

আমাদের নবী নূহ (আঃ) এবং তাঁর জাতির সদারগণঃ<sup>৫৮</sup>

মাসআলা-২৯০ঃ নূহ (আঃ) কাফেরদেরকে তাওহীদরে দাওয়াত দিলেন এবং আল্লাহকে ভয় করা ও তাঁর অনুসরণ করার নির্দেশ দিলেনঃ

﴿ إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ١ ﴾

অর্থঃ “নিশ্চয়ই আমি নূহ (আঃ) কে তাঁর সম্প্রদায়ের প্রতি পাঠিয়েছি, সে বললঃ হে আমার সম্প্রদায়, তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ব্যতীত তোমাদের কোন উপাস্য নেই। (সূরা নূহ-১৯)

﴿ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ١-٨ ﴾

অর্থঃ “অতএব, তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর। (সূরা শোআরা-১০৮)

মাসআলা-২৯১ঃ প্রতি উত্তরে কাফেররা নূহ (আঃ) কে পথভ্রষ্ট, পাগল, মিথ্যুক এবং তাদের মতই একজন সাধারণ মানুষ বলে আখ্যায়িত করে ঠাট্টা করলঃ

﴿ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرْنَكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ١٠ ﴾

অর্থঃ “তাঁর (নূহ আঃ) এর সম্প্রদায়ের সদাররা বললঃ আমরা তোমাকে প্রকাশ্য পথভ্রষ্টতার মাঝে দেখতে পাচ্ছি। (সূরা আ'রাফ-৬০)

﴿ إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جَنَّةٌ فَنَرْتَبُّوهُ ٢٥ حَتَّىٰ حِينٍ ٢٥ ﴾

অর্থঃ “সেতো এক উন্মাদ ব্যক্তি বৈ নয়, সুতরাং কিছু কাল তার ব্যাপারে অপেক্ষা কর। (সূরা মু' মেনুন -২৫)

﴿ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا لَكُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا لَكُمْ أَتَّبِعُكُمْ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا بِادِّىَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ٢٧ ﴾

<sup>৫৮</sup> -নূহ (আঃ) ইরাকে অবস্থান করতেন, মূর্তি পূজার শুরু তাদের মধ্য থেকেই হয়েছিল, প্রাবনের পর নূহ (আঃ) এর কিশতি জুদি পাহাড়ে থেমে ছিল যা কিরগিস্তানের নিকটবর্তী।

অর্থঃ “বরং আপনারা সবাই মিথ্যাবাদী বলে আমরা মনে করি। (সূরা হুদ-২৭)

﴿ فَقَالَ الْمَلَأُوا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَنْفَضَلَ عَلَيْكُمْ  
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴾ (১৬)

অর্থঃ “তখন তাঁর (নূহ আঃ) এর সম্প্রদায়ের কাফের সর্দাররা বলছিলঃ এতো তোমাদের মতই একজন মানুষ বৈ নয়, সে তোমাদের উপর নেতৃত্ব করতে চায়। (সূরা যু’ মেনুন-২৪)

মাসআলা-২৯২ঃ নূহ(আঃ) যখন কাফেরদেরকে দ্বীনের দাওয়াত দিতেন তখন কাফেররা তা অপছন্দ করে কানে আঙ্গুল ডুকিয়ে রাখত, চেহারা কপড় বাধত, আর অহংকার করে তার পাশ দিয়ে অতিক্রম করতঃ

﴿ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصْغِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ  
وَأَصْرَوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ﴾ (৭)

অর্থঃ “আমি যতবারই তাদেরকে দাওয়াত দিয়েছি, যাতে আপনি তাদেরকে ক্ষমা করেন, ততবারেই তারা কানে আঙ্গুল দিয়েছে, মুখমন্ডল বস্ত্রাবৃত করেছে, জেদ করেছে এবং খুব ঔদ্ধত প্রদর্শন করেছে। (সূরা নূহ-৭)

মাসআলা-২৯৩ঃ নূহ (আঃ) কাফেরদেরকে বুঝানোর জন্য সমস্ত পছা অবলম্বন করেছেন কিন্তু কাফেররা সর্বদাই তাদের জেদ এবং গোড়ামীর উপর অটল ছিলঃ

﴿ ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ﴾ (৯)

অর্থঃ “অতঃপর আমি তাদেরকে প্রকাশ্যে দাওয়াত দিয়েছি, অতঃপর আমি ঘোষণাসহ প্রচার করেছি এবং গোপনে চুপিসারে বলেছি। (সূরা নূহ-৮,৯)

﴿ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴾ (১২)

অর্থঃ “আর তারা বলছেঃ তোমরা তোমাদের উপাস্যদেরকে ত্যাগ কর না এবং ত্যাগ কর না ওয়াদ, সুয়া, ইয়াগুথ, ইয়াউক ও নাসরা কে। (সূরা নূহঃ২৩)

মাসআলা-২৯৪ঃ কাফের নেতারা সার্বক্ষণিকভাবে নূহ (আঃ) এর বিরুদ্ধে ভ্রান্ত প্রপাগান্ডা চালিয়ে যাচ্ছিল যাতে লোকেরা তাঁর কথায় কর্ণপাত না করেঃ

﴿وَمَكْرُوا مَكْرًا كُبَرًا﴾ (২২)

অর্থঃ“আর তারা ভয়ানক চক্রান্ত করেছে। (সূরা নূহ-২২)

মাসআলা-২৯৫ঃ কাফেররা নূহ (আঃ) কে হত্যাকরার হুমকিও দিয়েছিলঃ

﴿قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَنُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ﴾ (১১৬)

অর্থঃ“তারা বললঃ হে নূহ যদি তুমি বিরত নাহও তবে তুমি নিশ্চিতই প্রস্তারাঘাতে নিহত হবে। (সূরা শুআরা-১১৬)

মাসআলা-২৯৬ঃ নূহ (আঃ) এর প্রতি ঈমান আনয়নকারীদের সংখ্যা খুব কম ছিল তাদের অধিকাংশই ছিল কাফেরদের পক্ষেঃ

﴿وَمَا ءَامَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ﴾

অর্থঃ“অতি অল্প সংখ্যক লোকই তার প্রতি ঈমান এনে ছিল। (সূরা হুদ-৪০)

মাসআলা-২৯৭ঃ আল্লাহর পক্ষ থেকে নূহ (আঃ) এর কাউমের উপর আযাব আসার ফায়সালা হল কিন্তু নিকৃষ্ট জাতি স্বীয় নবীর সাথে ঠাট্টা বিদ্রোপে মগ্নছিলঃ

﴿وَيَصْنَعُ الْفُلُكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ

تَسَخَّرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسَخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسَخَّرُونَ﴾ (২৮) ﴿فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ

عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ﴾ (৩১)

অর্থঃ“তিনি নৌকা তৈরী করতে লাগলেন, আর তাঁর কাউমের নেতৃস্থানীয় ব্যক্তির যখন পাশ দিয়ে যেত তখন তাঁকে বিদ্রোপ করত, তিনি বললেনঃ তোমরা যদি আমাদেরকে উপহাস করে থাক তাহলে তোমরা যেমন উপহাস করছ, আমরাও তদ্রূপ তোমাদেরকে উপহাস করছি। অতঃপর অচিরেই জানতে পারবে লাঞ্ছনা জনক আযাব কার উপর আসে এবং চিরস্থায়ী আযাব কার উপর আসে। (সূরা হুদ-৩৮, ৩৯)

মাসআলা-২৯৮ঃ নূহ(আঃ) এবং তাঁর কাউমের মাঝে এ দন্দ সাড়ে নয়শত বছর পর্যন্ত চলছিলঃ

﴿وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ﴾ (১৫)

অর্থঃ “তিনি তাদের মাঝে পঞ্চাশ কম একহাজার বছর অবস্থান করেছিলেন। (সূরা আনকাবুত-১৪)

মাসআলা-২৯৯ঃ ইসলাম এবং কুফরীর দ্বন্দের এ ফল দাঁড়াল যে, আল্লাহ তা'লা ঈমানদারদেরকে রক্ষা করেছেন আর কাফেরদেরকে প্লাবনের আজাবে নিমজ্জিত করেছেনঃ

﴿فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ﴾ (১৬)

অর্থঃ “অতঃপর তারা তাঁকে মিথ্যায় প্রতিপন্ন করল, আমি তাকে এবং তার নৌকাস্থিত লোকদেরকে উদ্ধার করলাম এবং যারা মিথ্যারোপ করত তাদেরকে ডুবিয়ে দিলাম, নিশ্চয়ই তারা ছিল অন্ধ। (সূরা আ'রাফ-৬৪)

মাসআলা-৩০০ঃ মুশরেকদের দলভুক্ত নূহ (আঃ) এর ছেলেও এ প্লাবনে নিমজ্জিত হয়ে ছিলঃ

﴿وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَبْنَىٰ أَرْكَبَ مَعَنَا وَلَا تَكُن مَعَ الْكَافِرِينَ﴾ (১৭) ﴿قَالَ سَتَدِينُنِي وَإِنَّكَ كَذِبٌ لَّيِّنٌ﴾ (১৮) ﴿يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ﴾ (১৯)

অর্থঃ “আর নৌকা খানী তাদেরকে বহন করে চলল। পর্বত প্রমাণ তরঙ্গমালার মাঝে, আর নূহ(আঃ) তাঁর পুত্রকে ডাক দিল, আর সে সরে রয়েছে, তিনি বললেনঃ প্রিয় বৎস! আমাদের সাথে আরোহণ কর এবং কাফেরদের সাথে থেক না, সে বললঃ আমি অচিরেই কোন পাহাড়ে আশ্রয় নিব, যা আমাকে পানি থেকে রক্ষা করবে, নূহ (আঃ) বললেনঃ আজকের দিনে আল্লাহর হুকুম থেকে কোন রক্ষাকারী নেই, একমাত্র তিনি যাকে দয়া করবেন, এমন সময় উভয়ের মাঝে তরঙ্গ আড়াল হয়ে দাঁড়াল, ফলে সে নিমজ্জিত হল। (সূরা হুদ-৪২,৪৩)

## نَبِينَا هُوْد عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالْمَلَأُ قَوْمَهُ হুদ (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সরদারগণ<sup>৫৯</sup>

মাসআলা-৩০১ঃ আদ জাতি তৎকালে বৃহৎ শক্তির অধিকারী ছিলঃ

﴿ اَلَيْسَ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبَلَدِ ۝۸ ﴾

অর্থঃ “যাদের সমান শক্তি ও বলবীর্যে সারা বিশ্বের শহরসমূহে কোন লোক সৃজিত হয়নি।  
(সূরা ফজর-৮)

মাসআলা-৩০২ঃ আদ জাতি অত্যন্ত যুলুমবাজ জাতি ছিলঃ

﴿ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۝۱৩ ﴾

অর্থঃ “যখন তোমর আঘাত হান তখন জালেম ও নিষ্ঠুরের মত আঘাত হান। (সূরা শুআরা-১৩০)

মাসআলা-৩০৩ঃ আদ জাতি বিশ্বব্যাপী শাসনকর্ম চালিয়েছিলঃ

﴿ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُوْا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝۱০ ﴾

অর্থঃ “আর আমাদের অপেক্ষা অধিক শক্তিদর কে? (সূরা হা-মীম সাজদাহ-১৫)

মাসআলা-৩০৪ঃ হুদ (আঃ) কাফেরদেরকে তাওহীদের দাওয়াত দিয়েছেন এবং আল্লাহ্ কে ভয় করার জন্য নির্দেশ দিয়েছেনঃ

﴿ وَاِلَىٰ عَادٍ اٰخَاهُمْ هُوْدًا قَالَ يٰٓاَقْوَمِ اعْبُدُوْا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهُ ۚ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۶০ ﴾

<sup>৫৯</sup> -নূহ (আঃ) এর কাউম ধ্বংস হওয়ার পর আল্লাহ্ আদ জাতিকে মর্যাদাবান করেছিলেন, আদ জাতি তৎকালে অত্যধিক শক্তির অধিকারী ছিল, তাদের আবাস স্থল ছিল ইয়ামেন এবং আন্মানের মধ্যবর্তী মরু অঞ্চল, আল্লাহ্ তা'লা হুদ (আঃ) কে তাদের প্রতি পাঠালেন, ঐ জাতি তাঁকে অহংকার ভরে আল্লাহ্‌র রাসূলকে মিথ্যায় প্রতিপন্ন করল, আল্লাহ্ তা'লা বড় হওয়ার মাধ্যমে ঐ জাতিকে এমন ভাবে ধ্বংস করলেন যে, পৃথিবী থেকে তাদের নাম পরিচিতি নিঃসিঁহ হয়ে গেল।

অর্থঃ “আদ সম্প্রদায়ের নিকট প্রেরণ করেছি তাদের ভাই হুদ কে, সে বললঃ হে আমার সম্প্রদায় তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ব্যতীত তোমাদের সত্য কোন উপস্য নেই, তোমরা কি সাবধান হবে না। (সূরা আ'রাফ-৬৫)

মাসআলা-৩০৫ঃ কাফেররা হুদ (আঃ) কে বোকা, মিথ্যুক, বুয়ুর্গদের বদদোয়ার অধিকারী বলে আখ্যায়িত করেছেঃ

﴿ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّكَ لَنَرُوكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنُظُنُّكَ مِنَ الْكَذِبِينَ ﴾

অর্থঃ “তার সম্প্রদায়ের সর্দাররা বললঃ আমরা তোমাকে নির্বোধ দেখতে পাচ্ছি এবং আমরা তোমাকে মিথ্যাবাদী মনে করি। (সূরা আ'রাফ-৬৬)

মাসআলা-৩০৬ঃ হুদ (আঃ) বললঃ বোকা নই বরং আল্লাহর রাসূল এবং তোমাদের অত্যন্ত কল্যাণকামীঃ

﴿ قَالَ يَتَقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴾  
﴿ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴾

অর্থঃ “সে বললঃ হে আমার সম্প্রদায়, আমি মোটেই নির্বোধ নই, বরং আমি বিশ্বপ্রতিপালকের প্রেরিত পয়গাম্বর। তোমাদেরকে প্রতিপালকের পয়গাম পৌছাই এবং আমি তোমাদের হিতাকাঙ্ক্ষী বিশ্বস্ত। (সূরা আ'রাফ-৬৭, ৬৮)

মাসআলা-৩০৭ঃ কাফেররা অত্যন্ত অহংকারের সাথে অন্যায়ভাবে হুদ (আঃ) এর দাওয়াতকে প্রত্যাখ্যান করেছিলঃ

﴿ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴾

অর্থঃ “আর আদ জাতি পৃথিবীতে অথবা অহংকার করল এবং বললঃ আমাদের অপেক্ষা অধিক শক্তিদর কে? তারা কি লক্ষ্য করেনি যে, যে আল্লাহ তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন তিনি তাদের অপেক্ষা অধিক শক্তিদর? বস্তুত তারা আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করত। (সূরা হামীম সাজদা-১৫)



﴿ قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَطْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ﴾ (১৩৬)

অর্থঃ “তারা বললঃ তুমি উপদেশ দাও, অথবা উপদেশ নাইদাও, উভয়ই আমাদের জন্য সমান। (সূরা শুআরা-১৩৬)

মাসআলা-৩০৮ঃ হুদ(আঃ) তাঁর কাউমকে আল্লাহ্ র নৈমতের কথা স্মরণ করালেন এবং তাঁকে ভয় করার জন্য উপদেশ দিলেনঃ

﴿ وَأَنْقُؤُا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَحَنَّتِ وَعُيُونِ ﴿١٣٤﴾ ﴾

অর্থঃ “ভয় কর তাক, যিনি তোমাদেরকে সেসব বস্তু দিয়েছেন যা তোমরা জান, আমি তোমাদেরকে দিয়েছি চতুশ্পদ জন্তু ও পুত্র সন্তান এবং উদ্যান ও বর্ণা। (সূরা শুআরা-১৩২, ১৩৪)

মাসআলা-৩০৯ঃ হুদ (আঃ) কে মিথ্যায় প্রতিপন্ন করার এফল দাঁড়াল যে, মেঘের আকারে তাদের উপর আযাব আসল, দুভাগ্যবান জাতি মেঘ দেখে আনন্দে উল্লাস করতে লাগল যে বৃষ্টি হবে এবং ফসল ফলাদি ভাল হবে, কিন্তু মেঘ যখন নিকটবর্তী হল তখন আল্লাহ্ র আজাবের ধারা এমনভাবে বর্ষিত হতে থাকল যে, তৎকালীন সময়ের সর্বাধিক শক্তিদর জাতির নাম পরিচয় নিশ্চিহ্ন হয়ে গেলঃ

﴿ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّثْمِرٌ بَلْ هُوَ مَا

أَسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٤﴾ تَدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا

يُرَى إِلَّا أَسَٰكِنُهُمْ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٥﴾ ﴾

অর্থঃ “অতঃপর তারা যখন শাস্তিকে মেঘ রূপে তাদের উত্থাকা অভিযুক্তি দেখল, তখন বললঃ এতো মেঘ, তাদেরকে বৃষ্টি দিবে, বরং এটা সেই বস্তু যা তোমরা তাড়াতাড়ি চেয়ে ছিলে, এটা বায়ু এতে রয়েছে মর্মস্বেদ শাস্তি। (সূরা আহকাফ-২৪, ২৫)

﴿ فَهَلْ تَرَىٰ لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ﴾ (৮)

অর্থঃ “আপনি তাদের কোন অস্তিত্ব দেখতে পান কি? (সূরা হাক্বা-৮)

মাসআলা-৩১০ঃ পাপিষ্ট জাতি ধ্বংস হল আর আল্লাহ্ হুদ (আঃ) এবং ঈমানদারদেরকে রক্ষা করলেনঃ

﴿وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ عَذَابٍ

غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

অর্থঃ “আর আমার আদেশ যখন উপস্থিত হল তখন আমি নিজ রহমতে হুদ এবং তার সঙ্গী ঈমানদারগণকে পরিত্রাণ করি এবং তাদেরকে কঠিন শাস্তি থেকে রক্ষা করি। (সূরা হুদ-৫৮)

মাসআলা-৩১১ঃ রাসূলগণকে মিথ্যায় প্রতিপন্নকারী এবং তাদের অবাধ্যদের উচিত আদ জাতির ধ্বংস থেকে শিক্ষা গ্রহণ করাঃ

﴿فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٦﴾﴾

অর্থঃ “অতএব, তারা তাকে মিথ্যাবাদী বলতে লাগল এবং আমি তাদেরকে নিপাত করে দিলাম। এতে অবশ্যই নিদর্শন আছে কিহু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাসী নয়। (সূরা শুআরা-১৩৬)

## نَبِينًا صَالِحٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالْمَلَأُ قَوْمَهُ

### সালেহ (আঃ) এবং তার কাউমের সর্দারগণ<sup>৬০</sup>

মাসআলা-৩১২ঃ সামুদ জাতি স্থাপত্য বিদ্যা এবং পাথরে নকশা করায় পারদর্শী ছিলঃ

﴿وَأَذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ  
تَتَخَذُونَ مِنْ سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا فَاذْكُرُوا أَلَاءَ  
اللَّهِ وَلَا تَعْتَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ﴾ (৭১)

অর্থঃ “তোমরা নরম মাটিতে অম্লাকি নির্মাণ কর এবং পর্বত গাত্র খনন করে প্রকোষ্ঠ নির্মাণ কর। (সূরা আ’রাফ-৭৪)

﴿وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ﴾ (৮২)

অর্থঃ “তারা পাহাড়ে নিশ্চিন্তে ঘর খোদাই করত। (সূরা হিজর-৮২)

মাসআলা-৩১৩ঃ সালেহ (আঃ) কাফেরদেরকে তাওহীদের দাওয়াত দিলেন এবং তাদের গোনাহ ক্ষমা হওয়ার জন্য আল্লাহ্ র নিকট তাওবা করার জন্য উপদেশ দিলেনঃ

﴿وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَتَقَوِّمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ هُوَ  
أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُجِيبٌ﴾ (৭১)

অর্থঃ “আর সামুদ জাতির প্রতি তাদের ভাই সালেহকে প্রেরণ করেছি, তিনি বলেনঃ হে আমার জাতি, আল্লাহ্ র ইবাদত কর, তিনি ব্যতীত তোমাদের সত্য কোন উপাস্য নেই, তিনি

<sup>৬০</sup> - আদ জাতির পর সামুদ জাতিকে আল্লাহ্ বিরাট শক্তি এবং ক্ষমতা দিয়ে ছিলেন, তাদের অবস্থান স্থল ছিল মদীনা এবং তাম্বুকের মধ্যবর্তী স্থানে। যার নাম মাদায়েন সালেহ (আঃ)। সালেহ (আঃ) কে আল্লাহ্ তাদের প্রতি রাসূল করে প্রেরণ করেছিলেন, তারা তাঁকে মিথ্যায় প্রতিপন্ন করল ফলে আল্লাহ্ তাদেরকে ভূমিকম্পের শাস্তি র মাধ্যমে চোখের পলকে ধ্বংস করে দিলেন।

যমীন থেকে তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, তন্মধ্যে তোমাদেরকে বসতি দান করেছেন, অতএব, তাঁর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, অঃপর তাঁরই দিকে ফিরে চল, আমার পালনকর্তা নিকটেই আছেন, কবুল করে থাকেন, সন্দেহ নেই। (সূরা হুদ-৬১)

মাসআলা-৩১৪ঃ কাফের রা সালেহ (আঃ) কে মিথ্যুক, নিকৃষ্ট, দাস্তিক, পাগল এবং তাদের মতই একজন সাধারণ মানুষ বলে ঠাট্টা করলঃ

﴿وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٥﴾﴾

অর্থঃ “আমাদের মধ্যে কি তার প্রতিই উপদেশ নাযিল করা হয়েছে? বরং সে একজন মিথ্যাবাদী দাস্তিক (সূরা হুদ-২৫)।

﴿فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ خَشِيرِينَ ﴿٥٢﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥١﴾﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ তুমিতো জাদুগ্রস্ত একজন, তুমিতো আমাদের মতই একজন মানুষ বৈ নও। সুতরাং তুমি যদি সত্যবাদী হও তবে কোন নিদর্শন উপস্থিত কর। (সূরা শুআরা-১৫৩, ১৫৪)

মাসআলা-৩১৫ঃ কাউমের নেতারা সালেহ (আঃ) কে নিজেদের জন্য অকল্যাণের প্রতিক বলে অবমাননা করেছিলঃ

﴿قَالُوا أَطِيزَنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ قَالَ طَعْتُمْكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿١٧﴾﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ তোমাকে এবং তোমার সাথে যারা আছে, তাদেরকে আমরা কল্যাণের প্রতিক মনে করি। সালেহ বললঃ তোমাদের মঙ্গলামঙ্গল আল্লাহর কাছে, বরং তোমরা এমন সম্প্রদায় যাদেরকে পরীক্ষা করা হচ্ছে। (সূরা নামল-৪৭)

মাসআলা-৩১৬ঃ তাঁর কাউম তাঁর নিকট একটি উট অলৌকিক নিদর্শন হিসেবে প্রেরণ করার আবেদন জানাল এবং আল্লাহ তা পূর্ণ করলেনঃ

﴿وَيَقَوْمِ هَذِهِ نَافَةٌ لِّكُمۢ ءَايَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلۢ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا

﴿تَمْسُوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿١٤﴾﴾

অর্থঃ “আর হে আমার জাতি আল্লাহর এ উটটি তোমাদের জন্য নিদর্শন, অতএব, তাকে আল্লাহর যমীনে বিচরণ করতে দাও এবং তাকে মন্দ ভাবে স্পর্শ করবে না, নতুবা তোমাদেরকে অতিসত্ত্বর আযাব পাকড়াও করবে। (সূরা হুদ-৬৪)

মাসআলা-৩১৭ঃ তাঁর কাউমের অহংকারী নেতারা শুধু তাঁর দাওয়াত গৃহস্থ করা থেকেই বিরত থাকে নাই বরং তারা উটের পা কেটে দিয়ে ছিলঃ

﴿ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي ءَامَنْتُمْ بِهِ كَفِرُونَ ﴾ (৭১)

অর্থঃ “দান্তিকরা বললঃ তোমরা যে বিষয়ে বিশ্বাস স্থাপন করেছ, আমরা তাতে অস্বীকৃত। (সূরা আ'রাফ-৭৬)

﴿ فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ﴾ (৭৬)

অর্থঃ “তবুও তারা উহার পা কেটে দিল। (সূরা হুদ-৬৫)

মাসআলা-৩১৮ঃ উটকে হত্যা করার পর কাফেররা সালেহ (আঃ) কে রাতে হত্যা করার পরিকল্পনাও করেছিলঃ

﴿ وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴾ (৪৮)  
﴿ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴾ (৪৯)

অর্থঃ “আর সেই শহরে ছিল এমন নয় ব্যক্তি যারা দেশময় অনর্থ সৃষ্টি করে বেড়াত এবং সংশোধন করত না। তারা বললঃ তোমরা পরস্পরে আল্লাহ্ র নামে শপথ গৃহস্থ কর যে, আমরা রাত্রিকালে তাকে ও তার পরিবার বর্গকে হত্যা করব, অতঃপর তার দাবীদারদেরকে বলে দিবে যে, তার পরিবার বর্গের হত্যা কান্ড আমরা প্রত্যক্ষ করিনি আমরা নিশ্চয়ই সত্যবাদী। (সূরা নামল-৪৮, ৪৯)

মাসআলা-৩১৯ঃ আল্লাহ্ তাদের চক্রান্তকে তাদের উপরই বাস্তবায়ন করলেন, রাতে তাঁকে হত্যা করার আগেই ভয়ানক ভূমিকম্পের শাস্তি পাঠিয়ে দিয়ে তাদেরকে ধ্বংস করলেন আর ঈমানদারদেরকে রক্ষা করলেনঃ

﴿ وَمَكْرُؤًا مَكَرًا وَمَكْرَنَا مَكَرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴾ (৫০)

অর্থঃ “তার এক চক্রান্ত করেছিল এবং আমিও এক কৌশল করেছিলাম, কিন্তু তারা বুঝতে পারে নি। (সূরা নামল-৫০)

﴿ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِن خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝١٦ وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِئَرِهِمْ جَثِيمِينَ ۝١٧ كَانُوا يَنْتَوُونَ فِيهَا إِلَّا إِنَّا ثَمُودًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۝١٨ أَلَا بَعْدَ الثَّمُودِ ۝١٩﴾

অর্থঃ “অতঃপর আমার আযাব যখন উপস্থিত হল তখন আমি সালেহ কে এবং তদীয় সঙ্গী ঈমানদার গণকে নিজ রহমতে উদ্ধার করি এবং সেদিনকার অপমান থেকে রক্ষা করি, নিশ্চয়ই তোমার পালন কর্তা তিনিই সর্বশক্তিমান, পরাক্রমশালী। আর ভয়ঙ্কর গর্জন পাণিষ্ঠদেরকে পাকড়াও করল, ফলে ভোর নাহতেই তারা নিজ নিজ গৃহসমূহে উপুড় হয়ে পড়ে রইল। যেন তারা কোন দিনই সেখানে ছিল না, জেনে রাখ নিশ্চয়ই সামুদ জাতি তাদের পালন কর্তার প্রতি অস্বীরা করে ছিল। আর শুনে রাখ সমুদ জাতির জন্য অভিশাপ রয়েছে। (সূরা হুদ-৬৬, ৬৮)

মাসআলা-৩২০ঃ রাসূল বিভিন্নভাবে তাদেরকে উপদেশ দিল কিন্তু দুর্ভাগা জাতি মূহর্তের জন্যও রাসূলের উপদেশে কর্ণপাত করল না ফলে ধ্বংস তাদের শেষ পরিণতি হলঃ

﴿ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَنْقَوْمٍ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ النَّصِيحِينَ ۝٧٩﴾

অর্থঃ “সালেহ তাদের কাছ থেকে গ্রহণ করল এবং বললঃ হে আমার সম্প্রদায়, আমি তোমাদের নিকট স্থায়ী প্রতিপালকের পয়গাম পৌঁছিয়েছি এবং তোমাদের মঙ্গল কামনা করছি, কিন্তু তোমরা মঙ্গলাকাজীদেরকে ভালবাস না। (সূরা আ'রাফ-৭৯)

মাসআলা-৩২১ঃ জ্ঞান বান এবং সজাগদৃষ্টি সম্পন্ন ব্যক্তিদের জন্য এঘটনায় বিরাট শিক্ষা রয়েছেঃ

﴿ فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝٥٢﴾

অর্থঃ “এইতো তাদের বাড়ীঘর তাদের অবিশ্বাসের কারণে জনশূন্য অবস্থায় পড়ে আছে, নিশ্চয়ই এতে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য নিদর্শন আছে। (সূরা নামল-৫২)

## نبينا ابراهيم عليه السلام والملا قومه

আমাদের নবী ইবরাহীম (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ<sup>৬১</sup>

মাসআলা-৩২২ঃ ইবরাহীম (আঃ) কাফেরদেরকে তাওহীদের দাওয়াত দিয়ে ছিলেনঃ

﴿وَابْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَانْقُضُوا ذُرِّيَّتَكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

﴿١٦﴾

অর্থঃ “স্মরণ কর ইবরাহীমকে যখন সে তাঁর সম্প্রদায়কে বললঃ তোমরা আল্লাহ কে ভয় কর এবং তাঁকে ভয় কর। এটাই তোমাদের জন্য উত্তম যদি তোমরা বোঝ।” (সূরা আনকাবুত-১৬)

মাসআলা-২২৩ঃ তাওহীদের দাওয়াতের প্রতি উত্তরে কাফের বাপ তার ছেলেকে শুধু ঘর থেকেই বের করে দেয় নাই বরং শত্রুও হয়ে গেলঃ

﴿قَالَ أَرَأَيْبَ أَنْتَ عَنْ إِلَهِتِي يٰإِبْرَاهِيمُ لَئِن لَّمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا﴾

﴿١٧﴾

অর্থঃ “পিতা বললঃ হে ইবরাহীম, তুমি কি আমার উপস্যদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছ? যদি তুমি বিরত নাহও আমি অবশ্যই প্রস্তরাঘাতে তোমার প্রাণনাশ করব। (সূরা মারইয়াম-৪৬)

মাসআলা-৩২৪ঃ নযর নেয়াজের কেন্দ্র সরকারী মূর্তিঘরসমূহ ভাংগার অপরাধে তৎকালীন সরকার ইবরাহীম (আঃ) কে আগুনে নিক্ষেপ করে জ্বালিয়ে দেয়ার সিদ্ধান্ত নিলঃ

﴿قَالُوا أَبَوْا لَهُ بَنِينَ فَأَقْنُوهُ فِي الْجَحِيمِ﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ এর জন্য একটি ভিত নির্মাণ কর এবং অগ্নির তাকে আগুনের স্তম্ভে নিক্ষেপ কর। (সূরা সাফফাত-৯৭)

<sup>৬১</sup> -ইবরাহীম (আঃ) ইরাকে জন্মগ্ৰহণ করেছেন এর পর তাওহীদের দাওয়াত নিয়ে ইরাক থেকে মিশর, এর পর সিরিয়া, এর পর ফিলিস্তিন এর রূপ হিজাজ সফর করেছেন, ফলে গোটা আরব বিশ্বই তাঁর দাওয়াতের মর্যাদন ছিল।

মাসআলা-৩২৫ঃ আল্লাহ তা'লা আগুনকে ঠান্ডা করে ইবরাহীম (আঃ) কে রক্ষা করলেন এবং কাফেরদেরকে লাঞ্ছিত করলেনঃ

﴿قُلْنَا يَنَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝ وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ

الْآخِرِينَ﴾ (৭)

অর্থঃ “আমি বললামঃ হে আগ্নি তুমি ইবরাহীমের উপর শীতল ও নিরাপদ হয়ে যাও, তারা ইবরাহীমের বিরুদ্ধে ফন্দি আঁটতে চাইল অতঃপর আমি তাদেরকে সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত করে দিলাম (সূরা আশীয়া-৬৯, ৭০)

\*\*\*



## نبينا لوط عليه السلام والملا قومه

### লূত (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণ<sup>৬২</sup>

মাসআলা-৩২৬ঃ লূত (আঃ) কাফেরদেরকে উপদেশ দিলেন আল্লাহ্ কে ভয় করতে আর তাঁর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করতে দাওয়াত দিয়ে ছিলেনঃ

﴿إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ﴾  
وَأَطِيعُوا ﴿١٦٣﴾

অর্থঃ “যখন তাদের ভাই লূত তাদেরকে বললঃ তোমরা কি ভয় কর না? আমি তোমাদের বিশ্বস্ত পয়গাম্বর অতএব, তোমরা আল্লাহ্ কে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর। (সূরা শুআ'রা-১৬১, ১৬২)

মাসআলা-৩২৭ঃ লূত (আঃ) এর কাউম সমকামিতায় লিপ্ত ছিল তাই লূত (আঃ) তাঁর কাউমকে এই নিকৃষ্ট অপরাধ থেকে বিরত থাকতে নির্দেশ দিলেনঃ

﴿أَتَأْتُونَ الذَّكَرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَلْ﴾  
أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

অর্থঃ “সমগ্র বিশ্বের মানুষের মধ্যে তোমরাই কি পুরুষদের সাথে কুকর্ম কর? এবং তোমাদের পালন কর্তা তোমাদের জন্য যে, স্ত্রীদেরকে সৃষ্টি করেছে, তাদেরকে বর্জন কর? বরং তোমরা সীমালঙ্ঘনকারী জাতি। (সূরা শুআ'রা-১৬৫-১৬৬)

মাসআলা-৩২৮ঃ পতি উত্তরে লূত (আঃ) এর কাউম তাঁকে আল্লাহ্ ভীকৃত্য এবং পরহেযগারীতার ব্যাপারে বিদ্রূপ করলঃ

﴿وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ﴾  
﴿إِنَّهُمْ أَنْفُسٌ يَنْظَهُرُونَ ﴿٨٢﴾

<sup>৬২</sup> -ইরাক এবং ফিলিস্তিনের মাঝে জর্ডানের পূর্বে লূত (আঃ) এর কাউমের আবাস স্থল ছিল বর্তমানে ওখানে মৃতসাগর অবস্থিত, আল্লাহ্ র শান্তির স্মৃতি বহন করে চলেছে।

অর্থঃ “তাঁর সম্প্রদায় এ ছাড়া কোন উত্তর দিল না যে, বের করে দাও এদেরকে তোমাদের শহর থেকে, এরা খুব সাধু থাকতে চায়। (সূরা আ'রাফ-৮২)

মাসআলা-৩২৯ঃকাফেররা লূত (আঃ) কে এবলে ছমকি দিল যে ইসলামের দাওয়াত দেয়া থেকে বিরত নাথাকলে দেশান্তরিত করা হবেঃ

﴿ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ۝١٣٧﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ হে লূত তুমি যদি বিরত নাথাক তাহলে অবশ্যই তোমাকে বহিস্কৃত করা হবে। (সূরা শুআরা-১৬৭)

মাসআলা-৩৩০ঃলূত (আঃ) এর এলাকা থেকে মাত্র একটি পরিবারই তাঁর প্রতি ঈমান এনে ছিল আর সেটাও তাঁর নিকট আত্মীয় ছিলঃ

﴿ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝١٣٨﴾

অর্থঃ “এবং সেখানে একটি গৃহ ব্যতীত কোন মুসলমান আমি পাইনি। (সূরা যারিয়াত-৩৬)

মাসআলা-৩৩১ঃলূত (আঃ) তাঁর কাউমকে আল্লাহ্ র আযাবের ভয় দেখালেন তখন তারা আল্লাহ্ র আযাবকে বিদ্রূপ করলঃ

﴿ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتَّبِعْنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝١٣٩﴾

অর্থঃ “ আমাদের উপর আল্লাহ্ র আযাব আন যদি তুমি সত্যবাদী হও। (সূরা আনকাবুত-২৯)

মাসআলা-৩৩২ঃলূত (আঃ) এর অবাধ্যতার কারণে আল্লাহ্ তাদেরকে পাথর বৃষ্টি বর্ষণের মাধ্যমে ধ্বংস করলেন এবং ঈমানদারদেরকে রক্ষা করলেনঃ

মাসআলা-৩৩৩ঃআল্লাহ্ র বিধান মোতাবেক লূত (আঃ) এর কাউমের ইসলামের শত্রুদের মধ্যে তাঁর স্ত্রীও অন্তর্ভুক্ত ছিলঃ

﴿ فَتَجَنَّبَهُ وَآهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝١٤٠ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغٰثِرِينَ ۝١٤١ ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ۝١٤٢﴾

﴿ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۝١٤٣﴾

অর্থঃ“অতঃপর আমি তাঁকে এবং তাঁর পরিবার বর্গকে রক্ষা করলাম, এক বৃদ্ধা ব্যতীত সেছিল ধ্বংসপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত, এরপর অন্যদেরকে নিপাত করলাম, তাদের উপর এক বিশেষ বৃষ্টি বর্ষণ করলাম, ভীতি-প্রদর্শিতদের জন্য এই বৃষ্টি ছিল নিকৃষ্ট। (সূরা শুআরা-১৭০-১৭৩)

মাসআলা-৩৩৪ঃ আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসুলের বিরোধীতাকারীদের উচিত নূত (আঃ) ধ্বংস হওয়া থেকে শিক্ষা নেয়াঃ

﴿ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ۝۷০ ﴾

অর্থঃ“নিশ্চয় এতে চিন্তাশীলদের জন্য নিদর্শনাবলী রয়েছে। (সূরা হিজর-৭৫)

\*\*\*

## نَبِينَا شُعَيْبٌ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالْمَلَأُ قَوْمَهُ

আমাদের নবী শুআইব (আঃ) এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণঃ<sup>৬৩</sup>

মাসআলা-৩৩৫ঃ শুআইব (আঃ) তাঁর কাউমকে তাওহীদের দাওয়াত দিলেন এবং ওজন ও পরিমাপে এবং কম বেশি না করার জন্য এবং পৃথিবীতে ফেতনা-ফাসাদ না করার জন্য উপদেশ দিলেনঃ

﴿وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَنْقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾﴾

অর্থঃ“ আমি মাদায়েনের প্রতি তাদেরই ভাই শোআইবকে প্রেরণ করেছি, সে বললঃ হে আমার সম্প্রদায় তোমরা আল্লাহ্ র ইবাদতহ কর, তিনি ব্যতীত তোমাদের কোন উপাস্য নেই, তোমাদের তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে প্রমাণ এসে গেছে, অতএব তোমরা মাপ ও ওজন পূর্ণ কর, এবং মানুষকে তাদের দ্রব্যাদি কম দিয়ো না এবং ভূ পৃষ্ঠের সংস্কার সাধনের পর তাতে অনর্থ সৃষ্টি কর না, এঁই তোমাদের জন্য কল্যাণ কর, যদি তোমরা বিশ্বাসী হও। (সূরা আ'রাফ-৮৫)

মাসআলা-৩৩৬ঃ শুআইব (আঃ) কাফেরদেরকে ব্যবসার রাজপথে রাহাজানী করা থেকেও নিষেধ করেছেনঃ

<sup>৬৩</sup> - শুআইব (আঃ) কে আল্লাহর তা'লা মাদায়েন এবং আইকাতে রাসূল করে পাঠান, মাদায়েন এবং আইকা দু'টি পৃথক পৃথক বংশ ছিল, যা সামান্য দূরত্বে অবস্থিত ছিল, মূলত আইকা তাবুকের পুরানো নাম, আর এঁই আইকা অধিবাসীদের অজল ছিল, আর মাদায়েন লোহিত সাগর এবং আকাবা উপসাগরের পার্শ্বে অবস্থিত, এখানে মাদায়েনবাসীদের আবাস স্থল, আইকা এবং মাদায়েন উভয়েই একেই বংশের অন্তর্ভুক্ত, এউভয় বংশের পেশা ছিল ব্যবসা বানিজ্যা এবং ব্যবসার ক্ষেত্রে তারা একেই পাশে লিগু ছিল, তাই উভয় বংশের প্রতি একেই নবী প্রেরণ করা হয়ে ছিল, উয়েলখ্য তাবুক এবং সাদায়েন বিভিন্ন জাতি গোষ্ঠির ব্যবসায়িক এলাকা হওয়ার কারণে বেশ গুরুত্বপূর্ণ অজল ছিল। একেই কারণে মাদায়েন এবং আইকা বাসীর গুরুত্ব বিভিন্ন জাতি গোষ্ঠির নিকট ব্যবসা এবং রাজনৈতিক উভয় দিক থেকে গুরুত্বপূর্ণ ছিল।

﴿وَإِنْ كَانَ طَائِفَةٌ مِّنْكُمْ ءَامَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ، وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ﴾ (৮৭)

অর্থঃ তোমারা পথে যাটে একারণে বসে থেকে না যে, ঈমানদারদেরকে হুমকি দিবে, আল্লাহ র পথে বাধা সৃষ্টি করবে এবং তাতে বক্রতা অনুসন্ধান করবে। (সূরা আ'রাফ-৮৭)

মাসআলা-৩৩৭ঃ শুআইব (আঃ) তাঁর কাউমকে উপদেশ দিলেন যে আল্লাহ র দেয়া হালাল রিযিকের উপর সন্তুষ্ট থাক এতে বরকত আছেঃ

﴿بَقِيتُ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِظٍ﴾ (৮৮)

অর্থঃ“ আল্লাহ প্রদত্ত উদ্বৃত্ত তোমাদের জন্য উত্তম, যদি তোমরা ঈমানদার হও। (সূরা হুদ-৮৬)

মাসআলা-৩৩৮ঃকাফেররা শুআইব (আঃ) কে মিথ্যুক পাগল এবং নিজেদের মত মানুষ বলে ঠাট্টা করতঃ

মাসআলা-৩৩৯ঃ শুআইব(অঃ) তাঁর কাউমকে আল্লাহ র আযাবের ভয় দেখালে তারা আল্লাহ র আযাবকে বিদ্রূপ করতে লাগলঃ

﴿فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ﴾ (৮৯)

অর্থঃ“অতএব, যদি সত্যবাদী হও, তবে আকাশের কোন টুকরো আমাদের উপর ফেলে দাও। (সূরা শুআ'রা-১৮৭)

মাসআলা-৩৪০ঃকাফেররা শুআইব (আঃ) এর নামায,পরহেযগারীতা,আমলেরও বিদ্রূপ করলঃ

﴿قَالُوا يَسْعَيْبُ أَصْلُوكَ تَأْمُرُكَ أَنْ تَتْرَكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ﴾ (৯০)

অর্থঃ “তারা বললঃ হে শুআইব (আঃ) আপনার নামায কি আপনাকে এই শিক্ষাই দেয় যে, আমরা এসব উপাস্যদেরকে পরিত্যাগ করব আমাদের বাপ-দাদারা যাদের উপাসনা করতঃ

অথবা আমাদের ধন-সম্পদে যা কিছু করে থাকি তা ছেড়ে দিব? আপনিতো একজন বিশেষ মহৎ ব্যক্তি ও সং পথের পথিক। (সূরা হুদ-৮৭)

মাসআলা-৩৪১ঃ কাফেরদের ধারণা ছিল যে, তারা যদি শুআইব (আঃ) এর প্রতি ঈমান আনে তাহলে তাদের ব্যবসা নষ্ট হয়ে যাবেঃ

﴿ وَقَالَ لِّلَّذِينَ كَفَرُواْ مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَسِرُونَ ﴿٩٠﴾ ﴾

অর্থঃ “তার সম্প্রদায়ের কাফের সর্দাররা বললঃ যদি তোমরা শোআইবের অনুসরণ কর, তবে নিশ্চিত ক্ষতিগ্রস্ত হবে। (সূরা আ'রাফ-৯০)

মাসআলা-৩৪২ঃ কাফেররা শুআইব (আঃ) কে এবং তাঁর সাথীদেরকে দেশান্তরিত করার হুমকি দিয়ে ছিলঃ

﴿ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُواْ مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَشْعِيبُ وَالَّذِينَ ءَامَنُواْ

مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَنَعُودَنَّ فِيْ مِلَّتِنَا قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كَرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ ﴾

অর্থঃ “তার সম্প্রদায়ের দান্তিক সর্দাররা বললঃ হে শোআইব, আমরা অবশ্যই তোমাকে এবং তোমার সাথে বিশ্বাস স্থাপনকারীদেরকে শহর থেকে বের করে দিব অথবা তোমরা আমাদের ধর্মে প্রত্যাবর্তন করবে। (সূরা আ'রাফ-৮৮)

মাসআলা-৩৪৩ঃ কাফেররা শুআইব (আঃ) কে বোকা এবং তাকে পাথর মেরে হত্যাকরার হুমকি দিয়ে ছিলঃ

﴿ قَالُواْ يَشْعِيبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرْدُكَ فِىْنَا ضَعِيْفًا وَّلَوْ لَا

رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَمَا اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ ﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ হে শোআইব (আঃ) আপনি যা বলছেন তার অনেক কথাই আমরা বুঝি নাই, আমরাতো আপনাকে আমাদের মধ্যে দুর্বল ব্যক্তি রূপে মনে করি, আপনার ভাই বন্ধুরা নাথাকলে আমরা আপনাকে প্রস্তরাঘাতে হত্যা করতাম। আমাদের দৃষ্টিতে আপনি কোন মর্যাদাবান লোক নন। (সূরা হুদ-৯১)

মাসআলা-৩৪৪ : রাসূলকে মিথ্যায় প্রতিপন্ন করার কারণে আব্রাহাম কাফেরদেরকে এক আচমকা আঘাবের মাধ্যমে ধ্বংস করে দেন এবং ঈমানদারদেরকে বাঁচিয়ে দেনঃ

﴿وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِئَرِهِمْ حَثِثِينَ ﴿٩١﴾ كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ أَلَا بُعْدًا لِّمَدِينٍ كَمَا بَعَدَتْ ثَمُودُ ﴿٩٢﴾﴾

অর্থঃ “আর আমার হুকুম যখন আসল তখন আমি শুআইব (আঃ) এবং তার সাথী ঈমানদারদেরকে নিজ রহমতে রক্ষা করি, আর পাপিষ্ঠদের উপর বিকট গর্জন পতিত হল, ফলে ভোর নাহতেই তারা নিজেদের ঘরে উপড় হয়ে পড়ে রইল, যেন তারা কখনো ওখানে বসবাস করেনাই। (সূরা হুদ-৯৪, ৯৫)

মাসআলা-৩৪৫ঃ শুআইব (আঃ) এর কাউমএতটা অবাধ্য এবং পাপাচারে লিপ্ত হয়েছিল যে, নবীগণ পর্যন্ত তাদের ধ্বংসের কারণে সামান্য আফসোস করে নাইঃ

﴿فَنَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَنقُومُ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ﴿٩٣﴾ فَكَيْفَ ءَاسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ﴾

অর্থঃ “অনন্তর সে তাদের কাছ থেকে প্রস্তান করল এবং বললঃ হে আমার সম্প্রদায়, আমি তোমাদেরকে প্রতিপালকের পয়গাম পৌঁছে দিয়েছি এবং তোমাদের হিত কামনা করছি। এখন আমি কাফেরদের জন্য কেন দুঃখ করব। (সূরা আ’রাফ-৯৩)

## نبينا موسى عليه السلام وآل فرعون

### আমাদের নবী মূসা (আঃ) এবং ফেরআউনের পরিবারঃ<sup>৬৪</sup>

মাসআলা-৩৪৬ঃ মূসা (আঃ) ফেরআউনকে তাওহীদের এবং তাঁর নবুয়তের প্রতি দাওয়াত দিলেন আর বানী ইসরাঈলকে স্বাধীন করে দেয়ার জন্য নির্দেশ দিলেনঃ

﴿ فَأْتِيَافِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رُسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أَنْ أَرْسِلَ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿١٧﴾ ﴾

অর্থঃ “অতএব, তোমরা ফেরআউনের নিকট যাও এবং বল, আমরা বিশ্বজগতের পালনকর্তার দূত, যাতে তুমি বানী ইসরাঈলকে আমাদের সাথে যেতে দাও। (সূরা শুআরা-১৬,১৭)

মাসআলা-৩৪৭ঃ ফেরআউন মূসা (আঃ) কে পাগল, জাদুকর, লাঞ্ছিত, কৃতদাস জাতির সদস্য বলে ঠাট্টা করল এবং তাঁর দাওয়াতকে প্রত্যাখ্যান করলঃ

﴿ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٨﴾ ﴾

অর্থঃ ফেরআউনের সাজ-পাজরা বলতে লাগল নিশ্চয়ই লোকটি বিজ্ঞ-যাদুকর। (সূরা আ'রাফ-১০৯)

﴿ فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذِهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَى وَمَنْ مَعَهُ ۚ أَلَا إِنَّمَا طَّيَّرَهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾ ﴾

অর্থঃ “আর যদি অকল্যাণ এসে উপস্থিত হয় তবে তাতে মূসার এবং তাঁর সঙ্গীদের অলঙ্ঘন বলে অভিহিত করে। (সূরা আ'রাফ-১৩১)।

﴿ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٢٠﴾ ﴾

অর্থঃ “আমি যে শ্রেষ্ঠ এ ব্যক্তি থেকে, যে নীচ এবং কথা বলতেও সক্ষম নয়। (সূরা যুখরুফ-৫২)

<sup>৬৪</sup> -মূসা (আঃ) মিশরে জন্মগ্ৰহণ করেছেন, মিশর এবং ফিলিস্তিনের অজলসমূহ তাঁর দাওয়াতী অজল ছিল।



﴿ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۝٧٧ ﴾

অর্থঃ “ফেরাউন বললঃ তোমাদের প্রতি প্রেরিত তোমাদের রাসূলটি নিশ্চয় বন্ধ পাগল।  
(সূরা শুআরা-২৭)

﴿ وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ ءَايَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَسْتَلَّ بِئْسَ الْإِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ

فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَمُوسَىٰ مَسْحُورًا ۝١٠١ ﴾

অর্থঃ “হে মূসা আমার ধারণায় তুমিতো জাদুগ্রস্ত। (সূরা বানী ইসরাঈল-১০১)

﴿ فَقَالُوا أَنْتُمْ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عِدُونَ ۝٤٧ ﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ আমরা কি আমাদের মতই এই দুই ব্যক্তির প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করব  
অথচ তাদের সম্প্রদায় আমাদের দাস? (সূরা মুমুনুন-৪৭)

মাসআলা-৩৪৮ঃ ফেরাউন তার ধারণামতে তার স্বজাতিকে সে সঠিক পথে পরিচালিত  
করছিলঃ

﴿ يَقَوْمِ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرْنَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ

جَاءَنَا قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝٩١ ﴾

অর্থঃ ফেরাউন বললঃ আমি যা বুঝি, তোমাদেরকে তাই বোঝাই, আর আমি তোমাদেরকে  
মঙ্গলের পথই দেখাই। (সূরা মুমিন-২৯)

মাসআলা-৩৪৯ঃ ফেরাউন মনে করত তার স্বজাতির উপর তার শক্তি অনেকঃ

﴿ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴾

অর্থঃ “বস্ত্তত আমরা তাদের উপর প্রবল। (সূরা আ'রাফ-১২৭)

মাসআলা-৩৫০ঃ মূসা (আঃ) এর যুজ্জা (অলৌকিক) ক্ষমতা দেখে ফেরাউন তার  
ক্ষমতা নিয়ে চিন্তান্বিত হয়ে পড়ল এবং তার দরবারের লোকদের সাথে মিলে মূসা (আঃ) কে  
সরকারের বিরুদ্ধে চক্রান্তকারী বলে প্রচার প্রপাগান্ডা চালাতে লাগলঃ

﴿ قَالَ لِلْمَلَأِ حَوْلَهُ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤﴾ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ دَارِكُمْ ۖ ﴾

﴿ أَرْضَكُمْ بِسِحْرِهِ فَمَاذَا أَنْتُمْ رَوِّتَ ﴿٢٥﴾ ﴾

অর্থঃ “ফেরাউন তার পরিষদবর্গকে বললঃ নিশ্চয়ই এ একজন সুদক্ষ জাদুকর, সে তার জাদু বলে তোমাদেরকে তোমাদের দেশ থেকে বহিস্কার করতে চায়। অতএব, তোমাদের মত কি? (সূরা শুআরা-৩৪-৩৫)

মাসআলা-৩৫১ঃ ফেরাউন জাদুকরদের জন্য এমন শাস্তির পরিকল্পনা নিল যা শুনে অন্য কেউ ঈমান আনার সাহশ করতে পারছিল নাঃ

﴿ قَالَ ءَامَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرٌ كُزُّمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾ لَا قُطْعَانَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلْفٍ وَلَا صَلْبَتَكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٠﴾ ﴾

অর্থঃ “ফেরাউন বললঃ আমার অনুমতি দানের পূর্বেই তোমরাকি তাকে মেনে নিলে? নিশ্চয়ই সে তোমাদের প্রধান, যে তোমাদেরকে জাদু শিক্ষা দিয়েছে, শীঘ্রই তোমরা পরিণাম জানতে পারবে, আমি অবশ্যই তোমাদের হাত ও পা বিপরীত দিকক থেকে কতন করব এবং তোমাদের সাবাইকে শূলে চড়াব। (সূরা শুআরা-৪৯)

মাসআলা-৩৫২ঃ ঈমানদারগণ ফেরাউনের সিদ্ধান্ত শাস্ত মস্তিষ্কে শুনল এবং দ্রুত তাদের রবের সাক্ষাত লাভের জন্য প্রস্তুতি নিলঃ

﴿ قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَتَنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾ ﴾

﴿ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾ ﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ কোন ক্ষতি নেই, আমরা আমাদের পালনকর্তার নিকট প্রত্যাবর্তন করব, আমরা আশাকরি আমাদের পালনকর্তা আমাদের ত্রুটি- বিচ্যুতি মর্জনা করবেন কেননা আমরা বিশ্বাস স্থাপনকারীদের মধ্যে অগ্রণী। (সূরা শুআরা-৫০-৫১)

মাসআলা-৩৫৩ঃ জাদুকরদের ঈমান আনার পর ফেরাউন তার ক্ষমতা রক্ষাকরার জন্য বানী ইসরাঈলে কোন ছেলে সন্তান জন্ম গ্রহণকরা মাত্রই তাকে হত্যা করতঃ

﴿ قَالَ سَنُقِيلُ أبنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ ﴾

অর্থঃ “সে বললঃ আমি এখনই হত্যা করব তাদের পুত্র সন্তানদেরকে, আর জীবিত রাখবে মেয়েদেরকে। (সূরা আ'রাফ-১২৭)

মাসআলা-৩৫৪ঃ ফেরাউন মুসা (আঃ) কে প্রথমে বন্দীকরার হুমকী দিল এর পর হত্যা করার সিদ্ধান্ত নেয়ঃ

﴿ قَالَ لِيْنِ أَخَذْتَ إِلَهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٢٩﴾ ﴾

অর্থঃ “ফেরাউন বললঃ তুমি যদি আমার পরিবর্তে অন্যকে উপাস্যরূপে গ্রহণ কর, তবে আমি অবশ্যই তোমাকে কারাগারে নিক্ষেপ করব। (সূরা শুআরা-২৯)

﴿ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٣١﴾ ﴾

অর্থঃ ফেরাউন বললঃ তোমরা আমাতে ছাড়, মুসাকে হত্যা করতে দাও, ডক্কি সে তার পালনকর্তাকে। (সূরা মুমেন-২৬)

মাসআলা-৩৫৫ঃ ফেরাউনের ভয়ে অতি অল্প লোকই মুসা (আঃ) এর প্রতি ঈমান এনে ছিলঃ

﴿ فَمَا ءَامَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣٢﴾ ﴾

অর্থঃ “আর কেউ ঈমান আনল না মুসার প্রতি তার কাউমে কতিপয় বারক ব্যতীত, ফেরাউন এবং তার সর্দারদের ভয়ে যে, এরা না আবার কোন বিপদে ফেলে দেয়, ফেরাউন দেশময় কতৃভের শিখরে আরোহণ করেছিল, আর সে তার হাত ছেড়ে রেখেছিল। (সূরা ইফসুস-৮৩)

মাসআলা-৩৫৬ঃ মুসা (আঃ) এর অবাধ্য হওয়ার কারণে আল্লাহ তা'লা ঈমানদারদেরকে রক্ষা করেছেন এবং ফেরাউনকে সমুদ্রে ডুবিয়ে দিয়েছেনঃ

﴿ وَأَنجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٣٥﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٣٦﴾ ﴾

অর্থঃ “এবং মূনা ও তাঁর সাথীদের সবাইকে বাঁচিয়ে দিলাম, অতঃপর অপর দলটিকে নিমজ্জিত করলাম। (সূরা শুআরা-৬৫-৬৬)

মাসআলা-৩৫৭ঃ সেসময়ের বিশাল শক্তিদ্বারা এত সহজভাবে শেষ হয়ে গেল যে এতে আকাশ ও যমিনের কোথাও কেউ অশ্রু বাড়ায় নাইঃ

﴿فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ ﴿٢٩﴾﴾

অর্থঃ “তাদের জন্য ক্রন্দন করেনি আকাশ ও পৃথিবী এবং তারা অবকাশও পায়নি। (সূরা দোখান-২৯)

মাসআলা-৩৫৮ঃ সমুদ্রে ডুবে মরার মুহর্তে ফেরাউন ঈমান আনতে চেয়েছিল কিন্তু ঐ ঈমান তাকে আল্লাহ্ র আযাব থেকে রক্ষা করতে পারে নাইঃ

﴿وَجَنُوزْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَنْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ، بَغْيًا وَعَدُوًّا حَقًّا إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ ءَامَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي ءَامَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾ ءَالَيْنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾﴾

অর্থঃ “এমনকি যখন তারা ডুবতে আরম্ভ করল, তখন বললঃ এবার বিশ্বাস করে নিচ্ছি যে, কোন মা'বুদ নেই তিনি ব্যতীত যার উপর ঈমান এনেছে বনী-ইসরাঈলরা, বস্তুত আমিও তাঁরই অনুগতদের অন্তর্ভুক্ত। এখন একথা বলছ, অথচ তুমি ইতি পূর্বে না-ফরমানী কনছিলে এবং পথভ্রষ্টদের অন্তর্ভুক্ত ছিলে। (সূরা ইফনুস-৯০, ৯১)

মাসআলা-৩৫৯ঃ আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসুলের অবাধদের উচিত ফেরাউনের বংশধরদের ধ্বংস হওয়া থেকে শিক্ষা নেয়াঃ

﴿وَأَسْتَكَبَرُوا وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ يَغْيِرُ الْحَقُّ وَظَنُوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ فَاَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾﴾

অর্থঃ “ফেরাউন ও তার বাহিনী অন্যায়ভাবে পৃথিবীতে অহংকার করতে লাগল এবং তারা মনে করল যে, তারা আমার নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে না, অতঃপর আমি তাকে তার বাহিনীকে পাকড়াও করলাম, তৎপর আমি তাদেরকে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম। (সূরা কাসাস-৩৯, ৪০)

## الرسول واهل القرية

### রাসূলগণের একটি দল এবং এলাকাবাসী

মাসআলা-৩৬০ঃ কোন কোন এলাকায় আল্লাহ তা'লা একেরপর এক একাধিক রাসূল প্রেরণ করেছেন যারা মানুষকে তাওহীদরে দাওয়াত দিয়েছিলঃ

﴿وَأَضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾﴾

অর্থঃ “তাদের নিকট বর্ণনা কর এক জনপদের অধিবাসীদের দৃষ্টান্ত; তাদের নিকট তো এসেছিল রাসূলগণ, যখন আমি তাদের নিকট পাঠিয়েছিলাম দুজন রাসূল, কিন্তু তারা তাদেরকে মিথ্যাবাদী বলল, তখন আমি তাদেরকে শক্তিশালী করেছিলাম তৃতীয় একজন দ্বারা এবং তারা বলেছিলঃ আমরা তোমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছি। (সূরা ইয়াসীন-১৩, ১৪)

মাসআলা-৩৬১ঃ এলাকাবাসীরা রাসূলগণকে নিজেদেরমত মানুষ মিথ্যা বলে ঠাট্টা বিদ্রূপ কিন্তু রাসূলগণ এরপরও দাওয়াতেরকাজ চালুরেখেছেনঃ

﴿قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿١٥﴾ قَالُوا رَبَّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَا الْبَلِّغُ الْمُنِيرِ ﴿١٧﴾﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ তোমরা তো আমাদের তই মানুষ, দায়াময় আল্লাহ তো কিছুই অবতীর্ণ করেননি, তোমরা শুধু মিথ্যাই বলছ। তারা বললঃ আমাদের প্রতিপালক জানেন যে আমরা অবশ্যই তোমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছি। স্পষ্টভাবে পচার করাই আমাদের দায়িত্ব। (সূরা ইয়াসীন-১৫, ১৬, ১৭)

মাসআলা-৩৬২ঃ এলাকাবাসীরা রাসূলগণকে শুধু পাগলবলেই তাদেরকে অবমাননা করেনাই বরং তাদেরকে হত্যার হুমকিও দেয়া হয়েছেঃ

﴿قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجِمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾﴾

অর্থঃ “তারা বললঃ আমরা তোমাদেরকে অমঙ্গলের কারণ মনে করি, যদি তোমরা বিরত নাহও তবে তোমাদেরকে অবশ্যই প্রস্তারাঘাতে হত্যা করব, এবং আমাদের পক্ষ থেকে তোমাদের উপর যন্ত্রনাদায়ক শাস্তি অবশ্যই আপতিত হবে। (সূরা ইয়াসীন-১৮)

মাসআলা-৩৩৬ঃ এলাকার লোকদের মধ্য থেকে শুধু একজন রোকই ঈমান এনেছিল তখন এলাকাবাসীরা তার শত্রু হয়েগেল এমনকি তারা তাকে হত্যা করলঃ

﴿ وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَنْقُومُ آتِبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٠﴾  
 آتِبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُنْتَدُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي  
 فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾ أَأَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَنُ  
 بِضُرٍّ لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونَ ﴿٢٣﴾ إِنِّي إِذَا لَفِي ضَلَالٍ  
 مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ﴿٢٥﴾ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ  
 يَلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾ ﴾

অর্থঃ “নগরীর প্রান্ত থেকে এক ব্যক্তি ছুটে আসল, সে বলল॥ হে আমার সম্প্রদায়! রাসূলদের অনুসরণ কর, অনুসরণ কর তাদের যারা তোমাদের নিকট কোন পতিদান চায় না এবং তারা সৎ পথ প্রাপ্ত। আমার কি হয়েছে যে, যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন এবং যাঁর নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে আমি তাঁর ইবাদত করব না? আমি কি তাঁর পরিবর্তে অন্য মা'বুদ গম্বাহণ করব? দয়াময় (আল্লাহ) আমাকে ক্ষতি গ্রস্ত করতে চাইলে তাদের সুপারিশ আমার কোন কাজে আসবে না এবং তারা আমাকে উদ্ধার করতেও পারবে না। এরূপ করলে আমি অবশ্যই স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে পড়ব। আমি তো তোমাদের প্রতিপালকের উপর ঈমান এনেছি, অতএব তোমরা আমার কথা শোন। তাকে বলা হল, জান্নাতে প্রবেশ কর, সে বলে উঠল হায়! আমার সম্প্রদায় যদি জানতে পারত। কি কারণে আমার প্রতিপালক আমাকে ক্ষতি করেছেন এবং আমাকে সম্মানিত করেছেন। (সূরা ইয়াসীন-২০-২৭)

মাসআলা-৩৩৭ঃ রাসূলগণকে মিথ্যাবাদী এবং তাদের অবাধ্যতার কারণে আল্লাহ তাঁলা এলাকাবাসীদের উপর শাস্তি প্রেরণ করেন এবং সমস্ত এলাকাকে ধ্বংস করে দেনঃ

﴿ وَمَا أَرْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٢٨﴾  
 إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ ﴿٢٩﴾ ﴾

অর্থঃ “আমি তার (মৃত্যুর) পর তার সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আকাশ থেকে কোন বাহিনী প্রেরণ করিনি এবং প্রেরণের প্রয়োজনও আমার ছিল না, ওঁ ছিল শুধুমাত্র এক বিকট শব্দ, ফলে তারা নিখর নিস্তক হয়ে গেল। (সূরা ইয়াসীন-২৮, ২৯)

মাসআলা-৩৬৫ঃ অবাধ্য লোকদের ধ্বংস সম্পর্কে মানুষের চিন্তা ভাবনা করা উচিত যাতে করে তারাও অবাধ্যতার কারণে ধ্বংস না হয়ে যানঃ

﴿يَحْزَنُ عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۚ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۚ﴾

অর্থঃ “পরিতাপ (এরূপ) বান্দাদের জন্যে! তাদের নিকট যখনই কোন রাসূল এসেছে তখনই তারা তাকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করেছে। তারা কি লক্ষ্য করে না যে, তাদের পূর্বে কত মানব গোষ্ঠীকে আমি ধ্বংস করেছি, যারা তাদের মাঝে ফিরে আসবে না? (সূরা ইয়াসীন-৩০, ৩১)

## نبينا عيسى عليه السلام واليهود আমাদের নবী ঈসা (আঃ) এবং ইহুদীরাঃ<sup>৬৫</sup>

মাসআলা-৩৬৬ঃঈসা (আঃ) কাফেরদেরকে তাওহীদের দাওয়াত দিয়ে ছিলেনঃ

﴿ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَقَالَ الْمَسِيحُ  
يَبْنَىٰ إِسْرَءِيلَ أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ  
عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن أَنْصَارٍ ﴾ (৬৬)

অর্থঃ “মাসহি নিজেই বলেছিলঃ হে বানী ইসরাঈল!তোমরা আল্লাহ্ র ইবাদত কর, যিনি আমারও প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক, নিশ্চয়ই যে ব্যক্তি আল্লাহ্ র অংশী স্থাপন করবে তবে আল্লাহ্ তার জন্য জান্নাত হারাম করে দিবেন এবং তার বাসস্থান হবে জাহান্নাম, আর এরূপ অত্যাচারীদের জন্য কোন সাহায্যকারী হবে না। (সূরা মায়দা-৭২)

মাসআলা-৩৬৭ঃতাওহীদের দাওয়াতের উত্তরে বানী ইসরাঈল ঈসা (আঃ) কে হত্যাকরার পরিকল্পনা নিতে লাগলঃ

﴿ وَمَكْرُؤًا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكِرِينَ ﴾ (৬৭)

অর্থঃ “আর তারা ষড়যন্ত্র করেছিল আর আল্লাহ্ কৌশল করলেন এবং আল্লাহ্ শ্রেষ্ঠতম কৌশলী। (সূরাআল ইমরান-৫৪)

মাসআলা-৩৬৮ঃবানী ইসরাঈলরা কুফরীর মধ্যে এমনভাবে নিমজ্জিত ছিল যে ইসা (আঃ) এর মা মারিয়াম কে ব্যভিচারের অপবাদদেতেও তারা চিন্তা করে নাইঃ

﴿ وَكَفَرَهُمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ بُهْتَنًا عَظِيمًا ﴾ (১০৭)

অর্থঃ“ এবং তাদের কুফরী ও মারইয়ামের প্রতি তাদের ভয়ানক অপবাদের কারণে। (সূরা নিসা-১৫৬)

<sup>৬৫</sup> -ঈসা (আঃ) ফিলিস্তিনের নাসেরা শহরে জন্ম গ্ৰহণ করেছেন, আর তার দাওয়াতী অজলও ফিলিস্তিন ই ছিল।



মাসআলা-৩৬৯ঃ আল্লাহ্ তা'লা স্বীয় রহমত এবং বিশাল শক্তির মাধ্যমে ঈসা (আঃ) কে আকাশে উঠিয়ে নিয়েছেন এবং কাফেরদের হাতে নিহত হওয়া থেকে রক্ষা করেছেনঃ

﴿ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِن سُبُّهُ هُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا ابْتِغَاءَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ﴾ (১০৭)

অর্থঃ “এবং আল্লাহ্ র রাসূল মারইয়াম নন্দন ঈসাকে আমরা হত্যা করেছি একথা বলার কারণে এবং তারা তাঁকে হত্যা করেনি ও তাঁকে ক্রুশ বিদ্ধ করেনি এবং তাদেরকেই সংশয়বিশ্ট করা হয়ে ছিল। (সূরা নিসা-১৫৭)

﴿ بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴾ (১০৮)

অর্থঃ “পরন্তু আল্লাহ্ তাঁকে নিজের দিকে উঠিয়ে নিয়েছেন এবং আল্লাহ্ পরাক্রান্ত, মহাজ্ঞানী। (সূরা নিসা-১৫৮)

سید الانبیاء محمد صلی اللہ علیہ وسلم و اشراف قومه

সর্বশ্রেষ্ঠ নবী মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)

এবং তাঁর কাউমের সর্দারগণঃ<sup>৬৬</sup>

মাসআলা-৩৭০ঃ মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কাফেরদেরকে তাওহীদের দাওয়াত দিয়েছিলেনঃ

﴿قُلْ إِنَّمَا يُوحِي إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَحْدٌ فَهَلْ أَنتُم

مُسْلِمُونَ﴾ (১১৮)

অর্থঃ “বল আমার প্রতি অহী হয় যে, তোমাদের মা'বুদ একেই মা'বুদ, সুতরাং তোমরা হয়ে যাও আত্মসমর্পনকারী। (সূরা আযীযা-১০৮)

মাসআলা-৩৭১ঃ কোরাইশ সর্দাররা রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে কবি, মিথ্যুক, জাদুকর, পাগল, গণক, জাদুগ্রস্ত এবং তাদের মতই মানুষ বলে আক্ষয়িত করে তাঁকে মিথ্যায় প্রতিপান্ন এবং অহংকার করলঃ

﴿وَيَقُولُونَ أَيَّنَا لَتَارِكُوْا إِلَهَيْنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ﴾ (৩৭)

অর্থঃ “এবং বলতোঃ আমরা কি এক পাগল কবির কথায় আমাদের মা'বুদদেরকে বর্জন করব? (সূরা সাফফাত-৩৬)

﴿وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سِحْرٌ كَذَّابٌ﴾ (৬)

অর্থঃ “কাফেররা বললঃ এতো এক জাদুকর মিথ্যাবাদী। (সূরা সোয়াদ-৪)

﴿نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَى إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ

تَنْبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا﴾ (১৭)

<sup>৬৬</sup> -নবীগণের সর্দার মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) মক্কায় জনগণগ্রহণ করেছেন এবং সমগ্র বিশ্বের জিন ও ইনসানের প্রতি রাসূল হিসেবে প্রেরিত হয়েছেন। (আল্লাহ র জন্য সমস্ত প্রশংসা)

অর্থঃ “যখন তারা কান পেতে তোমার কথা মনে তখন তারা কেন, কান পেতে তা শুনে তা আমি ভাল করে জানি এবং এটাও জানি গোপনে আলোচনাকালে সীমালংঘনকারীরা বলে॥তোমরা তো এক জাদুগ্রস্ত ব্যক্তির অনুসরণ করছ। (সূরা বানী ইসরাঈল-৪৭)

﴿فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ﴾ (৭)

অর্থঃ “অতএব, তুমি উপদেশ দান করতে থাক, তোমার প্রভুর অনুগ্রহে তুমি গণক নও, উন্মাদও নও। (সূরা ত্বর-২৯)

﴿لَا هِيَ قُلُوبُهُمْ وَأَسْرَأُ النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ﴾

﴿أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنْتُمْ بُصُورٌ﴾ (২)

অর্থঃ “তাদের অন্তর থাকে অমনোযোগী, সীমালংঘনকারীরা গোপনে পরামর্শ করেঃ এত তোমাদের মত একজন মানুষই তবুও কি তোমরা দেখে শুনে জাদুর কবলে পড়বে? (সূরা আযীয়া-৩)

মাসআলা-৩৭২ঃমকার কোরাইশরা যখন রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে দেখত তখন তাঁকে বিদ্রূপ করতঃ

﴿وَقَالُوا مَا لَ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ﴾

﴿فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرٌ﴾ (৭) ﴿أَوْ يُنْفَخُ إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا﴾

﴿وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا﴾ (৮)

অর্থঃ “তারা বলে এ কেমন রাসূল যে আহার করে এবং হাটে বাজারে চলাফেরা করে? তার নিকট কোন ফেরেশতা কেন অবতীর্ণ করা হলো না, যে তার সাথে থাকতো মতর্ককারীরূপে? (সূরা ফুরকান ৭,৮)

﴿وَإِذَا رَأَوْكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِتَّخَذُواكَ إِذَا هُمْ يَنْتَهِزُونَ﴾ (৯)

﴿يَذْكُرُ إِلَهُكُمْ وَهُمْ يَذْكُرُ الرَّحْمَنَ هُمْ كَافِرُونَ﴾ (১০)

অর্থঃ “কাফেররা যখন তোমাকে দেখে তখন তারা তোমাকে শুধু বিদ্রূপের পাত্ররূপেই গণ্যহণ করে; তারাবলেঃ এই কি সেই, যে তোমাদের দেবতাগুলির সমালোচনা করে? অথচ তারাইতো রহমান এর আলোচনা অস্বীকার করে। (সূরা আযীয়া-৩৬)

﴿وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوءًا أَهَذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝١١﴾

অর্থঃ “তারা যখন তোমাকে দেখে তখন শুধু তোমাকে ঠাট্টা- বিদ্রূপের পাত্র রূপে গণ্য করে এবং বলেঃ এ কিসে, যাকে আল্লাহ রাসূল করে পাঠিয়েছেন। (সূরা ফুরকান-৪১)

﴿وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَذُكُّمُ عَلَىٰ رَجُلٍ يَنْتَشِكُمُ إِذَا مِزْقَتُمْ كُلَّ مَمَزِقٍ إِنَّكُمْ

لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝٧﴾

অর্থঃ “কাফেররা বলেঃ আমরা কি তোমাদেরকে এমন ব্যক্তির সন্ধান দিব যে তোমাদেরকে বলে তোমাদের দেহ সম্পূর্ণ ছিন্ন ভিন্ন হয়ে পড়লেও তোমরা নূতন সৃষ্টি রূপে উত্থিত হবে। (সূরা সাবা-৭)

মাসআলা-৩৭৩ঃমক্কার কোরাইশদের ধারণা ছিল যে মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর দাওয়াত তাঁর মৃত্যুর পর নিজে নিজেই শেষ হয়ে যাবে আর তাদের ধর্ম অবশিষ্ট থাকবেঃ

﴿أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّرٰىبُصُّ بِهِ ۚ رَبِّبِ الْمُنُونِ ۝٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِّنَ

الْمُتَرَبِّصِينَ ۝٣١﴾

অর্থঃ “তারা কি বলতে চায় যে, সে একজন কবি? আমরা তার জন্যে কালের বিপর্যয়ের (মৃত্যুর) প্রতীক্ষা করছি। বলঃ তোমরা প্রতীক্ষা কর, আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষা করছি। (সূরা ত্বর-৩০, ৩১)

মাসআলা-৩৭৪ঃকাফেররা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে পথভ্রষ্ট বলে মনে করতঃ

﴿إِن كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ ءَالِهَتِنَا لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

حَيْثُ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مِّنْ أَضَلِّ سَبِيلًا ۝٤٢﴾

অর্থঃ “সে তো আমাদেরকে আমাদের দেবতাগণ থেকে দূরে সরিয়ে দিতো যদি না আমরা তাদের আনুগত্যে দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত থাকতাম। (সূরা ফুরকান-৪২)

মাসআলা-৩৭৫ঃ কাফের নেতারা মারমর্শের নামে মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর পথ বন্ধ করতে চেয়েছিল কিন্তু এতে তারা সফল হতে পারে নাইঃ

﴿قُلْ يٰٓأَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾ وَلَا أَنْتُمْ عٰبِدُونَ ﴿٣﴾ مَا أَعْبُدُ ﴿٤﴾ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ﴿٥﴾ وَلَا أَنْتُمْ عٰبِدُونَ مَّا أَعْبُدُ ﴿٦﴾ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٧﴾﴾

অর্থঃ “বলঃ হে কাফেরগণ! আমি তার ইবাদত করি না যার ইবাদত তোমরা কর এবং তোমরাও তাঁর ইবাদত কর না আমি যাঁর ইবাদত করি এবং আমি ইবাদতশরি নাই তার যার ইবাদত তোমরা করে আসছ এবং তোমরা তাঁর ইবাদতশারী নও যাঁর ইবাদত আমি করি। তোমাদের দ্বীন তোমাদের জন্য আর আমার দ্বীন আমার জন্য। (সূরা কাফেরন- ১-৬)

মাসআলা-৩৭৬ঃ কাফেররা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে এতটা ঘৃণা করত যে, দূর থেকে তাঁকে দেখে অন্য রাস্তা অবলম্বন করত অথবা তাদের চেহারায় পর্দা ফেলে রাখত যাতে তিনি তাদের সাথে কথা বলতে না পারেনঃ

﴿أَلَا إِنَّهُمْ يَمْتَنُونَ وُجُوهُهُمْ لِيَسْتَحْفُوا مِنْهُ أَلَا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٥﴾﴾

অর্থঃ “যেনে রাখ তারা কুক্ষিত করে নিজেদের বক্ষকে যাতে নিজেদের কথাগুলি আল্লাহ হতে লুকাতে পারে; জেনে রাখ তারা যখন নিজেদের কাপড় (নিজেদের দেহে) জড়ায় তিনি তখনও সব জানেন যা কিছু তারা চুপে চুপে আলাপ করে এবং যা কিছু প্রকাশ্যে আলাপ করে, নিশ্চয় তিনি তো মনের ভিতরের কথাগুলিও জানেন। (সূরা হুদ-৫)

মাসআলা-৩৭৭ঃ কাফেররা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর দাওয়াতের কথা শুনলেই তেলে বেগুনে জ্বলে উঠতঃ

﴿وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَرِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾﴾

অর্থঃ “কাফেররা যখন কোরআন শ্রবণ করে তখন তারা যেন তাদের তীক্ষ্ণ দৃষ্টি দ্বারা তোমাকে আছড়িয়ে ফেলে দিবে এবং বলেঃ এতো এক পাগল। (সূরা কালাম-৫১)

মাসআলা-৩৭৮ঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর দাওয়াতকে প্রতিহত করার জন্য মক্কার মোশরেকরা ঐক্যবদ্ধভাবে এ সিদ্ধান্ত নিল যে, হজ্জের সময় বাহির থেকে আগত লোকদের মাঝে মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর বিরুদ্ধে এ প্রচারণা চালাতে হবে যে, সে 'জাদুকর'ঃ

﴿إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقِيلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾ ثُمَّ قِيلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَٰهٌ حَرٌّ يُّؤْتِرُ ﴿٢٤﴾ إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾﴾

অর্থঃ “সে তো চিন্তা করল এবং নিদ্ধান্ত করল; অভিশপ্ত হোক সে! কেমন করে সে এই সিদ্ধান্ত করল! আর অভিশপ্ত হোক সে! কেমন করে সে এই সিদ্ধান্তে উপনীত হল। সে আবার চেয়ে দেখল, ভ্রূঃপর সে ভ্রুকুণ্ঠিত ও মুখ বিকৃত করল। অতঃপর সে পিছনে ফিরল এবং দম্ভ প্রকাশ করল এবং ঘোষণা করল এটাতো লোকে পরম্পরায় প্রাপ্ত জাদু ব্যতীত আর কিছু নয়, এটা তো মানুষেরই কথা। (সূরা মুদাসসির-১৮-২৫)

মাসআলা-৩৭৯ঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর দাওয়াতকে প্রতিহত করার জন্য কাফেররা বে-হায়াপনা, অশ্লীলতা, মদ, যুবক এবং নাচ-গানের অনুষ্ঠানকরা শুরু করলঃ

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾﴾

অর্থঃ “মানুষের মধ্যে কেউ কেউ অজ্ঞতাবশতঃ আল্লাহ র পথ থেকে (মানুষকে) বিচ্যুত করার জন্য অসার বাক্য ক্রয় করে নেয় এবং আল্লাহ প্রদর্শিত পথ নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রোপ করে; তাদেরই জন্য রয়েছে অবমাননাকর শাস্তি। (সূরা লোকমান-৬)

নোটঃ উল্লেখ্যঃ মক্কার মোশরেকদের মধ্যে নযর বিন হারেস গান-বাজনার জন্য মেয়েদেরকে ক্রয় করে রাখত, যে ব্যক্তি সম্পর্কে সে শুনত যে, ওমুক রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর দাওয়াতে মুগ্ধ হয়েছে তার নিকট নিজের ক্রয়কৃত গায়িকাদেরকে পাঠিয়ে দিত এবং বলে দিত যে, তাকে ভাল করে পানাহার করাও এবং গান-বাজনা শোনাও যাতে করে সে ইসলামের রাস্তা থেকে ফিরে আসে। বদরের যুদ্ধের দিন এই বদবখন অন্যান্য মুশরেকদের সাথে স্থায়ী পরিণতি বরণ করেছে।

মাসআলা-৩৮০ঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর দাওয়া কে প্রতিহত করার জন্য সর্বপ্রথম তাঁর চাচা আবুলাহাব তাঁকে অবমাননা করেছে এবং তাঁর সাথে বে-আদবী করেছেঃ

﴿ تَبَتَّ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝ مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝ ﴾

অর্থঃ “ধ্বংস হোক আবুলাহাবের হস্তদ্বয় এবং ধ্বংস হোক সে নিজেও। তার ধন-সম্পদ ও তার উপার্জন তার কোন উপকারে আসে নাই, অচিরেই সে শিখা বিশিষ্ট জাহান্নামের আগুনে প্রবেশ করবে এবং তার স্ত্রীও যে ইন্ধন বহন করে, তার গলদেশে খেঁচুর বকলের রশি রয়েছে। (সূরা লাহাব-১-৫)

মাসআলা-৩৮১ঃ উমাইয়া বিন খালফ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে দেখা মাত্র গালি-গালাজ করতে শুরু করত এবং অভিসম্পাত ও কুটুক্তি করতে থাকত আল্লাহ তাকে জাহান্নামের পূর্বাভাস গুনিয়েছেনঃ

﴿ وَبَلَّ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٌ ۝ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝ ﴾

অর্থঃ “দুর্ভোগ প্রত্যেকের, যে পশ্চাতে ও সম্মুখে লোকের নিন্দা করে, যে অর্থ জমায় ও তা গণে রাখে। (সূরা হুমায়হ-১-২)

মাসআলা-৩৮২ঃ মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর পথ বন্ধ করতে মুনাফেকরাও মুশরেকদের সাথে যোগ দিয়েছিলঃ

﴿ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَیْنُ أُخْرِجْتُمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مَعَكُمْ وَلَا نَطِيعُ فِیْكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوَّةٌ لَّنُنْصِرْكُمْ وَاللَّهُ یَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ ﴾

অর্থঃ “তুমি কি মুনাফিকদেরকে দেখেন নি, তারা কিতাবীদের মধ্যে যারা কুফরী করেছে তাদের ঐ সব সঙ্গীকে বলেঃ তোমরা যদি বহিস্কৃত হও তবে আমরা অবশ্যই তোমাদের সাথে দেশত্যাগী হব এবং আমরা তোমাদের ব্যাপারে কখনো কারো কথা মনব না এবং যদি তোমরা

আক্রান্ত হও তবে আমরা অবশ্যই তোমাদেরকে সাহায্য করব। কিন্তু আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে, তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী। (সূরা হাশর-১১)

মাসআলা-৩৮৩ঃ মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর পথ বন্ধ করতে মুনাফেকরা মুসলমানদেরকে চাঁদা দিতে এবং কোন প্রকার অর্থ নৈতিক সাহায্য নাকরার আন্দোলনও শুরু করেছিলঃ

﴿ هُمْ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا وَلَئِنَّ

خَزَائِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُتَفَقِّهِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۖ ﴾ (৭)

অর্থঃ “তরাই বলেঃ আল্লাহ্ র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর সহচরদের জন্য ব্যয় করো না, যতক্ষণ না তারা সরে পড়ে। আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর ধন-ভান্ডার তো আল্লাহ্ রই। কিন্তু মুনাফিকরা তা বুঝে না। (সূরা মুনাফিকুন-৭)

মাসআলা-৩৮৪ঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) ছেলের মৃত্যুতে আবুজাহাল, আস বিন ওয়ায়েল, কা'ব বিন আশরাফ আনন্দ করেছিল আর রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে লেজকাটা বলে আক্ষায়িত করেছিল আর আল্লাহ্ তা'লা তাদেরকে লেজ কাটা বলে আক্ষায়িত করেছেনঃ

﴿ إِن شَاءَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۖ ﴾ (২)

অর্থঃ “নিশ্চয়ই তোমার প্রতি বিদেষ পোষণকারীই তো নির্বংশ। (সূরা কাওসার-৩)

মাসআলা-৩৮৫ঃ আবুজাহাল রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) মসজিদ হারামে নামায আদায় করা থেকে বাধা দেয়ার জন্য চেষ্টা করেছিলঃ

অর্থঃ “তুমি কি তাকে (আবুজাহালকে) দেখোছ, যে বাধা দেয় বা বারণ করে, এক বান্দাকে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) যখন সে নামায আদায় করে?

নোটঃ নামায আদায়কারী বলতে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে বুঝানো হয়েছে, আর বাধাদানকারী হল আবুজাহাল, সে একবার তার সাথীদেরকে বলেছিল যে, আমি লাত ও ওজ্জার কসম করছি যদি আমি মোহাম্মদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে নামায আদায় করতে দেখি তাহলে তাঁর গর্দান ভেঙ্গে দিব এবং তাঁর চেহারা মাটিতে লুটিয়ে ফেলব। তিনি নামায আদায় করতে ছিলেন আর আবুজাহাল তার উদ্দেশ্য চরিতার্থ করার জন্য এগিয়ে আসছিল কিন্তু হঠাৎ করে আবার পিছিয়ে গেল এবং নিজে নিজেকে বাঁচানোর চেষ্টা করতে লাগল, তখন লোকেরা তাকে জিজ্ঞেস করল কি হয়েছে? সে বলতে লাগল যে, আমার এবং



মোহাম্মদের মারো আগুনের কুন্ডলী আড় হয়েছিল এবং তা অনেক গভীর ছিল, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) বললেনঃ যদি সে আমার নিকটবর্তী হত তাহলে ফেরেশতা তাকে শেষ করে দিত। (মুসলিম)

মাসআলা-৩৮৬ঃ উকবা বিন আবু মুয়িত রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে হারামে হত্যা করতে চেয়েছিল আর আবুবকর (রাযিয়াল্লাহু আনহু) সামনে এসে তাঁকে রক্ষা করলেনঃ

﴿ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَنَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ﴾

অর্থঃ “তোমরা কি এ ব্যক্তিকে এজন্য হত্যা করবে যে, সে বলেঃ আমার প্রতিপালক আল্লাহ অথচ সে তোমাদের তোমাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে সুস্পষ্ট প্রমাণসহ তোমাদের নিকট এসেছে? (সূরা মুমিন-২৮)

মাসআলা-৩৮৭ঃ আবুজাহাল এবং কোরাইশদের অন্যান্য সর্দাররা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) কে বন্দী, হত্যা এবং দেশান্তরিত করার পরিকল্পনা করে ছিল কিন্তু আল্লাহ তাঁকে কাফেরদের সমস্ত ষড়যন্ত্র থেকে হেফাযত করেছেনঃ

﴿ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِينَ ﴾

অর্থঃ “আর সেই সময়টিও স্মরণীয় যখন কাফেররা তোমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করে যে, তোমাকে বন্দী করবে অথবা হত্যা করবে কিংবা নির্বাসিত করবে, তারাও ষড়যন্ত্র করতে থাকে এবং আল্লাহও (স্বীয় নবীকে বাঁচানোর) তদবীর করতে থাকেন, আল্লাহ হচ্ছেন সর্বাধিক দৃঢ়তদবীর কারী। (সূরা আনফাল-৩০)

মাসআলা-৩৮৮ঃ ইসলাম এবং কুফরীর দন্দ্ব হলে আল্লাহ তা'লা ইসলামকে বিজয় দিয়েছেন এবং কুফরীকে পরাজিত করেছেনঃ

﴿ إِن تَسْتَفِينُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ وَإِن تَنْهَوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِن تَعُدُّوا نَعْدًا وَلَن نُّغْنِي عَنْكُمْ فَنَحْنُ غَنِيٌّ وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴾

অর্থঃ “(হে কাফেররা) তোমরা যদি সত্যের বিজয় চাও বিজয় তো তোমাদের সামনেই এসেছে, তোমরা যদি এখনো (মুসলমানদের অনিষ্ট করণ থেকে) বিরত থাক তবে তা তোমাদের

পক্ষেই কল্যাণকর, আর যদি পুনরায় তোমরা এহেন কাজ কর, তবে আমিও তোমাদেরকে পুনরায় শাস্তি দিব, আর তোমাদের বিরাট বাহিনী তোমাদের কোনই উপকারে আসবে না, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মুমিনদের সাথে আছেন। (সূরা আনফাল-১৯)

নোটঃ উল্লেখ্য যে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর নিকৃষ্ট শত্রু বা তাঁকে অবমাননা এবং তাঁর সাথে বিদ্বেষদীকারী সমস্ত সর্দারগণ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর জীবদ্দশায়ই দৃষ্টান্তমূলক পরিণতি বরণ করেছে। আবুজাহাল, উতবা বিন রাবিয়া, শাইবা বিন রাবিয়া, ওলীদ বিন উমাইয়া, উতবা বিন আবু মুয়িত, ইত্যাদি নিকৃষ্টতম ইসলামের শত্রুরা বদরের যুদ্ধের দিন জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত হয়েছে, আবুলাহাব বদরের যুদ্ধে পরাজয়ের শোক নিয়ে মৃত্যুবরণ করেছে, তার ছেলে উশবা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর বদদুয়ায় ধ্বংস হয়েছে, ইসলামের শত্রুদের বংশধরদের কেউ আজ বেঁচে নেই যারা তাদের নাম নিতে পারে, অথচ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর কালেমা পাঠকারী এবং রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম) এর জন্য জীবন উৎসর্গকারী আজও অসংখ্য পরিমাণে পৃথিবীর আনাচে কানাচে রয়ে গেছে।

মাসআলা-৩৮৯ঃ বর্তমান কালের ইসলাম ও কুফরীর দন্ডের পরিশেষে ইসলাম বিজয়ী হবে এবং কুফর পরাজিত হবে ইনশাআল্লাহঃ

﴿إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ﴾ (১০) كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَيْنِ  
أَنَا وَرُسُلِي إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿ ১১ ﴾

অর্থঃ “যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরুদ্ধাচরণ করে তারা হবে চরম লাঞ্ছিতদের অন্তর্ভুক্ত, আল্লাহ সিদ্ধান্ত করেছেনঃ আমি এবং আমার রাসূল অবশ্যই বিজয়ী হব, নিশ্চয়ই আল্লাহ শক্তিমান, পরাক্রমশালী। (সূরা মুজাদালা-২০, ২১)

সমাপ্ত

# তাফহীমুস্‌সুনা সিরিজের বাংলা ভাষায় প্রকাশিত গ্রন্থ সমূহ :

- (১) কিতাবুত তাওহীদ
- (২) ইত্তেবায়ে সুন্না
- (৩) কিতাবুত ত্বাহারা
- (৪) কিতাবুস্ সালা
- (৫) কিতাবুস্ সিয়াম
- (৬) কিতাবুস্ সালা আলান্ নাবী (সঃ)
- (৭) কিতাবুয়্ যাকাত
- (৮) কবরের বর্ণনা
- (৯) জান্নাতের বর্ণনা
- (১০) জাহান্নামের বর্ণনা
- (১১) কিয়ামতের বর্ণনা
- (১২) কিয়ামতের আলামত
- (১৩) বিয়ের মাসায়েল
- (১৪) ত্বালাকের মাসায়েল
- (১৫) আলকোরআ'নের শিক্ষা
- (১৬) রহমাতুললিল আলামীনের মর্যাদা (প্রকাশের  
অপেক্ষায়)